आचार्य श्री प्रवचन

(01.05.2018 से 15.07.2018 तक)

भाग–10

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

अन्य भाग हेतु : aagamdata.blogspot.in

1-5-18 "मन को नहलाओ ठण्डे पानी से" प्रातः

यह आप लोगों ने सुना होगा कि गर्मी के समय गेहूँ लगभग कटकर आ जाता है अर्थात फसल आ जाती है यह वैशाख अथवा अधिक से अधिक ज्येष्ठ तक में हो जाता है। किसान ने सोचा यह अच्छी फसल तैयार होकर आ गयी। जिसके लिए तैयार की वह प्रारम्भ कर दें। (खाना) नहीं लेना चाहिए। ऐसा क्यों? दुनिया को इस तरह से "ऐसा क्यों?" प्रश्न नहीं पूछना चाहिये। हाँ! कब कर सकते हैं? ये प्रश्न अच्छा है।

कब करेंगे तो हम बतायेंगे। कब का मतलब घर में आने के उपरान्त साफ सुथरा करके उसे स्नान कराना चाहिये। आप सुन रहे हो? महाराज मनुष्यों के लिए स्नान कहा, कथंचित् पशुओं के लिए भी पर गेहूँ का स्नान हमें कुछ अटपट सा लगता है। आपको लगता है तो क्या करें? विधी अर्थात न्याय को अटपट नहीं माना जासकता है। महाराज वैसे ही जल को बचाया जा रहा है।

मनुष्यों के लिये ही नहीं मिल पा रहा है, आपने तो और समस्या में डाल दिया है। इतनी मात्रा में गेहूँ को धोने के लिए जल कहाँ से लायेंगे। हम नहीं जानते। जिस उद्देश्य के लिये है, उद्देश्य की पूर्ति तो तभी होगी। नहीं करना है तो बिमार पड़ना है तो पड़ो। नहीं पड़ना है तो हमारी बात सुनो। यदि बिमार नहीं पड़ना चाहते हैं तो वह

गेहूँ अभी बहुत गरम है।

उसे नहलाओगे तभी शान्ति आयेगी। नहीं तो जो आता आयेगा वह आपको बिमार कर देगा, यह इसके पीछे सिद्धान्त है। जो नहीं मानता वह बिमार पड़ रहा है तभी तो ये हालत हो गयी है। फिर बुखार में ढेर सारा धन और समय दोनों बर्बाद करते रहो। कोई कह दे इसे तो नजर लग गयी। ऊपरी हवा लग गयी।

तो ऊपर तो भगवान बैठे हैं। उनकी हवा से तो मलेरिया होता नहीं बल्कि दूर हो जाता है। कैसे करेंगे। यह सम्भव है कि उन्हीं भगवान के कारण वह मलेरिया दूर हो जाय। कैसे? गेहूँ ने गर्मी खायी है तब वह सूखा है। आटा भी तभी बनता है। इसके लिये ये अनिवार्य है। बुन्देलखण्ड में तो प्रायः सभी घर में ऐसा होता है। मशीन से जो पिसा-पिसाया आ रहा है, कोई ज्ञान नहीं है। इसलिये विज्ञान अलग है और आचार संहिता अलग है।

कोई भी जोखिम की बात होती है, घर के सभी सदस्य बैठे हैं उसी समय बीच में किसी ने बोला। उससे कहा- बीच में नहीं बोलना चाहिये। नहीं बोलता तो-तुम बोलते क्यों नहीं? दिवार से बात करेगा क्या? भगवान किसी से बोलते नहीं। चुप हो जाता है तो गुंगे हो क्या? महाराज ये

बोलता नहीं इसे भी हवा लग गयी।

बोलो तो अवसर पर बोलो। सबके बीच बैठना है तो दोनों कानों से सुनो। भगवान ने सुनने के लिए दो कान दिये है और बोलने के लिए जिव्हा एक ही दी है। "सुनने में जो आनन्द है वह बोलने में नहीं।" अनुभव के आधार पर बोले तो मिश्री जैसी मिठास शब्दों में घुल जायेगी। मिश्री को किसके साथ लेते हो?

जिसका स्वरूप जिस रूप में रहता है उसको उसी रूप में लेना ये भी एक Science-विज्ञान है। इसको भी सुना था - प्रसंग है इसलिए कह रहा हूँ। पेड़ पर आम लगे हैं। पककर आ गये। खालो। नहीं खाना। ठण्डा पानी से धोकर खाना इसका मतलब जब तक एक-आध वर्षा जमकर न हो जाये तब तक आम नहीं खाना। तभी वह काम लेने लायक बनता है। उसने 50 के तापमान को भी खाया है, खुल्लम खुल्ला लू को सहन किया और आप भीतर तापमान नापते रहते हैं।

वह तपस्या करके आया है। "गरमी ही गरमी को मारती है।" आपको जिलाता है तथा गरमी को मारता है। शरीर में पित्त का विशेष महत्त्व है। समयानुसार वह शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों में घुमता रहता है। वर्षाकाल में वह पित्त पैरों में आ जाता है। पानी में चलने से नाखुन आदि

कितणु प्रविष्ट न हो, उससे रक्षा करता है।
वही पित्त सर्दी में छाती पे आ जाता है। छाती पर ठण्ड की लहर न लग जाये इससे वह पित्त छाती पर रहता है। अब गर्मी आ गयी तो वह पित्त मस्तिष्क में आजाता है। माथा को ठण्डा रखना आवश्यक है। सुन रहे हैं? आपका माथा बहुत जल्दी गरम हो जाता है, हम उसे ठंडा रखना चाहते हैं। सर्दी हो या गर्मी हो या वर्षा हो माथा सदैव ठण्डा रखना चाहिये।
आपके सारे अंग ठण्डे है और माथा गरम, इसलिये चिकित्सा बहुत कठीन है। वैद्य जी कहते हैं - प्रभु चाहेंगे तभी ये रोग ठीक हो पायेगा। पैसे ज्यादा हो गये, अब माथा ठनक रहा है। ये ठण्डे पानी से नहाने से ठण्डा नहीं होगा। "मन को ठण्डे पानी [क्षमा] से नहलाने से ये ठण्डा होगा।"
कोई भी ताली नहीं बजाया। जबकी हमने क्षमा की बात रखी। क्षमा से ज्यादा जल्दीकरी भी चिकित्सा इसे ठण्डा नहीं कर सकती। आपका मन तापमान से भी ज्यादा गरम है। और ठण्डा होता भी है तो झटपट गरम हो जाता है। आपे से बाहर हो जाता है। मन बहुत खतरनाक है। इसलिये ठण्डे बस्ते में मन को रखना ही मोक्ष-

- मार्ग है।"

गरम बस्ते हमें दे दो और हम आपको ऐसा ठण्डा बस्ता दे देते हैं। फिर देखो सारी योजनायें- जैसा आप चाहते हैं - वैसा ही होगा। मन को ठण्डे बस्ते में रखना है चाहे गर्मी हो या वर्षा हो या शीत हो। कोई भी प्रसंग हो। जो चाहते हैं वे आ जायें। मन से कह दो तू बीच में मत बोल। "मोक्ष मार्ग में बोलना आवश्यक है ही नहीं।" जितना मौन उतनी ही मुक्ति देवी पास आयेगी। मुक्ति ऊपर नहीं - यहाँ पर होती है।

धरती पर मुक्ति को आना पड़ेगा। मन सदैव बोलता रहता है इसीलिये आत्मा को उसने बंद कर रखा है। तो गेहूँ का उदाहरण याद रखना। हमेशा कहना सीखो। मन की बात सुनो, उससे कह दो आपकी सारी बात लिख रहे हैं। हम उसकी पूर्ति करेंगे तो हैरान हो जायेंगे। उसके बिना भी मोक्षमार्ग नहीं हो सकता। असंज्ञी मोक्षमार्ग में है ही नहीं। इसलिए हे मन! आरती तो तुम्हारी उतारी जा रही है।

तपा हुआ मन मोक्षमार्ग में काम नहीं करता वह ठण्डा रहे। बिना पैसे ठण्डा बस्ता खरीदना चाहते हो तो हमसे खरीद लो। श्रद्धा वाले रख रखे हैं। मन की बात न मानें तो आपसे बढ़कर मोक्षमार्ग में सफलता किसी को नहीं मिल सकती। इसलिये मैं कहता हूँ कि आप मन रूपी बच्चे

को साथ न लायें।

मन में बचपन रहता है और आप पचपन के हो गये हो। हम आपकी हैसियत का ध्यान रखते हुये ही यह कह रहे हैं। इसलिए ऐसे छोटे बच्चों को साथ न लायें। मन में यदि बड़प्पन आ गया है तो पूजा होने में देर नहीं लगेगी। मन में यदि लड़कपन तो आपका बड़प्पन निकल जायेगा। फिर बाजार में कुछ नहीं बच पायेगा।

मन को मनमाना कहा है। मन है कि मानता ही नहीं। वह स्वच्छन्द होना चाहता है। किसी के अण्डर (अधीन) रहना ही नहीं चाहता। "यदि मन विजेता नहीं तो वह मोक्षमार्ग में अरहंत ही नहीं हो सकता।" इसीलिये मुनि महाराज को पंचेन्द्रिय विजय एवं छठा मन का विजयी होना परम आवश्यक है, वही मोक्षमार्ग का नेता बन सकता है। आप यदि नेता बनना चाहते हैं तो जो मोक्षमार्ग के नेता हो चुके हैं उनकी बात को मानो।

फिर यदि आप नहीं भी बनना चाहो तो भी दुनिया आपको ही चुनेगी। यहाँ वोट मांगने की जरूरत नहीं है। पहले अपना वोट तो इलो, आप क्या चाहते हैं? हे मन! वह नोट भी चाहता है और वोट भी चाहता है, साथ में पूरा सपोर्ट भी होना चाहिये। जो व्यक्ति मात्र 5 वर्ष के लिये यदि वोट मांगने आये,

उसे कभी भी वोट नहीं देना।

जो कहें कि मैं जीवनपर्यन्त कार्य करूंगा उसी को समर्थन देना। मन से भी कह दो 5 साल के लिए संकल्प नहीं, जीवन पर्यन्त के लिए मतलब जब तक मरण नहीं तब तक के लिये संकल्प को निभाना है। तभी मोक्षमार्ग मिल सकता है अन्यथा नहीं। सोच लो। सोचना भी मन से ही है, उसको मानना ही पड़ता है। अभी तो बंदिश बना रखा है।

आप मन की चाल को समझ नहीं पाये किन्तु अब तो समझ लो। डण्डा बस्ता रख लो। हमारी बात मान लो। अगर अब भी हमारी बात नहीं मानोगे तो न ही आप सही से रख सकते हो और न ही पी सकते हैं, जीने की तो बात ही दूर हो गयी। यह असंयम की ओर ही ले जाने वाला है। "मनो विजयी ही संयम को धारण करता है।" मन को काबु में रखने वाले का दर्शन भी पुण्य का कारण होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष-

- व्रतादि को भी परिस्थिति मानो- स्वभाव नहीं। इसीलिये गुरुजी (आ० ज्ञानसागर जी) सदैव कहते थे- "अहिंसा भी एक परिस्थिति है।"
- कर्म अपना फल नोकर्म के बिना नहीं देते।
- हण्डे से पानी नहीं पी सकते जग से या धार से तो धार यहीं [कथाउत्तरपुराण से] मिलेगी।

2-5-18 "मन भी दे साथ - आँखों की तरह" प्रातः

आप लोग जब कभी भी देखते हैं तो देखने का मतलब होता है - आँख से देखना। यद्यपि कानों से भी देखा जाता है, नाक से भी देखा जाता है, हाथों से भी देखा जाता है और रसनेन्द्रिय (जिह्वा) से भी देखा जाता है। लेकिन रूढ़ हो गया है कि "आँखों से दिखता नहीं है क्या?" सही कह रहा हूँ। हओ तो कह दो। अब जब दो आँखे दी गयी है या मिल गयी है तो फिर बीच में ये नाक को क्यों रखा है?

यहाँ इस नाक की क्या आवश्यकता है। ये एक प्रकार से दीवार का काम कर रही है। यदि नहीं हो तो क्या हानि होगी? कुछ भी हो इसमें बहुत बड़ा रहस्य दिखता है। इस आँख का विषय अलग है और इस आँख का विषय अलग है। इधर के लोगों को इस आँख से देखता है तथा इधर के लोगो को दूसरी तरफ की आँख से देखता है। तो इस आँख को बन्द कर दें, नहीं बन्द नहीं कर सकते हैं।

इसी प्रकार एक-एक नय प्रमाण का बोध कराते हैं। व्यवहार नय - निश्चय नय ऐसा समझ लो। इधर की आँख का जो काम है वो इस ओर की आँख का नहीं ये पक्का है। हाँ! जब सामने देखते हैं तो दोनों आँखे एक साथ काम करती है। इसीसे इस रहस्य को समझ सकते हैं। अपने

हाथ को सामने लाकर देखते हैं।

उसका लेफ्ट (ऐंगल) अलग-अलग बनता है। दोनों आँख सामने हो तो स्पष्ट दिखता है एवं पास दिखता है। जब एक आँख बंद कर लेते हैं तो दूर लगता है और अस्पष्ट दिखता है। आँख की क्षमता क्या है यह तब ज्ञात हो जाता है। आप लोग डा० के पास जाकर आँखों के नम्बर दिखाते हैं। सिरमें दर्द हो रहा है। डा० भी कहता है कि आँख से दिखते हुये भी कमजोर है, नम्बर आ गये हैं।

चश्मा लो तो काम हो जायेगा। "चश्मा से ही काम होता है, ऐसा मेरा सिद्धान्त नहीं-आपका है।" परिवर्तन होते है नम्बर, ये क्यों हो रहा है? विकास हो रहा है। जैसे विद्यार्थी के नम्बर बढ़ते हैं, मतलब विकास हो रहा है। एक बार हो गया- दो बार हो गया स्पष्ट हो जाता है। एक आंख से फिर दोनो आंख से तो बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। इसलिये अपने हाथ की रेखायें देखा करो। ललाट की रेखाओं की अपेक्षा हाथ की रेखाओं को देखो।

ज्ञात हो जायेगा कि हमारी क्षमता कितनी है? क्या है? समझ में आ गया, यदि नाक निकल जाये तो क्या होगा? जिस समय इधर देखते हैं तो दूसरी आंख इधर नहीं आ सकती पर ध्यान देना यह आंख इस नाक की अणी की ओर

आजाती है।

वह आँख दूसरी आँख से कहती है- चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे साथ हूँ। अब समझ में आगया क्यों कि बिना कहे ताली बजायी। वह आँख पुरुषार्थ करती है भले ही काम में नहीं, पर मैं तुम्हारे साथ हूँ ये भी बहुत बड़ा काम है। इसके उपरान्त नाक की क्या आवश्यकता थी? तो दोनों बहनों में टकराहट न हो जाये, भैया कहता है इधर ही रहो। टकराहट से आत्मा को खतरा हो जायेगा।

उदाहरण के द्वारा बात सहज में ही समझ जाते हैं/स्पष्ट हो जाती है। हम अंश को ही जान कर पाते हैं, समग्र को नहीं। इसी का नाम प्रमाण-नय है। प्रमाण को नय से ही जाना जाता है। ये हमारी कमजोरी है। ज्ञानावरणादि कर्मों के कारण ऐसा ही ज्ञान होता है। हम कितना भी देख लें समग्र को नहीं देख सकते। वायु में पेड़ क्या है। मान लो सामने का एनीमेशन दिखता है वह भी सम्पूर्ण नहीं देख पाते।

देख भी लिया भीतर क्या है, वह नहीं जानते। ऊपर से तो ठीक बैठे हैं, किन्तु मन नहीं बैठा है। आप मानो या न मानो। हम जबरदस्ती नहीं मनाना चाहते। अपने मन को बुद्धो। मैं बैठ गया तो तू भाग-दौड़ी क्यों करता है। मेरा साथ क्यों नहीं देता। पाँचों इन्द्रियाँ आपका साथ देती हैं, जिस समय चक्षु

उसी समय चरखने का ज्ञान आदि।

किन्तु मन का कोई विषय नहीं। दुनिया के सभी विषय उसके पास है। सबका लेखा-जोखा वह रखता है। इन्द्रियों में कभी उलझन नहीं तथा मन हमेशा-हमेशा उलझा ही रहता है। उलझना ही पसन्द करता है। क्यों? सही है न? [हाँ] आपका मन है- किन्तु मेरे कहने से कह रहे हो। वह मन हर बात में आपको नचाता ही रहता है। किन्तु ये भी है कि हरकाम वही करता है।

घर में कमाऊ लड़का रहता है, तो आप कहते है, भैय्या ये ही कमाने वाला है, बाकी सब उसी का साथ देने वाले है। मन भी अपना रौब/बड़प्पन दिखाता रहता है। जब हल्कापन लगे तब पुछना - कब प्रतिज्ञा हो जाये पता नहीं। पर्व की जगह पोइयम में ले जाता है। दुनिया में कई नदीयाँ हैं - कोई भी अपना स्वरुप नहीं बदलती किन्तु एक ही नदी पुरे विश्व में ऐसी है जो कभी भी अपना स्वरुप बदल देती है। (एक स्थान विशेष पर है)

इसी तरह मन रूपी नदी का स्वरुप है। उसके साथ रहने वाला कभी भी धोखा-धडी का शिकार हो जाता है। इन्द्रियों का विषय नियत है/निश्चित है पर मन तो अनियत विहारी है। कल भी कहा था-मोक्षमार्ग/तत्त्व निर्णय में मन को स्थिर रखो। मन-

माना मत करो।

मन से काम लेने वाला दुनिया में चतुर माना जाता है। मन को control में रखने वाला ही संयम ग्रहण करता है। यह सीधा-सादा खेल नहीं है परन्तु असम्भव भी नहीं। जब विश्व स्तरीय खेल होते हैं तो खिलाड़ी को भी पसीना आ जाता है। क्यों की उस टीम की हार नहीं वह खिलाड़ी की हार होती है।

मन असंयमी तो आत्मा को भोगना पड़ता है। बचना आप पर ही आधारित है। यहाँ हओ कह दो तो वह मन भी कहता है क्यों महाराज के सामने हमसे बिना पूछे हओ कैसे कह देते हो? लूट जाओगे ऐसे हओ नहीं कहा करो। महाराज तो चले जायेंगे, उनका क्या। मैं जैसा कहता हूँ वैसा ही क्रिया करो, तभी जिन्दगी बच पायेगी। यदि मैं पागल हो जाऊँगा तो क्या दशा हो जायेगी। आंखे-कान-जिव्हा कभी पागल नहीं होती, मन ही पागल होता है।

पहले आगरा में पागलखाना कैसल था, अब ग्वालियर हो गया है, बताते हैं। उधर पैसो का ढेर है + हम उस पागलपन को दूर करने आये हैं। अच्छी दवाई है। क्यों की केस पुराना है। कोशिश तो कर रहा हूँ। 10-15 मिनिट में कितना ठिक कर पाता हूँ। मन ले कह दो वह इसमें साथ दे रहें। फिर तो तुम भी ठीक, हम भी ठिक और दुनिया भी ठीक कर देंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

3-5-18 "युग बदलेगा दूर दृष्टि से" प्रातः

एक व्यक्ति जो बाजार/मण्डी में गया था। एक आम खरीदा और वह आम पीला-पीला था

उसने पैसा/मूल्य चुकाया और घर ले आया। घर पर बैठाकर के दो तीन व्यक्तियों को हाथ में दे दिया। सबने हर्ष के साथ ले लिया और मुँह में खाया, जैसे ही स्वाद तो सबने एक साथ युँ (एक्शन) कर दिया। सभी ने नाक सिकोड़ ली।

वह सोचता है पैसा भी दिया - समय भी दिया और मित्र मण्डली के सामने महत्व भी कम हो गया। जल्दी में ऐसा ही होता है। अपने यहाँ कहा गया है- तेल देखो और तेल की धार देखो। परीक्षा अनिवार्य है। वह कहता है जब विद्यालय ही नहीं गये तो परीक्षा कैसी? मैं कहता हूँ विद्यालय एवं परीक्षा की व्याप्ति है ही नहीं। पहले ऐसा नहीं होता था। आज के विद्यार्थी को ऐसी शिक्षा ही नहीं दी जाती कि वह सही-सही खरीद सके।

वस्तु की सामान्य जानकारी तो लेना ही चाहिए पर इतना समय ही नहीं है। तो वह व्यक्ति उस वस्तु का सही उपयोग ही नहीं कर पाता है। संतो ने/विद्वानो ने यही कहा तुम जिसको चाहते हैं पहले उस वस्तु को परीक्षित तो कर लो। भले ही आप नहीं पहचान पाते किन्तु दूसरों से उसकी जानकारी/पूछताछ तो कर लो। उस व्यक्ति ने मात्र पीला है, ये देखा

और ले लिया।

नाक में बिमारी होगी अथवा स्वर भंग हो गया होगा इसलिए नाक का प्रयोग नहीं किया। सुनो! शरीर का माथा उत्तमांग है। इसमें पांचो इन्द्रियाँ है। इसलिए एक इन्द्रिय से परीक्षण पर्याप्त नहीं। दूसरे साधन का भी उपयोग किया करो। घर में माँ को - बड़े भैया को - बड़ी बहन को भी पूछ लो तभी आपको सर्वांगीण बोध होगा।

तभी सुख शांति और वृप्ति मिल पायेगी। यहाँ नहीं मिल रहा - वहाँ मिल जायेगा ऐसी आशा मत रखना। यहाँ नहीं तो वहाँ तो और भीड़ - भड़क्का है। बस देवगति मिल गयी तो- सुधर गयी सबकी यही मानसिकता है। महाराज आपका यही आशिर्वाद फले यही भावना करते हैं। तो वह मिश्र मण्डली जो आयी थी, आतिथ्य अच्छा है पर व्याप्ति का ज्ञान कर लेते।

जहाँ - जहाँ आम वहाँ - वहाँ पीलापन है, ऐसा नहीं है। मुलायम है तो पक गया ऐसा भी नहीं है। खाने से पूर्व थोड़ा गंध भी ले लें। किन्तु इसके साथ भी व्याप्ति नहीं है। आप रस लेना चाहते है। न्याय के विषय को समझना बहुत कठीन है, व्याप्ति बताओ। हाथ से छुकर भी देखलो। आजका विज्ञान आपको क्या खिला रहा है- पता ही नहीं। जहाँ

जाओ वहाँ विचित्रता देखने को मिल रही है।

चुंकि उस आम को पीला बनाया गया / इंजेक्शन से अथवा उष्मा देकर। हरा-भरा आम भी पीला-पीला हो गया / ले-ले बेटा-खा लो। अब वह कहता है हमारे दाँत तो बोथले हो गये / भोजन भी नहीं कर सकता / ऐसा आम भूलकर भी नहीं खाइयो। जीवन में जब पैसा ज्यादा आ जाता है, तो ऐसा ही होता है।

बहुत पिछड़ा हुआ कहें तो कोई बाधा नहीं किन्तु इस तरह की आधुनिकता आपके लिए हानिकारक है। यह वरदान नहीं अभिशाप सिद्ध हो रही है। यह लक्षण विद्वानों की नहीं समझी जाती / कुछ ऐसी परख के लिए व्याप्ति भी होना अनिवार्य है / व्याप्ति अकाट्य नियम है। जो चाहते हैं उसके लिए व्याप्ति हो। जीवन में तभी सुख एवं शांति आयेगी / आज की शिक्षा प्रणाली इस व्याप्ति के दोष से ओतप्रोत है।

आम / पपीता आदि को पीला बनाया जा रहा है। विज्ञान ऐसा खड़ा हो गया आपको जैसा चाहिये वैसा दिखेगा / आज का बागवान अथवा बेचने वाला इसतरह का उस पर रंग आदि कर देता है / देखते ही उठाने के भाव होते हैं। सौदा है - इंजेक्शन से तैयार कर दी / उसका स्वाद अलग हो गया - चबाने में भी अलग, यह क्या है? विज्ञान से असमय में भोग्य बनाया जा रहा है। पता नहीं

विज्ञान का हाथ लगा है, या लात लगा है।

परिणाम जब निकलता है तो मात्र दुष्परिणाम ही आता है। परिणाम से पूर्व परिणामी की सुध-बुध तो देख लो। पढ़-लिख लिया तो ज्ञान समीचीन ही हो ऐसी व्याप्ति है ही नहीं। यह नियामक नहीं हैं। हर क्षेत्र में नियामक को उड़ाया जा रहा है। वह आम कभी भी सुख-शान्ति देने वाला नहीं हो सकता किन्तु आज ऐसा हो गया है।

पीला न भी हो - सुगंधी न भी हो तो भी यदि वह मीठा है तो तृप्ति देने वाला होगा इसलिये पीलापन - सुगन्धी - मुलायमपन की उसके साथ कोई व्याप्ति नहीं हैं। हापुश है - ऐसा कहने मात्र से भी तृप्ति नहीं होगी। हओ तो कह दो। कैसे बुन्देलखण्डी हो? प्रतिदिन हओ कहने पर हओ कहते हो। आप से ही हमने सीखा है। क्या करें महाराज आपकी बात में इतने आकृष्ट हो जाते हैं कि हम भूल जाते हैं।

भूलो नहीं - याद रखना है। तो ये लक्षण होना चाहिये। स्वादिष्ट होने के लिए उसमें जल्दबाजी नहीं होती। आज मौसम आया ही नहीं फिर भी बाजार में सब मिल जायेगा। जैसे तीर्थंकरों के काल में वृक्षों के सभी फल-फूल आते हैं, वैसा आज हो रहा है। सर्दी के मौसम में भी

आम ले सकते हैं।

"बे मौसम सब फल-फूल रवा रहे है और बे-मौसम ही... जा रहे हैं।" महाराज अच्छा है न। सारी भीड़ वहाँ भी न पहुँच जाये इसलिये हम बे मौसम में ही जाना चाहते हैं। ये समझदारी नहीं हैं। जानकारी लेना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं तो फिर न्याय के ग्रन्थ पढ़ने के योग्य ही नहीं रहे ऐसा कह सकते हैं।

"हम विज्ञान को नहीं-वितराग विज्ञान को मानते है।" आप सब दुरदर्शन के प्रेमी हो-इससे कोई लाभ मिलने वाला नहीं। भगवान से प्रार्थना करता हूँआपको दूरदृष्टि मिले। "दूरदृष्टि से ही आप युग को सुख-समृद्धि की ओर ले जा सकते हैं तथा स्वयं भी उस ओर जा सकते हैं।" बाजार में मांग बहुत है, इसलिये वह इंजेक्शन से लौकी को तैयार करके दे देता है। सुन रहे हैं ऐसी लौकी में काला-काला दाग होता है जो इंजेक्शन का है, चबाने पर कठोर होती है, स्वाद विकृत होता है।

आज ऐसे इंजेक्शन बच्चों को भी लगायें जा रहे हैं। शिक्षा में बहुत आगे निकल गये लेकिन वह कोई काम की नहीं। चाहे देश में हो या विदेश में इससे कोई मतलब नहीं। उपयोगी कितनी यह जानना परम आवश्यक है। हमारा समीचीन

दर्शन ही इससे छुटकारा दिला सकता है।

और वह समिचीन दर्शन देश में मिलेगा - विदेश में नहीं। आज तो... हमें विदेश जाना है, हमने ठान लिया है। ऐसे में कोई बचा ही नहीं सकता। जब गर्दन हिलेगी तब आओगे तो कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं। वह तो अर्थी उठाने का समय होता है। भारतीय संस्कृति में पहले ही कह रखा है कि भैया-जब मेरी अर्थी उठाओ तो मुझे "राम-नाम सत्य है" सुना देना।

इससे कुछ नहीं होगा। जीवन भर रावण का काम किया और अन्त में राम का नाम सुना तो क्या होगा। यह उदाहरण आपके सामने रखा। हापुश का नाम लेने से कुछ नहीं, सुगन्धी भी इत्र आदि ऐसे आते हैं। घी का स्वाद भी - घी की गंध भी आ सकती है पर आप ढगे जा रहे हैं। आपको तब मालुम चलता है जब शरीर में इसके रिएक्शन होते हैं।

तब आप क्या छोड़ेंगे अब तो वह आपको छोड़ रहा है। प्रतिदिन पचासों लोग हमारे सामने इस तरह के आते हैं। विद्यार्थी जीवन वाले भी, खान पान में धड़ल्ले से चल रहा है। न ही आप सो रहे हैं, न ही आप जाग रहे हैं। सुन रहे हो। हओ। क्यों सो रहे हो। हओ। कई बार देख लिया हमने। जो धारणा पक्की

बना बैठे हो, उसे कैसे छोड़ सकते हैं।

समय भी हो गया है। आपको विषय दिया है। सोचने पर - विचार करने पर ही इसका सार निकलेगा। आपके पास समय हो तब तो। जीवन में क्या उपयोगी है यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है। आप अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं - बहुत अच्छा है, आपका उनके प्रति वात्सल्य है। "यह दुरदर्शन हो सकता है - दूरदृष्टि नहीं।" जो खो रहे हैं वह अब वह नहीं। अपनी धारणा - अवधारणा जो सदोष हो गयी उसे ठीक करें।

वैज्ञानिक लोग भी इसे लेकर बहुत चिन्तित हैं। वे सोच रहे हैं कि कौनसी शिक्षा में पढ़ायें ताकि इनकी यह अवधारणा ठीक हो। इसके लिये बैठकों पर बैठक हो रही है। सीधी सी बात है। बोते समय कुछ और बोया है तो फसल काटते समय कुछ और की उपलब्धि कैसे होगी? हमारे उद्देश्य को याद रखें। भगवान से प्रार्थना करता हूँ जो विपरित बुद्धि हो रही है, उससे बचायें।

यदि आप इस ओर नहीं आने की ठानते तो पक्का है जिस ओर जा रहे हैं अंधकार ही अंधकार है। दिन डूबने पर केवल भटकन ही रह जायेगी। कुछ मिलने वाला नहीं। कोई बताने वाला भी नहीं। दिन डूबने से पूर्व जागृत होना है तभी अपने संस्कारों को सुरक्षित रख पायेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

4-5-18 "आओ सुलझायें उलझनों को" प्रातः

ग्रन्थों में कुछ ऐसी युक्तियाँ दी गयी हैं, जिसके माध्यम से हम लोगों की बुद्धि जो उलझी हुयी रहती है, उसे समाधान मिल जाता है। उसके लिये रास्ता प्रशस्त हो जाता है। और पुरुषार्थ की भूमिका नजर आने लग जाती है। कई लोगों का यह मत/अभिप्राय रहता है कि हमें उलझने ज्यादा हैं और समाधान कम। ध्यान रखो - बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर भी बहुत हो जरूरी नहीं - एक भी हो सकता है।

बहुत उत्तरों का एक प्रश्न नहीं होता। बहुत उलझने हैं तो भी चिंता की कोई बात नहीं। उलझन से भी आप सुलझन की ओर जा सकते हो। कई लोगों का कहना है - ये कब से आ रहा है? क्या? कोई भी चेतन हो या अचेतन हो। वह कहता है अनादि से आना सम्भव नहीं। बस, ये निर्णय करने में उतावली हो गयी। चिन्तन नहीं किया।

जो अनादि से है तो क्या अनादि तक चलेगा? तोड़ने का प्रयास अज्ञान सा लगता है। किन्तु अनंत नहीं है। तो कैसे टूटेगा? वास्तव में तो करो। प्रश्न मत करो। प्रश्न-उत्तर की क्या बात। सभी प्रश्नों के उत्तर हो ऐसा भी नहीं है। आपलोग जल्दी में प्रश्न कर जाते हैं। दिखाने के लिए कि जो जितना प्रश्न करेगा, उसकी बुद्धि उतनी ही ज्यादा

चलती है।

उससे भी ज्यादा उसकी बुद्धि है, जो सभी प्रश्नो को एक ही उत्तर में निरुत्तर कर देता है। हमारे संतो ने ऐसा ही उत्तर बताया, इसलिये घबराओ नहीं। रोग भले ही पुराना है- उसकी औषध विद्यमान है चाहे वैद्य हो या न हो। धरती पर जितनी भी वनस्पति है वे सारी की सारी औषध का काम करती है। भूख लगी है- ये भी रोग है। आपके द्वारा कुछ पदार्थो का सेवन होता है, जिससे क्षुधा मिट जाती है। हमेशा के लिए नहीं मिटती। इसका कारण भी आप ही है। हम खाना चाहते है- फिर भूख न लगे यह कैसे हो सकता है। जैसे ही भूख कम होती है- वैद्य जी के पास पहुँच जाते हो। मंदी आ गयी है जैसे बाजार में बंदी आ जाती है। मंदी को तेजी में बदल दो। आप चाह रहे हो तो राह मिल जायेगी। आप घबराते क्यों हो?

विपरीत क्यों सोचते हो। रोग है तो वही औषध है। औषध को खुराक न बनाइये। मीठी-मीठी लग जाती है तो खा लो ऐसा नहीं। वह गोली ही रोग के लिए कारण हो गयी। हम रोगी है ये मान ले। औषध निरोग होने के लिये होता है। अनादि काल से चिकित्सा पद्धति है तो अनादि से ही रोग की पद्धति भी विद्यमान है। रोग होते है तो निरोग होने

के भाव जाग्रत हो।

ये महत्वपूर्ण है। रोग को रोग नहीं समझेंगे तो निरोग तीन काल में नहीं हो सकते। आप चिकित्सा चाहते हो या नहीं? महाराज रोग है ही कहाँ। जब रोग ही नहीं - निरोग होने की बात ही नहीं फिर औषध का है क्या ये तो दिमाग की कसरत है। रोगी होता तो रोग की सीमा होती है। मर जाये किन्तु ऐसा है कि आज तक नहीं मरें। इसलिए स्वभाव तो है। ऐसी दिमाग में बातें उठती रहती है।

संतो ने मंथन से उपाय बताया। ग्रन्थों में पुछा भी गया। मैं भी वही बात आपसे पुछता हूँ। ये बताओ - वृक्ष कैसे उग आया? [बीज वपन किया अंकुरित होकर आ गया] बहुत अच्छा बोला आपने लेकिन सोचा नहीं आपने। बहुत दिनों बाद जैसे कक्षा में गुरुजी पुछते थे वैसे पुछा एक ने हाथ भी उठाया मतलब वह परम्परा आज भी अक्षुण्ण है। नहीं तो एक प्रश्न हजारों उत्तर मिल जाते हैं आजकल।

तो प्रश्न ज्यों का त्यों बना हुआ है। बीज कहाँ से आया? उत्तर आपही को देना है, जिन्होंने हाथ उठाया था। [अनादि से बीज से वृक्ष और वृक्ष से बीज] अर्थात अनादि शब्द लगाना पड़ा। वृक्ष और बीज में पहले कौन तो दोनो झगडेंगे। अब झगड़ना नहीं - पहले मैं ऐसा

नहीं कहियो।

जैसे आपने छाती पर हाथ रखकर कहा, वैसे ही सामने वाले का भी हाथ छाती पर है। ये अनादि से संतान परम्परा से है। वृक्ष-बीज की परम्परा। कुछ ऐसे भी पेड़-पौधे जिनका वपन नहीं करना पड़ता/धरती पर पानी पड़ते ही, योनिस्थान हो जाता है, उगने की क्षमता आ जाती है जिन्हें सम्मूर्च्छन बोलते हैं। वायुमण्डल में ऐसा होता है। घासफूस से धरती ढक जाती है।

अब वृक्ष-बीज का जो संतानक्रम है वह टूट सकता है या नहीं? हम अपने दिमाग से लगा लेते हैं कि ये तो अनादि से है अतः टूटेगा नहीं। ऐसे में न ही मोक्षमार्ग होगा और न ही मुक्ति मिलेगी। मोक्षमार्ग और मुक्ति दोनों का ही शास्त्रों में अभाव नहीं बताया तो जो अनादि से चल रहा है उसका अभाव हो सकता है। आचार्य कहते हैं एक बार आरोग्य की प्राप्ति हो जाये तो दोबारा रोग हो ही नहीं सकता / उस रोग का / संसार का अभाव कैसे हो?

संसार को रोग मानते हैं तो वह छूट सकता है। स्वभाव मानेंगे तो तीन काल में नहीं छूटने वाला। कुछ लोगों में गुस्सा करने की आदत होती है तो कुछ में गुस्सा पीने की आदत पड़ जाती है, जो व्यक्ति दूसरे के गुस्से को पी जाता है, उसके पास इतनी शक्ति / बल / एनर्जी आ जाती है, जिसे देखकर

सामने वाला घबरा सकता है।

कहते हैं न- भैया वे सबके गुस्से को पीने वाले हैं। याद रखना - जब दूसरे का गुस्सा पी लेता है तो विद्या/ऋद्धि प्राप्त हो जाती है। यदि ऋद्धि का प्रयोग करें तो योजनों तक साफ हो सकता है। अपने को पीना सीखो। गुस्सा तो आयेगा करना या न करना हमारे हाथ में है। रिमोट कन्ट्रोल का जमाना है।

दूसरे को नहीं अपने आपको नियन्त्रण में रखना है। अपने आपको नियन्त्रण में रखने से कष्ट नहीं होता। लेकिन दूसरे को नियन्त्रण में नहीं रखना। आप ऐसा नहीं कर सकते - आप वैसा नहीं कर सकते। महाराज फिर शासन के बिना प्रशासन कैसे चलेगा? भगवान का शासन चल रहा है, आपके शासन की जरूरत नहीं। भगवान ने ये कभी नहीं कहा कि तुम आओ, मेरी बात सुनो।

कुबेर ने समोशरण की रचना की। सब अपने - अपने स्थान पर बैठ गये। मैं शासक हूँ ऐसा कभी भी नहीं कहा। उन्होंने अपने को भगवान भी नहीं माना। हाँ तूमने मान लिया, वे भगवान है, ये नेता है। अब आप पीछे-पीछे चले तभी तो भक्त कहलायेंगे। आप तो

भगवान को चलाने लग जाते हैं। हमारे भगवान ऐसे नहीं।

मोक्षमार्ग बिल्कुल सीधा - सरल एवं सात्विक है। आपके पास गुस्सा है कि नहीं? देवता भी डरते हैं। भगवान के पास गुस्सा नहीं। वितरागी के पास गुस्सा नहीं। सामने वाला इसीलिये स्वयं को अर्पित कर देता है। उनका वह रूप खींच लेता है। आज से जो कुछ भी है उसे अर्पित कर दो। भगवान् ने नहीं कहा आप कर लेते हो तो वो क्या करें?

इसी में हित - सुख निहित है। माथा ठण्डा रखो - पसीना कम हो जायेगा। भगवान ने यही कहा - राग - द्वेष मत करो। "होना स्वभाविक जैसा लगता है किन्तु करना स्वभाविक नहीं।" पी सकते हैं। आपकी भड़ास कम हो इसके लिए हमेशा-हमेशा मुस्कान लिया करो। "आपकी मुस्कान ही भीतर के गुस्से को बाहर नहीं आने देगी।"

खाया हुआ भोजन जैसे पच जाता है, वैसे ही निरोग रहना है तो गुस्से को पचाओ। निरोगी ही दुनिया को भी हीरो बना कर देगा। एक वैद्य भी लाखों - करोड़ों के लिये पर्याप्त है। इसी तरह एक भगवान पर्याप्त सबको निरोग बनाने के लिए। वे कभी किसी के पीछे नहीं लगते। पीछे लगने से ऐसा लगता है कि इनको जरूरत है,

आ गये होंगे।

आँखे बंद करने से सब स्वप्न दिखने लगता है। एक भी एवं पर भी दिख जाता है। एक झूठा है- पर के माध्यम से ही आज अपनी भूख मिटती है। अनादि से गुस्सा आ रहा है, जब उदय में आता है पुनः कर्म बंध कर जाते हैं। जब उदय में आये तो हमें क्रोध नहीं करना है। यही मात्र एक औषध है और कुछ भी नहीं।

बड़े-बड़े विद्यालय बनाने की, खूब जमा-खर्च रखने की कोई आवश्यकता है ही नहीं। इसलिए गुस्सा नहीं करने की प्रवृत्ति को अपने पास रखो। अपने पर नजर रखो। हमने देखा लौकिक नेता भी अपने भावों में कभी उद्वेलित नहीं होते। तभी आप उन्हें मतदान देते हैं। आपके पीछे-पीछे आयेंगे ऐसे-ऐसे लोग भी देखे हैं। आप उन्हें अपना मतदान देते हैं या नहीं। वो नोट भी बांटते हैं। आप दोनों तरफ से लेकर भी सपोर्ट तीसरे को देते हैं, क्योंकि मतदान तो एकान्त में होता है।

महाराज हमतीन का कल्याण करना चाहते हैं, एक का नहीं। ये कला/विद्या है। इसलिये बीज पहले या वृक्ष पहले इस चक्कर में मत पड़ो। यदि इस परम्परा (धारा) को रोकना चाहते हैं तो बीजों को गरम कर दो/भाड़ बना दो। उसी पद्धति से यह अनादि से चली

आ रही धारा समाप्त हो जायेगी।

मैं हमेशा उदाहरण देता रहता हूं। मन्दिर में चावल ही क्यों चढ़ाते हैं? गेहूं जो है वह योनिभूत सचित्त है - चावल नहीं। पुराना कर्म उदय में आये - आप क्रोध न करें बंध रुक जायेगा बल्कि जो पुराना जमा है उसे भी बुखार आने लग जायेगा, नाड़ी फड़फड़ाने लगेगी। भाई बना दी अब पुनः उत्पन्न ही नहीं, ये आपके हाथ में है।

धान में उगने की क्षमता है - चावल में नहीं। भूसा उग जाये नहीं भूसा तो भूसा है, "दुनिया के भूसे में कुछ नहीं रखा, चेतन को पहचानिये।" भूसा उतारोगे तभी चावल काम में ले सकते हो अतः दुनिया के भूसे को उतारो। उधर मत देखो - मार्ग अपने आप ही प्रशस्त हो जायेगा। चुटकी बजाते - बजाते अन्तर्मुहूर्त में काम हो जाता है। चौदह सीढ़ियाँ पार हो सकते हैं। अन्त में यही कहना है, वृक्ष को काटने से यह काम नहीं होगा वह पुनः हरा-भरा हो जायेगा, बीज भी जहाँ - तहाँ डालने से नहीं वह उग सकता है। उग जाता है।

उसकी गर्मी को शान्त करना आवश्यक है। कर्म सिद्धान्त के ग्रन्थों में यह उदाहरण आता है। हमने तो आचार्यों की वाणी का प्रचार-प्रसार किया है। हमारी भी दुकान चल रही है। इस दुकान की विशेषता - खासियत है कि यहाँ सस्ता - सुन्दर - टिकाऊ सामान

मिलता है।

आप यदि दुकान/सामान बदलना भी चाहो तो बदल सकते हैं। हमारा कमीशन तो पक्का है। थोक में काम किया करो। फुटकर वाले तो आते ही रहते हैं। हम सबको निपटाते हैं। अविनश्वर दुकान है। यहाँ चुटाने की बात नहीं, चलने की बात है। ऐसा ही यह मोक्षमार्ग है - अनंतकालीन को भी साफ किया जा सकता है। स्वभाव निष्ठ हो जाये तो विभाव भाव अपने आप ही दूर हो जावेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण -

"कुण्डलपुर महामस्तकाभिषेक की घटना है। सागर की एक पंजाबन महिला आचार्य श्री का दर्शन करना चाहती थी, प्रायश्चित लेना चाहती थी। उससे पूर्व भी उपकार वह आयी पर गुरुजी तक पहुँच नहीं पायी। उसने लगभग 15-20 वर्ष पूर्व आचार्य श्री को देखकर ग्लानि निंदा के भाव किये थे उस कारण उसे लगातार मेरे पति एवं देवर की मृत्यु हुई। पुत्र पीडित करते हैं। उसने गुरु-निन्दा के भावों का प्रायश्चित हेतु निवेदन किया। और सभी लोगों से भी कहा कि कभी भी गुरुओं की निन्दा नहीं करना चाहिए। आचार्य श्री - यदि दोष दिख भी रहा है तो भी आलोचना/निन्दा न करें। नीच गोत्र का कारण है जो अनंतानुबन्धी जन्य होने से नीचे गिराती है।

7-5-18 "भक्ति करो - बनोगे भगवान" प्रातः

[ललीतपुर से कॉपी शिवड लगभग 3-पहसार]

ललीतपुर वालो! सुनो तो सारी व्यवस्था चरमरा गयी है। कल कहा था कि किसी को बुलाना बहुत मुश्किल है। महाराज - हो जायेगा? क्या हो जायेगा। अर्घ्य चढाने के लिए जगह नहीं। एक थाल पर दुसरी उसी पर तीसरी चढाई जा रही है। अभी भी आप सोच लो। अभी ऐसा लग रहा है। कैसा लग रहा है? आप लोगो ने ललीतपुर को भूला दिया। मुझे प्रसन्नता है। ऐसी भक्ति करो कि अपने आपको भूल जाये एवं भगवान मय हो जावे।

धीरे-धीरे मध्याह्न में प्रवचन की बात रख ही दी। गर्मी से चलकर आ रहे है, थोड़ा सा समय तो देना पड़ेगा। अभी कुछ नहीं मध्याह्न में कहेंगे। व्यवस्थित होकर आइयो। यहाँ की सू अलग तरह की है। ललीतपुर में भी सू-जब वाचना होती थी उसको याद करना है। ऐसा लगता है। कैसा लगता है? बताओ ना। आयकी भक्ति का प्रभाव है। शास्त्रों में भक्ति करने का उल्लेख मिलता है। आप भी कर रहे हैं। पर यह तो जितना करो उतना ही कम है।

भावना और बढानी है। इतना ही मैं आप सभी से कहना चाहता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

8-5-18 "बदल डालो धारणा को" प्रातः

प्रायः करके सभी लोगो की धारणा उस विषय में जो रख रहा हूँ, गलत ही धारणा है। ये धारणा आपकी भी हो सकती है। अन्यथा न लें। धारणा बनाने वाले आप स्वयं हैं - आप स्वतंत्र हैं। कम से कम हम उससे अवगत तो करायें। आप हमें गलत कह सकते हैं, हम भी तो आपको गलत कह सकते है। फिर भी यह आपके सामने रखना चाहता हूँ। एक-आध की भी धारणा बदल जाये तो समझुंगा सफलता मिल गयी।

बंदर को सभी चंचल मानते है। पक्की धारणा है? उसे छोड़ना चाहिये या नहीं? चंचल का मतलब जल्दबाजी करने वाला। जो जितना चंचल होता है उतनी ही प्रतिभा अच्छी काम करती है। 3 घण्टे में कोई व्यक्ति 7-8 प्रश्नों के उत्तर दे पाता है किन्तु कुछ परीक्षा ऐसी उसमें भी 3 घण्टे मिलते है पर 200-300 प्रश्नों के उत्तर आपको हाँ या ना में देना होता है। दोनों 3 घण्टे के लिए ही है पर एक सामान्य परीक्षा है - दूसरी प्रशासन की परीक्षा है।

प्रशासन में यदि 2-3 गलत हो गये तो... [माइनस मार्किंग] समय उतना ही ज्यादा सोच भी नहीं सकते। आप लोगो की गलती हो सकती है पर बहुत कम। अनहोनी जैसे लगती है। बंदर कभी भी अपना निशाना चूकता नहीं। और आपका निशाना... इस

प्रकार आपकी धारणा पूरी समाप्त हो गयी।

बिना सोचे - बिना देखे बिना सुने ऐसी धारणा नहीं बनाना चाहिये। वह बंदर बहुत Fast होता है लेकिन फेल नहीं होता। उसमें ऐसी प्रतिभा है। उसकी दृष्टि न थोड़ी पहले तथा न ही बाद में, सही जगह होती है। आप हर क्षेत्र में कूदते रहते हो, इसलिये फेल हो जाते हो। इसलिए एक लक्ष्य को ध्यान में रखकर साधना किया करो।

हर क्षेत्र में करने से कभी भी साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। एक बार मैंने देखा बंदर घोड़ा था। आप सोचते होंगे घोड़े की क्या हैसियत होती है? वह घोड़ा बड़े-बड़ों से आगे था। बड़ा उसके पिछे-पिछे दौड़ रहा है, उस छोटे ने 5-6 स्थान बदल दिये। मैं दूर से देख रहा था। मन्दिर की शिखर से दूर हवा में उस छोटे ने छलांग लगायी - बड़ा देखता ही रह गया। घोड़ा बड़ा बन गया। वह सीख दे दिया। प्रतिभा भी है और उसके पास स्थिरता भी है।

चंचलता अपनी दिशा में ही होना चाहिये। कम समय में अधिक काम करना है तो उसी के बारे में करें - और कुछ भी नहीं, नजर में वही आता है। निशाना अचूक होता है। कहावत है- डाल से चूका बंदर एवं आषाढ़ से चूका किसान (न इतै के न उतै के।

फिर मिलें कब...। [कहीं कुछ नहीं]

बड़ा विचित्र लगता है। जब कभी भी देखता हूँ - वह गिरता नहीं। अगर कभी कोई चूक जाता है तो मिलिंग करके उसको अपने ही समूह से बाहर निकाल देते हैं। उसे अपनी कौम (जाति) का कलंक मानते हैं। इसलिये अपनी दृष्टि हमेशा उद्देश्य - लक्ष्य की ओर ही होनी चाहिये।

तो आज आपके बीच थे जेल अधिक्षक महोदय आये हैं। वे ऐसे ही नहीं आये - जेल में रहने वाले बंदीयों की बात को लेकर आये हैं। प्रतिभा तो उनके भीतर भी होती है। उन्होंने कहा- ऐसा - ऐसा होना चाहिए। अपना - अपना कार्यक्षेत्र है। कुछ समय में ये लोग काफी आगे बढ़ गये। किन्तु अभी नम्बर नहीं दे सकते। वार्षिक परीक्षा में ही नम्बर मिलते हैं। अभी तो साप्ताहिक / मासिक परीक्षा है जो होती ही रहती है।

किन्तु वह तालीम / तैयारी करते रहो, मैदान में जब उतरते हैं उस समय तालीयाँ नहीं बजेगी। उसे पार करने के लिए निरन्तरता बहुत जरूरी है। जैसा अभी कहा - उन्होंने (अपराधी) अज्ञान में - द्वेष अथवा बदले से - मजबूरी वश नहीं वरन योग्य कार्य कर लिया किन्तु वह व्यक्ति हमेशा वैसा ही रहे जरूरी नहीं। ध्यान रखो - उसे और पश्चाताप

होता है।

उसका घर-परिवार, अडोस-पडोस, समाज, राष्ट्र सब छुट जाता है। वह जेल में सोचता रहता होगा। उसको एक बार ठोकर लग जाती है- वह नीचे देखकर चलता है। फिर कभी गिर न जाऊँ, इस कारण नीचे देखकर / संभलकर चलता है। संत लोग नीचे तो देखकर चलते हैं किन्तु समाज में क्या हो रहा है, इसका भी ध्यान रखते हैं।

नीचे देखकर कहा- कान नीचे कर दो ऐसा नहीं कहा अपितु चौकन्ना होकर चलते हैं। चौकन्ना मतलब चारों दिशाओं के Latest पेपर / अखबार रखते हैं। युगीन गतिविधी से वह परिचित होता रहता है। भविष्य के अनुसार युगो-युगो की घटनाओं को देखकर योजना बद्ध चलता रहता है। वह जानता है कि अभी मुझे और परिश्रम की आवश्यकता है।

अभी अधिक्षक महोदय निवेदन रख रहे थे। गाड़ आयेगी तो क्या होगा? [जेल अधिक्षक → महाराज श्री आपके आशीर्वाद से सब ठीक हो जायेगा (बहुत अच्छा प्रबंध रहेगा] बहुत अच्छा (ऐसे चंचल मन वाले भी साधक है। संकल्प ले लिया कि हमें तो ये करना ही है। यदि सभी "रोजगार" करेंगे तो फिर "रोजदर्रा" प्रतिदिन राशि आती रहेगी और "रोजमर्रा" प्रतिदिन मरने की बात

ही नहीं रहेगी।"

रोजभरी वाला अभी रोजगार से परिचित नहीं है। जेल के प्रबंधक इसी का प्रशिक्षण दे रहे हैं, पुनर्वास का भी सोच रहे हैं। सरकार भी सहयोग प्रदान कर रही है। "आप लोग अपने घर पर भी नहीं कर पा रहे हैं वह कार्य वे लोग जेल में रहकर कर रहे हैं।" आप सोचेंगे इससे महाराज आपको क्या मिला? ध्यान रखो - प्रत्येक दुकानदार अपने ग्राहकों को पटाकर रखता है।

हम भी अपने ग्राहक का पुरा ध्यान रखते है। इससे उनका जीवन स्वर सुधर जायेगा। अच्छा खान-पान होगा, अहिंसक एवं सात्विक जीवन हो जायेगा। सरकार भी यही चाहती है। ऐसे ऐसे भी स्थान होते है - डेरा में भरपेट भोजन। ये प्रबन्धन अद्भुत प्रबंध है। अच्छा खाना मिलता है डेरा में। अच्छे-अच्छे व्यक्ति भी स्वाद ले रहे हैं। घर कौन जाये यहाँ बना-बनाया 5 मीनिट में काम हो गया।

यह सबके लिये है परन्तु इन लोगो के लिए जो काम करने वाले नहीं (जरूरतमंद है)। श्रम को सार्थक करो। पसीना बहाओ - सीना तानो कभी हार्ट फैल नहीं होगा तथा तभी उड़ान का आनंद ले सकोगे। आज प्रतिनिधी मण्डल आया उनको भी सुना। वे जो चाहते है-उनकी

भावना - कलम सफल हो।

और क्या चाहते हो? शर्त करना है। चूकना नहीं अचूक होना चाहिए उस बंदर की तरह। अब चंचल बाबा नहीं कहना। एक बात और वह जब भी छलांग लेता है उसकी पूंछ की आकृति S जैसी बनती है। इंग्लिश में Yes यस कहते हैं। मतलब सदैव (हमेशा) पोजेटिव बात करो नकारात्मक मत सोचो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

9-5-18 "कैसे बचें स्मृति रूपी प्रहार से" प्रातः

स्मृति किसी - किसी को जल्दी होती है, क्षयोपशम के कारण और किसी - किसी को देर से होती है किन्तु कुछ लोगों को स्मृति होती ही नहीं। अब आप लोग कौनसी लाइन में आते हैं। आपको स्मृति होना अच्छा लगता है आप ही देख लो। यदि देर से स्मृति हो तो अथवा स्मृति आती ही नहीं तो आप सोच लो। आपको कौनसी बात पसन्द आती है।

स्मृति एक प्रकार से वर्तमान में ही होती है। कठिन विषय है - समझ ले क्यों कि स्मृति होती तो रहती है। स्मृति होती तो वर्तमान में, पर वर्तमान को भूला देती है और अतीत जो वर्तमान में नहीं है, उसे ले आती है। अब आप ही बताओ वर्तमान को भूला देने वाली स्मृति को देख लो। अतीत को लाकर स्वप्ने

वाली स्मृति से पेट भरने वाला नहीं है।

क्यों ? ठीक बोल रहा हूँ ना ? हाँ या ना में उत्तर देना है। दो चीज है या तो हाँ या फिर ना। बहुत कठीन होता है हाँ और ना में उत्तर देना। जब महाविद्यालय में प्रवेश पा जाता है तब ये आता है। बहुत से उत्तर कम समय में हाँ या ना में देना है - माथा तप जाता है। बहुत कठीन होता है। 200-300 प्रश्नों के उत्तर 3 घण्टे में प्रशासनिक परीक्षाओं में होता है।

उस समय याद आता है, जिसको हम चाहते हैं उसे पाना बहुत कठीन होता है। वर्तमान को औझल करने का काम स्मृति में होता है। वर्तमान की प्रतिती स्मृती में नहीं होती। स्मृति जिस समय उस समय वर्तमान औझल एवं बोझिल होता लगता है। बहुत कुछ याद आता है पर उससे काम होता नहीं। दोनों ही बोझिल लगते हैं। वर्तमान में रहते है किन्तु अतीत की ओर ही देखते रहते हैं। अथवा भविष्य की आशा बनी रहती है।

पुल भी अतीत के साथ जुड़ने से फीके - फीके नजर आते हैं। अब विषय जटील न हो जाये वैसे ही गर्मी के दिन है सरल कर देता हूँ। तो स्मृति को भूल जावें - वर्तमान को ही सुरुयता देना है। काल को कभी संचय नहीं किया जा सकता, परन्तु बुद्धि में

उस काल को मिलाने का पुरुषार्थ चलता रहता है।

काल ऐसा पदार्थ है जो एक समयवर्ती होता है। उसके साथ अतीत-अनागत को जोड़ लेते हैं। वस्तुतः काल कभी जुड़ता नहीं। काल जुड़ जाये तो मात्र वर्तमान की ही प्रतीति फिर अतीत-अनागत की प्रतिती नहीं हो। दो मित्र हैं। बहुत दिन बाद मिले उसी बीच में एक मित्र को डकार आ गयी। डकार समझते हो। [हिचकी] हिचकी अलग होती डकार अलग। अब डकार आने पर 'युं' आज तो खट्टी डकार आ रही है।

मतलब अपेक्षा की दृष्टि से वह स्वाद ले रहा है। इसमें वर्तमान में डकार है- स्वाद भी है लेकिन मूल को स्वीकार करने के लिए बाह्य होना पड़ता है। हमने कहा था- ये मत लो (खाओ) तबियत बिगड़ न जाये (अब भोगो। क्या खाया था? ये प्रश्न उठता है। सही बताओ। खट्टा पदार्थ खाने से ही डकार खट्टी आवें ऐसा एकान्त नहीं। अपच होने से ऐसा हुआ।

स्वास्थ्य को ध्यान में नहीं रखा। मीठी वस्तु भी खट्टी डकार बनकर आने लगी। अब समझने आने लगा? थोड़ा-थोड़ा महाराज। अब दूसरे को भी उसी समय डकार आ गयी। उसके चहरे पर मुस्कान थी। जिसको खट्टी डकार आयी थी वह कहता है- तुम तो मुस्कान ले रहे हो। डकार का राज तो बताओ। उसने कहा- मैंने तुला लिया, मुफ्त मिल रहा था फिर भी ज्यादा नहीं लेना।

बोलो ना !

लौभ में नहीं आना। इंकार आना तो अनिवार्य है। वह एक संदेश भेज रहा है - हमारा भविष्य ठीक नहीं है। दूसरी वाली इंकार - तुम्हारा भविष्य अच्छा है। जो सुधरा हुआ है - इसी आधार पर सामने वाले को भी सुधार सकता है। नया - तुला उपयोग में लाते हैं तो ऐसा हो सकता है। इसी प्रकार शुभ-अशुभ कर्म जो अतीत-अनागत के साथ जुड़ जाते हैं।

कर्मों का जुड़ना तो अनिवार्य है पर हम अपने उपयोग को भी उससे जोड़ लेते हैं। वर्तमान को अतीत - अनागत से जोड़ा था इसी का ये परिणाम है। त्रैकालिक जुड़ना अन्य पदार्थों के साथ जीवन की खराबी अथवा भविष्य में होने वाला पतन (उत्पतन) होता है। बच्चों का एक खेल होता है-पतंग वह हमेशा दूसरे की पतंग नीचे देखना चाहता है। उसकी पतंग गिर गयी, बस हमारे हाथ लगने ही वाली है।

खेल तो खेल होता है। वस्तुतः हमारे इस खेल में क्या अन्तर आने वाला है। इंकार का कारण क्या है? प्रतिसमय में जो कर्म उदय में आते हैं वह उस इंकार की ही तरह है। पेट दर्द के खाली थे - पर संस्कार बाहर आ रहे हैं। पुनः मनचलाल हो जाता है। अतीत के साथ संस्कार - लौभ के कारण पुनः जुड़ जाता है। स्मृति और विस्मृति शुभ - अशुभ कर्म बंध

से कारण बन जाती है।

आचार्य कहते हैं- "हो गया सो हो गया।" पंक्ति पढ़ी थी - रात रही की..... जो रह गया सो करने योग्य कार्य करें। हम लोगों के लिए भी आचार्यों ने यही कहा- हो गया सो हो गया। वर्तमान में यही सोचो / ध्यान रखो - भविष्य में पुनरावर्ति न हो। अतीत में हुआ वह, अनागत भी प्रतीति में आता है। फिल्म की तरह। फिल्म एक बार में एक ही फोटो होती है पर सततता / निरन्तरता के कारण - वेग के कारण हमें चलती हुयी नजर आती है।

एक चित्र अचल होता है, एक चल होता है। चलत क्रम को सिनेमा अचल को फोटो बोलते हैं। तो हम रील न देखकर एक ही चित्र (फोटो) देखें। तो अवश्य ही बोध हो सकता है। स्वरूप को बता सकता है। रील में आने हेतु कम से कम 16 चित्र आवश्यक है ऐसा हमने सुना है। चक्र देखा होगा। एक-दो से चक्र नहीं जब 3 रेखा आमने-सामने तो षट्कोण चार होती अष्टकोण और 8 रेखा खींच देती चक्र बन जाता है। वह घुमता नहीं फिर भी घुमता हुआ नजर आता है।

माथा घुमने लग जाता है।

दृश्य अचल होते हुये भी विचारों में ऐसा ही होता है। आप और हम सब लोग माथा घुमाने वाले ही हैं। वह हमारे लिए मान्य होय बने तो घुमता हुआ भी स्थिर हो सकता है।

चाक घुम रहा है।

उसका एक भी पहलु घुम नहीं रहा खड़ा है। राग-द्वेष से अतीत होने के उपरान्त पदार्थ दिखने पर भी मस्तिष्क में राग-द्वेष नहीं हो तो अचल रहता है। तत्व है ही नहीं यु लगता है। किन्तु हम-तुम उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाते है - अंगुली कट जाती है। सुन रहे हैं। हिओ। हम सब अपने ही दिमाग से अंगुली कटवा रहे हैं। जो देखने योग्य है वह नहीं देख रहें, जो पकड़ने योग्य नहीं उसे पकड़ रहे हैं।

"देखना गलत नहीं - पकड़ना गलत है।" सर्वज्ञ सब देख रहे हैं पर पकड़ नहीं रहे। हम सब पकड़ रहे है ये गलत है। वस्तु को वस्तु रूप जानो, उसे पकड़ो नहीं। पकड़ ऐसी हो की दूसरा देखता रहे। हम दूसरो को पकड़ने में लगे हुये हैं। अतीत-अनागत में ही उलझे है यही उलझन का कारण है। फलस्वरूप कभी खट्टी डकार तो कभी मीठी डकार आती रहती है। महेरी खट्टी होती है किन्तु गर्मी में वो भी खीर का काम करती है।

इसका अर्थ ये है कि हम भी वहीं है - सानी-दथानी भी वहीं है। हमारा मन/उपयोग आपे में नहीं हैं, आप क्या होना चाहते है। उत्तर देओ। हम दूसरे को आपे में लाना चाहते है - वो भी आपको आपे में इसतरह सब आपे में हो जायेंगे महाराज। ये ठीक नहीं हैं। हम ठीक

लगाना चाहते हैं।

हमो! आप स्वयं ठिकाने पर नहीं, दूसरों को क्या ठिकाने लगायेंगे। दुनिया की फिकर लगी है, कोई ठिकाने पर नहीं है। कौन ठिकाने पर है, तो जो दुनिया के चक्कर से ऊपर उठ जाता है वह ठिकाने पर है। क्यों कि उसी का मात्र चित्त ठिकाने पर है। वे प्रभु हैं। वो हमारे चक्कर में नहीं है। आप उस चाक को जो घुम रहा है, उसे पकड़ना नहीं चाहते हैं, तो प्रभु बनने में देर नहीं लगेगी। "प्रभु बनने के लिए मेहनत की जरूरत नहीं है, मात्र समझने की जरूरत है।"

इकार का कारण क्या है? खड़ी इका है तो वैद्य जी कहते हैं- लंघन कर लो - ठीक ठाक हो जायेगा। आप कहते हैं-लंघन करेंगे तो हमारा उल्लंघन हो जायेगा। भगवान तो अनंत कालीन लंघन में आ गये। साहस की आवश्यकता है। एक बार साहस कर लो फिर डर/भय कुछ नहीं। अतीत-अनागत को जोड़ना ही कष्टकारक है। भूलना चाहे तो बहुत अच्छा है। संसार में सार नहीं है- ये विश्वास होता है- तभी अमल में लाता है।

फिर वह शरीर को भी भूल जाता है। जो विषयों में ही लगा रहता है- शरीर को भूलता नहीं उसके लिए अभिशाप का काम कर जाता है। मात्र वस्तु का परिणमन माने / स्वभाव माने तो जल्दी ही प्रभु बनने वाले हैं। इतना ही पर्याप्त है। आप लोग नित्य-अनित्य को जाने। पर्याय-द्रव्य

को पहचानें।

हुए तो हमारे परिवार वाले आ गये (कहाँ से-विदेश से आ गये। दूसरी गति से आ गये तो.... दूसरी गति भी तो विदेश ही है। वे यदि घर में आ जाये तो क्या होगा? उपद्रव बाधा आ गयी। फिर उसे बुलाना नहीं - भूलाना चाहते हैं। वो आ जायेगा तो हमारा व्यवहार ठीक नहीं। वह तो भूत बनकर आ गया। भूल जाना ही ठीक है।

वह कहता है- आप भले ही भूल जाओ - मैं नहीं भूल सकता। आपका ही अतीत है। हम अपने को समझ लें। देश-विदेश की बात भूल जायेंगे, मात्र स्वदेश रह जायेगा। "स्वदेश का मतलब भारत नहीं बस अपने आपको याद करना ही स्वदेश है यही सारे संघर्षों का उपसंहार है।"

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

विशेष -

- लक्ष्मी के साथ साता का उदय सबको नहीं होता केवल पुण्यवान (महापुरुषों) को ही होता है।
- औदारिक शरीर का कोई भी अंग ढाईद्वीप से बाहर नहीं ले जा सकते इसलिए क्षीरसागर में केश-नख का विसर्जन करना ठीक नहीं जमता।
- प्रवचन वही कहलाता है- जिसमें हेय-उपादेय की बात हो। [उत्तर पुराण कथा में]

10-5-18 "मंत्र ही नहीं यंत्र भी शिक्षा देता शांतिधारा का" प्रातः

आप लोग भगवान पर प्रतिदिन अभिषेक करते हैं। चाहे वह चरणों का अभिषेक हो या मस्तकाभिषेक हो। चारों कोनों पर चार कलश स्थापित कर इसे सम्पन्न करते हैं। तत्पश्चात् शान्तिधारा का क्रम आ जाता है। शान्तिधारा के समय आपके सामने एक विशेष बात आ जाती है, वह आपके सामने लाना चाहता हूँ। यद्यपि यह आपको ज्ञात है फिर भी इस दृष्टि से आपको बताना चाहता हूँ।

ज्ञात हो तो सबके पास पहुँचाने का भी पुरुषार्थ करना है ताकि उन्हें भी ज्ञात हो जाये। तो सावधान हो जाते हैं एवं पण्डित जी/प्रतिष्ठाचार्य जी बोलना प्रारम्भ करते हैं। इससे पूर्व वे कहते हैं - कलशी ले लो जिसमें धार आ रही (झारी) बोलते हैं। ध्यान रखना - थोड़ा-थोड़ा ही जल छोड़ना। उस कलशी में टोंटी अलग ही सैफ (आकृति) की होती है। कैसी है? बंदर की पूंछ S आकृति की है। उससे पानी सीधा न जाये।

इसमें बहुत बड़ा रहस्य है। सिद्धान्त है इस कलशी का अन्य कलशीयों में यह व्यवस्था नहीं होती। बूंद-बूंद क्यों छोड़ते हैं - शांतिधारा करने पर शांति तो पूरी चाहते हो। यहाँ तो उल्टा काम हो रहा है। इस सिद्धान्त को समझो। कमाते हो बहुत लेकिन। सुन रहे हो? मतलब की बात तो जल्दी सुन लेते हो। कमाते तो

बड़ो - बड़ो से और दान देते समय बहुत घुलवाते हैं।

कमाते हो तो अपव्यय से बचो यह इलकशी का सिद्धान्त है। इस अपव्यय से बचने के लिए सावधानी की आवश्यकता है। कमाओ बच्चो! किन्तु खर्चा भी वैसा ही। नहीं। अन्यथा अमेरिका की गति हो जायेगी। इसलिये भारत में मंदी आने से पूर्व सोचती है। मंदी नहीं आने में कारण यही शांतिधारा की इलशी है। वह कहती है कभी भी अपव्यय मत करो।

अपव्यय महारोग है, अपव्यय दरिद्रता का कारण है अपव्यय सबसे बड़ा पाप का कारण है। अपव्यय है तो कर्ज होने में देर नहीं लगेगी, बाजार में जाने की हिम्मत नहीं होगी। कहीं कोई उजाले में पहचान न ले, रात में निकलता है। इसलिये ज्यादा खर्च नहीं करना। आने में आनंद होता है किन्तु खर्च होने पर रौद्रध्यान होता है। खर्च की बात सुनते ही A.C. में भी कपने लग जाता है। सर्दी की लहर में भी गर्मी लगने लगती है।

"इसलिये रौद्र ध्यान करने वाला कभी संयमी नहीं बन सकता।" आर्तध्यान वाला फिर भी कथंचित् मुनिमहाराज में भी सम्भव किन्तु रौद्र-ध्यान हो गया तो पद से नीचे आकर पटक देगा, भले ही वेष से दिगम्बर हो। इसलिये आरम्भ-परिग्रह

से बचना चाहिये।

यद्वा-तद्वा खर्च से बचना चाहिये। आते समय संकीर्ण रास्ते से आता है और जाते समय एक साथ चला जा सकता है/जाता है। एक माह का वेतन २०००० है तो खर्चा एक माह में नहीं एक दिन में क्या एक घण्टे में भी कर सकता है। खर्चा कभी भी ज्यादा न हो। "कमाओ ज्यादा - खर्चा सीमित हो हरियाली बनी रहेगी।" इसीतरह धर्मध्यान करते रहो - रौद्रध्यान से बचो। इन सब पूजन सामग्रियों से भी यही शिक्षा मिलती है।

अपव्यय न होने से बचत होगी वह परिस्थिति बिगड़ जाये तो मांगने की जरूरत न पड़े। शांतिधारा की दलशी S (Yes) का प्रतीक है किन्तु अर्थ नकारात्मकता का देती है। खर्च कम करो। उसदोंरी को ऊपर नहीं नीचे लगाते हैं ताकि थोड़ा-थोड़ा आये एकदम से न आये। कर्म भी एकदम नहीं आते बूंद-बूंद करके ही आते हैं। एकदम आ जाये तो पसीना आ जायेगा, बेहोश हो जाओगे।

अपना भाग्य मानो कि उतने तेज अनुभाग में कर्म फल नहीं देता जैसे नरकों में देता है। वहाँ का शरीर वैक्रियिक होता है - औदारिक शरीर में वैसा हो जाये तो जीवित ही नहीं रह सकता है। कर्मों की तेजी को कम करना चाहते हो तो परिस्थ

का परिणाम को कम-कम करते जाओ।

उदय में बूंद-बूंद करके आता है तभी भगवान भजन कर पाओगे। भगवान भजन तभी जब टोंटी के माध्यम से कर्मोदय हो तथा अनुभाग कम हो। बच्चों को सीधा दूध नहीं पिलाते। पानी मिलाकर देने से वह पाचक बन जाता है। कषायों को नियन्त्रण में रखना एवं परिणामों को संभालना अति आवश्यक है। प्रशस्त राग साता बंध का कारण है।

अप्रशस्त/असाता का उदय नियन्त्रण से बाहर होने पर कर्फ्यु की हालत हो जाती है। कर्फ्यु लग जाता है भले ही वह नियन्त्रण में है किन्तु अब एक साथ पब्लिक नहीं जा सकते एक-एक को जाने देते हैं। इसलिये दुकान पर भी जाओ तो शान्तिधारा का वातावरण बना रहे, क्षुब्ध होओगे तो GST लग जायेगी। अब तो धीरे-धीरे GST से अभ्यस्त होते जा रहे हैं।

शुरु-शुरु में लगता है। 1-2 दिन टीवी पहनने में गड़बड़ सा लगा किन्तु अब सब ठिक हो गया। ये ध्यान रखो - "पंचेन्द्रिय विषयों का उपयोग हमेशा पाप बंध में ही कारण होता है।" धर्मध्यान से अमंगलकारी घटना नहीं घटती। इसलिये इस शालिभद्र की कलशी को दिमाग में बनाये रखना। भूल नहीं भी

कोई बात नहीं यंत्र भी काम कर जायेगा।

उस कलशी की ऐसी ही बनावट है। शांतिधारा की बोली चारों कोनों की चारों कलशी से भी अधिक होती है। उसमें भी शान्तिधारा कई तरफ से - इस ओर से अलग - उस ओर से अलग ऊपर से अलग आदि-आदि। ये लोग कितनी शान्ति से सुन रहे हैं। ये बात अलग है-आहार के समय खुब हो-हल्ला करते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमः
11-5-18 "ज्ञान वही जो हित में लगाये" प्रातः

आज आप लोग जो ये फोटो लेते हो, पहले के समय जो फोटो लिया जाता था, वह हटकर था। उसके साथ जो विषय है, उसी को आपके सामने रखना चाहता हूँ। जब फोटो लिया जाता था तो ऐसा प्रबंध रहता था कि ऊपर से लाइट न पड़े। फिर रात में ले लो। नहीं दिन में ही लिया जाता था पर सूर्य प्रकाश न पड़े।

क्यों ठीक है न? तो हमो तो बोल दो। मन से - वचन से - काय से तीनों से करने पर विषय दृढ़ हो जाता है। इसीलिए अब आपके पास निषेधात्मक कॉपी (नेगेटीव) आगयी। इस कॉपी को कोई नहीं खरीदता। 5 रु तो क्या 5 पैसे में भी नहीं। ये तो बोर्डर

लाइन है।

मैं कोई बोर्डर लाइन थोड़े ही हूँ। उसी से आप 50 कॉपी बना सकते हैं। आप ही बनाओ, हमारे लिए तो पोजेटीव चाहिए। जो जैसा है, वैसा ही होना चाहिये। तो फिर पोजेटिव कहाँ बनाया जाता है? एकदम अंधेरा - जहाँ किसी प्रकार का प्रकाश नहीं होता है। किसी का भी दबाव - प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। उसको धोया जाता है। बिना धोये नहीं दे सकते है।

पोजेटीव कभी जब धोते हैं। नेगेटीव को नहीं धोया जाता। नेगेटीव से ही पोजेटीव बनती है किन्तु नेगेटीव का कागज अलग उसे रील बोलते है तथा पोजेटीव का कागज अलग होता है। रील में सिनेमा- (फिल्म) देखते है जब की कागज पर चित्र (फोटो) देखते हैं। फिल्म में जो रील होती है वह पर्दे पर पोजेटीव होकर आती है।

इसका मतलब ये है कि हम अपनी इन्द्रियों को पोजेटीव कॉपी न बनाकर के नेगेटीव कॉपी बनाना सीख ले। भगवान के बिम्ब - गुरु आदि के लिए, दोषों के लिए भी पोजेटीव बना लो ताकि दोषों से बचा जा सके। बाकी सब के के लिए यदि निर्जरा करना

चाहते हो तो नेगेटीव बनायें।

इसी को आगम में दर्शनोपयोग कहते हैं। दर्शनोपयोग भी हमारा ही है। ज्ञानोपयोग में वह कुरूपयोग में चला जाता है। ये हमारा मन चलापन है। ज्ञानोपयोग में फोटो सनशाइट में भी चमक रही है। जिस समय फोटोग्राफी होती थी, उस समय रंगीन फोटो नहीं उस समय तो दिन और रात मतलब Black & White। ऐसा ही है ना?

अब देखो अपने ज्ञान के माध्यम से भी दर्शनोपयोग की तरफ कब जा सकते हैं। तो इसके लिए कोई भी रंग मत डालो। रंग डालते ही कोई न कोई अवगुण होगा अथवा गुण आ जाता है। स्पर्श क्रिया पर ये ठण्डा है या गरम? यह मत सोचो। जिसको आप अपनी भाषा में बोलते हैं - "सरसरी निगाह में"। नोट कैसे गिनते हो? सरसरी निगाह से। उसमें फटा भी हो तो रुक जाते हो।

नोट की बात कर रहे हैं - नोट कर लो। तो कहने का मतलब "जो दुनिया को सरसरी निगाह में ले लेते हैं तो आपसे बढ़कर कोई साधक नहीं।" इस ओर चोटी का विद्वान भी अपनी विद्वता का उपयोग नहीं कर रहा है। इसलिये हम

स्वतंत्र है।

पंचेन्द्रिय के विषय हमारे भीतर नहीं घुस सकते जब तक हमारी अपनी मानसिकता तैयार नहीं होती। समयसार में और कुछ नहीं लिखा तथा और कुछ नहीं रखवा। कुछ है तो येही है। सरसरी निगाह का प्रयोग करो। राग भी नहीं द्वेष भी नहीं होगा। ये कौन है? ये प्रश्न उठते ही चारों ओर देखने लग जाता है। कौन है? ये लिंग में नहीं तो कुछ नहीं।

फिर सर्प भी हो तो क्या? रस्सी होगी। इसी को कहते हैं - सरसरी निगाह। मतलब इसमें इंटेंशन / उपयोग में नहीं लग रहा है। क्या है ये जानना ही नहीं चाहता है। समयसार अथवा अन्य अध्यात्म ग्रन्थों को पढ़कर इस प्रकार विचार करेंगे तभी आगे बढ़ सकते हैं। मोटा हेडये भी बारीकी के साथ जानना - इसे विद्वता की पहचान मानते हैं। हओ! सूइम देखता है तो सही, स्थूल तो कुछ नहीं है, ये मान्यता ठीक नहीं है।

सम्यग्ज्ञान की परिभाषा - जो राग-द्वेष के बिना देखने में आये वही सम्यग्ज्ञान है। आपकी परिभाषा इससे भिन्न होती है। ये भी एक कला है। 72 कलाओं में अपनी पहचान करना कला है। कला 72 पुरुष की, तामें दो सरदार। एक जीव

की जीविका, दूजा आत्मउद्धार।"

जीव उद्धार जो आया वह समयसार की कथा में है। बाकी सब फोकट की बात है, उसका कोई मूल्य नहीं है। ऐसा जो करता है वह मरण की बात ही नहीं करता है। उपयोग में आ रहा है - कोई भी ज्ञान में नहीं लाता है। इस प्रकार दो-तीन उदाहरण के द्वारा समझाया गया है। तब आपको लगेगा हमारा ज्ञान फालतु जैसे है, वह फालतु है पालतु नहीं अर्थात पालने योग्य नहीं है। उसको कोई मूल्य नहीं है।

जिससे अहित नहो वास्तव में वही ज्ञान है। "ज्ञान अहित से बचाने वाला एक उपकरण है।" यदि उससे भी नहीं बच पायेतो संसार में कोई बचाने वाला नहीं है। इसको दर्शनोपयोग बोलते हैं। निराकार होता है। बेहीयों में सिद्ध परमेष्ठी की प्रतिमा देखी होगी। ये तो आकार मात्र है - पोल पट्टी है। पोल है तभी तो पट्टी है। ये ही समयसार है। मात्र ज्ञायक को ही स्वीकारा है।

पोजेटीव नहीं होता। आचार्यों ने ज्ञान को दर्शन के समान बनाने का उपदेश दिया है। दर्शनोपयोग में शांत है - लहर (तरंग) नहीं उठती। निर्विकार होता है। आकार से रहित निराकार में जिज्ञासा नहीं होती। ईहा में जिज्ञासा

नहीं । मान है।

जिज्ञासा को आमंत्रण देते ही राग-द्वेष आदि-आदि हो जाता है। तो आप याद रखेंगे विधीपरक और निषेधपरक (समयसार में इसी ज्ञान की बात है। ज्ञान का दर्शन बनाने पर ही समझ में आयेगा। हमने ये रख दिया - आपको कितना समझ में आया ये आप जानो। अपनी अलग पहचान करना/कराना चाहते हैं यह भी गलत है। हूँ मात्र इतने "मैं हूँ" ये किताब में नहीं है।

महाराज इतने ही होते हैं। "जो बाहर में अच्छा दिखा है वह संसार में है जो भीतर में बैठा हुआ है, वह मोक्ष है।" इसलिये अलग से कुछ नहीं - आँखें बंद कर दो तो अच्छा है। कभी-कभी आप लोग भी कहते हो, महाराज अब आँखें बंद हो जाये तो अच्छा हो (मजबूरी में) अब तो खाने-पीने उठने-बैठने सबमें पीछे हो गये। हमने कमाया और हमारे ही सामने वो लोग खा रहे हैं। हम तो देखते हैं।

इसलिये आप देखो नहीं - दिख जाये तो पूछो नहीं। बूढ़ी को बाद में बुलाते हैं। सब बैठ गये फिर दद्दा को बुला लो। समयसार को जो पढ़ता है वह दद्दा समान हो जाता है - जवान समान नहीं। जवान को तो हाथ में पैसा ही पैसा दिख

रहा है।

अब तो समयसार भी सर्वाधिकार सुरक्षित लिखते हैं। अपने स्वयं पर स्वयं का कोई अधिकार नहीं और समयसार पर सर्वाधिकार सुरक्षित। अधिकार किसका। समयसार में कोई भी अधिकार बीक नहीं कहा। आत्म तत्त्व पर किसी भी अधिकार की आवश्यकता नहीं। "अब सिद्धि हेतु मेहनत नहीं- संवेदन हेतु पुरुषार्थ कर लेना चाहिए।"

निराकार को ही देखें।

"क्या है" कहते ही दुनिया आ जाती है। 'है' के रूप में मात्र संवेदन है। अस्तित्व मात्र को स्वीकारा है। स्त्री हम भी पर भी आ जाते हैं। बाकी सब सिर दर्द है। बहुत सारी चीजें आने पर सिर दर्द होता है। सूर्यनारायण नहीं होता तब तक सिर दर्द नहीं। सूर्यनारायण आते ही सिर दर्द। आधा सिर में दर्द (आधाशीशी) समयसार आधा है क्या? वह तो पूरा है।

इसलिए रात में दर्शनोपयोग में सब शांत। दिन में आते ही ज्ञान ही ज्ञान और सिर दर्द हो गया। वैसे भी रात में आकर बैठ जाये पता नहीं चलता। आप लोग भी दिन की अपेक्षा रात में शान्त रहते हो। हो अर्घ निशा का सन्नाटा.... ये पूजन में ही रह गया। बाकी तो नशा छा जाता है। द्वैत को भूल जायें अद्वैत वाला ही समयसार का पात्र

बन सकता है।

आचार्य कहते हैं बिगड़ रहा है या बन रहा है यह पहचान भी आवश्यक है ही नहीं। वही बंध का कारण होता है। अपने को छोड़कर दूसरे को जानना विकल्प का कारण है। आज कुछ लोग पंचपरमेष्ठी को भी विकल्प मानते हैं। उन्हें अभी ककहरा भी नहीं आता। आत्मा को जानना तो बहुत दूर है। इसके द्वारा ही वह निर्विकल्प हो सकता है।

दर्शनोपयोग को याद रखें। "क्या है" ये मत पूछो। समयसार में अध्यवसान को बंध का कारण माना है परन्तु पंचपरमेष्ठी को याद करना बंध का कारण मानने वाला अभी बालक है। उन्हें और अध्ययन की जरूरत है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

विशेष -

- "प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा" इस सूत्र का अध्ययन प्रत्येक शिक्षा के केन्द्र में होना चाहिए। शिक्षक एवं माता-पिता जान सके की अति भारारोपण क्या होता है एवं बच्चों के किस तरह इनडायरेक्ट में प्राण लिये जा रहे हैं।
- टेंशन वालों को विद्या सिद्ध नहीं हो सकती। मिलिट्री में भी टेंशन वालों की भर्ती नहीं, इसीलिये पहले "हार्टबीट" चैक की जाती है।

12-5-17 "कर्म उसी प्रकार का पर वही नहीं" प्रातः

कई लोगो को यह ज्ञात नहीं होता कि लगातार जिनका जीवन सुख की घड़ियों में ही गुजरता रहता है, जिन्होंने सुख का स्वाद देखा नहीं उनकी ये धारणा है कि एक बार बनते हैं तो बहुत दिनों तक परेशान करते है। कोई बात ही होगी - लम्बी अवधि तक फल मिलेगा। कई लोग जुड़ जायेंगे। हमारी भी ऐसी ही धारणा है। हमने कहा - ये धारणा आपने अपने अनुभव से बनायी।

रवाने में कुछ सामग्री आ रही है, परन्तु जिसके द्वारा वह मिल रहा है, वह विरोध है। कर्म के फल के बारे में प्रायः कर गलत धारणा बनी हुयी है। कहते है - कर्म सता रहा है। जो कर्म एक बार फल देते हैं - वह दोबारा फल नहीं देता है। सुन रहे हो ? एक ही बिमारी कई नामों से जानी जाती है। वह है एक ही रोग अलग-अलग होते हैं। कर्म हमेशा बना रहें यह निश्चित नहीं।

कल आपको उदाहरण दिया था। एक चित्र (फोटो) एवं दूसरा फिल्म (रील) होती है। फिल्म में चित्र है किन्तु उनमें सततता बनी रहती है इसलिये चल चित्र (चलते हुये) दिखता है। पढ़े - लिखो द्वारा भी यदि गलत प्रस्तुतिकरण होगा तो युगेन सभी लोग उनका अनुकरण करने में

लग जाते हैं।

एक बार गलत निर्णय हो जाने पर हमारे प्रवचन अथवा भगवान के दर्शन से भी काम नहीं होने वाला। फिर लोग भगवान को भी यहाँ तक कह देते हैं- आज तक तो है भगवन् (आपही ने किया किन्तु लगता है अब किसी के बहकावे में आ गये हो। आपका मतलब है कि भगवान भी बहकावे में आते हैं। मैं तो सदा आपकी भक्ति करता हूँ, अच्छे ही काम करता हूँ।

इस तरह के दिन देखने में आ रहे हैं लगता है - भगवान द्वारा भी गड़बड़ी तो नहीं हो गयी। सम्यग्दर्शन के साथ कर्म वही है - ये व्याप्ति / नियम नहीं हैं। व्याकरण में एक सूत्र आता है - "प्रकारान्ते धा" मतलब वही नहीं हो सकता है। हाँ उसी प्रकार का हो सकता है। ये अन्तर निकालना चाहिये। प्रतिसमय कर्म फल देकर छूट रहा है, पक्का है।

महाराज ग्रन्थ में तो लिखा नहीं है। सुना हुआ कैसे मानूं? श्रद्धान आपने गलत बना लिया है। तीसरा व्यक्ति भी ऐसी ही धारणा। सुनाने वाले बहुत है - क्या सुनना ये भी महत्वपूर्ण है। उनको सुनाने का वेतन मिलता है। वेतन ले ही कमि हो तो वेतन की क्या आवश्यकता है। वेतन का लोभ हो सकता है, पर

चेतन को नहीं।

उसे तीव्र विश्वास में लाना आवश्यक है। अपनी धारणा गलत बनाना उचित नहीं। मोक्षमार्ग मैंतो बिल्कुल ही गलत है। पहले ही गुरूपदेशात् कहा। अब यहां गुरु ने जैसे कहा- जब कहा- जिस रूप में कहा उसी रूप में स्वीकारना। उसमें रद्दा नहीं करना। आपकी शंका निराधार नहीं किन्तु पहले गुरूपदेशात् स्वीकार करो। कहाँ विरवा कर्म फल देकर झड़ जाते हैं।

पहले आप अपनी धारणा नहीं - अवधारणा बनाइये। चुपचाप बैठ जाइये। पहले से जो धारणा बना रखी है उसे ज्यादा कलेवा मत देओ। उसे उपवास कराओ। धारणा के तुरन्त बाद पारणा नहीं होती। एक - आध उपवास अनिवार्य है। एक पेड़ है - आंगन में। उस पेड़ पर फल लगे हैं। प्रतिदिन वह आंगन में बैठकर देख रहा है। फल मिलने वाले हैं, परन्तु तोड़ने योग्य नहीं हैं।

ध्यान से एक - एक वाक्य सुन लेना। सुनने के उपरान्त - ऐसा ही कहा था, धारणा गलत नहीं बनाना। धारणा गलत बना ली तो हम क्या कर सकते हैं? ये लोग कहते हैं न (एकमेही वाले) हमें आग्रह कर रहे हैं - हाथ जोड़ रहे हैं। वह भगवान को हाथ जोड़ रहा है - आपको नहीं। इसका अर्थ ये है कि अती हो गयी अब रहने दो। कर्म बार - बार गुस्सा नहीं

करता है।

कर्म का नियम है कि मैं दुबारा फल नहीं दूंगा। सभी की छाया पड़ती हो ऐसा नहीं। साधना कर लो फिर केवलज्ञान प्राप्त होते ही छाया का काम नहीं। एक अतिशय होता है। उनके मन में दया भाव है। इतनी जनता आयी है - आजु-बाजु-पीछे सब ओर से दर्शन हो जाये। "परस्परोपग्रहो-जीवानाम्" सभी का कष्ट दूर हो।

"भगवान को कष्ट तब होता है जब उनके कहने के मर्म को समझते हुये भी प्रयोग न किया जावे।" प्रयोग में लाना जरूरी है। बहुत बार सुनने से अच्छा समझ में आना जरूरी है, ये धारणा ठीक नहीं। बहुत बार फेल होने से अच्छा एक बार पास होना, ऐसी धारणा भी ठीक नहीं। तो वह आम डाल पर पक करके गिर गया तो क्या करें? ये सब टपक जायेंगे तो खा ही नहीं पाऊंगा। उसने पुनः जोड़ने की कोशिश की।

वह आम जुड़ा नहीं। आप गोंद से भले ही चिपका दो। एक बार डाल को छोड़ दिया अब पुनः लग नहीं सकता। समयसार में कहा - "पक्के फलं न पडति" एक बार फल पककर गिर गया तो अब पुनः अस्तित्व को प्राप्त नहीं होगा। ये ही समयसार है। दुबारा फूल बनेगा तब फलेगा किन्तु

इसका काल एवं उसका काल भिन्न है।

ये श्रमण को कहा जा रहा है। सुनने वाले के श्रद्धान को मजबूत किया जा रहा है। हमने इतना कर दिया आदि धारणा ठिक नहीं। अपनी ही लेखनी से लिखा है। लेखनी दिमाग में पहले, बाद में लिखा जाता है। चिंतन के बिना लिख नहीं सकते हैं। कर्म का फल निरन्तर मिल रहा है तो वह कर्म एक ही है ऐसा कहना गलत है।

ये उदाहरण समयसार में दिया है - मतलब समयसार इतना सरल है। हमारी समझ - हमारी धारणा हमने अलग बना रखी है। ऐसे में पढ़ना - न पढ़ना बराबर है। एक ही है यह कहना गलत है। जिसको समझ में आ गया - दोबारा बताने की जरूरत ही नहीं। कर्म एक समय में फल, दूसरे समय में दूसरे कर्म फल देते हैं। वह फल कम हो सकता है - अधिक हो सकता है - पहले वाले के बराबर हो सकता है लेकिन फल देने वाला कर्म वही नहीं हो सकता।

"उसी प्रकार का है पर वही नहीं।" भगवान पुनः नहीं आते, आपने जो देखे वो नहीं है - उन्हीं जैसे हैं। भविष्य में अनंत तीर्थंकर उसी नाम के भी होंगे - आप भी हो सकते हैं। क्यों कि शब्द सीमित / संख्यात है व्यक्ति अनंत तो नाम भी वही हो सकता है किन्तु कर्म वही नहीं। दोबारा नहीं बांधे तो फल

नहीं मिलेगा।

कोई दूसरा चिपका नहीं सकता। अपनी ही यह राग-द्वेष की परम्परा अनंत है। आज तक इसीलिये बंध की प्रक्रिया एवं उदय की प्रक्रिया छूटी नहीं। जो होने योग्य नहीं वह अ~~भव्य~~ग की कोटी में आ जाता है। जो होने योग्य है वह भव्य है। एक बार फल देकर गया, अब कर्म पर गुस्सा करने से क्या लाभ? कमजोरी है। एक रोग को दबाने के लिए अनेक रोग आमन्त्रित करते हो। आचार्य कुन्दकुन्द ने आपकी धारणा/भाव प्रणाली जो गलत है उसे सुधारने को कहा।

"पक्कं फल पड़ति" ये आनंदका विषय है। पहले जैसा दुख तो होगा ही नहीं - यही बात प्रकारान्तर से सम्यग्दृष्टि के साथ भी - 70 कोडाकोडी की स्थिति अन्तः कोडाकोडी हो/आसक्ती है। सावधान हो जाइये। बिना पसीना के ये सम्भव नहीं है। सुने-सुनायें, लिखे-लिखायें पर पसीना जरूरी। तिर्यञ्चों के पास भी यह सम्भावना है। कम करते जाओ।

धारणा बनती है - देखा देखी न हो। समय हो गया। डमीनिट ज्यादा ही हो गयी। आप लोगो ने उदारता के साथ दिया तो हमने भी दे दिया। उदारता के साथ सुनना भी साधना है। सुन रहे हो। हुओ। आपको सुनने का अभ्यास हो ये (हुओ) सुनने का अभ्यास हो गये (ये मंत्र हमने नहीं दिया बुंदेलखण्ड का ही है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।नँ

13-5-18 "आओ उठाये सोये सर्प को" प्रातः एक व्यक्ति को बुखार चढना प्रारम्भ हो गया। बुखार चढना क्या होता है? यदि अनुभव नहीं तो बताने का भी अर्थ नहीं। अनुभव होता है तो वह डॉक्टर को बता देता है। रोगी वैद्य की गवेषणा करता है - जैसे छोटा बच्चा सूरज लगने पर माँ के पास पहुँच ही जाता है। जब बुखार चढना प्रारम्भ हुआ तो, वह भूलना प्रारम्भ हो जाता है।

प्रतिभा है - पढा - लिखा भी है पर माथा गरम होने लगा। इच्छा नहीं है तो कोई भी प्रयोग नहीं कर सकते। इच्छा बलवती हो तभी काम में मन लगता है। आप सभी यहाँ क्यों बैठे? इच्छा थी तब आये, नियमावली का पालन करते हुये बैठे हैं। बीच में ही घर की इच्छा होने लगे तो सब पंगत में से उठ नहीं सकते। बोलो। पालन करोगे या नहीं। तो उस व्यक्ति की सुनना - देखना - बजाना कुछ भी इच्छा नहीं क्यों कि माथा फट रहा है।

वह दर्द चला जाये बस रात दिन यही इच्छा है। नींद भी नहीं आती। नींद बड़ी सयानी होती है। जब तक निश्चिंत नहीं होओगे तब तक नींद नहीं आयेगी वह परिक्रमा लगाती रहेगी पर आयेगी नहीं। अब उसे 1-2-3 दिन हो गये। किसी ने कहा ये है - किसी ने ये है। ग्रामीण पद्धति से पता चला कि

ये मियादी बुखार (टाइफाइड) है।

इसे कैसे ठिक करेंगे?

यदि बुखार नॉरमल (सामान्य) के रूप में नहीं आता तो संभव है मियादी बुखार है। पसीना नहीं आ रहा तो संभव है मियादी बुखार है। (इस तरह और भी कुछ आद्य चिन्ह होते हैं। हमने कहा - इनको पसीना लाओ) उससमय खाने की भी इच्छा नहीं रहती। हो कोई बात नहीं खाना भी नहीं है। अब इनको एक प्रयोग बताया गया। (लपेट)

पसीना आ गया। वह उठकर बैठ गया। उसे ऐसा लगा जैसे मानो स्वर्ग से आ रहा हो। वह तनाव मुक्त / टेंशन फ्री हो गया। ऐसा लग रहा है - जैसे मानो था ही नहीं। बिना दवाई के थोड़ा सा प्रयोग करने मात्र से ठीक हो गया। रोग क्या है? पसीना न आना रोग का कारण है। रोग मीटर बैठा है - पसीना आ गया रोग भी पसीने के द्वारा बाहर आ कुछ मात्रा में आ जाता है, ये सिद्धान्त है।

यदि बुखार आता है तो अच्छा मानते हैं अन्यथा बुलाया जाता है। उसमें उभार आ जाता है। जैसे - सर्प को सचेत करने हेतु बीन बजानी प्रारम्भ कर देते हैं इसी तरह बुखार को बुलाते हैं। इसी को आचार्यों ने उद्दीरणा पद्धति कहा है। हम वैद्य ग्रन्थों को भी कम सिद्धान्त में घटित कर लेते हैं। इस उद्दीरणा पद्धति

से ही हमारा कार्य सिद्ध होता है।

सारे के सारे कर्म स्वमुख से ही फल दें, ऐसा नहीं है। "अकाल विपाको उदीरणा" अकाल में उदय में लाना उदीरणा है। कैसे होगा - कैसे होगा चिंता मत कर। कल तो कहा था - एक बार उदय में आने के बाद कर्म दुबारा फल नहीं देते। आप उसे निकाली बाहर। वह नहीं भी आता तो बजाओ बीन - उसे आना पड़ेगा। बस आप पद्मासन लगाकर बैठ जाओ और आँखे बंद कर लो।

कर्म निर्जरा चालु हो जायेगी। 15-20 मिनिट भी नहीं हुआ घुटने में दर्द प्रारम्भ - दद्दा। हिलाना नहीं। रास्ता चालु हो गया। लड़ी पे लड़ी आ रही है। पुरे पैर में ही झुंझूनी हो गयी। हओ। ये प्रतीक है कि आपका कार्य सही से हो रहा है। आप असाता को भगाना चाहते है कि नहीं। कर्मो को काटना चाहते हो तो एक कायोत्सर्ग कर लो। कहा भी है - परिषह एवं उपसर्ग को सहन करने पर निर्जरा होती है। श्रावको के लिए भी यही मार्ग है - रत्नकरण्ड श्रावकाचार में लिखा है।

आप लोग पढ़ते तो है किन्तु प्रयोग नहीं करते। जानता तो है किन्तु दवाई को खाता नहीं, रोग कैसे ठीक होगा? नियम पालन करना शुरु कर दो। उभार दो - अकाल में बुला लो। कर्म की इस अकाल में होने वाली निर्जरा को अविपाक निर्जरा बोलते है। जो बाद में होना

वह पहले ही हो जायेगी।

इस प्रकार देशव्रती - महाव्रती बनते हैं। कुछलोग कुछ नहीं करना चाहते न ऐसे बुखार नहीं उतरता, ध्यान रखना - मोक्षमार्ग में यही प्रक्रिया है। मोह को निकालने की यही प्रक्रिया है। मोह होता है - होने दो, करना नहीं। फिर देखो। दुनिया से विपरित चलना पड़ता है। मार्ग से नहीं। दुनिया से तो मोह है - कैसे अलग होंगे दुनिया से। फोन पर कोन लग रहे हो। हलो - वो देहली यहाँ आये।

देहरी से बोल रहा हूँ। कैसे आओगे? प्लेन से नहीं, बिल्कुल प्लेन आयेंगे। सिद्ध परमेष्ठी से भी बोल सकते हैं। ये तो संसार की बात है। मोक्षमार्ग में संवर - निर्जरा चालु हो जाती है। कहाँ जा रहे हो? "मोक्ष जा रहा हूँ।" ये जवाब होना चाहिये। घर का तो त्याग हो गया है, ब्याज के उपदिन बचे हैं। ज्ञानी जन प्रतिक्षण मोह पर प्रहार करके रुक्षा होते रहते हैं। जो गये हैं उन्हें याद करते हुये अनुभव में लाते रहते हैं।

यही एक मात्र रास्ता है। भलें ही कम चलो किन्तु सही दिशा में चलना महत्वपूर्ण है। प्रयोग हो - पसीना आना चाहिये। पसीना नहीं तो आराम नहीं मिलेगा। सब छोड़कर तो जाना ही है। समय पर पसीना आना स्वस्थ होने की पहचान है। ज्यादा मात्रा में पसीना तो फिर क्षपक श्रेणी मंड जायेगी। यहाँ पर

सब बिमार है।

हमारे पास ऐसे ही आते हैं। आप लोग सुन नहीं पायेंगे। सुनने के लिए भी मजबुती की आवश्यकता है। आहार करके आया, बैठा भी नहीं - पड़ लोग सेना प्रारम्भ। क्या करोगे? मैं भी सोचता हूं - रोने से हल्का हो जाये तो रोने दो। उससे हमारा भी कुछ होता होगा। आचार्यो ने कहा ये भी कर्म निर्जरा का साधन है।

हम देते कुछ भी नहीं फिर भी घुम फिरकर हमारे ही पास आता है। संसार दुःख से भरा है, सुख का कारण है ही नहीं। माथा में दर्द हो जाता है। अभी ज्यादा प्रयोग नही करना। वैद्य जी यदि रोने लग जाये तो ठीक कौन करेगा? अपथ्य नहीं लेना - पसीना लाना ठीक हो जाओगे। गलत प्रयोग से डबल निमोनिया हो जायेगा। उस स्थान एवं उन व्यक्तियों से हमेशा परहेज रखना चाहिये, जिनसे बुखार आता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष - "मंत्र सिद्धि हेतु पूर्व कोटी की जरूरत नहीं, 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त में भी हो सकता है।"

"मासोपवास का नियम ले सकते है किन्तु संलेखना करते समय यम संलेखना का नियम नहीं ले पाते। एक माह बाद रखूंगा यह संकल्प उसकी मानसिकता को बता रहा है।"

इर्यापथ में →

संस्मरण → बात रेनवाल की है। चातुर्मास चल रहा था। अचानक एक घटना घटी सभी अखबारो की मुख्य खबर थी। आचार्य तुलसी का चातुर्मास रायपुर में चल रहा था। वहाँ उनकी किसी पुस्तक में रामचन्द्र जी को धोबी की बात सुन सीता की अग्नि-परीक्षा लेना ऐसा कहा। इससे जनता में बहुत आक्रोश आ गया। पाण्डाल जला दिया। रातो रात चातुर्मास में तुलसी जी को जाना पड़ा।

इसलिये प्रवचन में बोलते समय अथवा सम्पादन करते समय एक-एक शब्द सोच समझकर कहना चाहिये। कई बार सत्य होते हुये भी लोकव्यवहार को ध्यान में रखते हुये ही वाणी का प्रयोग करना चाहिये।

[इसी तरह मूकमाटी की संगोष्ठी के समय भी कुछ विषय उठा था। उसमें एक विषय रखा था - मूकमाटी का कादम्बरी से तुलनात्मक अध्ययन। इसे बदलना पड़ा क्यों कि किसी की कृति को किसी से कमतर बताना उचित नहीं। इससे समाज में क्षोभ की अवस्था उत्पन्न हो सकती है। इसलिये अपनी कृति की प्रशंसा करो पर दूसरे की आलोचना कभी भी मत करो।]

जयोदय महाकाव्य पर संगोष्ठी
14-15 मई 2018
[आचार्य श्री के प्रवचन मुख्य बिन्दु]

14-5-18 प्रथम सत्र प्रातः

o आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज जितने गुरु थे उतने ही लघु भी, उनकी यही लघुता में धारण करता रहता हूँ।
o गुरुजी के सभी महाकाव्य उस मिट्टी (चूने) की दिवार की भाँति है, जिसे जितना घिसेंगे उतनी ही उसमें धार / चमक आयेगी।
o संसारी प्राणी अपने आपको कभी लघु मानता ही नहीं, इसलिए अपने को सदैव दूसरों से श्रेष्ठ मानता है।
o उनके महाकाव्य में कोई गलती ढूंढकर यदि लाल स्याही से चिह्नित कर देता है तो वे उसे तिलक के रूप में स्वीकार करते, यह उनकी सकारात्मकता थी।
o भाग के ऊपर भार करें। उपसर्ग के बिना भाव कभी भी "प्रभाव" नहीं बन सकता। प्र उपसर्ग लगा तभी प्रभाव बना।
o चार वर्णों में एक ब्राह्मण वर्ण है - वह भी उपसर्ग के द्वारा ही बना है। "विप्र" कहते है वि भी उपसर्ग एवं प्र भी उपसर्ग।
o हमारी दृष्टि वस्तुओं की ओर जा रही है, वास्तव में नगनत्व ही आह्वान है - ये गुरु मुख से सुनने को मिला।
o गुरुजी कहते थे जब तक त्रिवर्ग में निष्णात नहीं तब तक मोक्ष की बात ही नहीं। उनका विवाह नहीं - ये हम नहीं समझते, किन्तु तीन पुरुषार्थ में अचूक रूप से हैं।
o अपवाद भी कहीं-कहीं पर अनिवार्य हो जाते हैं।

o गुरुजी कहते थे - अध्ययन में सभी विद्यार्थी हैं पर परीक्षा मेरी भी तुम्हारी भी दोनों की परीक्षा है।
o अपनी गलती को देखो किन्तु हम दूसरों के दोष देखते हैं उन्हें तिल का ताड़ - सरसों का सुमेरु बना देते हैं।
o जिस प्रकार अपनी आँख स्वयं को नहीं देख पाती उसी प्रकार अपनी परीक्षा स्वयं नहीं कर सकते, इसीलिये गुरु को नियुक्त किया जाता है।
o हमारी आंख खुल नहीं पाती। गुरुजी उसे खोलकर सुरमा लगा देते हैं।
o गुरु के स्वरूप का क्या वर्णन करें, उनके स्वरूप से अपने स्वरूप को पा लेते हैं।
o आप मोक्ष प्राप्त करना चाहते हो तो पहले त्याग करो। मुमुक्षु - मुक्ति धातु से बना जो त्याग करने / छोड़ने के अर्थ में आती है। अपने आप कभी नहीं छूटता। अतः मुमुक्षु का अर्थ मुक्तं इच्छु इति मुमुक्षु से भी ज्यादा ठीक जो त्याग करे वह मुमुक्षु होता है।
o सांख्यमत में आत्मा कर्ता-धर्ता नहीं मात्र भोक्ता है, ये बताओ धोती पहनी। लुंगी पहनते तो फिर भी ठीक। धोती में कॉच लगायी वो बुद्धिपूर्वक ही लगायी। इसलिये बुद्धिपूर्वक पहने हो तो बुद्धिपूर्वक ही उतारो।
o ब्राह्मण महोदय! बुद्धिपूर्वक राग किया है, उसे छोड़ना होगा। छोड़ने पर भीतर तक पसीना आता है।
o आत्म तत्व आकाशवत् नग्न है।

o "तत्वं आस" तत्व क्या है? "तत् त्वं असि" वह मात्र आप है।

o जिसके पास सुई भी नहीं, उसका अपने आप ही ध्यान लग जाता है, जिसके पास परिग्रह का अम्बार लगा है उसका कैसे ध्यान लगेगा?

o पितम्बर - श्वेताम्बर - रक्ताम्बर की तरह दिगम्बर हो गये। वास्तव में शरीर से भी रहित हो गये वे अम्बर से भी रहित हो गये। [सिद्ध परमेष्ठी]

o दूध को दही बना देना पर्याप्त नहीं। मंथन करना होगा। ऐसा डंडा जिसमें माखा हो वह भी ऊपर नहीं लाना पड़ता उसी के भीतर घुमता है तब जाकर नवनीत ऊपर तैरने लग जाता है।

o किसी विद्वान ने कहा- मूकमाटी में वेद पर प्रहार हुआ है। हमने कहा - "प्रहार" में भी उपसर्ग लगा है। "पुरुष रूपेण कण्ठाहार:।" भगवान वेद से ऊपर अवेदी हो गये हैं।

o जब तक वेद है तभी तक खटक-पटक होती है। काम को जीतने के लिए वेदातीत होना पड़ता है।

o गुरुजी कहते थे - मोक्षमार्ग में होने वाला उपसर्ग सहन करना शारीरिक भी एवं मानसिक भी।

o विद्याओं से काम नहीं लेना ये सही ब्रह्मचर्य का काम है।

o सरस्वती की सही आराधना कर लो लक्ष्मी तो अपने आप ही आ जायेगी।

o लक्ष्मी को स्वीकार करोगे तो उपसर्ग तो आयेंगे ही।
o ग्रन्थों में साधु के 22 उपसर्ग उसमें भी एक साध्वी के 19 ही बताये जब कि गृहस्थों के 2200 उपसर्ग अर्थात् बहुत सारे उपसर्ग होते ही रहते हैं। इसलिये हम आपसे तो अच्छे है।
o आप्त का एक अर्थ आप्त भी होता है। आप्त मतलब मेहमान - पाउणा भी होता है।
o ऐसे आप्त (ब्राह्मण) जो दक्षिणा लेते नहीं अपने भीतर की निधी खोलकर रख देते हैं।

14-5-18 द्वितीय सत्र मध्याह्न

o आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज की वृद्धावस्था में भी पात्र की गवेषणा रहती थी। जिस प्रकार गाड़ी छुटने वाली है पर यह यात्री छुट न जाये तो ड्राइवर ले संकेत कर देते है गाड़ी थोड़ी सी रोक दो सभी चढ़ जायें उसी प्रकार की भावना गुरुजी की रहती थी चलते-चलते भी चढ़ जायें।
o मेरी एवं गुरुवर की स्थिति उसी प्रकार की थी जैसे एक गवाक्ष (खिड़की) है एक बाहर देख रहा है, दूसरा भीतर की ओर झांक रहा है। वे भीतर होते हुये भी मेरे बारे में सोचते रहते थे। और मैं तो कुछ नहीं।
o वे सदैव मंथन करते रहते थे - एक व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र - सम्पूर्ण विश्व के बारे में भी सोच सकता है, उसका हित कर सकता है।

- मोक्षमार्ग में सोने का काम नहीं, जागने का काम है। लेखक स्वप्न में भी लेखनी चलाता रहता है। स्वप्न में भाइट की कोई आवश्यकता नहीं होती।
- किसी विद्वान ने पूछा - आप लिखते कब है? मैंने कहा - लिखता पहले हूँ - चिंतन में पहले आता है फिर लिखता हूँ।
- उनकी गुरुता कैसी? उदाहरण - 20 किलो दूध है मगोने में नीचे छटांक भर घी है, वह दबायेगा क्या? नहीं, ऊपर आयेगा क्या? नहीं। गरीब होकर भी वे सदैव हमें देते ही रहते थे।
- उनकी धवन्यात्मक शक्ति हमेशा बनी ही रहती थी - व्यंजना ही रहती जैसे - आये बहुत अच्छा पर लेट आये।
- आपका नाम सदैव होठों पर रहे सब काम हो जायेगा।
- अंत में जब कहा आप छोड़कर जा रहे हो कुछ और दे देते, उन्होंने कहा - "विद्याकालेन पच्यते" जल्दी पकाना कृत्रिमता मानी जाती है।
- संयम की भूमिका में निरीक्षण करते रहो। सही पाचन हो रहा है कि नहीं?
- बहुत विलम्बसे भोजन करना एवं अतिभोजन करना दोनों ही गलत है।
- शब्द का उच्चारण किये बिना भी स्व का बोध होता है। ये शब्द अथवा अर्थ से नहीं भावों से होता है।

o शब्द से बोध तभी जब शोध हो।
o जब हम दूसरे को ओब्लिज करते हैं तभी बोझिल लगने लगता है।
o यात्रा करते समय यदि हवा पीछे से आये तो चढ़ाव भी आसानी से चढ़ जाते है - गुरुजी ऐसी ही हवा बनकर मेरे जीवन में आये।
o उन्होंने हवा - दवा और भूआ (स्वभूआ) का कार्य किया।
o उन्होंने राग भी नहीं किया न ही कभी आरेवेलाल की।
o वे कभी बुंदेलखण्ड नहीं आ पाये पर ज्ञान पुराथा उस ओर जाओ - दुकान अच्छी चलेगी।
o बनारस में रस मिले या न मिले उन्होंने तो रस का कूप ही निकाल लिया।
o "संघ को गुरुकुल बना देना" कुल बनाना तो फिर भी ठीक गुरुकुल बनाना आसान नहीं। हम क्या बनायेंगे तो वे ही हमारा तो नाम हो रहा है।
o गर्मी में भी आज भी उनके शब्द नवनीत की तरह काम करते हैं। स्फूर्ति आ रही है।
o गुरुजी पुल की भांति नहीं थे - नाव की भांति थे पुल एक ही जगह रहता है, कहता है मेरे ऊपर से जाओ जबकि नाव आपको किनारे तक ले जाती है और स्वयं भी कूद जाये। मोक्षमार्ग में गुरु ऐसे ही होते हैं।
o सिद्ध न बनें तब तक उनका नामस्मरण पाथेय का काम करें।

15-5-18 तृतीय सत्र प्रातः

o आत्मा किसी दूसरे के क्षेत्र में जाकर फैलाव नहीं अपने ही क्षेत्र में फैलता है जैसे- समुद्र अपनी ही सीमा में रहकर फैलता है।

o एक विद्वान ने पूछा - गला सूख रहा है- क्या पानी पी सकते हैं? आचार्यश्री ने कहा - जब अमृत का प्रबन्ध है तो पानी की क्या जरूरत है।

o पात्र के बिना पानी रुक नहीं सकता और पात्र के बिना प्राणी रुक नहीं सकता।

o आत्मा कभी भी अतिक्रमण नहीं करता अपनी सीमा में ही रहता है। अपने स्व का ही विस्तार करता है।

o मैं अकेला प्रसन्न नहीं सारा जगत प्रसन्न है। रोम-रोम में मिठास है। उदाहरण - गिलास में शक्कर डाली वह नीचे बैठ जाती है, ऊपर फीका नीचे बहुत ज्यादा मीठा हो जाता है किन्तु आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ने गिलास में बताशा डाला ऊपर से नीचे तक घुल गया - जल सम्पूर्ण एक सा मीठा हो गया।

o क्रम धातु के प्रयोग - आत्मा पर अतिक्रम - व्यतिक्रम - आक्रमण हो रहा है थोड़ा प्रतिक्रमण भी किया करो। इसलिये श्रमण कोई भी क्रिया करता है कायोत्सर्ग कर लेता है।

o आचार्य ही समस्या पूर्ति कर सकते हैं। इसीलिये एक अहंकार का नाम ही समस्यापूर्ति रखा है। वे किसी भी शब्द को रखते हैं उसमें कोई न कोई रहस्य होता है। जब समस्या पूर्ति करते हैं तो आह्लाद होता है।

- जो उन्होंने कहा उसमें हाँ जी कहते जाओ। संवेदनशील बनो। हम बैठे-बैठे भी दूसरों के घर में प्रवेश करते रहते हैं।
- प्रकृति से हटने पर ही विकृति प्रवेश करती है यह हमारी संस्कृति नहीं है।
- "आगमः मित्रवत्- आदेश शत्रुवत्" अतः कभी किसी को आदेश मत देओ। आदेश हेतु मात्र आचार्यों को ही नियुक्त किया गया है।
- जो व्याकरण नहीं पढ़ता उसे साहित्य में रस नहीं आयेगा। व्याकरण से वाक्यों में प्रवाह आ जाता है। शब्दों का सही चयन होता चला जाता है, इसी कारण एक के प्रति पूरी दुनिया लट्टू हो जाती है।
- व्याकरण तभी जब कान पकड़कर रटते हैं। ध्यान रखना- बचपन में कानों में छेद किया तभी आज उसमें सोने के कुण्डल लटकते हुये सुशोभित हो रहे हैं।
- आगम को तीर्थ कहा गया है- भव समुद्र से जो तारे वह तीर्थ कहलाता है।
- एक स्वास्थ्य खा नहीं सकते। रोचन क्रिया करोगे तभी जो खाया है वह पचेगा। शमन हेतु भी कहा- रात दिन पढ़ो नहीं दिन में पढ़ो (रात में आँखें बंदकरके रोचन करो) उसमें लालारस घुल जायेगा वह धातु-उपधातु में परिवर्तित हो जायेगा। रोचन क्रिया करने वाले की ही पाचन क्रिया सही रहती है वही स्वस्थ रहता है।

GROU.

- जो छोड़ने योग्य है, उसे ध्यान में रखो फिर ग्रहण करने योग्य लेओ जिससे शरीर आरोग्यवर्धक-पुष्टिवर्धक होता जाता है- रोग निष्कासित होते हैं।
- चिरायु - चिरंजीवी नहीं पूर्ण आयु का आशीर्वाद लेओ। ज्यादा जीना भी नहीं - पहले मरना भी नहीं पूर्ण आयु जीना ठीक है।
- जनता को अपनी बात देना है तो पद्धति बदलना है। बोलने पर तो भुंगडा भी बिक जाते हैं। चौपाल पर चने-मूंगफली मिलते हैं, विद्वान तक खा लेते हैं।
- विश्वास बना लोगे तो आपका ग्राहक कहीं नहीं जायेगा, आपका इंतजार करेगा।
- बच्चों के साथ बच्चे बन जाओ, आप दादा के साथ पड़दादा बन जाते हो। कैसे होगा? बुंदेलखण्ड में दद्दा-दद्दा कहकर काम करते हैं।
- भाषा के लिये व्याकरण है- व्याकरण के लिए भाषा नहीं।
- बहुमूल्य/अनमोल भी मांग कर रहे हो तो पहले कुछ तो त्याग करो/दान करो।
- व्याकरण की महत्ता - रोटी बेलन से ही बने आवश्यक नहीं किन्तु बिना बेलन वह अष्टकोण/नन्दीश्वर का नक्शा बन जायेगी। हाथ में या तो एक तरफ से जल जायेगी या कच्चा रह जायेगी (कच्ची) रोटी गोल बने तो अच्छी सिकती है/फूलती है। व्याकरण वही चन्द्राकार रोटी बनाने का काम करती है।
- कार्यकर्ता उस परोसने वाले की तरह है जो देखता रहता है थाली में क्या है-क्या नहीं है? वह समग्रता से देखता है कोई कमी न रह जाये।

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज का 46 वाँ समाधी - दिवस

18-8-18 "प्रवचन के मुख्य बिन्दु" मध्यान्ह

० अस्तित्व रूपान्तरित हो सकता है समाप्त नहीं होता। मरण किसी का नहीं पर हम मरण सुधार सकते हैं। आत्म तत्व त्रैकालिक सनातन है।

० दूसरे पर प्रश्न चिन्ह लगाने से महाभारत बनता है, हमें भारत बनाना है महाभारत नहीं।

० अपनी प्रतिभा को देखने से पूर्ण भारत हो जाता है - अब नवभारत नहीं पुराना भारत जो प्रतिभा रत था वही चाहिए।

० जयोदय की बात चल रही है पर दयोदय भी होती नहीं चोटी की कृति है - दयोदय।

० भावना सच्ची रखो और अच्छे रखो प्रभावना तो अवश्य होगी।

० गुरुजी हमेशा कहते थे - जगत कल्याण की भावना / लोक कल्याण की भावना रखें।

० भारत यदि अपनी प्रतिभा में रत रहेगा तो उसे पुनः विश्व गुरु मानने से कोई रोक नहीं सकता।

० स्वाश्रित भर रहें - चाहे गृहस्थ हो या श्रमण। गृहस्थ में साथी बना लेते हैं। आप साथ दें तो कई साथी बनने को तैयार हो जायेंगे। अग्नि एवं जल दोनों स्वाश्रित हैं।

० पण्डितों ने दिया दान — हथकरघा हेतु। ना लारव की धोखा की। अग्नी ने कहा - बनारस का वह बालक गमछा बेचकर गर्मी में भी स्वाश्रित रह अध्ययन कर सकता है तो बनारस

के विद्वानों में वे ही संस्कार हो तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात है?

- बहती गंगा और रमता योगी सदा निर्मल बने रहते हैं। बनारस में गंगा रुकी नहीं।
- विद्वान उसमें जल छोड़ रहे हैं, वह गंगा कहती है - मैं तो सागर से मिलने चली जा रही हूँ। ज्ञानसागर जी महाराज को यही इष्ट था।
- उन्हें योगी बनना था - महाधीश नहीं। स्वास्थित बनना था. गमछा बेचकर अपना काम किया।
- प्रतिभास्थली वालों से पूछो - एक टका भी मांगने की जरूरत नहीं पड़ती। क्यों की सभी बहने कृतसंकल्पित हैं। हमें कुछ भी नहीं चाहिए। बच्चों को संस्कारित करना ही हमारा ध्येय है।
- शान्त रस ही तत्व है, अशांति तो पागलपन है।
- आत्मा की शान्ति भंग भ्रान्ति से होती है - क्रान्ति ही होगी शान्ति नहीं आयेगी।
- मजबुरी में करने से लाभ नहीं मिलता - गंगास्नान में 2-3 कलदार गिर गये, बहुत ढूंढा, नहीं मिले तो हे गंगा मैंय्या मैंने तुझे समर्पित किया। यह क्या है?
- विद्वान चोटी में गांठ बांधते हैं - वह ग्रन्थि परिग्रहकी गांठ नहीं वह संकल्प की गांठ होती है।
- आज भी अयाचित वृत्ति वाले ब्राह्मण विद्वान हैं। तभी भारत टिका है अन्यथा महाभारत हो जायेगा।

- तत्व - तत्व की रट मत लगाओ। कण्ठ सुखाने से क्या लाभ उस तत्व की प्राप्ति का उपाय खोजो और प्रयोग में लग जाओ।
- राजवार्तिक में उदाहरण - बिना चारित्र के ज्ञान की कैसी दशा? एक अंधा एवं एक लंगड़ा जलते हुये वन में है, दोनों जल रहे हैं। अंधे की पीठ पर लंगड़ा बैठ गया रास्ता बताता गया। जंगल से बाहर आ गये। दोनों के बिना दोनों ही प्राण खो देते। ज्ञान और चारित्र मिल जाते हैं तो आत्मा पर भरोसा हो जाता है। दोनों मिलू जाये तो पूरे अन्यथा अधूरे।
- सीखने की रुचि/जिज्ञासा हो तो जड़मती भी सुजान हो जाता है।
- मोक्ष मार्ग में चलने से मंजील मिलती है। चले ही नहीं और बातें करते हैं।
- आँखे नहीं तो आँख वालों के साथ चलना सीखो पार हो जावोगे।
- संघर्षमय जीवन का उपसंहार ही हर्षमय होता है।
- पसीना आयेगा तो बुखार रह नहीं सकता, उसे भागना ही पड़ेगा।
- अज्ञान क्या? ईषत् ज्ञानं - विपरितं ज्ञानं वा इति अज्ञानं
- फेंकना नहीं बदलना मात्र है - अपने गलत लक्ष्य से ज्ञान ही अज्ञान, चारित्र ही कषाय एवं धारा मिथ्यात्व रूप हो रही है उसे बदल दो तो वही रत्नत्रय रूप हो जायेगा। इस हेतु बस सीधे चलना है।

o इधर-उधर देखोगे चल नहीं सकोगे। पीछे मुड़कर नहीं देखना। भूतों के पैर पीछे ही होते हैं वे उल्टे चलते हैं।

o गुरुजी कहते थे - आस्था-आस्था होती है, विपत्ति आने पर ज्ञान चिल्लाता है - आस्था झेलती है।

o नेता चिल्लाता है क्यों की न ही हृदय से तथा न ही मस्तिष्क से बोलता है। हमारे सामने हाथ जोड़कर निवेदन करते हैं, महाराज कुछ तो बोलो।

o चलना ही जीवन है। एक ट्रक वाला - बाबा हम तो जा ही रहे हैं, आप बैठ जाइये, पैसा मत देना। हमने कहा टायर फट गया तो आप रुक जायेंगे हमारे पैर में कील तो भी चल रहे हैं। आत्मा सक्रिय है - निष्क्रिय नहीं।

o आज का व्यक्ति सक्रिय होते हुये भी निष्क्रिय हो रहा है। बैठते हैं तो हिलते हैं चलते हैं तो हिलते नहीं (व्यंग्य)

o पक्षी अपने बच्चे के पंख नहीं आते तब तक दाना-पानी लाकर देते हैं, पंख आने को है तो नीचे गिरा देते हैं - कैसे माता पिता हैं? सही किया वह उड़ना सीख जाता है। गुरुजी ने कहा था - चला उड़ जा।

o निष्कर्मा का मतलब सिद्ध परमेष्ठी, वे भी सक्रिय होते हैं निष्क्रिय नहीं।

o बैठे हुये भी अपनी आत्मा में विहार करते रहते हैं।
भ्रमण

o चार व्यक्ति आपको उठायें, उससे पूर्व अपनी यात्रा स्वयं ही प्रारम्भ कर दो।
o ज्ञानार्णव में लिखा है - मुनि महराज की शैय्या शिला - पार्वती मतलब पर्वत की शिला है।
o गुरुजी ने अन्त में कहा जो देना था वह सब दे दिया। समझ में आ गया - गाड़ी में पेट्रोल कब डालते हैं - जब पहले जो भरा है वह खाली हो। खाली तभी जब गाड़ी चलाओगे। पुनः आवश्यक हो तो डालो नहीं तो वा जहाँ है वहीं तीर्थ।
o यदि परिग्रह काम का नहीं तो उसे रखना पागलपन है, दूक खड़ा भी रहेगा - खर्चा मांगेगा।
o पहले के लोग वसीयत मन्दिर के नाम, अब उसे देना है उसी को बुलाओ। उन्होंने अपनी शरीर रूपी गाड़ी को भी समाज को समर्पित कर दी।
o जब काय अत्यन्त क्षीण हो गयी। अब चारों कषाय का भी त्याग कर सिंह वृत्ति की तरह मान पर प्रहार कर उसे प्रमाण बना दिया।
o अब हमें भी तैयारी करना है - अंतिम समय में नहीं हो पाता। अब खोजने का दिन है - खोदने का नहीं। खोजकर खोदना है।
o हम अधिकार पूर्वक कह सकते हैं कि हमारे कंधों पर भार को आप ही संभालो। वे हैं ही नहीं - कौन कहता है? निष्क्रिय हो ही नहीं सकते, वे आज भी सक्रिय हैं। वे गुप्तिगुप्त हैं, सूत्रधार का काम करते हैं। सामने नहीं आते पर कर सब वही रहे हैं।

o हमने पतंग ~~उनके~~ डोर उनके हाथ में दे दी। हमारी तो पतंग मात्र है। हवा तेज तो पतंग भी ऊपर और गिर गयी तो उन्हींका नाम। अच्छी डोर रखें।

o समय के वर्गीकरण अनुसार हमने सभी प्रश्न हल कर दिये। आप कोई भी जाँच लो। नम्बर कम नहीं होना चाहिये। ज्यादा भी नहीं चाहिये। वे कहते हैं- भरोसा रख। एक नं. की माँग भी की तो सर्वार्थसिद्धि में ही अटक जायेगा।

o सभी जीव लौकिक हैं क्यों कि कोई भी जीव लोक के बाहर नहीं जा सकता। इस दृष्टि से हम भी-वे भी सब लौकिक हैं।

o कुछ लोग अधिकारपूर्वक कहने लगे हैं- हमें रास्तों की जरूरत नहीं है..... चरणों के निशां मिल गये हैं। उनसे कहना है कि पहले निशान को पहचान लेना, पशुओं के भी मनुष्य जैसे निशान बन जाते हैं। फिर दिशा की ओर देखने से ही निशां मिलते हैं।

o हँसकर गलती बता देना- आज संबोधना का दिन था, आप लोगोंको इतना समय नहीं लेना था। मैं दूर बैठा था, आप लोगों को ध्यान रखना चाहिये था। अड़ोस-पड़ोस का भी ध्यान रखा करो।

16-5-18 "चौके में घुसें नहीं - प्रवेश करो" प्रातः

- समवशरण में सब व्यवस्थित रहते हैं, क्यों की वहाँ 12 सभा की संख्या निश्चित है - संख्यात ही होते हैं पर यहाँ की संख्या Fix नहीं, इसीलिये प्रबंधकों की व्यवस्था डगमगा जाती है।
- वि उपसर्ग पूर्वक अवस्था का नाम है - व्यवस्था। विशेष रूप से गतिविधी करने की अवस्था का नाम व्यवस्था है।
- महिलायें - कमजोर व्यक्ति - छोटे बच्चें यदि हमारे निमित्त से भीड़ में गिर जायेंगे तो क्या होगा? हमारा जब आना - जाना होता है तब कुछ भी हो गया तो जिम्मेदार कौन होगा?
- व्यवस्था हेतु टोपी पहनी गयी सभी यदि टोपी वाले हो गये तो व्यवस्था कैसे होगी।
- सबसे ज्यादा अव्यवस्था होती है पड़गाहन के समय - सीधे भागकर अन्दर चुपचाप बैठ जाते हैं चौके वाले को घुसने ही नहीं देते। सृजन - अभिषेक कौन करेगा? विवेक रखना जरूरी है।
- एक सज्जन ने आकर कहा - महाराज हमें घुसने ही नहीं देते। हमने कहा - चौके में घुसा नहीं जाता - प्रवेश किया जाता है। पुछकर प्रवेश करो। मना कर दिया तो प्रवेश न करें। नवधा भक्ति के साथ विवेक होना बहुत जरूरी है।

o रोज नये - नये व्यक्ति आते हैं अतः आज ये बात सबको बता देना। यहाँ तो पहली बार कहा है। समुद्र में जैसे नदियाँ चारों ओर से प्रवेश करती हैं वैसे चौके में घुस जाते हैं। यह ठीक नहीं।

o आहार देखने वालों का भी ध्यान रखो। जो दे नहीं पा रहा उसे देखकर भी पुण्य का अवसर प्राप्त होने दो।

o एक व्यक्ति प्रतिमा थेली गया - मात्र भोजनशाला देखने। 30 मिनिट में 800-900 व्यक्ति भोजन कर लेना और ऐसा लगना की यहाँ कुछ था ही नहीं। एक-दूसरे के सहयोग से ही ये हो सकता है। शिक्षा लेनी चाहिए।

o आपकी कितनी गलतीयाँ हैं - सोचकर सोचोगे तो मालुम पड़ जायेगा - पैर धोकर ही प्रवेश करें - चुलने वाला पैर धोता ही नहीं। शुद्धि में रहता ही नहीं। बर्तन आदि गिर सकता है।

o साधु का निरन्तराय आहार कराने वाला दाता भी कम पुण्यशाली नहीं होता अतः जिनका चौका खाली जाता है वह उन्हें अपने चौके में आहार हेतु निमन्त्रण देकर पुण्य कमा सकता है। उदाहरण - 700 मुनिराजों पर उपसर्ग हुआ। आचार्यवर ने कहा जिनके यहाँ आहार हुये उन्हें अपने घर बुलाकर आप भी पुण्य के भागी बन सकते हैं।

o आप और-और त्यागी-तपस्वी बनो जिससे आपकी यह शिकायत दूर हो। अन्यथा छिना-झपटी तो होगी ही।

o जैसे- दशासइण-ऋतों में हरियाली का त्याग तो सब्जी कोई खरीदता नहीं एवम् दो एक साथ सभी लोग पहुँचते हैं। अब पुनः हरियाली आ गयी। छिना-झपटी तो होगी ही।

o दुर्लभ चीज एक प्रकार से दुर्लभ ही रही है।

o बंदर-कुक्कुट-नेवला-साप-भैंस भी लोभान्वित हो सकते है तो आप क्यों नहीं। विवेक का इस्तेमाल (उपयोग) करो।

o जैसे परीक्षा में सब कुछ भूल जाते हैं उसी प्रकार उस समय सब कुछ भूल जाते हैं।

o चलते समय पैर घुमा कहाँ तक उचित है। पैर घुमा तो ठीक पर पैर पकड़ना तो बिल्कुल ही गलत है।

o सभी तक यह बात पहुँचा दो कि चौके में घुसना नहीं- विधीवत् प्रवेश करो।

o मुनि तीन स्थानों का निरीक्षण करते हैं- स्वयं खड़े हो वह स्थान, पात्र जहाँ रखा हो वह स्थान, दाता जहाँ खड़ा हो वह स्थान इसमें यदि नं. दे तो ½ नं. भी नहीं मिलेगा। जो दया करने वाले होंगे वे भी नहीं दे पायेंगे।

o नीचे देखकर चलें। अगले चींटी आदि पर पांव पड़ जाये तो यह

आहार लेने योग्य नहीं हैं।

- हमारी बातका बुरा तो नहीं लग रहा - बुरा लगेगा तभी बुरा (मीठा) बनेगा।
- अजीर्ण को हटाने के लिए कड़वी दवा देना अनिवार्य है। शेज नहीं कभी-कभी ही देते हैं यह गोली।

विशेष - "इस प्रवचन पंचकल्याणक में आहारचर्या के समय (केवलज्ञान की प्रातः) कई बार दिया है। वहाँ से भी देखकर परिवर्तन लाने का प्रयास करें।"

17-5-18 प्रातः

- मोक्षमार्ग में भी उलझन हो सकती है पर गृहस्थ में तो उलझनों की संख्या ही नहीं। इसलिये जिसमें कम उलझन हो उसको स्वीकार करना बुद्धिमानी कहलाती है।
- युक्ति एवं समझदारी से व्यक्ति बन जाता है। वह उलझन को सुलझन में बदलना जानता है। दूसरे वैमनस्य रखें तो वह क्या कर सकता है?
- उदाहरण - चींटी की सहायता से एक टेढ़ी-मेढ़ी नली में शक्कर/गुड़ की बासनी लगा देने से धागे को इस छोर से उस छोर तक खींच देना, इसी प्रकार आत्मा को प्राप्त करना चाहते हैं तो अन्य पदार्थ से अपने को हटा लें।

[प्रवचन आगे है]

17-5-18 "रास्ता सुलझने का" प्रातः

एक व्यक्ति युक्ति से समझदारी से अपने जीवन में काम लेता था और उसकी उस बुद्धि की इर्ष्या कई व्यक्तियों के सामने थी। इससे ये मेरे से आगे नहीं बढ़ जायेंगे उसका ऐसा चिन्तन था। चिन्तन तो सामान्य जनता भी करती है, लेकिन कोई भी उलझन हो उसे सुलझाया जा सकता है। मोक्षमार्ग में भी उलझने लगती है पर गृहस्थ में कितनी उलझने होती है, संख्या ही नहीं है। इसलिये जो कम हो उसे स्वीकार करते है।

बहुत की अपेक्षा एक पैसा कम देना पड़े योग्य कम है। उस व्यक्ति को जीतने के लिए कहा गया। ध्यान रखो- ये एक नली 4-5 फीट की है सीधी नहीं (ppppp) टेढ़ी-मेढ़ी है इसमें इस धागे को जल्दी से घुसाना है। जल्दी कैसे? कुछ समय तो लगेगा वह कहता है। हाँ! आपके सामने ही हो जायेगा) मुझे कुछ गुड़ अथवा शक्कर की चासनी ला दो। खाऊँगा नहीं। जैसे ही लाकर दिया चींटिया आ गयी। वे बिल में घुस जाती है - उस छोर पर पहुँच जाती है, ये लो। आप सुन रहे हो हँसो]

दुनिया में आप इससे भी बड़े-बड़े कार्य करते हो और हमारे सामने आकर कहते हैं महाराज! उलझे हुये हैं। मोक्षमार्ग में उलझन है ही नहीं। अचानक रोग हो जाता है। सुबह से शाम तक कराहते रहते है। डा० कहता है - आप कुछ खा नहीं सकते। [लाइट गयी] ये भी बहुत बड़ी बिमारी है।

देखो आप माइक खरीद सकते हो, वायर ला सकते हो, नट-बोल्ट, भौंपू-चूंगा सभी खरीद सकते हो, स्पेशल एक और एन्टेना रख सकते हो किन्तु करंट को खरीद नहीं सकते। लोग कहते हैं- हमने लाइट फिटिंग करायी। हमने लाइट फीटिंग आज तक कहीं भी नहीं देखी। वायर फीटिंग हो सकती है लाइट/करंट फिटिंग नहीं। हमारी आत्मा उसी लाइट करंट की भांति है। वो ही मात्र हमारी है, बाकी दुनिया की सारी चीजें हमारी नहीं।

अपनी आत्मा को करंट दार रखो। कोई सुने या न सुने आप सुनते जाओ। आत्मा की गवेषणा करना चाहते हैं तो बाहरी पदार्थ में मत जाओ। जो भी दिख रहा है वह बाहरी है। उसमें उलझ जाते हैं। करंट भीतर है, पावरफुल है शक्ति सम्पन्न है। उससे परिचित न होने से लगता है हमें तो प्राप्त नहीं होगी, ऐसी धारणा बना रखी है आपने। वह चींटी कितनी समझदार है। कुछ सेकेण्ड में ही काम हो गया।

आप उस धागे को पोना चाहो तो कितने दिन लगा देंगे। आत्मा को प्राप्त करना चाहते हैं तो अन्य पदार्थ से अपने को हटा लो, सब ठीक हो जायेगा। करंट नहीं थी उस समय भी सुनते थे। 2-3 सुन लेते थे सबको बता देते थे, हजारों व्यक्ति लाभान्वित हो जाते हैं। एक-दूसरे के लिए करते हैं इसी को परस्परोपग्रहो जीवानाम् कहते हैं। आपको सुनने को मिल गया, उसी को सुनाते

जाओ।

ऐसा नहीं कि उसकी भी कॉपी राइट रख लो। ये सब उलझन है। आत्मा में कोई उलझन नहीं। लोग कहते हैं - महाराज आप ही हमारी उलझन को सुलझा सकते हो, क्योंकी आपके पास ही विद्या है - औरो के पास विद्या है ही नहीं। उलझन को सुलझन में कैसे बदले? आपकी समस्या यही है न? सुनो! उलझन में चार अक्षर है - उ ल झ न। और सुलझन मे भी चार अक्षर है - सु ल झ न। अब सुलझन का स निकालकर उलझन के उ में मिला दो।

स में उ मिलाते है तो सु हो जाता है - "व्यंजन मस्वरं परवर्णं नयेत्"। ये स है समता का। विषमता को छोड़ दो समता को अपना लो अपने आप ही सारी की सारी उलझने सुलझ जायेगी। जिसमें उलझे हो उसी को छोड़ दो। उसे सुलझाने की कोशिश करोगे उतना ही और उलझते चले जायेंगे। सातवीं कक्षा में जब पढते थे तो सूतली के माध्यम से तकली का खेल खेलते थे।

अब वह तकली के माध्यम से उलझ गयी। इधर खेंचा तो और उलझ गयी। दूसरी जो सुलझी हुयी है उसे लपेटकर दे दो। बस यही कह रहा हूँ घर में उलझन है तो घर को छोड़ दो। इतना ही तो करना है। घर के सदस्यों से कह दो। ऐसे

निर्णय जो लेते हैं- वे ही भगवान बनते हैं।

यदि भगवान बनना है तो हमारी इस उलझन की बात को ले लो। समता का रस अपने पास रखो आपकी उलझन - सुलझन में बदल जायेगी। इसी का नाम ज्ञान है। इसी आस्था को लेकर चलना प्रारम्भ कर दो। दुनिया में सारे के सारे समझदार हैं, परन्तु फिर भी उलझे हुये हैं। सुन रहे हैं न। (हाँ जी)

प्रबन्धकारिणी कमेटी कहती है हम तो सुलझे हुये हैं। दुनिया उलझी हुयी है तो कमेटी को भी उलझा सकती है। शान्ति से काम लेओ। उलझनों से दूर रहकर काम करो। यह टेड़ा काम नहीं - टेड़ा जैसा लगता है। वो चींटी सीधी ही चली गयी। रास्ता मोड़ वाला था पर पैर तो सीधे ही पड़ने चाहिये। कहते हैं न नाच न जाने आंगन टेड़ा। पैर भी टेड़े बना दो - नाचने लग जाओगे। नृत्य में और कुछ नहीं - हाथ एवं पाँवों को सीधा न रखकर तिरछा (टेड़ा) रखा जाता है।

चाहे भरत नाट्यम हो या बाहुबली नाट्यम। बाहुबली को नचाया थे ही तो बाहुबली नाट्यम है। भरत ने जैसे ही क्षमा मांगी - मुक्त हो गये। सभी भयवान हैं - अभय ही भय से मुक्ति दिला सकता है। वैरागी अपने आपको बचाता है, वही सुलझन का कारण है। एक सुलझा हुआ हजारों को सुलझा सकता है। उलझन वर्षों की हो सकती है सुलझन तो एक सेकेण्ड की है।

अहिंसा परमो धर्मकी जय।

18-5-18 "काया को नहीं कायस्थ को देखो" प्रातः [आचार्य श्री 108 वसुनंदी महाराज का ससंघ मिलन हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में सुभाषितरत्नसंदोह की एक कारिका से आत्म उत्थान की बात कही। वैराग्य, साधु समागम, दुर्जन संगति त्याग एवं देव पूजा इन चार से हम जीवन में हमेशा आगे ही बढ़ते जायेंगे।] आज की

उस गाथा कि अथवा उस मित्र की प्रशंसा तब तक मत करो जब तक कि जो भोजन आपको कराया है वह पच न जाय। अन्यथा अधुरा काम हो जायेगा। उस नारी की प्रशंसा भले ही सतीव्रता हो पर तब तक न करो जब तक की वह वृद्धा न हो जाय। राजा की प्रशंसा तब तक नहीं जब तक कि विजय श्री की प्राप्ति न हो जाये। ये तो लौकिक बात हो गयी इसी प्रकार साधु की प्रशंसा जब तक न करें जब तक कि पार न हो। बीच में ही इसे ध्यान में रहे, इसलिये (ताकि) जो पार गये हैं, उन्हें याद रख सकें।

ये तो मन का मनचलापन है। यदि वितरागी पंचपरमेष्ठी का ध्यान रखेंगे तो सब शान्त हो जाता है। पंचपरमेष्ठी के स्मरण मात्र से ही हम उस पार हो जाते हैं। पार होने के पहले द्वार की भी बात की गयी। निश्चय की ही नहीं व्यवहार की भी बात किया करो। वह व्यवहार जो निश्चय के लिए अनिवार्य बताया। आचार्यों ने बार-बार उसओर

ध्यान लगाने को कहा।

स्वयं ने भी उस व्यवहार को बार-बार स्मरण किया। वो जानते थे कि ये बाद में आकर रोयेगा। पैर पकड़ने वाले तो बहुत होते हैं- कान पकड़ने वाला कोई नहीं। सही कह रहा हूँ। (ओ) बहुत कठीन होता है समझना और उससे भी ज्यादा कठीन है समझाना। मान लो कान पकड़ने वाले स्वर्गवासी हो गये, अब याद करते रहो। न ही कान- न ही पैर पकड़ पाते हैं- बहुत सोचता हूँ।

संसारी प्राणी वैराग्य का वातावरण मिलने पर भी राग की ही गंध पकड़ लेता है। कितने सुन्दर है "काया को ही पकड़ रहा है, कायस्थ को नहीं देखता।" (जो रत्नत्रय से विभुषित है उसे देख ही नहीं पाता। जो भीतर से वितरागी है उन्हें देखने हेतु भीतरी आँख खोलने की आवश्यकता है। भीतर अंधकार और बाहर प्रकाश उसकी आँख नहीं खुल सकती। ये बाहर की आँखे तभी सहयोग कर पाती है जब आत्मा की आँखे खुली हो।

नग्नकाया को देखकर जो अनात्मा वाला है वह हँसी का पात्र बनायेगा जब कि आत्मा वाले को उसमे वितरागता की छवि झलकती है। एक वितरागता के बिना है- पूरा वितरागता के साथ है। प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह वितरागता की पहचान

हमें ~~मिलेगा~~ के।

मिला है तो उसे और-और आगे कर सके। रत्नत्रय का लाभ होना दुर्लभ है, उससे भी ज्यादा दुर्लभ उस ~~अपनाये गये~~ मार्ग का पालन करना। अन्तिम श्वास तक उसे श्रेष्ठ मानते हुये रहना। एक संत ने यह कह दिया, आपको भी याद रखना है - जब तक संसार से मुक्त नहीं होते आप कहीं भी जाओ आपको बहुमुल्य वस्तुओं का ही योग मिलेगा। मिलने के उपरान्त भी उनको पकड़ना नहीं है।

वह प्रभु से यही प्रार्थना योग करता है कि हेप्रभु! जीवन के आदि से अंत तक यह आपकी पूजा-स्तुति-भक्ति करते हुये आया है। मैं उसका कोई भी फल नहीं चाहता फिर भी आपके चरणों में विनती है कि जब जाने की बारी आये तो मेरा कण्ठ आपका नामस्मरण करता हुआ जाये वह अवरुद्ध न हो। यह भावना रखता है जो भी फल मिले इसी रूप में मिले।

ऐसा आचार्य पूज्यपाद की भक्तियों के अलावा समाधी भक्ति में संकलित की रिका के रूप में आयी है। आबाल्या जिनदेव.....। संकलित इसलिये कह रहा हूँ कि यह १० भक्ति में नहीं किन्तु समाधी की चाह हमेशा रखनी चाहिये। इसका दूसरा नाम प्रिय भक्ति भी है। अन्य भक्ति में जो दोष रह गये,

वे सब इस भक्ति के द्वारा दूर हो। ऐसा इसमें कहा गया।

यह मत समझो की मृत्यु बहुत दूर है। अभी तो बहुत जीना है यह गलत धारणा है। भजनकार कहते है- अरे रसनी अंत समय मे हीली न हीली। रसना इन्द्रिय हमेशा स्वाद ढूंढने मे ही लगी रहती है या फिर इधर उधर की बातें बोलती है। ज्ञानकार कहते है इसलिये तू भजन करले, प्रभु का नाम-स्मरण करले। कई लोगो को देखा है- भैय्या तो कहता है पर भगवन् नहीं कहता। जब कि दोनो मे अक्षर उतने ही है।

मुख से भगवन् बोलेगा तो असंख्यात कर्मो की निर्जरा करलेगा। भैया से रुपया- पैसा, सोना-चांदी मिलेगा बस। परिवार से जितना कम राग होगा उतना ही अच्छा है। जितने जितना ज्यादा राग होता है, उसे भूलाना है। यह मूल बात है। पंच परमेष्ठी से हमारा संबंध कितना होता है। सही बताओ स्वप्न में कितनी पूजन-भक्ति-आरती करते हो। स्वप्न में भगवान कितनीबार आये।

बुलालेंगे तो भी नहीं आते। वे वितरागी है और आप रागी। हाँ वे आते है भक्ति के द्वारा आपकी स्मृति में आ जाते है। सारे स्वप्न साकार नहीं होते। कुछ शारीरिक विकार से भी स्वप्न आते है, वे प्राकृतिक नहीं है। इस प्रकार के शुभ स्वप्न जो देखता है वह आसन्न

भव्य होता है।

आज प्रभु के सामने दिन में भी एकाग्रता नहीं हो पाती तो फिर हो अर्ध निशा का सन्नाटा..... स्कूल में तो पंचेन्द्रिय के विषय और-और याद आते है। दिन में आप उसी में लगे रहेंगे - रात में भी वही याद आयेगा। सबकी एकही दशा है। प्रभु का गुणानुवाद करें शेष समय में भी उन्हीं का ध्यान तब कहीं जाकर वे स्वप्न भी ध्यान मे आ जाते है।

प्राणों का जब निकलना हो, तब "णमो अरहंताणं" इतना कण्ठ से निकले प्रत्येक साधक यही भावना भाता है। प्राणों को जाना है - हमें कहीं नहीं जाना। अंत में ऐसा समरस होने के लिये बहुत पुण्य की जरूरत है। एक स्थान पर लिखा - शायद भगवती आराधना में - "श्रुतकेवली जी" श्रुतकेवली के समान है उनके लिये भी यह दुर्लभ है। श्रपक को संबोधन किया जा रहा है।

कितना भी कमा लो, यह कमाई बहुत दुर्लभ है। कामधेनु - चिंतामणी का पाना सरल है किन्तु संलेखना - समाधी का होना आसान नहीं। उसी परीक्षा मे सफल होना है। अभी श्लोक पढा - उसके चार मे से तीन चरण तो ठिक है चौथे को याद नहीं रखना क्यों कि जबतक पार न हो जायें तब तक प्रसन्नता नहीं सुनना चाहिये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

19-5-18 "मृत्यु से भागे नहीं-जागे" — प्रातः

घोड़े के ऊपर सवार होकर आये हो अब तो घोड़े से नीचे उतर जाओ। प्रतिदिन कहना पड़ता है। आप खड़े रहेंगे तो जो अन्य बैठे हैं उन्हें दर्शन कैसे होंगे? सुनो! एक तो परवश होकर के भूख-प्यास सहन करना। जितने भी देव हैं - जितने भी नारकी हैं। देवों को बाद में समझेंगे। प्रथम नरक से सातवें नरक अर्थात् नारकी निवास करते हैं। वहाँ सागरोपम आयु तक युं ही भूखे-प्यासे रहना पड़ता है/रहते हैं।

और आप भूख से पूर्व ही प्रबन्ध करके रखते हो। एक बार कई बार खा जाते हैं। आपकी वह क्षुधा मिटाने के लिए होती है। नारकी भी क्षुधा मिटाना चाहता है पर मिटती नहीं है। ऐसी प्यास जो सिन्धु का नीर भी पी ले तो भी नहीं मिटे ऐसी प्यास, फिर भी उनको एक बूंद भी नसीब नहीं होती। तथा सुमेरु के बराबर अन्न खा ले तो भी क्षुधा शान्त नहीं फिर भी एक कण भी नहीं मिलता। देवों के भी यही हाल है।

देव अपनी आयु के बराबर वर्षों में श्वास्-उच्छ्वास और उतने ही हजार वर्षों में आहार लेते है। वे आपकी तरह केवलाहार नहीं करते। उनके कण्ठ में अमृत रहता है, बस आहार संज्ञा होते ही झर जाता है। वे अपनी मानसिक क्षुधा का निवारण करते हैं।

उस काल के बाद भूख/प्यास लगेगी।

बीच में निवारण करने की इच्छा नहीं होती है। इच्छा नहीं होती पर उसका त्याग भी नहीं कर सकते हैं। आप लोग बुद्धिपूर्वक त्याग कर देते हैं, इसलिए उनसे अधिक कर्म निर्जरा होती है। आपका बुद्धिपूर्वक त्याग करने के उपरान्त यदि किसी को परोसना है तो परोस भी देते हैं, परन्तु आपको खाने-पीने की इच्छा नहीं है। भूख का लग जाना इच्छा नहीं। भूख का निवारण करना इच्छा का निवारण है।

इसलिए सदैव तप इच्छापूर्वक किया जाता है तभी निर्जरा होती है। और उ उ सागर तक एक बूंद-एक दाना भी नहीं, इच्छा है क्या गति/दशा होती होगी। मन वचन काय पूर्वक ग्रहण नहीं करना त्याग कर देना अकाम निर्जरा होती है। खाने की जरूरत है पर इच्छा नहीं करूंगा। त्याग करने के बाद हो सकता है एक घण्टे अथवा एक सेकेण्ड में भी मरण हो सकता है। वे ही भक्त प्रत्याख्यान के अधिकारी माने जाते हैं।

प्रायोपगमन में जब तक मरण नहीं तब तक का त्याग। मरण के बाद ग्रहण की बात ही नहीं। देह से भिन्न जिनकी आत्म श्रद्धा दृढ़ होती है, ये सब वे ही विरले महापुरुष कर पाते हैं। इसे समाधी मरण

कहते हैं।

ये ध्यान रखना समाधीमरण आत्म हत्या नहीं है। मात्र मरण की इच्छा संलेखना नहीं। अब शरीर अपना काम नहीं कर रहा, स्वयं के लिये ही भार होगया तब वह आर्तध्यान का त्यागकर धर्मध्यान को अंगीकार करता है। वेदना को सहन करने हेतु हमेशा तैयार रहता है। कड़वट की हिम्मत नहीं फिर भी धृष्टिपूर्वक पिण्डी हेतु कहता है। उपचारक उसकी इस सजगता का पालन करते हैं। पीठ आदि में फोले हो जाते हैं, उन्हे सहन करता रहता है।

ये सब आत्म विश्वास के बल पर सहज है। शरीर में शक्ति नहीं पर आत्मा की शक्ति ऐसी ही रहती है। जैसे किसी को सन्निपात हो जाने पर एक दुबला-पतला व्यक्ति भी 7-8 लोगो के वश में नहीं आता उसी तरह एक साधक भी अपनी आत्मा की शक्ति का उपयोग करता है। उस शक्ति के माध्यम से मृत्यु को आह्वान करता है- अत्र-अत्र, तिष्ठ-तिष्ठ, सन्निहितो करणं/संवोषट्...।

हे मृत्युराज! आपका स्वागत है। आप स्वागत तो दूर उससे विपरीत दिशा में भागने लग जाते हैं/वह मृत्यु सामने आकर खड़ी हो जाती है। जल-थल-अग्नि-आकाश-पाताल कहीं भी चले जाओ वह सामने खड़ा मिलती है, जैसे आपही का वारंट लेके आयी

हो। वह कहती है Well-Come, Well-Go।
दीपक कहता है आपके आने की क्या जरूरत मैं एक समय भी फालतु नहीं करूंगा। मुक्ति की चाह है-आ जाये यहाँ पर। 8-परदिन पूर्व भी कहा था। मोक्षु इच्छा मुमुक्षु। कार्य के प्रति जो मोह है उसका उत्सर्जन / विसर्जना करना है। फिर मोह की कोई बात ही नहीं है। वह मृत्यु से डरता नहीं, आना चाहे जब आ जाये। रात में आये चाहे दिन में आये। यह इच्छा का निरोध है। तप का निर्दोष पालन है। आपकी परीक्षा हो हो रही है। पंखे-कूलर भी फैल-उनसे भी लू लगने लगी। कूलर भी फूल रहे हैं क्यों कि प्राणवायु ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।
ऐसे में अपने भीतर झांककर देखो। आपको अनुभव में आने लगेगा। "अपने अपने कर्मों का फल भोगे संसार, एक खस टट्टी सींचता, एक ले रहा बहार।" [प्रसाद सागर जी- 9 तपा आने वाले हैं] मुनि-महाराज के 9 तप नहीं 12 तप होते हैं जो हमेशा रहते हैं। बुंदेलखण्ड में तो 9 तपा का विशेष महत्व है। तपा के बाद ही तो झला-झला के झला।
संसेरखना के बाद भी झलाके झला, झला के झला। अब अनंतकाल के लिये तपा समाप्त। ऐसा सौभाग्य जिनके भव सीमित रह गये हैं उन्हे ही प्राप्त होता है। फिर भवातीत होने में

समय नहीं लगता है।

जैसे - पहलवान अपने प्रतिपक्षी को ताल ठोककर, मिट्टी को कुंकुम की तरह सीर पर लगाकर आह्वान करता है। आइये - आइये, उसी तरह सलोरवना धारी मृत्यु को बुलाता है। अपनी शक्ति को प्रदर्शित करता है। उस मृत्यु का स्वागत करता है। उससे भयभीत कभी नहीं होता। आज तक आपने उसको पीठ दिखायी - अब छाती दिखाने की जरूरत है। जब आना चाहो तब आ जाओ।

सही पहलवान वही होता है, जो एक ही बार में पछाड़ देता है। बार-बार वार करना कमजोर पहलवान का काम है। ऐसी कुश्ती खेलता है एक ही बार में चित्त कर देता है। मुनिमहाराज भी एक-एक मास के उपवास के बाद खेलते हैं और एक ही बार में उस मृत्यु को पछाड़ देते हैं। सही भेदविज्ञानी ही इस प्रकार से कर सकता है। इतना ही पर्याप्त है। आप लोगों का साहस बढ़ जाये। यहाँ भी काफी तपन है, चौबीसी में आ जाओ तो फिर भी ठीक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Note - "एक दिन आचार्य श्री ने कहा कि वेदी के पास बैठने पर इतनी शान्ति मिलती है तो वेदी में बैठने पर कितनी शान्ति मिलेगी। विचार करो।"

20-5-18 "दान भी तब-जब पुण्य हो" प्रातः सम्पर्क सूत्र [ब्लूटूथ] के द्वारा अभी आपके कानों तक ध्वनि प्रसारित होने में बाधा आ रही थी। सम्पर्क सूत्र ठीक हो गया। ध्वनि आपके कानों तक पहुँच गयी। इतने मात्र से मैं प्रसन्न होने वाला नहीं हूँ। जब तक कानों के बटन को चालु नहीं करेंगे तो आप बैठे रहेंगे हम बोलते रहेंगे, कुछ होने वाला नहीं है। तो अपने कानों को खड़ा कर दीजिये तथा शेष इन्द्रियों से कह दीजिये कि वे बाधा उत्पन्न न करें।

बड़ा वैचित्र्य है, संसार का स्वरूप ही ऐसा है। समवसरण में जाने के बाद भी सम्यग्दृष्टि ही हो यह नियम नहीं। दूसरा यह कहा जाता है कि समवसरण में जाने वाले सभी जीव सम्यग्दृष्टि होते हैं यह इस अपेक्षा से कहा जाता है कि बाहर से जाते समय उद्देश्य तो एक ही रहता है पर वहाँ परिणाम कैसे रहते हैं। आप अपने लिए ही भीतर से पूछ लो। समवशरण का उद्देश्य यही होना चाहिए तथा यही रहता है किन्तु वातावरण जबरदस्ती भी नहीं कर सकता है। भीतरी वातावरण के अनुसार ही काम होता है।

असंख्यात देवी-देवता आते हैं, उनकी तारतम्यता भी बनी रहती है फिर भी शान्ति बनी रहती है। बाहरी वातावरण तो शांत हो जाता है, पर भीतरी भी शान्त हो ऐसा नियामक नहीं है। सभी का मन एकसा

बना रहे ऐसा हम नहीं कह सकते।

इस प्रकार के वातावरण में रहते हैं तो निमित्त के द्वारा कह नहीं सकते। कईलोग बहुमान की दृष्टि से समझकर निमित्त से काम लेते है। निमित्त से ऐसा वातावरण तो तैयार हो गया पर भीतरी वातावरण के लिए नहीं। इसलिये भीतरी वातावरण एवं बाहरी वातावरण में अंतर है। उदाहरण के लिए व्यंजन बने हैं - परोसने हैं। कैसे परोसेंगे? सबको कहा था आज व्यञ्जन बनायेंगे।

बात अभी सम्पर्क की कर रहे थे। सम्पर्क कहाँ तक काम कर सकता है। चम्मच के माध्यम से देना था वह दे ही नहीं पाया। वह देखता ही रह गया। भूख होने पर ऐसा होता है। बर्फी तो जमाई, किन्तु अब निकल नहीं पा रही हैं। थाली में बर्फी जमाने से पूर्व थोड़ा सा घी का लेप लगाते तो निकल जाती। इसलिए हम कहना यह चाह रहे हैं, निमित्त में थोड़ी सी गड़बड़ी हुयी तो सारे बाराती देखते रह गये।

परोसने वालों का तो निमित्त था - बारात का जैसा दत्त कर्म का उदय था - मिलेगा ही नहीं। मिलेगा ही नहीं। इसी तरह आप लोग धन को एकत्रित करते हो। वह ऐसा चिपक न जाये कि एक भौंरे पर बाहर ही नहीं आये। आप लोगों को घी लगाना चाहिये। इससे जल्दी-जल्दी निकल जायेगा। अन्यथा दूसरे देते रहेंगे

और आप देखते ही रह जायेंगे।

बहुत कहीन होता है। घर में भिन्न - भिन्न मत वाले लोग रहते हैं। कभी-कभी एक देना चाहता है अन्य सभी मना कर देते हैं और कभी-कभी सब देना चाहते हैं, एक मना कर देता है। वह कहता है- ध्यान रखना! अभी दान नहीं देना है। देना तो है। Income - Tax वालों को देना है। क्या है यह? पूर्व जीवन में धर्मध्यान के लिए अच्छा वातावरण नहीं बनाया तभी ऐसा होता है।

पुराण ग्रन्थों के स्वाध्याय से यह ज्ञात हो जाता है कि विषय-कषाय में तो खूब खर्च हो जाता है किन्तु दान-धर्म में खर्च की मानसिकता ही नहीं बन पाती। वह कहता है- अभी नहीं 2 साल बाद दे देंगे। जबकि कल का क्या भरोसा? शुभस्य शीघ्रं कहा है। एक बार लक्ष्मी भीतर पहुँच जाती है - व्यवस्थित हो जाती है फिर सरस्वती वहाँ तक नहीं पहुँच पाती है।

जब तक सरस्वती नहीं पहुँचेगी, लक्ष्मी बाहर आ नहीं सकती है। एक दिन लाते हैं, लक्ष्मी को बाहर - धनतेरस के दिन। वह भी लक्ष्मी को जाने के लिए नहीं, लाने के हेतु करते हैं। Well-come करते हैं Well-Go नहीं। लक्ष्मी जम गयी तो हटने का नाम ही नहीं लेती। इसलिये अब आपको सोचना

है। शुभ काम को इस ढंग से करना है।

पहले के लोग कमाने (अर्जन करने) से पूर्व संकल्प ले लेते थे कि हमें इतना प्रतिशत तो निकालना ही है। यह द्रव्य तो दिया हुआ ही है मेरा नहीं, इसे हाथ भी नहीं लगाना। ऐसा दृढ़-निश्चय कर लेता था तभी मोह-माया को बाहर निकाल पाता था। आज वह ऐसी जम गयी कि बाहर निकलने का नाम ही नहीं ले पा रही। सेठ जी का अवसान हो गया - रोना-धोना चल रहा है पर बाहर नहीं निकालते।

जीवित अवस्था में क्या होता होगा? बहुत कठीन होता है। एक बार बंध गया अब वचनों से भी इधर-उधर नहीं हो सकता। ऐसे व्यक्ति की दशा उस कैदी की तरह होती है। जो जेल में बंद रहा - सजा पुरी होने पर बाहर आ गया। फिर भी यदि गांव/शहर में कोई भी घटना घटती है तो सबसे पहले उसी को पुछते हैं। मोह के कारण यह बाहर आ ही नहीं सकता।

आप स्वतंत्र होते हुये भी धार्मिक कार्य में परतंत्रता कर लेते हैं। ऐसी दशा में पश्चाताप के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता है। जब धार्मिक भाव हो तभी हो सकता है। सम्पर्क बनाये रखो - प्रेरणा देने पर सहयोग कर सकते हैं। वो भी कर सकते हैं जिनके पास बड़ी राशि नहीं है बस इस तरह की भूमिका बनाये रखो। एक कारिका आती

है। थोड़ी-थोड़ी राशि एकत्रित करनेपर एक दिन वह राशि मेरु के समान हो सकती है।

द्रव्य से नहीं था पर भाव होने से वह कार्य धीरे-धीरे हो ही जाता है। हमें मन-वचन-काय के द्वारा फल मिलता है। करने की भावना है तो पूर्वकृत कर्म भी कारण है। भाव बनायेंगे तभी काम होगा। "मन को ऐसा बांधो की जो साधक बन सके - बाधक नहीं।" आपका द्रव्य त्याग के योग्य है - तभी आपके भाव इस प्रकार के होंगे।

चिपकन ऐसी ही होती है आप त्याग भी नहीं कर सकते, ऐसी पुराण ग्रन्थों में कथायें आती है। महापुरुष भी उस कार्य को सम्पादित नहीं कर पाते जिसे सामान्य व्यक्ति सम्पादित कर देता है। फसल आकर खड़ी हो गयी बाद में घटायें आ गयी अब उन घटाओं से क्या प्रयोजन है? भक्तामर में पढ़ते हैं - निष्पन्न शालि वन शालिनि जीव लोके..... जल से भरी उन घटाओं से क्या लाभ जब फसल कटने को तैयार है।"

इस समय अब वर्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। कई लोगों के पास सम्पदा आ जाती है, पर उस सम्पदा का प्रयोजन सिद्ध नहीं हो पाता है। ज्ञानादि में विघ्न डाला होगा इसीलिये आज आप दान नहीं कर पा रहे हैं। खूब सम्पदा है,

पर मुहूर्त ही नहीं।

बहुत सारे कारण/अनेक निमित्त मिलकर भी एक कार्य होता है। तो अब आप याद रखेंगे। बारात आयी है किन्तु बर्फी समय पर दे नहीं पाये। सबको कह देना। सभी हँसते हैं क्यों कि सबने अपना कार्य कर लिया पर हम उसी मोहल्ले में रहकर भी नहीं कर पाये। यहाँ (तकदीर) लिखा हुआ है, मैं कहता हूँ हाथ में लिखा हुआ नहीं था पर हाथ से कर सकते हो।

इसी हाथ से जीवों के लिये अभय देते रहो तो क्यों नहीं कर सकते। भाव तो करो। द्रव्य तो द्रव्य का है, महत्व भावों का है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

मेरा विचार → 80G क्यों?

"आज ईर्यापथ में आचार्य श्री जी ने बहुत अच्छा चिंतन दिया। उन्होंने कहा कि दान में जो राशि दी उसे कर से मुक्त कराने हेतु एक कानून लाया गया जिसे 80G की संज्ञा दी। सरकार के कर में कटौती करके दान देना उचित नहीं। आप पुरा Tax दें तथा दान के साथ कोई भी शर्त/नियम नहीं होता। दान तो दान होता है, बदले में कुछ चाह नहीं होती। अतः ये 80G का प्रावधान मुझे तो पसन्द नहीं आया।"

२०-६-१६ "रविवारीय प्रवचनांश" मध्याह्न

० हमारा जीवन जिलाने के लिए होना चाहिये जलाने के लिए नहीं।

० अपने शरीर को मोड़ कर दूसरे के पेट की तरफ भी देखो। यह तभी संभव होगा जब सामने वाले को आप सामने से देखेंगे किन्तु आज तो Selfie का जमाना आ गया है। पीठ दिखाकर अपनी फोटो खेंच लेते हैं। यह परम्परा गलत है।

० बुंदेलखण्ड में भीड़ कहाँ से आती है और कहाँ चली जाती है - पता ही नहीं चलता।

० सत्तु में बहुत सत्व है, इसलिये किसान उसी को खाकर एक बीज के हजारों करके दे देता है।

० बनिया स्वार्थ सिद्धि हेतु करता है जबकि किसान निःस्वार्थ भावना से करता है।

० आलोचना नहीं समालोचना कर रहा हूँ ताकि आपके लोचन खुद खुल जायें।

० अब गोदाम की नहीं गौ-धाम की जरूरत है। वे गौ-धाम अमृत को देने वाले हैं।

० जब तक दूसरे के पेट के बारे में भी नहीं सोचोगे तब तक आप भी नहीं रख सकोगे। जलोदर अथवा कोई भी बिमारी हो जायेगी।

० दीपक भले ही अनेक हो किन्तु प्रकाश सबमें एक है। उस प्रकाश की ओर ही सदैव दृष्टि रहे।

o छोटा सा दीपक भी कहता है - जब तक मैं बैठा हूँ, अंधकार आ नहीं सकता।
o हओ! बुंदेलखण्ड का स्वर्णिम सूत्र है। ये भगवान की आज्ञा पालन का मंत्र है। आज्ञा सम्यक्त्व है।
o चाह रखोगे तो - दाह ही मिलेगी। दाह व्याकुलता को दग्ध कर देती है।
o आप भी बैरी बनें किन्तु अपने प्रति नहीं दूसरों के दुःखों के प्रति आप बैरी बनें।
o खेती में बैलों का प्रयोग हो ट्रैक्टर का नहीं। भगवान आदिनाथ का चिन्ह है। जाति-पाँति के बंधन से ऊपर उठकर सोचो।
o 70 वर्ष पुरानी एक पुस्तक हाथ लगी। इसके मुख पृष्ठ पर बैल बना है। सिंह भी भाग जाये उसे देखकर। मतलब अन्याय भी भग जाये न्याय को देखकर।
o बैल को नांदिया भी बोलते हैं, दक्षिण में नांदिया का मतलब मंगलाचरण होता है।
o जो व्यक्ति गर्मी के दिनों में गर्मी को नहीं खाता तो पक्का है गर्मी उसे खा जायेगी।
o हओ! यह बुंदेलखण्ड का मंत्र पूरे भारतवर्ष में चला जाना चाहिये। विधी परक है - पोजेटीव है। ना का काम नहीं। ना ना नहीं दाता की बात करता है।
o ददाति इति दाता - देने वाले के पास खूब बरसता है। किसान देता ही रहता है।

- किसान टोपी नहीं साफा पहनता है- एक छोर ऊपर निकला रहता है। हवा से ध्वजा की तरह हिलता रहता है, जो आमंत्रण देता रहता है- आइये-आइये।
- चौबीसों घण्टे किसान प्रार्थना करता रहता है- मेघ भी उसके परिश्रम एवं प्रार्थना से प्रसन्न होकर बरस जाते हैं।
- किसान ने कभी सत्ता की मांग नहीं की, सत्ता की मांग को पूर्ण किया है किसान ने। इसलिये प्रशासन-शासन-अनुशासन को इतिहास पढने की आवश्यकता है।
- जब तक किसान आलस्य छोड़कर काम करेगा कमी प्रलय नहीं हो सकता।
- पैदा करना जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही वितरण करना भी महत्त्वपूर्ण है।
- जितना पैसा बढता जाता है, उतना ही खाना दूर होता चला जाता है। अब खाओ- नोटों के बंडल- सोने के बिस्किट।
- तंबाकू को कभी गधा भी नहीं सूंघता। दक्षिण में हरियाली देखकर गधा खेत में घुस जाता पर तंबाकू की गंध सूंघकर छोड़ देता वही जो मृदु-मृदु घास होती उसे खाकर अपना पेट भर लेता। उसे ज्ञात है पूर्व काल में पीया था (शराब) उसका ये परिणाम है।
- प्रशासन-अनुशासन वाले भी बैठे थे। आंधी ने कहा शासन के बाद ही प्रशासन आता है। अच्छा है आज किसान लोग (ललीतपुर से) भी बैठे हैं और प्रशासन भी है।

GROUP

o हमारे यहाँ प्रश्न प्रदेश है ही नहीं उत्तर प्रदेश है। इसलिये अब हिन्दी भाषा में सभी कार्य हो इसके लिये कदम उठना चाहिये। भारत अखण्ड हो जायेगा।

g बच्चा चलना सीखता है माता-पिता खुश होते हैं उसे चलाने का प्रयास करते हैं भारत 70 वर्ष हो गया चलने का कोई प्रयास नहीं।

o शासन-प्रशासन को चाहिये जनता का न्याय जनता की भाषा में हो। चुनाव से पूर्व इस बात का चुनाव कर लो।

o अभी राजसत्ता नहीं प्रजा सत्ता है। जनता को जागना होगा। चौकन्ना हो जाइये।

o संस्मरण - नेनागिर में थे - किसान लोग - पानी लाना है? अधिकार पूर्वक बोले। योग से वर्षा हुयी रुकने का नाम ही नहीं ले रही। पुनः एक किसान आया कहने लगा - अब रोक दे।

o संत और मंत्र जैसा कहो वैसा कर देते हैं

o शासन एवं प्रशासन में जो भी ऊपर पहुँचे हैं वे आपकी कृपा से पहुँचे हैं। कार्य नहीं तो आ जाइये नीचे अब दो पहिया नहीं - तीन पहिया की साइकिल (रिक्शा) मिलेगा। चुनाव की तभी सार्थकता है।

o आपके यहाँ उत्तपा बताया हमारे यहाँ तो उत्तपा मुनि-महाराज के लिये बताया गया।

21-5-18 "सुखी जीवन का मंत्र" प्रातः

दो मित्र बहुत दिनों के बाद मिलते हैं। वैसे दोनो कुशल थे, कुशलता में भी निरीहता दोनों में बनी रहती थी। दोनों में एक ने ठान लिया जब भी मिलुंगा बचपन के बारे में पुछुंगा। एक स्थान पर एक राजा के बारे में देखा - वह पहले हाथी पर सवार था, फिर घोड़े पर सवार हुआ और आगे चला तो पालकी में बैठकर जा रहा है। जो बैठकर जा रहा है उसे प्रतिफलता हो रही है चल रहा है उसे प्रतिफलता नहीं।

पालकी में लेटकर गया मतलब ऊपर की सीढ़ियों का दृश्य देखता गया। जैसे ही प्रवास पुरा हुआ, एक सिंहासन तैयार था। राजा उस पर बैठा - दो व्यक्ति पांव दबाना शुरु और हवा करना शुरु हो जाता है। आप सुन रहे हो (हाँ) एक व्यक्ति जमीन पर तो आया ही नहीं और जमीन पर आया तो इस तरह से हो रहा है। एक ने प्रश्न किया - "हाथी चढ़ - घोड़ा चढ़्यो, बैठ पालकी माय, कब के थाके है सखी जो अबे दबावत वाय।" अध्यात्म है इसमें। दूसरे ने जवाब दिया -

"भू सूत्यो रथवा मरयो किनो उग्र विहार, तब के थाकी हे सखी अबे दबावत पांव।" बहुत दिनों बाद यह याद आया। अध्यात्म की बात करने वाले हो तो रहस्य इसी प्रकार उद्घाटित

होता है।

भीतर जब जाते हैं तो आत्मा का क्या परिणमन है वह समझ में आता है। प्रत्येक पदार्थ का स्वरूप अनादि अखण्ड है। वह न ही आज तक रुका है, न ही रुका था, तथा आगे भी रुकेगा नहीं। यह नौका विद्व चिन्तन में चलता रहता है। जो कोई भी आता है तो पूछता है क्यों सत्य महाराज, साता है - साता है। हम कहते हैं हां सात तत्व है। एक बात बता दो महाराज सात भी कह रहे हो और छह भी कह रहे हो।

तत्व सात ही है। वे तब तक जब तक मुक्ति को प्राप्त न होऊं। समझ रहे हैं न। किताब में ही सात तत्व नहीं, क्षीर जी के दर्शन हो तब भी सात तत्व दिखना चाहिये। नहीं तो अलही-अलही ही होगा। पदार्थ के स्वरूप को इसी प्रकार से चिंतन करना चाहिये। जब किसी गणेश होता है तब किताब आदि का सहारा लिया जाता है पर जब प्रवाह चलता है तो वर्षा होने लगती है।

प्रवाह में वह दूसरों की आंखों से नहीं अपने चिंतन से सोचता है। महाराज तो खड़े ही रहते हैं अथवा बैठे हैं तो बैठे ही रहते हैं यह उलझे दिमाग में आता है। खड़े हैं तो चुनाव में नहीं खड़े। नाव में हैं जो इस पार से उस पार स्वयं भी औरों को भी लगा देते हैं। चुनाव में तो कोई भी आये

हमें कुछ प्राप्त होने वाला नहीं।

अपने को तो अपने ही किये गये कर्मों का फल प्राप्त होता है। ये विचार आते ही समस्त हर्ष-विषाद समाप्त हो जाते हैं। प्राथमिक दशा में कर्म तकलीफ देते हुये से लगते हैं किन्तु जिस तरह शुरुआत में दवाई तकलीफ (कड़वी) जैसी पर उसपर आस्था होती है और आरोग्य पाने हेतु लेता रहता है। रोग जब निष्कासित हो जाता है तभी दवाई को बंद करता है।

वर्षों स्वाध्याय करने वालों को इसी तरह की भावना रखना चाहिये। चिंतन मात्र से मोक्ष-मार्ग नहीं चलता। कदम बढ़ाने पर वह मोक्षमार्ग अपनी ओर आता है। जो अज्ञान दशा में कर्म बाँधे अब ज्ञान होने पर उनको संवर एवं निर्जरा करता है। अतीत की घटना का प्रवाह जब चलता है तो उस नदी की स्थिति होती है, जिसके तेज प्रवाह से झाग आ गये हैं। भीतर झाग नहीं किनारे पर ही झाग रहता है। बच्चे उसी से खेलते रहते हैं और ज्ञानी तैरकर उस पार हो जाता है।

इस प्रकार तत्व की बात आपके सामने रखी। कैसी लगी? चोखी - अच्छी - ज्ञानी - सलोनी। बहुत सुन्दर सुनाने में ही ना रहे, भीतर उतारने का प्रयास करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय!

22-5-18 "मरघट से मिला बोध आत्मघट का" प्रातः

आप लोग मान लो किसी गांव में रहते हो और सब लोगो के अपने-अपने आवास बने हुये हैं। कोई छोटी सी कुटिया में रहता है तो कोई मध्यम में तथा कोई महा प्रसाद में रह रहा है। भिन्न-भिन्न आवास होते हुये भी जो पनघट होता है, वह एक है। चाहे साहूकार हो या अन्य कोई, सेठ हो राजा हो या फिर रंक हो। उसके पास तो आना ही पड़ेगा। वो एक होता है वहाँ अपने नम्बर (क्रम) से पानी मिलेगा।

इसके उपरान्त क्या होता है। संसार में आये हैं तो रवाना होना होता है। जो आया है तो उसको जाना ही होता है। आये थे अकेले और जाना है चार कंधो पर। कैसे जाना चाहते हो? बोलो। ठाठ-बाठ से जायेंगे। नहीं। आपको लाल कफन एक ही मिलेगा। राजा हो या रंक हो, स्त्री हो या पुरुष हो। लाल कफन तो सबका एक ही होगा। अपना बनाकर रख लो। उसको भी अन्तिम समय निकालकर फेंका जाता है।

अब सोचो! वहाँ पर (मरघट/श्मसान) एक कुत्ता प्रतिक्षा कर रहा है। उधर से अर्थी आ रही है। अर्थी भी किसकी? नगर नारी की। कौन है नगर नारी? पण्डित दौलत राम जी ने बहुत ही अच्छा छहढाला में लिखा है- नगर नारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल है। वेश्या

होती है।

उस कुत्ते को भी मालुम है ये गाहकर चले जायेंगे और आज मैं इसका मॉस खाऊँगा। एक कामी पुरुष भी वहीं खड़ा उस अर्थी को देख रहा है वह विचार करता है अभी ये लोग इसी गाहेंगे एक बार तो मैं इसे स्पर्श कर लूंगा। सभी लोग दुःखी है। वे लोग उसे गाड़कर नदी पर जायेंगे और स्नान से शुद्धि कर पुनः लौट जायेंगे।

संसार में कुछ नहीं रखा। इमानदारी से बताओ - संसार अच्छा है न? तो फिर यहाँ क्यों बैठे हो? उठो! मुक्ति तो आधी रात में भी दरवाजा खोल सकती है। ऐसा नहीं कि मुक्ति दिन में ही होती है, रात में नहीं होती। आजादी आधी रात में। "शुभस्य शीघ्रं"। अब देखो वे गाड़ कर चले गये। कुत्ता आया और खोदना प्रारम्भ किया, कामी सोचता है, इसे खोदने दो अपना नम्बर तो आ ही जायेगा।

सभी अपने-अपने अनुसार सोच रहे हैं। आप भी कानों से सुन रहे हैं तो मस्तिष्क में उसी प्रकार का दृश्य / चित्र आ रहा है। एक साधु भी वहाँ बैठा है। वे जान रहे हैं - इसका मरण हुआ है ये संसार की रीत है, अब इसके साथ क्या बीत है। उनकी भीतरी आँखे खुली हुयी हैं। मरण तो सबका होना है। जब जिन्दगी समाप्त

हो जाती है तो परिवार उठाकर ले जाते हैं।

साधु ही एक मात्र ऐसे होते हैं जो छूटने से पहले स्वयं ही छोड़ देते हैं। "वैराग्यार्थं" वैरागी ही छोड़ सकता है। रागी एवं वैरागी के भीतर की परिभाषा कैसी होती है, आपको समझ में आ गया होगा। उस नगरनारि, जो वेश्या होती है उसे धन ही प्रिय होता है। शरीर प्रिय नहीं। शरीर अच्छा लगे इसलिये उसी प्रकार के हाव-भाव करती है। वह मात्र अर्थ के अर्पण में लगी रहती है। उसे किसी से भी प्यार-व्यार नहीं रहता।

पुराना प्यार क्या होता है, जानते हो? पियार पुराना पियार मतलब जो तृण खाद बनने वाला है ऐसा पियार। उसी रूप में वह देखता है। दूसरे से प्यार करते हो तो वह भी पुराना है। सबसे ज्यादा वैराग्य का स्थान यदि कोई है तो वह श्मसान घाट ही है। किन्तु व्यक्ति वहाँ मरण के बाद जाता है। जीवित में जाकर बैठोगे तो दोबारा घर के लिए रवाना नहीं होगे। नहीं महाराज! ऐसे थोड़ी छुरत है। एक ही उपदेश में छूट जाये। ये तो बहुत कठीन है।

आप ही बताओ ये क्या है? "पश्यन्नपि न पश्यति" इष्टोपदेश का सूत्र है। दुनिया जिसे रागपूर्वक देख रही है, वहीं पर साधु भी बैठे हैं - वे वैराग्य का पाठ ले रहे हैं। इतना अच्छा शरीर मिला

था उसे कौड़ीयों के भाव बेच डाला।

दुर्लभता और सुलभता दोनों एक ही स्थान पर है। इस श्मसान घाट की घटना से यह ज्ञात हो जाता है। दुनिया में संख्या कितनी यह महत्वपूर्ण नहीं है। "जितने भी देव है- नारकी है- तिर्यञ्च है यहाँ तक की तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने वाले भी उनमें शामिल कर लो असंख्यात है। वे सब मिलकर भी इतने पुण्य का बंध नहीं करते जितना की साधु परमेष्ठी जो कुछ भी नहीं चाहते उन्हें एक समय में होता है।"

वह पुण्य कहता है- आप नहीं चाहेंगे तो भी हम आयेंगे। आप भगा नहीं सकते। हमारा अपना अस्तित्व अलग है। साधु नहीं चाहता तो भी असंख्यात गुणी निर्जरा होती रहती है। होना स्वभाव है और करना स्वभाव नहीं। राग करने से वह चिपकता चला जाता है। गोंद है तो चिपकेगा ही। हम नहीं चाहते। नहीं चाहते तो अपने पास गोंद क्यों रखा। गोंद को हटा दो। फिर यदि नहीं चाहोगे तो दुनिया कितनी भी कोशिश कर ले, चिपका नहीं सकती।

इसी का नाम है- पश्यन्नपि न पश्यति। भगवान के दर्शन किये - आपने क्या देखा? मैं तो बिना गिने चला रहा हूँ। ऐसी भीड़ खूब आती है। वे सोचते है - लगता है बस हमें ही देख रहे हैं। फिर हमें

हुओ कहने में क्या बाधा है।

भगवान की नासा दृष्टि क्यों रखी क्यों कि उन्होंने सब कुछ देख लिया। "जब मौलिक पदार्थों का दर्शन हो गया तो अब लौकिक झलक से क्या मतलब है।" जब दिख ही रहा है तो हम देखें क्यों? ये बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है। वह मुनि महाराज इसी तरह से निश्चिन्त रहते हैं। सुख-शान्ति निश्चित है तो इष्ट को देखता है-अनिष्ट को क्यों देखें?

नगर नारि सबको चाहती है पर विवाह किसी से नहीं करती। कर भी ले तो पैसे पर ही दृष्टि रहती है। ऐसा ही सम्यग्दृष्टि-व्रती-साधु-करता है। जब ऐसा बोध हो जाता है फिर मृत्यु एवं जीवन में कोई अन्तर नहीं रहता। मेरा स्वभाव अजर-अमर है। इस प्रकार की बूटी वह खाते रहते हैं। यह बूटी दुनिया में उन्हीं को प्राप्त होती है, जो इसका मूल्य जानते हैं। बिना मूल्य के जाने यह प्राप्त नहीं होती।

ऐसे ही लोगों की सेवा में देवता भी पानी भरते हैं। जो अनमोल है उसे देखो। ज्ञान-दर्शन हमारा स्वभाव है। तत्व ज्ञान के माध्यम से अनुभव में लाने का प्रयास करो। सब घटित हो रहा है-मेरे में ये घटित हो ही नहीं सकते। ये निर्णय बहुत महत्वपूर्ण है। इस मरघट के उदाहरण से, दो तीन लोगों के द्वारा आप

समझने का प्रयास करेंगे।

मॉस मछली कुत्ता है - कामी जो है वह भोगासक्त है, साधु भी वही बैठे हैं। वे जीवन एवं मरण में अन्तर नहीं समझते। स्व एवं पर को जानते हैं। दरिद्रता नहीं रखते। प्यार-प्यार कुछ नहीं। यह घट ऐसा घट है जिस पर कोई भी पानी नहीं पी सकता मात्र साधु ही पानी पी सकता है। स्वामी तो एक ही है, वही पी सकता है।

आत्मघट कहते हैं इसे। इस घट में कोई हाय-हाय नहीं। इस घट में मृत्यु की आवाज नहीं केवल जीवन-जीवन-जीवन होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"अभियान शुरू करो"

"अनुशासन-भोपाल द्वारा 18-19 मई को दो दिवसीय सम्मेलन "पुनर्बोध-2018" के नाम से पचोरा में सम्पन्न हुआ। आज्ञी ने सभी प्रशासन से जुड़े व्यक्तियों को आह्वान किया की मातृभाषा को ही पूरे देश में लागु किया जाय। लगभग 12 राज्यों में तो हिन्दी ही सरकारी कार्यालयों एवं न्याय की बोली में उपयोग हो। आधी से भी ज्यादा जनता इसे अच्छा मानेगी। मतदान तो करते ही हो ये दान भी कम नहीं। प्रशासन का विषय है - आनंद आयेगा। महाराष्ट्र में हो सकता है तो अन्य राज्यों में होने में क्या बाधा है।" [आचार्यश्री भक्ति के बाद सायं - 6.30]

23-5-18 "आज ही online टीकिट बुक करें" प्रातः

प्रायः जब तक हमें ध्यान नहीं रहता तब तक परिणामों पर नियन्त्रण नहीं कर सकते। ज्ञान का होना अच्छा माना जाता है। मोक्षमार्ग में जिन्होंने ज्ञान के स्वरूप को समझा है / उनके चरणों में बैठकर सुन ले तो भी उसका भविष्य सुधर सकता है। बहुत सारे राग-द्वेष समोशरण में जाते ही विलिन हो जाते हैं। जैसे- कमठ द्वारा उपसर्ग भव - भव तक चलता रहा - अंत में समोशरण में बैठा है।

बिना कहे - बिना सोचे अनायास ही सामने आ गया / चुंकि इस प्रकार के अवसर नहीं के बराबर मिलते है / मैं नहीं मिलते ऐसा तो नहीं कह सकता लेकिन नहीं के बराबर मतलब बहुत विरल है। तो ऐसे में हम क्या कर सकते हैं। बहुत अच्छा यही तो हम चाह रहे हैं कि आप पुछेंगे। इन दिनों पचासों नहीं सैंकड़ों व्यक्ति हमारे पास आ गये होंगे / महाराज अब हमारा जीवन ज्यादा नहीं बचा है।

उम्र भी ज्यादा नहीं - 30 - 40 - 50 वर्ष की ही होगी / उनके दिमाग में यह तो निश्चित हो गया कि अब जाना तो निश्चित है। इससे पूर्व यह निश्चित कर लिया जावे - अब मात्र धर्म का ही सहारा लो। इसी से बेड़ा पार हो सकता है। ऐसा

व्यक्ति भीतर से भीगा होता है।

एक संकेत मात्र में वह चारों प्रकार के रात्रि में आहार का त्याग कर देता है। और आप एक दिन अन्न भी न करें तो सोचते हैं - कल अष्टमी / चतुर्दशी है। जब जाना निश्चित ही हो गया तो अब पूछना क्या ? यही तो पक्का हो गया कि अब रवाना होना है। अब आगे-पीछे नहीं देखना है। मैं इस पंचमकाल में इसे जाति-स्मरण से भी बड़ा मानता हूँ।

कई लोगों ने इस तरह का जानकर संलेखना की तैयारी शुरू कर देते हैं और पास हो जाते हैं। वह सोचता है मैं दुबला क्यों होऊँ। विश्वास तब हो जब केवली-श्रुतकेवली अथवा प्रत्यक्ष ज्ञानी मिले। किन्तु हमारा इतना बड़ा भाग्य नहीं हैं। हम भाग्यशाली नहीं हैं, ऐसा भी नहीं मानना। रोग होना हमें महत्त्वपूर्ण संकेत देते हैं। ऐसी अवस्था में जो ज्ञान हमारे पास है उसी का लाभ ले लेना चाहिए।

ऐसे ही एक सज्जन जिनको डाक्टरों ने जवाब दे दिया कि एक हफ्ता - एक महिने के बीच.. अब ले जाओ, पक्का है। वे स्वाध्यायशील थे उन्होंने भी सोचा अब क्रिया / प्रयोग का समय है। महाराज के पास चलो। महाराज के पास ऐम्स - देहली से हटकर ही आते

हैं।

वह व्यक्ति बम्बई में रहकर ज्यादा क्रिया तो नहीं की पर स्वाध्याय किया। उसे क्रिया का क्या महत्त्व है, समझ में आ गया। चारों प्रकार के आहार का त्याग करके ही यहाँ पर आया है। वह भी जानता था कि यदि महाराज को विश्वास ही नहीं होगा तो जगह ही नहीं देंगे। उसे पता है - ज्यादा प्रतिष्ठा नहीं करना है। अब पहले तीन बार दवा लेते थे फिर आते समय दो बार दिन में दवा लेना रख लिया यहाँ एक ही समय दवा लेने लगे।

कल हमारे पास आकर बोले अब एक बार भी दवा क्यों लें। जीवनपर्यन्त दवाई का त्याग कर दिया। कितना बड़ा साहस है। यह वही कर सकता है जो जानता है आत्मा मरने वाली वस्तु नहीं है। ये सब नाटक परदे पर हो रहा है। परदे के पिछे। भीतर क्या है उसे देखो। ऐसा स्वाध्याय जो करता है वही कर सकता है। सुन रहे हैं आप। (हम्मो)

अभी मन के अधीन होकर बोल रहें हैं। मन के अधीन होना छोड़ दो - परीक्षा में उत्तीर्ण होना है तो सब छोड़ दो। उस समय सब कार्य गौण हो जाते हैं। तो उन्होंने तीनों प्रकार की दवाई का त्याग कर दिया, अब महाराज की दवाई मिल गयी तो फिर वो दवाई किस

काम की।

हमने कुछ नहीं किया। उन्होंने स्वाध्याय तो खूब किया बस उसे प्रयोग में भी लाते तो ऐसा नहीं होता। हमने भी कहा - छोड़ने से पहले सोच लो क्यों कि छोड़ने के बाद सोचना नहीं है। विचार कर लो। आज दूसरी प्रतिमा का अभ्यास चालु हो गया। असहनीय वेदना होते हुये भी पुरा व्यवास्थित कार्यक्रम है। परिवार भी उनको पुरी अनुमति दे रहा है। हाय-तोबा नहीं करता। यह भी उनके पुण्य का ही उदय है, जो ऐसा कर रहे हैं।

जो कर रहा है उसके लिए सहयोग करो- प्रशंसा करो। कमाना सीखो। कैसे बनिया हो आप। हजारपति - लाखपति नहीं पतियों के भी पति बन जाओ। "ये लॉटरी ऐसी ही है - जो अमीर-गरीब नहीं अजर-अमर बनाने वाली है।" यहाँ पर सब बातें पक्की होती है - कच्ची तो होती ही नहीं। वृती वहीं बनता है, जो जीवन के महत्व को समझता है। शुद्धता पर आ जाता है।

परिणामों का महत्व कितना। चतुर्थ काल याद आ जाता है। नरक की ओर जाने की तैयारी है किन्तु स्वर्ग की ओर चला जाता है। यह सब परिणामों की विचित्रता है। इसलिए अपने श्रद्धान को मजबूत रखना चाहिये। शरीर को नियन्त्रण में रखना

है तो मन को नियन्त्रण में रखो।"

भोजन नहीं देते तो शरीर की तब्दीली पर अशांति मचाता है ये मन। "मन को यदि समझ में आ गया तो फिर भगवान भी वहाँ पर कुछ नहीं कर सकते।" इससे अन्यथा मोक्षमार्ग कोई वस्तु नहीं। काल मुक्ति में बाधक है ही नहीं। कोई भी संहनन हो धर्मध्यान में बाधक तो है ही नहीं। इसलिये यह शरीर स्वस्थ रहे तो भोजन पानी दो, नहीं तो...।

(रात) शाम को छोड़ सकते हो। विचार कर लो। दो बार में भी आ जाओ तो अच्छा होगा। बच्चों की तरह अब बार-बार नहीं। ये प्रवाह चतुर्थ काल से आ रहा है- दो बार मुक्ति का। एक बार खायें वो योगी, दो बार खायें वो भोगी। तीन बार खायें वह रोगी और बार-बार खाये वो आप ही बोलो...। उनके नसीब में ही गोली लिखी है, हम क्या करें।

गोली का अर्थ बंदूक वाली गोली नहीं- दवाई है। यद्वा-तद्वा करोगे तो गोली खानी ही पड़ेगी। समझदारी के द्वारा श्रावक में भी आप बहुत कुछ कर सकते हो। श्रावक के तो दोनों हाथों में लड्डू है। एक खुद खा लेता है, दूसरा दूसरे को दे देता है। इसीलिये दौलत राम जी ने कहा- "यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावै। तहंतें चयकर

नर जन्म पाय मुनि है शिव जावें।"

ये तो स्टेशन पर गाड़ी खड़ी है, जो आपको बुला रही है। यहाँ से वहाँ तथा वहाँ (स्वर्ग) से यहाँ आकर सीधे मोक्ष। इतनी पास है मुक्ति। किसी से मत पूछो - बस अपने दिल से पूछो। ऋद्धिधारी मुनिमहाराज से पूछो। उनसे पूछने हेतु घर से बाहर निकलो - चलो तो। घर से निकलेंगे तभी बाजार के क्या भाव है, पता लगेगा।

यहाँ से श्रावक भी तथा श्रमण भी एक भव रख सकता है। अब आप पर निर्भर है, आप क्या चाहते हो। टिकिट आपको यहीं पर प्राप्त होगा। उस टिकिट की कोई कीमत नहीं। बस एक ही शर्त है कोई भी सामान साथ में नहीं रखना। ये टिकिट आप लोगों की तरह नहीं कि भीड़-भाड़ में लगकर लाइन में खड़े रहो, या तो आप कहीं से भी खरीद सकते हो। online भी।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

~~ईर्यापथ भक्ति में →~~

a "अपना काम स्वयं करें - दूसरों से न करवायें अन्यथा ईर्यापथ का मतलब मात्र द्रव्य ईर्यापथ (शब्द उच्चारण) ही रह जायेगा। वैसे भी किसी को आदेश देना शोभा नहीं है। असंयम का दोष लगेगा। आपको अतः अपना पाटा - संस्तर आदि स्वयं उठायें।"

24-5-18 "विज्ञापन हथकरघा का [चार बोतें] प्रातः

आप लोगों ने अभी अहिंसा के वस्त्रों के बारे में सुना। लगा कि वस्त्रों में भी हिंसा घुस चुकी है। इसे जितना जल्दी हटा सकते हो, उतना ही अधिक फल आपको मिलेगा। यह तो प्रायश्चित जैसा हो गया, जितना जल्दी हो कर लो। यह पहले आवश्यक है। एक पौराणिक प्रसंग से आपको बताना चाहता हूँ कि वे कितने जागृत थे। एक अतिथी के माध्यम से समझ सकते हो।

वह अतिथी जो बाहर से भीतर आना चाहता है। उसे पैर धोकर भीतर प्रवेश करना है। तो उसे एक लुटिया हाथ में दी (लोटा नहीं समझना / लुटिया को देखते ही वह समझ गया कि अहिंसा का अवतार है यहाँ पर। प्रवेश करना था उस मार्ग में पहले ही कीचड़ लग गया। पानी लुटिया भाग है और मिट्टी में दोनों पांव लथपथ थे। उसने तुरंत एक-दूसरे पाँव को रगड़ना प्रारम्भ कर दिया कुछ ही देर में पूरी मिट्टी झाग और पाँव बिल्कुल साफ हो गये।

जैसे आप लोग हाथ में आटा लगने पर करते हो उसी आटे के पानी से साफ कर लेते हो। उसने भी दूसरे अतिथी हेतु पानी बचाकर दे दिया। ये तो सेर पर सवासेर आ गया। अब आगे उसने अतिथी को कहा हमारे यहाँ जब से खबर है, रात्रि में खाना नहीं खा सकते। नहीं

मिलता ऐसा नहीं, रात्रि भोजन हमारी परम्परा में नहीं।
ये भी उस अतिथी
ने नोट कर लिया / आप तो - हाथ की रेखा तक भोजन
कर सकते है ऐसा तर्क देते हो। वहाँ पर ऐसा नहीं था।
प्याज और लहसुन की तो कभी गंध भी न आये
क्यों की पुरे मोहल्ले में घी एवं दूध के द्वारा सब
नेगेटीव (Negative/नकारात्मकता) खत्म कर दी गयी थी।
इस प्रकार उस अतिथी को विज्ञापन दे दिया गया।
अभयकुमार को चेलना द्वारा यह सब विज्ञापन समझाया
जा रहा है। बहुत पहले यह कथा मैंने पुराण ग्रन्थ
में पढी थी।
क्या हुआ? अभयकुमार इतना कुशल था।
आपके यहाँ परम्परा बिल्कुल ठीक थी। विज्ञापन में
भारत पहले ही प्रसिद्धि पा गया है। ऐसा आप तो
नहीं कर रहे हो। "अहिंसा धर्म के माध्यम से ही
जैन धर्म की इतनी ख्याती है।" इस बात को सदैव
याद रखो। जो कपड़ा आप उपयोग करते है उसी
से पानी छानने / रोटी रखने का छन्ना होता है, उसी
कपड़े का अचार निचोड़ी रखने हेतु, इसी कपड़े द्वारा
प्रभु जी (क्षीजी) का मार्जन होता है और उसी कपड़े
द्वारा जब पैर आदि में लड़खड़ान हो जाते है तो पट्टी
बांध सकते है। वो कपड़ा कोई रेशमी या विदेशी नहीं
होना चाहिये वह तो हतकरघा द्वारा निर्मित शुद्ध

अहिंसक वस्त्र होता है।

इन चारों बातों को हमेशा याद रखना है। तथा आप जहाँ कहीं से भी आये हों उन्हें भी बताना है। हमारा अलग से कोई विज्ञापन नहीं, इतने सारे व्यक्ति आये हो सभी इन चार बातों का विज्ञापन करो। वॉट्सप पर निकाल दो तो पूरे विश्व में चला जायेगा। बातें तो बहुत हो गयी किन्तु प्रयोग नहीं हो पा रहा है। बहुत कम समय में इस प्रकार का हुआ है।

आप लोग सोचते हो हम बच्चों से कोई काम नहीं करवायेंगे। यदि ऐसा करेंगे तो वो कोई काम के नहीं रहेंगे। सभी काम करेंगे तभी काम के लायक हो पायेंगे। वह अशोकनगर का व्यक्ति अपनी चोटी बांधकर संकल्पित है। माता-पिता ने हमें दान में दे दिया है। ऐसे एक-दो नहीं आज हजारों व्यक्ति तैयार हो गये। इन्हीं के माध्यम से उस स्वर्णिम अतीत को सामने लाना था। हमारे चार विज्ञापन हैं - भूलियो नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

□ जाति को मानना एवं जाति मूढ़ता होना अन्तर है। भवभक्ति को स्वीकार करना परन्तु भवभक्ति की पूजा करना अन्तर है न। पद्मावती का अस्तित्व स्वीकारना पर उसकी पूजा करना ठीक नहीं।

[11-5-18 उत्तरपुराण]

25-5-18 "मेरा सारा दुःख दर्द हरो" प्रातः

इतनी भक्ति से अभी आप लोग भजन कर रहे थे। उसमें एक पंक्ति जो मुझे बहुत अच्छी लगी। जल्दी-जल्दी दुःख दर्द हरो, मेरा सारा दुःख दर्द हरो। अब ये देखो कि गलती कहाँ हो रही है। इतने लोग एक साथ कह रहे हैं। गलती अपनी है या पराई है, थोड़ा सा देख लें। एक भँवरा होता है, उसके दाँतो में कितनी क्षमता होती है, इसको समझ लो।

छोटा सा भँवरा है। वह यदि लकड़ी में बैठ जाये तो दूसरे को बिना बुलाये स्वयं ही उसमें वातानुकूलित घर [ताकि वर्षा आदि हो तो रह सके] बना लेता है। किसी की सहायता नहीं लेता, बस ठान लिया आज इसे बनाकर ही छोड़ना है। कहाँ पर बनाना इसका निर्णय भी वह कर लेता है, जैसे आप लोग शिलान्यास कर लेते हैं। देखते-देखते उसने दाँतो से ऐसा घर टेढ़ा-मेढ़ा नहीं बिल्कुल गोल बिन्दी की तरह बना दिया।

अब उसमें रहेगा जब सुरक्षा का समय आयेगा। हमेशा उसमें नहीं रहता। अभी तो रोजी-रोटी काम पर निकलता है। दूर से गंध आ रही है। जिस ओर से गंध आ रही है, पैर उसी ओर बढ़ गये। उसे वह कमलवन मिल गया। परिक्रमा लगाकर सुगन्धि का सेवन करता है। बहुत बड़ा कमल

का फूल मिला उसी पर जाकर बैठ जाता है।

मन कहता है अभी तो मेरे लिये पर्याप्त मात्रा में है। "मेरा सारा दुःख दर्द हरो इसी से प्रवचन चालु हुआ था।" जब वह निकलना चाहता है, तब तक कमल बंद हो जाता है। सूर्यास्त हो जाता है। किसी भी किला (दुर्ग) में रहने वालो को समय का पालन करना पड़ता है। थोड़ा सा आलस्य हो गया, वह कमल बंद हो गया और वह भँवरा इसी में रह गया, कब खुलेगा पता नहीं।

अरे! हजारो कमल में भी सुरंग बनाने की क्षमता है तेरे पास। किन्तु वह सोचता है सूर्यनारायण जब निकलेंगे तब बाहर निकलूंगा। वह भूल गया - कमल पत्र बहुत कोमल होता है। जो शीशम को भी शीश झुका दें - छोड़ेगा नहीं उसकी ये क्षमता है। आप लोग पत्थर में विस्फोट करना हो तो बारूद डालते है, उस भ्रमर से पुछलो - विस्फोटक सामग्री कहाँ रखी है। वह भ्रमर रात भर उस कमल में पराग का सेवन करता रहा, प्रातः तो निकल ही जाऊँगा।

संसारी प्राणी के भीतर इसी तरह घटनाक्रम चलता रहता है। बीच में ही घटना घट गयी। अभी सुप्रभातम् नहीं हुआ। एक हाथी आया और उस कमल को दबा दिया। उस भँवरे की लीला वहीं समाप्त हो गयी। आप सुन रहे हो (हसी) "मेरा सारा दुःख दर्द -

हरी" कहा आपने।

चद्दा क्यों रहे हो, उसके पीछे छिपे रहस्य को जानें। भगवान बोल नहीं सकते - हम तो बोल सकते हैं। हमसे भगवान ने कहा - इनको बता दो। दर्द का कारण हमारे विचार - हमारे भाव ही हैं। हम भूल जाते हैं, तो मृत्यु सामने आ जाती है। राग - द्वेष नहीं करें तो दुनिया की कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है, जो हमें Control में रख सके। राग - द्वेष के वशीभूत हो जाते हैं तो कर्म का भूत लग जाता है।

फिर दूसरी गति में जाना होता है। वहाँ भी जीवन के आदि से अंततक चद्दा तोप रहता है। आज तक यह रहस्य नहीं खुला। बहुत दिनों बाद ऐसा योग मिला है। रात होने से पूर्व - प्रभात की प्रतिक्षा मत करो उस कमल को छोड़ दो। कोई जबरदस्ती आपको उसमें बंद करने वाला नहीं, इतना स्वतंत्र जीवन मिला है। इस काया को जेल मानोतब ना। कोई जेल मानता ही नहीं।

पढ़ते तो हो - "घर कारागृह वनिता बेड़ी, परिजन जन रखवारे" कितनी झूठ है ये सफेद झूठ है। घर को ही कारागृह बना लिया है। उसमें रहकर नयी - नयी आयुकर्म का बंध करता रहता है, तभी रवाना होता है। एक सेकेण्ड भी फालतु नहीं जाता। जहाँ का बंध करता है वहाँ चला जाता है, वहीं वहीं

कार्यक्रम फिर से चालु रहता है।

इसका निर्माता जीव स्वयं है। सिंह जैसे शिकार करके अपना गुजारा करता है उसी प्रकार संसारी प्राणी चार गति ८४ लाख योनियों में अपने ही द्वारा शरीर का निर्माण करता रहता है। उसे ही आपा मानता है। भ्रमर तो फिर भी ठीक - आपकी गति - मति अलग फिर भी वही कर रहे हो और कह रहे हो मेरा सारा दुःख दर्द हरो। कथा कभी शरीर को कारागृह माना है?

किन - किन को आपा (अपना) मानकर चल रहे हो? वे सारे के सारे पराये है। मोह - माया की बात है। मोह ऐसा द्रव्य है जो हमेशा - हमेशा गाफिल करता है। आपने भी ऐसा अशिष्टाण ले रखा है एक के बाद एक बोतल चैन सिस्टम से लेते जा रहे हो। फिर कहते हो - नशा उतार दो। कैसे उतारे? लेता ही जा रहा है। एक - एक समय का प्रबन्ध है भीतर। इस रहस्य को जिसने समझ लिया उसी का बेड़ापार है नहीं तो वह मझदार में ही रहेगा।

मिटाने का उपाय नहीं होगा। भँवरे का उदाहरण देकर कहा गया है, अपने दर्द का जिम्मेदार आप स्वयं है। अभी भी बाँधने का ही कार्य कर रहे हो। भगवान बोलकर बैठाया है तो भगवान से बात तो करलो। पैसे खर्च करके मकराना से लाकर यहाँ

पर विराजमान कर दिया।

वे भगवान हमसे तो बोलते हैं, आपसे नाराज है लगता है। अपने को दुःखी आप मानते ही नहीं। भगवान को कोई दुःख है ही नहीं। उन प्रभु के गुणों की हमें भी प्राप्ति हो। इसीलिये "वन्दे तद्गुण लब्धये अहं"। जैसे घर को जेल समझा वैसे ही शरीर को भी जेल समझो। अपने ही हाथों में स्वयं ने हथकड़ी लगा रखी है।

जैसे श्मसान में आग लगा देते हैं फिर उससे दूर होते जाते हैं कहीं वह आग हमें न लग जायें। वह यह नहीं जान रहा कि एक दिन इसी तरह मुझे भी जलना है। जो इस रहस्य को समझ ले वही दर्द हीक कर सकता है। आज थोड़ा सा अलग समय पर बुलाया गया एवं जल्दी छोड़ने हेतु कहा गया। ऐसा क्यों किया - क्या कारण है वह इन्हीं लोगों से पुछ लेना। (गर्मी के कारण 5 मिनिट जल्दी)

भंवरे का (उदाहरण याद रखना। पूजन की पंक्तियाँ तो प्रतिदिन पढ़ते ही हो (सुनते-सुनते मुझे भी याद हो गयी।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ ॐ "सर्वार्थसिद्धि को जितने बार पढ़ोगे उतने ही बार आपको नये अर्थ / अलग चिंतन देगी।"

21-5-18 "ठोकर खाने से आती अकल" प्रातः

एक माँ अपना दैनन्दनी कार्य कर रही थी। उसका एक लाड़ला बेटा जो बहुत दिनों के बाद हुआ था वहीं पर था। माँ उसे भी लाड़-प्यार करते हुये अपना काम कर रही थी। बीच-बीच में बालक भी अपनी चंचलता का परिचय दे रहा था। इसी कारण वह बालक वहाँ रखे दिपक को देखकर उसे पकड़ने की कोशिश करता।

दिपक ऊपर होने से वहाँ तक हाथ नहीं पहुँच पा रहा था। माँ ने देखा ये दीपक को पकड़ना चाहता है, अतः उसने दिपक को दिवार से दूर रख दिया परन्तु बालक तो उसे बार-बार पकड़ने हेतु प्रयास करता। एक दिन उसने दीपक को पकड़ ही लिया। पकड़ते ही सीधा करंट - Mob. No. पहुँच गया। माँ ने भी देख लिया। परन्तु अब वह उसे उससे दूर नहीं अपितु कहती है ले पकड़ ले = ~~पकड़ ले~~।

अब बालक कहता है - नहीं अब नहीं पकड़ूँगा। माँ फिर से कहती है - ले पकड़ ले और दिपक को पास भी खिसका देती है। इस उदाहरण के बाद मुझे बताओ। आपका हाल तो और ज्यादा गड़बड़ है। "अनुभव के बिना संसारी प्राणी रागादिक का त्याग नहीं करता।" अनुभव के लिए ही उसे विशेष व्रत-नियम आदि हेतु बाध्य किया जाता

है अथवा दिलाये जाते हैं।

अब आप लोगो को ज्ञात हुआ। जब जेल में भी इस तरह की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी (हथकरघा)। जेल में यह कैसे घुस गयी? उन लोगो को समझ में आ गया कि सही काम कराकर- मानवीय कार्य कराकर इन लोगो (कैदीयों) के जीवन को भी बदला जा सकता है। अब उन से अनुशासन हेतु कहना नहीं पड़ता और आपको कई बार कहना पड़ता है फिर भी अनुशासन में नहीं रह पाते हो।

होकर लगेगी तब समझ में आ जायेगा। क्यों कि ऊपर देखकर चल रहे हो ना। और देखो ऊपर (व्यंग्य)। चलते-चलते अभ्यास हो जायेगा नीचे देखने का। जब नीचे देखने लग जाओगे तो भारत का इतिहास क्या था? हमारा क्या कर्तव्य है और हम क्या करते आ रहे हैं। उस बालक की तरह आपकी भी वही दशा हो गयी हो हम भी कहेंगे पकड़ो और पकड़ो।

सागर वालों से यही कहना चाहता हूँ। हथकरघा के इन कपड़ो मे मुख्य चार गुण हैं- प्रथम ये अहिंसक है। वर्तमान मे कोई भी वस्त्र अहिंसक नहीं मात्र हथकरघा से निर्मित कपड़ा ही अहिंसक है। आप सभी गृहस्थों के लिये यह

कार्य कैदियों ने किया है।

दूसरा पानी छानने का छन्ना इसी से बनेगा। विदेशी वस्त्र से तो पानी छनता ही नहीं। तीसरा श्री जी का प्रक्षाल इसी वस्त्र से होगा। और जिनवाणी को बांधकर रखना चाहो तो कौनसे वस्त्र में रखोगे? इसी वस्त्र का अछार उस आगम को सुरक्षित रख सकेगा। इस प्रकार चार गुण तो बता दियो और भी गुण है। पाँचवा - यदि लग जाये तो पट्टी किस कपड़े की बांधोगे? पहले टीका लगाकर पट्टी बांधते थे। वह इसी कपड़े की होती है।

विदेशी पट्टी से तो घाव और पक जायेगा। इससे स्पष्ट है कि हथकरघा में ही प्रकृति तक पहुंचने की योग्यता है। इनसे बहुत से लाभ है जो आप स्वयं पहनोगे तभी जान पाओगे। जिन्स से क्या हालत होती है - आप ही जानो। त्वचा रोग तो हो ही जाते हैं। थोड़ सा इतिहास पढ लो सब ज्ञात हो जायेगा।

कुछ ही एक प्राचीन लेख - सामिका में मुझे दिखाया जिसमें लिखा था द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व 1945 में भारत से तरह-तरह के वस्त्र निर्यात होते थे। एक वर्ष में एक अरब २० लाख गज कपड़ा बाहर जाता था। ज्यादा न कहते हुये इन्हीं शब्दो से विराम कि उस बच्चे की भांति अनुभव प्राप्त हो ताकि आपको उपदेश न देना पड़े।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

(1) संस्मरण → "कोई भी तनाव में नहीं रहना चाहता"

बात पपौरा जी की है। गर्मी बहुत तेज - नौ तपा चल रहे थे। आचार्य श्री कुछ अस्वस्थ थे। 2-3 दिन से मंच पर प्रवचन-पूजा हेतु भी नहीं गये। हम लोग कुछ सेवा - वैय्यावृत्ति कर रहे थे। आचार्य श्री बैठे हुये अपनी दोनों बगल में हाथ की हथेलियों तख्त पर टिकाकर विश्राम मुद्रा में थे क्यों कि वे टीकते (पीठ) तो है ही नहीं। जब काँफी देर हो गयी तो दोनों हाथों एवं हथेली में बहुत पसीना आ गया। आचार्य तुरन्त बोले - "देखो कोई भी तनाव सहन नहीं कर सकता।" चाहे छोटा व्यक्ति हो या बड़ा व्यक्ति तुरंत गरम हो जाता है। हाथ पर थोड़ा सा शरीर का वजन आया तो पसीना - पसीना हो गये। अतः कभी किसी पर तनाव मत डालो तथा स्वयं भी तनाव में मत रहो।

(2) "गुरुजी के साथ बीते जो पल"

"गुरुजी ने जयोदय महाकाव्य को लिपीबद्ध कर दिया किन्तु वह महाजनी घसीटे की जो बही खाता उसमें बिना मोड़ के। दूसरा कैसे समझेगा। तो मैंने उनके द्वारा उस रचना की सम्पूर्ण नकल व्यवस्थित अलग से की जो बाद में प्रकाशित हुयी। आचार्य से पूछा आप द्वारा लिखी हुयी कॉपी कहाँ है? आचार्य जी बोले - कहीं तो होगी। हमें ज्ञात नहीं कहाँ है?"

[सांगानेर के ऽ०पण्डित छात्र]

GROUP

29-5-18 "कर्त्तव्य का बोध कराता तनु प्रत्यय" सांय 6.15

सब भाषाओं की तरह संस्कृत में भी क्रिया पद होती है। किन्तु यह एक ऐसी क्रिया पद है जो एकदम बाध्य करती है। तनु प्रत्यय के साथ जो क्रिया होती है वह भीतर तक झकझोर देती है। जैसे- कर्त्तव्यम्, गन्तव्यम्, आगन्तव्यम् आदि। वर्षों के बाद भी यदि प्रयोग होगा तो भी वही अर्थ देगी। रत्नकरण्डश्रावकाचार में भी भगवान होगे कहा। भगवान् भवितव्यम् कहा।

कैसे भगवान है? वाग्देशना - हितोपदेशना तृतीया विभक्ति के साथ कहा। तनु प्रत्यय बहुत ही महत्त्वपूर्ण अर्थ देने वाला है। कर्त्तव्य का बोध कराने वाला है। [ये देखो छोटे-छोटे बच्चों को और कुछ आये या न आये मोबाइल चलाना जरूर आता है। आप लोगो से भी अच्छा चला लेते हैं।] [m.b. चलाने पर]

तो तनु प्रत्यय क्या है? एक-दूसरे से सीखकर के जान सकते हैं। उससे आगे बढ़ सकते हैं। पूर्वजो ने जो किया उसे भी अपना कर्त्तव्य मानकर चलें।

कर्त्तव्य जहाँ होता है, वहाँ अन्य किसी भी क्रिया पद की आवश्यकता है ही नहीं। सलाह से काम होने वाला नहीं है। लोट्लकार की अपेक्षा भी तनु प्रत्यय प्रेरणादायी होगा। तनु प्रत्यय से ज्ञात हो जाता है कि स्वरूप क्या होना चाहिए और

चाहिए नहीं होगा ही।

कई लोगो को यह प्रत्यय खटकता (अखरता) होगा किन्तु यह सही कह रहा हूँ। कार्य को करना ही हमारा स्वरूप है। वर्तमान के हैनन्दनी कार्यक्रम में प्रायः करके इसकी अनुपस्थिति सी ही रहती है। यूँ कहना चाहिए कि इसके बिना जीवन में कठोरता आ जाती है। कुछ लोग आकर हमें सुनाते हैं - अब 10 वीं कक्षा तक परीक्षा की कोई आवश्यकता नहीं। बच्चे बहुत खुश - माता - पिता भी प्रसन्न हो गये।

ध्यान रखना - ये परीक्षा नहीं तो अग्निपरीक्षा भी नहीं। जब अग्नि परीक्षा नहीं तो लक्ष्य की प्राप्ति भी नहीं क्यों कि अग्नि परीक्षा ही तो अन्तिम परीक्षा होती है। कर्त्तव्य का पूर्ण निर्वहन होना चाहिए। मात्र शिविर तक ही ये सीमित न रह जाये। शिविर के वाच्य विषय को क्रियापद के साथ बच्चों के सामने रखें। जैसे - बिना प्रशिक्षण के ही मोबाइल सीख गये वैसे ही कर्त्तव्य की बात भी सीखना अति आवश्यक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

विशेष → इष्टोपदेश एवं हितोपदेश में अन्तर है। आत्म कल्याण/अध्यात्म की ओर ले जाता है इष्टोपदेश। व्यवहार का सही ज्ञान देता है - हितोपदेश। [चाणक्य के समय]

1-6-18 "मांगो मत मिलेगा" प्रातः

ये बुन्देलखण्ड है। बुन्देखण्ड में भी ढेठ बुन्देलखंड है। यहाँ की जनता देव शास्त्र गुरु के प्रति हमेशा जुड़ी रहती है। अभी आपके सामने सतना समाज की ओर से कुछ कहा जा रहा था। सुनलो। "आप मांगने जाओगे कोई नहीं देगा और वो देने को तैयार हो तो... रखने के लिए स्थान नहीं मिलेगा।" [एक करोड़ ।। लाख नकद दिया - पंचकल्याणक की शुद्ध बचत 5 करोड़ में से पहली किश्त] इसलिये मांगना छोड़ दो।

सात्विक जीवन के साधु लक्ष्मी को बचाकर रखते हैं। बुन्देलखण्ड में हमने अनुभव किया। जब भी कोई कार्यक्रम / अनुष्ठान हो तो उसमें बचत अवश्य करें। मैं सदैव यह सूत्र सबको देता रहता हूँ- "अनावश्यक नहीं करना और कंजुसी भी नहीं करना।" इससे अपने आप ही गाड़ी बेलेन्स हो जाती है। इन लोगों ने पूर्व में बड़े बाबा के लिए भी इसी तरह की राशि (बचत) दी थी। यह उनका प्रयास सभी के लिए अनुकरणीय है।

समय पर उन्होंने पुरा कार्य किया। आप लोग भी इस प्रकार से कर सकते हैं। बुन्देलखण्ड में बड़े बाबा को कवर जीर्णोद्धार की यह प्रक्रिया चली फिर अन्य क्षेत्रों के लिए भी इसी तरह से राशि जाने लगी - जा रही है। यह जनता की लगनशीलता

का ही परिणाम है।

इस बुन्देलखण्ड में इस तरह की राशि के साथ समय भी दान किया जाता है। दानदाता दानराशि देकर चले जाते हैं - समय दान देना बहुत कठिन है। उस समय द्वारा ही दानराशि का सही उपयोग किया जा रहा है। बुन्देलखण्ड में ही ये पपौरा क्षेत्र है। लगभग 1½ महिने का अभी प्रवास हो गया पुराना प्रवास तो था ही ये नया प्रवास हो गया। इस 1½ माह में अनेक लोगों का सामान सामने आ गया।

गर्मी में भी बाहर निकल दिया है। नये तो है ही नहीं हम भी पुराने हैं। भावों को जैसा व्यक्त करोगे वैसा फल मिलेगा। पपौरा जी में विद्यालय की बात आयी थी। उसका प्रारूप तैयार हो गया। कार्यकर्ता उसे आपके सामने लायेंगे। परीक्षा में उत्तीर्ण होकर इस विद्यालय हेतु मुख्य सामग्री (शिक्षिकायें) पूर्व पीठिका के रूप में आप सभी के समक्ष उपस्थित हो गयी हैं।

उन सभी से आज प्रातःकाल थोड़ी-बहुत बात हो गयी। आगे और होती रहेगी। एक ही मुख्य बात कही - समय बहुत कीमती है, हमेशा उसका ध्यान रखें। समय ही मूलधन है। यदि समय हाथ में नहीं तो राशि का कोई महत्व नहीं। मतलब नहीं। समय का उपयोग करते हुये राशि का सही उपयोग करेंगे,

इसका ध्यान रखना जरूरी है।

मन्दिर बन जाता है तो कार्यकर्ता विश्राम पाते हैं। पूजन आदि चलता रहता है - परिश्रम नहीं करना पड़ता किन्तु यह विद्यालय (ज्ञान मन्दिर) ऐसा है एक बार प्रारम्भ (स्थापित) कर दिया अब मुकुर नहीं सकते। मात्र स्ट्रेक्चर से विद्यालय नहीं चलता। कार्यकर्ता भी अब सो नहीं सकते। शिक्षक - शिक्षिकायें आदर्श रूप में नहीं तो विद्यालय का कोई मायना है ही नहीं।

हमारे सामने करोड़ों नहीं - अरबों रुपये खर्च करके आते हैं। उच्च कोटि का मेटेरियल लगाकर बिल्डिंग (भवन) बनाते हैं - इंजीनियर - मेडिकल कॉलेज खोलते हैं पर विद्यार्थी नहीं आते/मिलते। फिर मांग आती है - महाराज! इस भवन में आप प्रतिभास्थली खोल सकते हैं। मैं कहता हूँ कि ये प्रतिभा स्थली के योग्य नहीं हैं। इतने बड़े कक्ष में 60-70 विद्यार्थी हेतु ठीक नहीं। मुफ्त में मिल रहा है तो ले लो ऐसा नहीं। व्यय तो मुफ्त में नहीं हो रहा।

व्यवसायिकरण के कारण यह स्थिति हो गयी है। व्यय जितना आवश्यक हो उतना ही करो। प्रबंधन से भी कार्य होता है। प्रबन्धन सही होना चाहिये। प्रतिभास्थली ने यह बिड़ा उठाया। लगभग 120 छात्राओं का प्रबन्धन यहाँ पर आवासीय व्यवस्था के साथ होने जा रहा है जिसमें

यहां की समाज भी साथ है।

इस कार्य को अच्छा मानकर टीकमगढ़ समाज - कभी तनमन धन से सहयोग दे रही है। आगे भी देगी। हमने सोचा कभी तो बदलती रहती है, ऐसे में प्रतिमास्थली का भविष्य क्या होगा? इसके लिए दायित्व चाहिये। आगे किसी भी तरह से चुनाव की बात न आवे। लिखित रूप में दो तो हम सोच लें। शिक्षिकाओं ने उन्हें दे दिया। इससे बिना व्यवधान के कार्य चलता रहे।

सतना वालों ने पहली किस्त बचत राशि की बात रखी। मांग करेंगे तो नहीं मिलेगा ऐसा नहीं कहता किन्तु मांग करने में उनके लिए सोचना पड़ता है। इस तरह अब आप सभी का कर्त्तव्य है प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि राशि का पूर्ण सदुपयोग हो - अपव्यय न हो। भारत का प्रत्येक नागरिक इसका ध्यान रखे तो इतिहास ठीक रहेगा। अन्यथा मंदी आने में देर नहीं लगती।

सुन रहे हो! (हंसी) मंदी दो तरह की - भूख की मंदी - कमाने की मंदी। दोनों का प्रभाव भारत में नहीं। खाते समय भी यहां - तहां नहीं खायेंगे। परिणाम स्वरूप आर्थिक स्वास्थ्य भी ठीक बना रहेगा। इसी प्रकार आगे की उम्र भी बढ़ती जाये - कर्म की उम्र घटती जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

२-६-१६ "कैसे संभाले परिणामों को" प्रातः

आज जगह बहुत कम पड़ रही है। इसलिये हमारा कहना है ज्यादा लोगों को निमन्त्रण मत दिया करो। सुनो। कितने भी करो कुछ ऐसे परिणाम होते रहते हैं, उसके बारे में अपने को जानकारी रखना चाहिये। सभी व्यक्ति अपने हृदय/मन में धार्मिक भाव रखना चाहते हैं। कई लोग शिकायत करते हैं - महाराज हमारे मन में ऐसा नहीं रह पाता और परिणाम बिगड़ जाते हैं, हम चाहते तो हैं नहीं।

हमने पूछा - अपने स्वयं पर बिगड़ते हैं या दूसरों पर बिगड़ते हैं? स्वयं पर कम और दूसरों पर तो बहुत जल्दी परिणाम बिगड़ जाते हैं। तो अब सुनो! कूबत से बाहर काम कभी भी नहीं करना चाहिये। क्यों कि - "कूबत कम गुस्सा ज्यादा लक्षण है पिट जाने का, आमत कम खर्चा ज्यादा लक्षण है मिट जाने का।" आप मिटना तो नहीं चाहते? नहीं महाराज हम न मिटना और न ही पिटना चाहते हैं।

कूबत से बाहर यदि गुस्सा है तो पक्का है पिटाई तो होगी। इसलिये परिणामों को संभालने की बहुत आवश्यकता है। जब इस प्रकार के परिणाम होने लगे जायें तो प्रासंगिक कार्य करना बन्द कर दो। कोई घटना घटे उससे पूर्व इस तरह की तैयारी की जाती है। घटना न

बटे तो चल सकता है।

परिणाम बिगड़ जाते हैं तो चलना कठिन हो जाता है। एक उदाहरण दे देते हैं। जैसे - सिगड़ी पर पकाने हेतु कुछ रख दिया। जल्दी पक जाये इसलिये उस पर एक तस्तरी रख दी। तस्तरी अनुपात से रखी जाती है - ऐसा नहीं कि छोटी हो अन्यथा वह अन्दर ही घुस जायेगी। इसके उपरान्त जब वह तस्तरी नाचने लग जाये। [नाचते हो ना आप भी - नाचना दो प्रकार का होता है, इसकी चर्चा बाद में करेंगे] आवाज आने लगी तो बनाने वाला उस तस्तरी को थोड़ा सा खिसका देता है।

जैसे ही खिसकाया उसमें से चिमनी की तरह भाप निकलने लग जाती है। अब वह तस्तरी बोलती नहीं - भीतर का काम होता रहता है। अपने परिणामों को भी इसी तरह समझ लेना। प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त - अन्तर्मुहूर्त में उड़ने एवं गिरने की नौबत बनी रहती है। सावधानी रखें तो हरेक व्यक्ति भगवान बनने की क्षमता रखता है। अपनी तस्तरी को इसीलिये पहले से इस प्रकार थोड़ा सा खुला कर दें ताकि जल्दी पक भी जाये और भीतर का सामान बाहर भी न आये।

हमारे आचार्यों ने इसी को विशुद्धि एवं संक्लेश की संज्ञा दी है। विशुद्धि में भी धर्म करना है, शुभ

न जाये। इतना संक्लेश भी नहीं हो जाये कि धर्म ही न रहे। तेरा-मेरा में ही बीत जाये मेरा-मेरा मात्र रह जाये। ऐसे में सोच ही समाप्त हो जाती है। धर्मात्मा को चाहिये वह सावधानी बनाये रखें।

कितना भी बड़ा साधक क्यों न हो परिणामों को कभी एकसा नहीं रख सकता। आचार्यों ने यहाँ तक कहा कि अपने परिणामों को नहीं संभाल पाते तो सामायिक को छोड़ो स्तुति-पाठ-प्रतिक्रमण करो, वैय्यावृत्ति करो - विहार करो। महावीर भगवान तीर्थंकर होते हुये भी एक ही स्थान पर 12 वर्ष तक नहीं रहे। उन्होंने भी अलग-अलग स्थानों पर विहार किया।

एक ही स्थान पर रहने से दोष आना स्वभाविक है इसीलिये विहार की आज्ञा दी है। जिस प्रकार यहाँ भी संघ आया है उसी प्रकार यहाँ से अन्यत्र .... (बोली) होश-हवाश ही उड़ गये। आना-जाना तो होता ही है। कमाई-कमाई में लगे है। कम आई ऐसा भी तो होता है। दुकान हमेशा एक सी नहीं चलती। घाटा भी लगता रहता है किन्तु बहुत बड़ा घाटा नहीं लगना चाहिये।

दुकान की ज्यादा बढ़ाई नहीं करो। इससे कमाई नहीं होती। प्रशंसा की भूख नहीं होते हुये भी इन पक्षियों से यही सीख लेनी चाहिये।

आपको प्रशंसा भी मिल सकती है तो अनादर भी मिल सकता है।

अपने परिणामों को इन सभी परिस्थिति में संभालकर रखना पड़ता है, यदि परिणाम नहीं संभाल पाओगे तो तस्तरी उड़ जायेगी और खिचड़ी बाहर आ जायेगी। इसी कारण से व्रती - संयमी अपने आचरण को हमेशा व्यवस्थित रखता है। हर कार्य - हर क्षेत्र में इसी तरह करना चाहिये। परिणामों को संभालने के लिये इस उदाहरण को अपने पास रखना, अन्यत्र नहीं रख देना।

सभी बातों के साथ अनुपात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। खिचड़ी में कितना पानी डालना, हवा कितनी देना इन सभी बातों का ध्यान रखा जाता है। अनुपात के अभाव में भयानक परिणाम निकल सकते है। चाहे श्रावक हो या श्रमण दोनों को ही सावधानी रखना आवश्यक है। समय हो गया है। बोलियों में ही समय ले लेते हैं, महाराज को तो भूल ही जाते हैं। महाराज के लिए भी बोली है. इसका ध्यान रखो।

हुओ तो कहो। हमने जतारा वालों को जता दिया। [तालियाँ] देखो नाम भर ले लिया तो क्या हो गया। ज्यादा जताना ठीक नहीं, हिकमगढ़ वाले क्या कम है? इसलिये अपने परिणामों को संभालने

रहें। वेग बहुत खराब होता है। चाहे वह विशुद्धि का हो या फिर संक्लेश का हो। उस वेग में धर्मध्यान छुट न जाये, धर्मध्यान बना रहे।

कर्म के वेग में ऐसा होता है। "धर्म करने का नाम ही धर्मध्यान है।" धर्म ध्यान करने हेतु आपको अन्य सभी बातों को सहन करना ही होगा। ऐसा नहीं कि बहुत दिन हो गये - अब संक्लेश होता है। महाराज का आहार नहीं हुआ। आपके लिए भी शुद्ध धर्मध्यान का अवसर है। बस संक्लेश नहीं होना चाहिये। कभी-कभी मन बिगड़ जाता है। इसी पर तो लगाम लगाना है।

संतोष रखना है। संतोषी देवी को पास रखो। उसकी सेवा होनी चाहिये। कब तक? जब तक सफलता न मिले। दूसरे को मिल जाती है, हमें नहीं? ये ही तो दीर्घ धर्मध्यान का अवसर दिला रही है। "जब तक पास न हो तब तक प्रयास करते जाओ।" ऐसा मैं मानता हूँ। दाता के सात गुणों में एक संतोष गुण भी है। अपने गुणों को याद रखो। इसके साथ ही दूसरे के गुणों को भी याद रखो। अपने दोषों को याद रखो। अपने गुणों के ढकने से कर्म की निर्जरा होती है, केवल निर्जरा तत्त्व के रटने मात्र से निर्जरा नहीं होती।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

रविवार
३-६-१८ "जगतमन्थन नहीं आत्ममन्थन हो" प्रातः

बुन्देलखण्ड की परम्परा है, यद्यपि यह अन्यत्र भी है फिरभी इसका अपना महत्त्व है। वह क्या है। तो नौ दिन के तपा यहाँ तपते हैं। लगभग २७ मई से यह आरम्भ होते हैं और एक-एक दिन अधिक-अधिक तपता चला जाता है। इसका प्रभाव यह होता है कि विशाल आकाश में अपने आप ही बादल (घटायें) छा जाती है। यह सोचना चाहिये कि इतना जल कहाँ से आया? नीचे तपा उसी के माध्यम से ऊपर पहुँच गया।

धरती तपी तभी सागर का जल ऊपर उठ गया। अभी पुरा सुन तो ली सागर वालो (हजारों लोग आये थे) तालियाँ बज गयी। वह जल सबकी प्यास बुझाने हेतु धरती से ऊपर उठ गया। इसके उपरान्त बरसेगा कहाँ? सागर वाले कहेंगे हमने तपस्या की है, यहीं पर बरसना चाहिए। अब कोई भी ताली नहीं बजा रहा है। ध्यान रखो! धरती तपी है, वर्षा तो होगी जहाँ ज्यादा जरूरी है।

उस जल का सदुपयोग होना चाहिये। जहाँ तपी है, वहाँ भी फसल हेतु जल बरस जावे इस हेतु मन वचन काय से अनुमोदना कर लेना चाहिये। आखिर जल जायेगा कहाँ? सागर को तो वाहा है ही नहीं। वैसे भी सागर को इतनी प्यास लगती भी

नहीं, लग भी जाये तो कोई मानेगा नहीं।

खारा पानी होने के कारण। यह आपकी भावना है। फिर भी जहाँ आवश्यक है, उस आवश्यकता की पूर्ति होना चाहिए। वह तभी जब भीतर से बंधा हुआ पुण्य समय पर उदय में आवे। नहीं तो सुनते है मानसून तक भटक जाते हैं। भटक जाने का मतलब जो बैठ जाता है उनकी ओर नहीं आता। मानसून कभी भटकता नहीं, जहाँ के लोगो का पुण्य (भाग्य प्रबल होता है, वहाँ चला जाता हैं।

मैं मानता हूँ आप लोगों को भी प्यास तो लगी है। ये बताओ सागर वालों! सागर में बड़ी-बड़ी नदियाँ आकर मिलती हैं। इससे सागर में पानी तो काँफी मात्रा में आ जाता हैं किन्तु वह खारा होता है। यदि नदियों पर बांध बनाकर तैयार किया जावे तो दूर-दूर तक उपयोग किया जाता है। परोपकार की भावना रहती है। हमें भी चाहिये - हमें भी चाहिये। तो तीर्थंकरो ने ही उस बांध का बनाने मार्ग बताया।

आज तक वह कार्यक्रम अनवरत चला आ रहा है। तीर्थंकरो के द्वारा बना है, आपको भी यही करना है। भावना भाते रहो। तीर्थंकर का विहार होता है। छहखण्डो में से एक ही खण्ड में (आर्यखण्ड) बाकी के खण्डो में विहार नहीं होता। हाँ,

चक्रवर्ती दिग्विजय हेतु जा सकते हैं।

धार्मिक उपदेश तो आर्य खण्ड में ही मिलेगा। पुण्य से हमें जो तीर्थंकरों ने मार्ग बताया है, परम्परा से यहाँ तक आया है उसका उपयोग करना प्रारम्भ करो। जीवन में स्थान देने का प्रयास करो। जिसके लिये नहीं मिल रहा, उसके लिए भी मिले। इस तरह की भावना प्रतिदिन पूजन में करते हो। काले-काले च सम्यग् .... होवे वर्षा समय पर .... सर्वत्र वर्षा हो, सर्वत्र सुभिक्षा हो ऐसी भावना होनी चाहिये।

समय पर जहाँ पर वर्षा न हो - वहाँ पर फसल पहुँचा दो। अपने लिये ही न रखो। हमने तपस्या की है - हम ही रखें ऐसा नहीं होना चाहिये। तीर्थंकरों ने भी बाँटने के लिये कहा है "प्रत्येक श्रावक का कर्तव्य है - बांटना। डाँटना नहीं।" पोदीने की चटनी की तरह नहीं बांटना। बाँटना मतलब वितरण करते जाओ। वितरण बहुत महत्त्वपूर्ण है। गत रविवार को मैंने कहा था - किसान वितरण करने वाला होता है - जैन समाज (बनिया) नहीं।

हम भी जो मूल उत्पादक हैं - किसान की तरह बनें। वह भले ही tax नहीं देता किन्तु tax देने वालों के पास अपनी फसल पहुँचाता है। इसी का नाम वितरण है। श्रावक इसी तरह दानादि द्वारा वितरण

करता रहता है।

श्रमण अपनी चर्या के माहात्म्य से वितरित करते रहते हैं। फिर भी आप लोग शिकायत करते रहते हो। आप लोग भी अभ्यस्त हो गये, हम भी अब अभ्यस्त हो गये। सागर में कितनी बार चातुर्मास हो गया ये कोई नहीं बोलता। [एक बार] आप बुमाना जानते हो तो मैं भी जानता हूँ। सागर जिला की बोली। इसी तरह म० प्र० में कितने चातुर्मास हो गये – अनगिनत हो गये।

कितने पंचकल्याणक हो गये, कितने ग्रीष्मकाल-शीतकाल हो गये, कितने विहार हो गये। बताओ। पांच पंचकल्याणक पुरे हुये। कभी भी मुख से नहीं सुना। केवल मांग करते रहते हैं। हम भी जानत हैं। हम उतना ही वितरण करते हैं-ज्यादा नहीं करते। यदि अपने पास रखोगे तो पक्का है- आप जानते हो या मैं जानता हूँ। सभी को उदारता के साथ यह अवसर मिले। फिर पपौरा में आकर पपौरा वालों के साथ छिना-झपटी करोगे तो गड़बड़ हो जायेगा। हाँ, सागर संभाग का कहो तो व्यापक है।

सागर को कौन रखेगा? कहाँ रखेगा? मंथन करो। हीरा मोती – नवनीत जो निकले उसे ले लो। इसलिये धर्म की वृद्धि हो, अहिंसा का विकास हो ऐसा कार्य करते रहें। पहले नागरिक

बनें फिर नारायण बनने की चेष्टा करें।"

जो नारायण बना है उसका आत्म मंथन करो। अब जगत मन्थन नहीं - आत्म मन्थन की आवश्यकता है। कई बार हमें द्रव्य-क्षेत्र-काल की प्राप्ति हुयी किन्तु जैसा होना चाहिये था वैसा नहीं हुआ, इसी कारण यह संसार चल रहा है। यदि नहीं संभल पायें तो और कठनाई में पड़ सकते हैं। एक-एक क्षण बहुमूल्य है इसका मूल्य हम बता नहीं सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

विशेष/संस्मरण - □ गुजरात यात्रा के समय तथा कई बार आचार्यश्री कहते हैं- कैशलोंच के बाद एक-एक बाल की सफाई करने से यदि किसी के परिणाम विकृत होते हैं तो उसका दोष केशलोंच करने वाले को लगेगा। आपके कारण उसके परिणामों में विकृति आ रही है। इसलिए ज्यादा सुन्दर दिखने का प्रयास नहीं करें।

□ आचार्यश्री क्या आप टेंशन रखते हैं - किसी ने पूछा आचार्यश्री ने जवाब दिया जो लाजवाब था- हाँ मैं टेन सन् रखता हूँ मतलब उत्तमक्षमादि 10 धर्मों को सदैव अपने साथ रखता हूँ।

□ श्वेताम्बर ग्रन्थों में आया जो गोचरी पर स्वयं नहीं जाता दूसरों द्वारा लाया भोजन भी ले उसका भी उपवास मानते हैं।

5-6-18 "भेदभाव से दूर कैसे हो" प्रातः

ये आपको ज्ञात होगा या सुना होगा या पढ़ा होगा। ये तीनो ही नहीं नहीं तो अभी सुन सकते हो। आप सुनने बैठे हो, हम सुना रहे हैं। प्रत्येक द्रव्य में परिणमन करने का स्वभाव होता है। परिणमन का अर्थ नये से पुराना हो जाना है। तो पुराना कहाँ चला जाता है? नया कहाँ से आता है? ये स्वभाविक प्रश्न उठना प्रारम्भ हो जाते हैं।

पुराना बदलकर नयापन आ जाता है, इसको बदलाहट कहते हैं न कि नष्ट हो जाना। कोई भी पदार्थ पूर्णतः शून्य कभी नहीं होता। कुछ ऐसे भी पदार्थ हैं जो एकदम पुनः परिणमन नहीं करते। जैसे- घी का परिणमन पुनः दूध अथवा दही रूप में नहीं आता ये स्वभाव है। जब विश्वास के साथ सही प्रक्रिया से दूध को जमाया जाता है तब दूध-दही रूप परिणमन करता है। दही का मन्थन करते हैं तब नवनीत प्राप्त होता है, नवनीत को तपाने से घी प्राप्त होता है।

ये चार-पांच तरह की बदलाहट आपके सामने आ गयी। किन्तु अब घी में इस तरह की बदलाहट नहीं। इसी प्रकार जीव में भी घटित होता है। अब ये हमारा भाग्य कहो अथवा नासमझ कहो जो हमें दिखता नहीं। मोक्ष मार्ग में या

हित सम्पादक में यही बताया जाता है।

इसमें मिलना आदि कुछ नहीं, बदलाहट होती है। ये बदलाहट अन्तिम रूप में भी होती है। अब घी को तुम तपाओ - जमाओ वह दूध जैसा परिणमन नहीं करेगा। कुछ भी नहीं होगा ऐसा भी नहीं है। घी रूप होने से कुछ न कुछ बदलाहट तो होती है। जीव का भी ऐसा ही है- संसार में जनम - मरण चलता रहता है मुक्त होने पर। सिद्ध होने पर अब इस तरह की बदलाहट नहीं किन्तु बदलाहट से मुक्त भी नहीं।

इसके स्पष्टीकरण में हम एक बात बताना चाहते हैं। अनेक प्रकार की धातु होती है - उसमें पारा भी होता है। इसके माध्यम से आप आत्मा के लिए अपनी धारणा स्पष्ट बना सकते हैं। हम आपको बाध्य तो नहीं कर सकते पर बता सकते हैं। सुन रहे हो या नहीं ये कुछ भी सकते हैं सोने - चांदी - तांबे आदि को जलाने से भस्म बन जाती है। इसी प्रकार से अन्य धातु भी भस्म बन जाती है, आयुर्वेदाचार्य जी से समझ सकते हैं।

पारा को जलाने से पारा भस्म बन जाती है। अन्य भस्म जैसे स्वर्ण भस्म बनने के बाद पुनः स्वर्ण रूप नहीं होती किन्तु पारा भस्म के साथ ऐसा नहीं, यदि

खटाई का योग प्राप्त हो जाये तो पुनः पारा बन जाता है। शरीर को फाड़कर बाहर भी निकल सकता है। ये अशुद्धि से शुद्धि रूप परिवर्तन हो जाता है अथवा शुद्धि से अशुद्धि रूप भी हो सकता है, पुद्गल की तरह।

इसी आधार पर कुछ लोग कह सकते हैं कि आपके निमित्त से हमें मुक्ति मिल गयी अब बहुत दिन हो गये। मन नहीं लगा सो पुनः पारे की भांति संसार में आ गये। हम आपकी बात कैसे मान लें? "मोक्षमार्ग में किसी को भी बाध्य नहीं किया जा सकता है।" फिर भी कोई पुनर्कर बाध्य हो जाये तो हम तो यही समझेंगे हमारा मंत्र सही काम कर रहा है।

मंत्र से बीमारी मिट भी सकती है और नहीं भी, ये आपके ऊपर है। आपको मंत्र पर कितना विश्वास है। महामंत्र की आराधना आप ही नहीं मुसलमान तक करते देखे हैं। झाड़ देते हैं। आपने पूछा - क्या है ये? उसने कहा - णमोकार मंत्र। आपके मन में आ जाता है णमोकार मंत्र तो रात-दिन हम फेरते ही हैं।

आपका विश्वास नहीं - उसका विश्वास है इसी से आपका जहर उतार दिया। तो उस व्यक्ति के लिए कहा गया पारा तो पुनः पारा हो सकता है पर सिद्ध परमेष्ठी पुनः भस्म संसारी नहीं बन सकते। ऐसा भी

कि वहाँ कोई दूसरे सिद्ध परमेष्ठी कहें कि ये तो मेरा स्थान है तुम उठो यहाँ से जैसे आप लोगों को हम प्रति दिन देखते हैं।

जो पहले आकर बैठ गया तो उठकर जायेगा तो अपनी चटाई प्रतिनिधी के रूप में रख देते हैं अब किसी की ताकत नहीं जो कोई बैठ जाये। ये आरक्षण है] भारत में आरक्षण तो है संरक्षण नहीं। जीव द्रव्य एक बार शुद्ध होकर पुनः अशुद्ध नहीं जब कि पुद्गल द्रव्य शुद्ध होकर पुनः अशुद्ध बन जाता है। भेद संघातेभ्यः तत्त्वार्थ सूत्र में सब पढ़ा है। एक बार सिद्ध होने पर पुनः संसारी नहीं ये भी उसी तत्त्वार्थ सूत्र के 10वें अध्याय में आया है।

"अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन सिद्धत्वेभ्यः" गाढ़ श्रद्धान किजिये तभी उन्नति होगी। फिर नीचे आने की बात नहीं। वहाँ सीनियरटी-जुनियरटी की बात ही नहीं। कोई भेदभाव नहीं। आज विषय थोड़ा सा किलष्ट लगा होगा। पारा का उदाहरण याद रखना। [पाण्डाल में पानी की फव्वार] मैं सोच रहा था कि ये कोहरा कहाँ से आ गया अभी तपा में वर्षा तो नहीं हो रही है। ये को रहा कोहरा स्वयं ही कह रहा है। इतना ही ठीक समझता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"विशेष प्रवचन"

9-6-18 "असमय में सिद्धी गुरु-वाणी" मध्याह्न 2.45

[भीषण गर्मी में माडूमल ग्राम के लगभग 500 से अधिक लोगों (महिला-पुरुष-बच्चे) का गुरु दर्शन हेतु आना]

आप लोग गर्मी में यहाँ पर आये। आप शान्ति के साथ बैठकर सुन रहे हैं। ऊपर छाया है तो नीचे शान्ति के साथ बैठकर सुन रहे हो और हम सुना रहे हैं। इसका अर्थ ये हुआ कि हम शान्ति चाहते हैं। आप सभी लोग बहुत भाग्यशाली हैं, पुण्य के योग से आज यहाँ पर आ गये। मैं आप सभी से इतना ही कहना चाहता हूँ। भगवान राम वन में चले गये आपने भी पढ़ा होगा-सुना होगा।

वे वर्षों तक वन में रहकर तपस्या किये। जिस रूप में रहना उसी रूप में रहकर सुख-दुःख सहन करते हुये अपना जीवन व्यतीत किये। प्रत्येक प्राणी को जीने के लिए - प्राणों की रक्षा के लिये भोजन की आवश्यकता होती है। उनके पास तो खेती - बाड़ी घर - बार कुछ नहीं था। राशन - पानी कुछ नहीं था, कहाँ से आया कभी सोचा आपने। उन्होंने कभी भी पशुओं-पक्षीयों को मारकर अथवा उनसे मिले हुये भोजन को ग्रहण नहीं किया।

फल-फूल आदि ढूंढकर खाते थे। यहाँ तक की घास के बीज भी उन्होंने खाकर जीवन का निर्वाह किया। आप लोगों को भी यह याद दिलाया कि

क्या आप उनके भक्त होकर वैसा नहीं कर सकते?

आपके पास तो घर-परिवार-रोजगार सब है। उन्होंने कभी भी शराब आदि का सेवन नहीं किया। शराब पीने से आप जो भी कमाते हैं, उसमें खर्च कर देते हैं। फिर मांस-मछली भी करते हैं। गर्मी में आप लोग तपस्या करके यहाँ तक आये हैं। किसान हो अच्छी मेहनत करोगे तो बरसा समय पर होगी और फसल भी अच्छी आयेगी। यदि आप धर्मात्मा बने रहोगे तो ऐसा होगा तथा राम का नाम लेना सार्थक होगा।

शराब से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। इन सभी बुराइयों का त्याग करने से जीवन सुखमय होगा। शिक्षा प्राप्त करके सरकार जो भी प्रबंध करती है उसका सदुपयोग कर सकते हैं। गाँव में दया-वात्सल्य प्रेम से रहो। किसी को भी कष्ट मत पहुँचाओ। अपने लिए कष्ट अच्छा नहीं- दूसरों को भी अच्छा नहीं लगता है। जीवन कब तक टिकने वाला है-बस राम की तरह कष्ट सहिष्णु बने रहो।

आपने तालियाँ बजायी, इसका मतलब यही समझूंगा आपको दया धर्म से प्रेम है। अपने बच्चों को भी यही सीखाओ। विहार में रहते हैं तो दूर-दूर गांवों से लोग दर्शन हेतु आते हैं- जय राम - जय जय राम के नारे रात में आवाज आती रहती है।

सोने से पूर्व राम का नाम लेते रहते हैं।

दिनभर अपना आवश्यक काम करना संध्या समय आरती - भजन - कीर्तन करते हुये सोना यह जीवन का अंग होता है। यह आज की नहीं रामायण की परम्परा है। गाँवों में अब रामायण की पंक्तियाँ प्रतिदिन दोहराने से आबाल-गोपाल को याद हो जाती है। क्यों कि आपको राम के प्रति विश्वास है- श्रद्धा है। दया धर्म में आस्था है। अब आप सभी जागरूक रहेंगे, निर्दयता से कष्ट नहीं देंगे।

पशुओं की भी यदि नहीं पाल सकते तो यहाँ पपौरा में गोशाला बनी है- वहाँ दे देना उनका संरक्षण होगा आपका जीवन सुखमय होगा। सभी लोग इस धरती पर कुछ दिन के लिये आये है- बाजार की भाँति। बाजार पुरा लगी अपने-अपने घर लौट जाते हैं। हमारी भाषा समझ में आ रही है न? मुझे खुशी है।

"राम नाम लेता रहूँ- विराम आठो याम" (दोहानुवाद से) दिन-रात बस राम का नाम ही लेते रहे। राम भी ऐसा ही करते थे। मुख से गाली आदि नहीं निकालकर राम का नाम लें- कलह-ईर्ष्या भाव दूर होगा एवं शांति का अनुभव होगा। बहुत देर से शान्ति से बैठे हैं- जहां भी रहो इसी तरह शांति से रहें यही हमारा सबको आशीर्वाद है। एक बात और कहना है- भूत-पिशाच, देवी-देवता हमें

कभी नहीं सताते, हमारे अपने कर्म ही हमको फल देते हैं/सताते हैं।

गाँवो में धारणा होती है- उसने ऐसा कर दिया होगा/किन्तु ये सब स्वभाविक है। कर्म का फल सबको मिला। सीता-द्रोपदी, राम-लक्ष्मण को भी नहीं छोड़ा। किन्तु रावण हारा और राम की विजय हुयी। जब अशुभ कर्म का क्षय होता है, तब ऐसा होता है। अच्छे कार्य करोगे तो शुभ कर्म बंधेगा/शुभ कर्म से सब ठीक ठाक हो जायेगा।

अभी व्यवस्था की भी बात आयी बाहर भी नहीं जाना पड़ेगा। अपने घर में रहकर ही यह सब कर सकते हैं। यह हस्तशिल्प की विद्या आप सीख लो तो जीवन सुखमय हो जायेगा। पुरुष भी-महिला भी दोनों ही इसे सीखकर धन अर्जित कर सकती है। देवी-देवता के प्रति भी विपरीत सोचना है उसे छोड़ देंगे। राम भगवान ने ऐसा नहीं किया तो आप क्यों करते हो?

अहिंसा परमो धर्म की जय/नुँ

विशेष- "दोपहर 2 बजे पाण्डाल में गुरुजी का आना हुआ। गाँव वाले इतनी संख्या में थी चौबीसी में व्यवस्था न बन सकी। आन्टी ने कहा- ये लोग इतनी दूर से आ सकते है तो मैं भी इनके लिये बाहर क्यों नहीं जा सकता। गर्मी में भी गुरुजी की शीतल छाया मिलगयी।"

5-6-18 "चाल हो सीधी - घड़ी की तरह" प्रातः

आप लोगों से पुछा जा रहा है, एकदम जवाब नहीं देना फिर भी रहस्य को समझने का प्रयास करना। आपके सामने घड़ी है वह चालु है। यहाँतक तो स्वभाविक है। पुछने की कोई बात ही नहीं है क्यों की घड़ी का सेकेण्ड का कांटा चल रहा है - वह दिख रहा है इस अपेक्षा से घड़ी चल रही है। मिनिट का कांटा स्पष्ट देखने में तो उपलब्ध नहीं किन्तु चश्मा के उपरान्त लगता है कि ये भी चल रहा है।

अब आता है घण्टे का कांटा। इन दोनों की अपेक्षा यह भी चल रहा है। कालान्तर में एक-एक घण्टा खिसक रहा है जिससे हम जान लेते हैं कि वह चल रहा है। किन्तु इसे हम परोक्षतो कह सकते हैं, प्रत्यक्ष नहीं कह सकते हैं। चलता हुआ देखने में नहीं आया, ये तो सहज क्रिया हो रही हैं। किन्तु क्या वो घड़ी कभी पीछे भी चलती है। Right side, upper side, other side नहीं चलती। चल रही है ये तो ठीक। पीछे चल रही है ये दिमाग से पुछ लो।

जब काला पीछे नहीं चलता तो आपको दिमाग से पीछे कैसे ले जा सकता है। आप पीछे नहीं जा सकते, ये घड़ी के कांटे बता रहे हैं। कालस्य अनुग्रह कहा गया किन्तु किस तरह ये महत्वपूर्ण है। जब पीछे चलना ही नहीं - चल सकते ही नहीं तो पीछे देखते क्यों हो? पीछे देखोगे तो विकल्प के अलावा कुछ हाथ

नहीं लगेगा।"

जब पीछे नहीं चल सकते तो किसी को आगे चलने से रोको क्यों? आगे बढ़ने दो। आपके चलाने से नहीं वह तो स्वभाव से चल रहा है। चलना स्वभाव है। आगे ही चलना - पीछे मुड़ना नहीं है। पीछे मुड़ता है जरूर कोई आकर्षण होगा। यह आकर्षण - विकर्षण आपके परिणमन का निमित्त बन जायेगा। इसलिये इन सबसे बचो। आकर्षण - विकर्षण - उत्कर्षण - प्रकर्षण कुछ नहीं ये सब हमारे दिमाग की उपज है।

अब आप उत्तर न देकर एक आश्चर्य देख लेना। पैर आगे बढ़ाते हैं तो सहज लगता है और पीछे जाने पर गुरुत्वाकर्षण बिगड़ता है फलस्वरूप Balance नियंत्रण खो देते हैं। आप Jump लेकर भले ही आगे जा सकते हैं किन्तु पीछे नहीं जा सकते। रुकना फिर भी सम्भव है किन्तु पीछे जाना तो किसी प्रकार से ठीक नहीं।

कहीं-कहीं पर विवक्षा की बात आती है। उनका मानना है - आगे भी-पीछे भी चलना स्वभाव है। यह विवक्षा वक्ता का अभिप्राय है - स्वभाव नहीं। वक्ता कहला सकता है यात्री नहीं। इसलिये यात्री महोदय! अब बोलना छोड़कर चलना प्रारम्भ कर दो।

अहिंसा परमो धर्मकी जय।

विशेष - कुछ भी करने से पहले गुरुजी का रामबाण सूत्र याद करें - "अनुकूलता और उपयोगिता देखें।"

6-6-18 "एक ही विषय - मोक्षमार्ग में" प्रातः

हमें शास्त्रों से ये ज्ञात होता है। मोक्षमार्ग हो अथवा मोहमार्ग हो दोनों में से कोई भी मार्ग हो संघर्ष करना होता है। जैसी आपकी इच्छा होगी, जैसा आप मार्ग चुनेंगे। आपका गन्तव्य क्या है? गन्तव्य के अनुसार ही मार्ग चुनेंगे। अपनी ही तरफ से ये चुनाव है। चुनाव के बाद अब कितनी भी कठनाई क्यों न हो पहुँचना अनिवार्य है। मोहमार्ग में आप जानते है।

[माइक को थोड़ा ऊपर करना] हमारे लिए उदाहरण बहुत जल्दी मिल जाते हैं। प्रतिभास्थली का संचालन अब 3 की जगह 5 जगह होगा। एक साथ दो जगह और हो गया है। अभी तक माइक की व्यवस्था थी पर ब्रह्मचारी जी ने आकर नीचे एक तान और लगाकर उसे ऊपर उठा दिया। इसी प्रकार प्रतिभास्थली बाद में पूर्व-पीठिका पहले बनती है। हमारा ध्यान उस ओर गया तथा पूर्व-पीठिका पहले बन गयी। अभी यहाँ भी पूर्व-पीठिका के माध्यम से प्रतिभास्थली की शुरुआत होने वाली है।

कोई भी कार्य करने के पूर्व भूमिका बना लो तब कार्य में सफलता प्राप्त होती है। कार्य भी व्यवस्थित होता है। हर कार्य में संघर्ष करते रहते हैं क्योंकि पूर्व में ध्यान नहीं देते हैं। संघर्ष तो होता है, परिणाम जो इच्छानुकूल नहीं है। पुरुषार्थ सही नहीं किया,

अज्ञान दशा में विफलता ही मिलती है।

विफलता अर्थात फेल होने का कारण ज्ञान नहीं अज्ञान है। अज्ञान दशा में जो तैयारी करता है वह पूर्ण कार्य कोई भी नहीं कर पाता। कुछ न कुछ निर्णय लेने की क्षमता रहती है। जब समान रूप से बांटते हैं तो वह महत्त्वपूर्ण होता है। विषय भिन्न-भिन्न होने से तथा भिन्न-भिन्न समयों में तैयारी सावधानी से करते हैं फिर भी कुछ विषयों में विफलता मिलती है अथवा गुणवत्ता में कमी आ जाती है।

ज्ञान का फल भी अनुपात से तथा अज्ञान का फल भी अनुपात से ही प्राप्त होता है। जब गुण कम मिलते हैं तो सोचता है, परिश्रम तो बहुत किया पर परिणाम इतना कम ऐसा तो सोचा भी नहीं था। मन में आकुलता बनी रहती है। "मोक्षमार्ग में एक बहुत बड़ी सुविधा है, क्यों कि उसके विषय बहुत सारे नहीं है।" सुन रहे हो। हओ। धीरे-धीरे आपके भी विषय कम होते जायें फिर अन्त में एक ही रह जाये। फिर मेहनत करोगे तो फल अवश्य सामने आयेगा।

मोक्षमार्ग में ऐसा ही है, कोई भी विषय नहीं। न पढना, न लिखना, न सोचना कुछ नहीं। लिखना तो बन्द ही कर दो। लिखने के स्थान पर लिखने की तैयारी करना है। मात्र जानना

और देखना है।

महाराज ये तो बहुत कठिन है। हमने कब कहा कि मोक्षमार्ग सरल है। फिर आप प्रोत्साहित क्यों करते हो? इस मार्ग में आपके अलावा कोई है ही नहीं। हम स्वयं चुन लेते हैं। पहलवानी अजमाते हो। नहीं है तो दीवार से ही टकराते रहते हो। अब आप ही बताओ इसमें शक्ति बाहर आयेगी या बाहर से भीतर आयेगी। दीवार लहुलुहान हो गयी। वह खून कहाँ से आया। दीवार का खून नहीं - आपका खून है।

अब टकराने की आदत छोड़ दो। टकराने की आदत भी छोड़ दो। अपने बाहुबल को भी एवं पैरों को भी सुरक्षित रखें। फिर गिरने की बात ही नहीं अपितु गिरी की भांति उन्नत होने में समय नहीं लगेगा। जो चाहते हैं, उससे भी ऊँचे जा सकते हैं। इस बात को हमेशा याद रखना चाहिये। संघर्ष क्या वस्तु है? "ज्ञान - दर्शन को जितना आराम देंगे उतना ही अपने आप को सम्भालेंगे। शत - प्रतिशत परिणाम होगा। उद्वेग अथवा आवेग के होने पर सफलता भी विफलता में हो जाती है।

इस रहस्य को हमने आज तक नहीं समझा। ज्ञान जो रखता है - वही उत्तीर्ण होता है किन्तु पर का ज्ञान रखने वाला नहीं। पाठ्यक्रम में दूसरा विषय रखना ही नहीं है। असुहादो विणिवृत्ति... अशुभ से निवृत्ति

हो शुभ में प्रवृत्ति अपनेआप ही आ जाती है।

एक व्यक्ति है - नेत्रों से हीन हैं। बांसुरी बजाने लगा, अंगुलियां नाच रही हैं। नृत्य नहीं था किन्तु बांस के उन छेदों पर जिनसे वायु नहीं निकलना अँगलियां इस तरह से जा रही हैं जैसे मानो नृत्य ही कर रही हो। स्वर तभी उभरते हैं। सुनने वाला अपने आप ही तालियाँ बजाता हैं। बांस के छेद से स्वर फूटते हैं। अभ्यास से ऐसा हुआ। आँखों से देखा भी नहीं रहा।

आप देखकरके भी वैसा नहीं कर सकते। क्यों कि "आपका संघर्ष अन्यत्र है इसलिये हर्ष का स्वर नहीं निकल पा रहा है।" सूक्ष्मदृष्टि में भी - "संघर्षमय जीवन का उपसंहार हर्षमय होता है। मात्र बोलते रहने से नहीं होगा। अभी तक जीवन को संघर्ष से दूर रखा। आराम - विश्राम - विश्रान्ति तभी मिलेगी जब कुछ भी नहीं करो। बैठने के लिए - बिठाने के लिए भी उपाय होते हैं।

महाराज, मन बैठता नहीं, आप उपाय बता दो? मन आपका उपाय मैं बताऊँ। फिर सोचता हूँ कहीं हौकर न लग जाये। मैं अपने मन को समझाकर रखता हूँ। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि इनका मन भी उखड़ न जाये। कितने पैर है उस मन के? हजारों पैर वाला हाला होता है, उसका कभी एक्सीडेन्ट नहीं

होता।

बहुत सारे पहियें होने पर एक-आध पहिया गड्ढे में चला भी जाये तो भी वह गिरता नहीं या फिर पहियें अन्दर हो जाये तो खजुराहो में युं ही उड़ जाता है। देख लो। पहियों को बंद कर लो। हमारे पास ज्यादा समय तो है ही नहीं। बस यही प्रार्थना कर सकता हूँ, हे भगवन्! इतनी गर्मी में भी इनका मन उछलकूद कर रहा है, बस ऐसा स्थान है दो ताकि उछलकूद बंद हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।ॐ

7-6-18 "मत फूलो पाने पर" प्रातः

आंगन में दादा जी बैठे हैं, उनकी गोद में नाती [पोता] बैठा है। दादा जी प्रातःकालीन सुनहरी धुप का आनंद ले रहे हैं। दादा जी को तो अच्छी लगती ही है। इसी बीच में भीतर से आवाज आती है, ले जाओ-ले जाओ। क्या ले जाओ? पोता उछलकर जाता है लाओ-लाओ। भीतर से उसने दिया और कहा ये तुम्हारे लिए और ये दादा जी के लिए है।

अब वह नाती नाचता हुआ आ रहा है। दादा जी ये लड्डू हैं। वह नाचता हुआ खा रहा है। दादा जी देख रहे हैं - सोचते हैं - अभी होनहार है, अभी इसे अनुभव नहीं हैं। फिर इसके उपरान्त जो दादा जी को एक लड्डू मिला था उसमें से भी आधा

नानी को दे देते हैं।

इसके बाद तो कहना ही क्या? वह और अधिक नाचने लग जाता है। इस उदाहरण को आप अब तत्त्व दृष्टि से घटायें। बालक अवस्था में अज्ञान दशा रहती है वह किसमें दुःख किसमें सुख इसका सही ज्ञान नहीं कर पाता है। वृद्धावस्था में उसे ज्ञान होता है। वह जानता है कि किन-किन पदार्थों में मैंने सुख अनुभव कर लिया। अब उछलने-कूदने की तो बात ही नहीं है।

इसी तरह ज्ञान दशा होने पर मांगने की भी बात नहीं। वस्तु स्वरूप का बोध होने पर कोई झोली को बड़ी झोली बनाने की बात नहीं करेगा। अभी भजन में बार-बार एक लाइन को दोहराया जा रहा था। अलग-अलग प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा था। (मेरी झोली छोटी पड़ गयी रे-इतना दिया गुरुवर ने) मैं तो भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि इनकी झोली ही समाप्त हो जाये। क्यों कि जो भी झोली में लेगा दूसरा उससे बड़ी झोली की बात करेगा इसलिए बिन माँगे ही सब काम हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

गुरुमुख से- "विज्ञान हमें भटकाता है तथा इतिहास सही रास्ता दिखाता है।" इसलिये इतिहास पढ़ो सब ठीक-ठाक हो जायेगा।

8-6-18 "अजंङ्गम चलता जङ्गम के सहारे" प्रातः

"अजङ्गमं जङ्गमनेकमेकं .... ये सूक्ति स्वामी समन्तभद्र की है। सुपार्श्वनाथ भगवान की स्तुति करते हुये इस उक्ति से हम लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। जङ्गम का अर्थ होता है जाने की क्षमता रखने वाला, अजङ्गम का अर्थ है- एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की क्षमता नहीं रखने वाला। ये शरीर अजङ्गम है तथा आत्मा जङ्गम है। शरीर जड़ है, जड़ होने से वह निश्चित स्थान पर नहीं जा सकता है। हाँ, आत्मा भीतर है, आत्मा जहाँ चली जाये वहाँ चला जाता है।

इस बात से हम अनभिज्ञ हो जाते हैं। आत्मा को भूलकर शरीर को ही अपना मान बैठते हैं। मोक्ष मार्ग में उस आत्मा को जानना अति आवश्यक है। भीतर बैठा हुआ वह चालक अवश्य सावधान रहे। तभी स्थान से स्थानांतर जहाँ जाना चाहता है वहाँ पहुँच सकता है। चालक पर सब निर्धारित है। मोक्षमार्ग में भी आत्मा चालक है। वह अनेकों को अपने माध्यम से और स्वयं को भी उसका अनुकरण करके अपनी यात्रा को पूर्ण कर सकता है।

जैसे एक ड्राइवर है- प्लेन का (पायलट) 700-800 को भी गन्तव्य तक पहुंचा देता है, ऐसा सुनते हैं। किन्तु यदि वह ड्राइवर (यानचालक) सो जाये तो दुर्घटना से कोई बच नहीं सकता। सब्बे चालक के साथ सभी यात्री डूब जायेंगे। उन्हें अपना

गन्तव्य प्राप्त नहीं होगा।

ऐसा ही चालक जो चार पहियावाली गाड़ी है उसका होता है। सब लोग बैठे हैं, आकस्मिक वर्षा शुरू हो गयी। चालक कहता है मैं आप सभी को समय पर पहुँचा सकता हूँ बस वर्षा रुक जाये। अब वर्षा तो रुक ही नहीं रही। चालक गाड़ी चला रहा है सामने काँच लगा है उस पर वर्षा का पानी गिरने से कुछ दिख नहीं रहा तो कैसे चलायें।

इसके लिये गाड़ी में वायपर लगा होता है, जैसे ही पंखा दौड़ते हैं वैसे ही चालक ने बटन दबाकर वायपर चालु कर दिया। फिर क्या कहना। वायपर साफ करता जा रहा है। ड्राइवर अपने गन्तव्य तक पहुँच रहा है। अब इसमें भी वाइपर तो चालु कर दें और सो जायें तो क्या गन्तव्य पर पहुँच जायेंगे? नहीं पहुँच सकते। गन्तव्य दिशा में तो गाड़ी चल रही है फिर भी नहीं। आज यही हो रहा है। गाड़ी तो गाड़ी है मात्र दिशा दिखा दो पहुँच जायेगी ऐसा है ही नहीं।

बहुत मार्मिक बात है। थान के चालक की सर्विस मात्र 10 वर्ष होती है। कितनी भी नेत्रज्योति अच्छी क्यों न हो अब आप अन्य डिपार्टमेन्ट में काम कर सकते हैं किन्तु थान के चालक नहीं रह सकते। समझ में आ रहा है न? हओ तो कहो। पहले ही लिखवा लिया जाता है आप 10 वर्ष बाद यह काम नहीं कर सकते। शरीर तो

काम कर रहा है ऐसा तर्क हो सकता है।

अब आप दूसरा काम कर सकते हो यह काम नहीं कर सकते। इससे भी बढ़कर मोक्षमार्ग में काम होता है। अपने साथी-संघाती को भी साथ ले जा सकते हैं, एक्सीडेन्ट से भी बच जायेंगे। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। हमारा उदाहरण याद रखना - ड्राइवर (यान्त्रासक) की 10 वर्ष की सर्विस एवं वाइपर को भूलना नहीं।

शारीरिक एवं बौद्धिक दोनों दृष्टि से समृद्ध है। पुरस्कृत होने के उपरान्त भी उससे कहा जाता है आपका लिखित में जो अनुबन्ध था पूरा हो गया। मोक्षमार्ग में भी लगभग ऐसा ही होता है, जब आप मोक्षमार्ग में होंगे धीरे-धीरे आपको ज्ञात होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

गुरुवाणी →

"उपयोग - सदुपयोग - दुरुपयोग तीन शब्द है। यदि सदुपयोग नहीं कर रहे तो दुरुपयोग का दोष तो आपको लग ही रहा है, इसलिये प्रत्येक कार्य में पहले देखो की इसमें सदुपयोग कितना है।"

"अर्थ - व्यर्थ - अनर्थ तीन शब्द है। हमारे मन वचन काय की प्रत्येक चेष्टा अर्थ पूर्ण हो अन्यथा व्यर्थ होकर अनर्थ का दोष हमारे लिए हेय लगेगा।"

9-6-18 "कुयें का संदेश" प्रातः

आप लोग आजकल तो इस विषय से परिचित नहीं होंगे किन्तु जब कभी भी इसका प्रयोग किया गया अथवा करते हैं उसे इसी ढंग से समझ सकते हैं। जैसे- कोई व्यक्ति कुयें से पानी लाता है। कुंआ 50 हाथ गहरा है। घड़े को कुयें के नीचे तक पहुँचाना है तभी पानी प्राप्त होगा। तो ऐसे ही पटक देंगे क्या? कोई उतरने का साधन भी नहीं है। इसके लिए घड़े को रस्सी से बांधकर धीरे-धीरे छोड़ते हैं।

वह सहज रूप से जाता है, उस रस्सी का दूसरा छोर पांव से दबाये रखते हो ताकि घड़े को ऊपर भी खेंच सको। सुन रहे हो (हिदो)। नीचे जाने के उपरान्त ध्यान रखो- एकदम पानी नहीं भरता आप लोग एकदम कुछ भी ग्रहण कर लेते हो। घड़े में पानी ग्रहण करने की क्षमता है पर एकदम पानी नहीं जाता। अब आप रस्सी के द्वारा उसके मुंह को ऊपर उठाते हो, पानी धीरे-धीरे अन्दर भरता जाता है, जो मुख नीचे की ओर था वह ऊपर की ओर हो जाता है।

अब उ-प हाथ नीचे और चला जाता है। ताकि साफ सुथरा पानी आ जाये। इसके उपरान्त जब ऊपर खेंचते हैं तो उ-प हाथ तक तो सहज ही ऊपर आ जाता है। जो अपरिचित होंगे वे तो यही समझ

बैठेंगे कि घड़े में तो पानी भरा ही नहीं।
यदि पानी भरा होता तो कमर एवं पैरों के बीच 90 अंश का कोण बनता। हँस क्यों रहे हो। ताकत लगानी पड़ती है। झुकाव सामने नहीं पीछे की ओर होता है। अब खेंचना प्रारम्भ करता है। पानी की सतह से घड़ा जब ऊपर आने लगता है तब मालुम पड़ता है कि कितनी कुबत है। अब मान लिजिये आधा तक खेंच लिया, हाथ भर गये, मन कहता है- संकल्प टूटने को है पर धैर्य रखो।
धीरे-धीरे खेंचकर ऊपर ले लेते हैं, पकड़कर घड़े को ऊपर ले लेते हैं। पुछना ये है- घड़े का भार कहाँ गया। जब पानी के भीतर था उस समय भी तो भरा हुआ था। पानी में जो घड़े का भार था वह पानी में रहने वाली वायु/हवा ने उस भार को समाप्त प्राय कर दिया। बाद में सहयोग मिलना बंद हो गया। पानी में जो हवा की विरलता थी वह घड़े के भार में सहयोग कर रही थी- ज्यों ही ऊपर तो भैय्या थोड़ा सहयोग दे दो। हाथ लगा दो।
हाथ लगाने से नहीं श्रम से घड़ा ऊपर आता है। नीचे श्रम नहीं था। परिग्रह भी इसी तरह कुछ समय तक सहयोग देता है। बाद में वही परिग्रह कहता है- अब हम सहयोग नहीं देंगे। पानी में भीतर था तब तक हीक बाद में गुरुत्वाकर्षण के

के कारण भार लगने लगता है।

विज्ञान दोनों को मानती है, हम भी मानते हैं। पुद्गल ये चाहते हैं कि पानी के भीतर परिग्रह रहेगा दुख नहीं देगा। ज्यों ही हवा की मात्रा बढ़ती है त्यों ही कहता है पानी बाद में पी लूंगा। कई लोगों को परिग्रह के बारे में जानकारी नहीं होती है तो खूब इकट्ठा कर लेते हैं। बाद में G.S.T. आ जाती है। 28 मूलगुणों का धारण तो फिर भी ठीक है, हमारे आचार्यों ने G.S.T. के पूर्व ही परिग्रह परिमाण व्रत बता दिया है।

इससे आप तकलीफ से हमेशा-हमेशा मुक्त हो जाओगे। इसलिये अर्थ का ज्यादा संग्रह नहीं करना। जो अधिक पानी है उसे चरस आदि से निकालकर जहाँ आवश्यकता है ऐसी प्यासी धरती पर छोड़ो, 4-5 महिने में कश्मीर कानजारा दिखने लगेगा। कुयें के पानी का एक सीमा तक ही बढ़ता है - 10-12 feet के बाद नहीं बढ़ता। उसे निकालते रहने से पानी नया आता रहता है।

हजारों पशु-पक्षी भी उस जल स्रोत का लाभ ले सकते हैं। यह लाभ पानी के उपयोग से हुआ। जितना पानी निकाला एक रात में ही जितना आना

था आ जाता है।

इसी तरह परिग्रह का उपयोग करो। कुआं कभी खाली नहीं होता। आप पीलाते जाओ-पीलाते जाओ। कहाँ से आता है पुछो नहीं। विद्यान भी हो जायेगा। (बेगमगंज वालों की ओर इशारा) उपजाऊ जमीन के लिये पहले से ही निश्चित था। क्यों की जहाँ विद्यान हुआ वह पहले से ही उपजाऊ है। प्यासे को पानी पिलाओगे तो फिर नजारा देखो।

समझ में आ रहा है न?

इतने कठीन विषय को भी आप सहज में समझ रहे है। आपकी प्रतिभा को धन्यवाद। प्रतिभा तो है मतलब का समझती है, बाकी छोड़ देती है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ प्रतिभा का इस्तेमाल करे। इसीतरह की उदारता रखें ताकि सही इस्तेमाल हो सके।

अहिंसा परमो धर्मकी जय हो

अनर्थदण्ड-

"समय सबसे अधीक किमती है। यदि आपने अपने आवश्यक में से निकालकर समय दिया है तो सामने वाला उसका कितना उपयोग करेगा, यह जानना अति आवश्यक है अन्यथा आपको अनर्थदण्ड का दोष लगेगा। जितना जरूरी है उतना ही समय दें ताकि अपने आवश्यक समय पर पुरे हो सके।"

10-6-18 "आओ देखें नाखुन रूपी दर्पण में" प्रातः

जिसमें खुन नहीं रहता उसको नाखुन कहते हैं। अब नाखुन में खुन नहीं होते हुये भी वैद्य लोग अथवा डाक्टर लोग अथवा आप भी अपने स्वास्थ्य की जानकारी लेना चाहे तो नाखुन की ओर ही देखते हैं। वैद्य जी कहते हैं हाथ दिखाओ। आप उंगलियाँ दिखाते हैं तो फिर से वैद्य जी कहते हैं नाखुन दिखाओ। जब उन नाखुन का परिक्षण हो जाता है तो वैद्य जी कहते हैं- आप में ये-ये विकृति है।

इसी कारण स्वास्थ्य में गड़बड़ी है। आरोहरण- अवरोहण करते रहो। इसी से खुन की कमी है, ये भी पता लग जाता है। इस प्रकार नाखुन को एक तरीके का थर्मामीटर बना सकते हैं। बन जाता है। जीवन में मृत्यु निकट हो तो भी इसके द्वारा पहचाना जाता है कुछ ऐसे रिष्ट होते हैं। सर्प काट जाये अथवा भयानक रोग हो जावे तो भी, नीला रंग अथवा काला रंग हो जावे तो भी इन नाखुनों से शरीर की स्थिति मालुम हो जाती है।

इस प्रकार खुन की दशा और जीवन का भी अनुमान लगा लेते हैं। जब मृत्यु निकट होती रिष्ट समुच्चय से / पहचान से जान जाते हैं। नाखुन का भी रिष्ट होता है। समय पर बता देंगे। जैसे - मानसो रेल को आना है। अभी रेल दिख नहीं रही फिरभी काटक

बंद कर दिया जाता है।

वह इतनी तेजी से आ रही है कि अपना रैल्वे फाटक बंद रखना होगा। इसी प्रकार जीवन की यात्रा को भी पहचान लेते हैं। नाखुन में होने वाली विकृतियाँ हमारे जीवन का संकेत है। कभी-कभी हाथ की रेखायें (नाखून की रेखायें भी बनती - बदलती रहती है। दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं इन्हीं नाखुनों से जीवन लीला की जानकारी ले लेते हैं।

जिसके जीवन में आचरण है उसकी अपने आप ही पहचान होने लग जाती है। जीवन का कितना महत्व है, इसका मूल्यांकन आचरण से ही होता है। भाषण अथवा वाचन की पहचान भी आपके आचरण से होती है। कुछ लोगों का बोलना अच्छा लगता है। वे निरर्थक कुछ नहीं बोलते, जो भी बोलते हैं सार्थक बोलते हैं। इससे सामने वाले को दिशा बोध प्राप्त हो जाता है।

कुछ के बोलने से दिग्भ्रम हो जाता है। इसलिये ऐसे वचन बोले जो दिशाबोध का काम करे - दिग्भ्रम का नहीं। कुछ पुण्य पुरुषों के जयकार से भी पहचान हो जाती है। सुनने वाला कहता है और सुनाओ - और सुनाओ, बोलते ही जाओ। इसप्रकार भीतर के भावों के प्रतिनिधी (अभिव्यक्ति) शब्दों के माध्यम से सामने आ जाते हैं। बोलते हो तो ज्यादा

मीठा नहीं बोला करो। [A.R Jain के लिए]

कड़वा बोलना तो फिर भी ठीक दवाई का काम करेगा - मीठा बोलना ठीक नहीं। शब्दों में भी मीठास - कड़वाहट - टेढ़ापन - सीधापन रहता है। उसमें भाव - भंगिमा छिपी हुयी रहती है। मन-वचन-काय की चेष्टा समझ में आ जाती है। भीतर क्या भरा है, पता लग जाता है। संगति से भी पर्याप्त मालुम चलता है। जेनेत्तरों में प्रायकर यह देखने को मिलता है।

वे लोग तपस्वी की संगति करते हैं तो बोलने हेतु नहीं कहते आप बुलवाते ही रहते हो। वे कहते हैं- हम तो साधु की संगति हेतु बैठे हैं, उनका जीवन ही बोल रहा है, उसे देखने का प्रयास करें। उनका चलना-बैठना - बोलना - उठना - चिंतन आदि से बहुत कुछ देखने को मिलता है। इस प्रकार नारकुन के माध्यम से भीतर की पहचान करते तथा अपनी शारीरिक-मानसिक एवं वाचनिक प्रकृति को सुधार हेतु चेष्टा करते रहें। सामने वाला व्यक्ति सुधारना चाहे तो सुधार सकता है।

जैसे आप दर्पण को देखकर स्वयं सजते-संवरते हैं इसी प्रकार संगति से सामनेवाले पर प्रभाव पड़ता है। आँखों में जहर हो तो हमारे मस्तिष्क पर अलग प्रभाव पड़ता है तथा मौन का प्रभाव अलग ही पड़ता है। इसलिए

"साधुओं से कुछ बुलवाओ नहीं, अपनी बोली को बदलने का थोड़ा सा प्रयास करो।"

प्रयोग प्रारम्भ कर दें। फिर देखो उत्तीर्ण ही होना है - अनुत्तीर्ण तो होना ही नहीं। संसार से पार जाने हेतु ऐसे ही लोगों की संगति आवश्यक है। नाखुन को भूल मत जाना - याद रखना। वैद्य जी भी आजकल क्या करें? उन्होंने कहा नाखुन दिखाओ? नाखुन पर नेल पॉलिश लगा रखी है। अब क्या करें। काला - नीला - सफेद लगता है खुन का रंग भी बदलता रहता है।

आहार के समय तो कभी नहीं लगाना आपकी मेहरबानी हो जायेगी। महाराज आहार ले ही लेंगे ये जरूरी नहीं किन्तु लेंगे तो तभी दे पायेंगे जब नेल पॉलिश न लगा हो। "नेल पॉलिश" इंगलिश का शब्द है। हिन्दी में क्या कहेंगे? नाखुन का लेप। इस प्रकार बाहरी शरीर एवं आंगोपांग की सुन्दरता के साथ भीतर की साज - संवार का भी उपक्रम शुरू करें तभी जीवन की सार्थकता होगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

गुरुवाणी →

"विसंवाद तो कभी करो ही नहीं - अतिसंवाद से भी बचो जरूरत हो उतना संवाद करो। विसंवाद से हिंसा - झूठ - चोरी - कुशील - परिग्रह पांचो पापोंका दोष लग जाता है।"

11-6-18 कैसा होता यात्री ? प्रातः

चरण पूज्य है कल ये कहा गया था। आचरण के माध्यम से चरण पूज्य होते हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है आचरण चरणों का नहीं होता भीतरी आत्मा का आचरण होता है। चारित्र होता है उसके कारण चरण पूज्य हो जाते हैं। कोई यात्री यात्रा के लिये निकला उसके साथ में समूह है। सब लोग विकल्प रहित हो भाव भक्ति के साथ यात्रा हेतु तैयार हो जाते हैं। परिवार को भी समझा देते हैं - कोई विकल्प नहीं करना - चिंता नहीं करना।

हमें याद करना चाहते हो तो याद कर सकते हैं, किन्तु ये भी याद रखना कि हमें निश्चित करके जा रहे हैं। हमारे लौटने के बारे में भी आकुलता नहीं करना। क्या आप लोग ऐसी यात्रा करते हैं? आज कोई भी हमो नहीं कह सकता। आप लोगो को आकुलता है / चिंता है। जो अवधी बता के जा रहे हो उसी में जल्दी-जल्दी लौटना अन्यथा वारंट निकल जायेगा।

ऐसी यात्रा की अपेक्षा घर-बार संभालो अच्छा है। समझे। हम नहीं कह रहे वह यात्री कह रहा है। इसी प्रकार से वह घर छोड़कर निर्विकल्प होकर यात्रा करता है। घर की याद आवे भी तो ज्ञेय रूप में हेय-उपादेय रूप में नहीं। घर वाले भी याद आ जाते हैं। उन्हें याद करते नहीं पर याद आ जाते हैं। आप

यही सोचें की उन्हें भी हम जैसी यात्रा का लाभ मिलें।

सभी लोग निर्विकल्प हो सकें। जो नहीं जा पा रहे वे, जो जा रहे हैं उनका कृत-कारित-अनुमोदना से साथ देकर सत्कार्य में भागीदार बन सकते हैं। ये भावना यदि जीवन पर्यन्त तक करते रहें तो आप भी यात्री हैं, इसमें दो राय नहीं। पैसा खर्च करने से ही यात्रा हो, घर छोड़ने से ही यात्रा हो ऐसा नियम नहीं है। नियम तो ये है कि घर को सामान्य समझें। आप घर का स्वामी अपने को मानते हो। अड़ोस-पड़ोस भी याद आते हैं, परन्तु कभी भी स्वामी के रूप में नहीं आते।

यात्रा करने वाले भी अपने स्वामित्व को छोड़कर जा रहे हैं। इसलिये 1-2-3 वंदना जो समय मिलें, स्वास्थ्य साथ दे रहा है कर लें। लौटकर भी आते हैं। आप जैसे वाहन उनके पास नहीं कि विद्याधर जैसे सुबह उड़ गये नाश्ता भी नहीं और पारसनाथ की टोंक की बाजु में उतर गये। जैसे यहां पपौरा जी में भी पीछे "न" लिखा है। पुछा तो पता लगा ये हैलीपेड़ है। शाम को अन्यों के लाने वापस घरे।

ऐसी यात्रा बहुतों के लिये हो जायेगी किन्तु विकल्प के साथ जाओ तो वह यात्रा नहीं। बाकि दूसरों के लिए यात्रा करने की आस्था को अनास्था में परिवर्तित करने में कारण है। गर्मी में कैसे करें? कौन कह

रहा है, किन्तु आत्था तो आत्था होती है।

ध्यान रखना। जब वे यात्रा करके लौटकर आ गये तो...। सुन रहे हो? यात्रा नहीं कर सकते यात्रा का विवरण सुन तो सकते हो। यहाँ भारत में बहुत से विदेशी यात्री आये और उन्होंने अपना-अपना यात्रा विवरण लिखा जिसमें भारत का क्या स्वर्णिम इतिहास था यह लिखा गया है। "इसमें अतीत का मूल्यांकन तो है ही, अनागत की योग्यता भी भरी है।"

ऐसी यात्रा करें, भविष्य में जो यात्रा करें उनका उत्साह वर्धन हो। अभिमान न हो। मेरी जैसी यात्रा करने वाला तो कोई है ही नहीं - ऐसा मत कहो। आपसे भी बढ़कर एक से एक दृढ़ी हुये हैं। जब वे यात्री लौटकर आये तो उनके चरण नहीं चरणों से लगी धूल को छू रहे हैं। ऐसा इसलिये कि आप ऐसे-ऐसे तीर्थों की वंदना करके आये है, जहाँ से 1-2 नहीं, लाख-करोड़ नहीं अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी कायोत्सर्ग से कायातीत हो गये।

आप तो धन्य हो गये। हम तो आपके चरणों की धूल को स्पर्शकरके ही अपनेको धन्य मान रहे हैं। इस प्रकार, चरण - आचरण और चरणधूल तीनों ही धन्य हो गये। आप उस स्थान पर गये पैदल ही गये और आये भी पैदल ही हैं। गाड़ी

में घुमने वालो!

आप भले ही फूलमाला पहन लो। पहनाने वाला भी अपने आपको धन्य माने किन्तु ये चरण धूल जैसी है जो जीवन की अनेको भूलों को समाप्त कर देती है। इतर-गुलेल वालो! धूल को स्नान के बाद भी तिलक के रूप में लगा रहे हो। क्या है इसमें? "यह कोरी मिट्टी नहीं है-लगाने वाला सम्यग्दृष्टि है।" उनकी उपासना है जिन्होंने मूर्त से अमूर्त की यात्रा की है।

वे पुनः लौटकर नहीं आये, हमने तो केवल उस पावन भूमि की यात्रा भर करके आये हैं। कितना विस्तार है उन स्थानों का - ऐसे स्थानों से जहाँ से अनेक सिद्ध हुये - केवली हुये - अरिहन्त हुये और भी बहुत से जो अपनी यात्रा पूर्ण कर चुके हैं। इसीलिये चरणों की धूल भी नमस्कार के योग्य है। शिरोधार्य है। "सिरसा धार्यं धारयति इति सिरोधार्यं" इस प्रकार नम्र बनकर वह मान को समाप्त कर देता है।

यह इतर-गुलेल नहीं ऊपर उठने का रास्ता है। बाहर से भीतर जाने का रास्ता है। दरवाजा एक ही है उसी से भीतर से बाहर होते है तो उसी से बाहर से भीतर। एक बार भीतर जाओ तो तर जाओगे। तरना चाहते हो? हम तो तर-बतर करना चाहते है। आपको इतना समझना है जो नहीं जा पाये यात्रा पर जो गये उनके चरणों को छुलो ये भी आपका सौभाग्य है। वे यात्रा करके आ

गये।

जिनकी यात्रा के प्रति आस्था है उनको भी कई गुना फल बैठे-बैठे मिल जाता है। ऐसा रास्ता अपनाओ कि काम तो कम करना पड़े और जो वासना है वह पुरी समाप्त हो जाये। ऐसा मन से-तन से एवं शरीर तीनों से करें। जब मन-वचन-काय तीनों शुद्ध हो जायेंगे तो यात्रा सफल हो जायेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

12-6-18 "क्या आप लम्बी उम्र चाहते हो?" प्रातः एक सेठ जी स्वाध्यायशील थे। भगवान की भक्ति आदि सब कुछ करते थे। दान-पुण्य आदि-आदि। इसके उपरान्त भी मन में एक विकल्प आता था। सब कुछ होते हुये भी कुछ गड़बड़ सा लगता था। कभी-कभी भविष्य की घटनाओं को लेकर विकल्प उठते रहते हैं। वे विकल्प कभी-कभी सार्थक भी होते हैं कभी-कभी सार्थक नहीं भी होते हैं लेकिन विकल्प तो होते हैं।

सेठ जी ने सोचा किसी एक पण्डित जी को बता लिया जावे। ज्योतिष-भविष्य को जानने वाले ब्राह्मण पण्डित लोग होते हैं। ये परम्परा है। उनको बुला लिया जाये। ऐसा सोचकर एक पण्डित जी को बुला लिया। उन्होंने कहा - आप महान भाग्यशाली है। वह खुश हुआ। शास्त्र कहेंगे तो नहीं मानेंगे पर पण्डित ने कहा है इसलिये शीघ्रता से स्वीकार कर लिया।

लेकिन अन्त में आपको थोड़ा सा कष्ट है।

क्या कष्ट है? सेठ जी ने पूछा। समय पर समझ में आ जायेगा. बाकी सब भविष्य पुराण का पुरा अच्छा है। वह बहुत कुछ तो शांत हुआ पर पुरा शांत नहीं हो सका। मन में विचार आया कि हो सकता है जो पण्डित जी ने नहीं बताया वह इनकी पहिचान-अवधी से बाहर हो। इसलिये वे न जानते हो। दूसरे चोटी के विद्वान को बुलाकर पूछा जाये। जैसे-अपने यहाँ देशावधि, परमावधि एवं सर्वावधि ज्ञान होता है।

दूसरे पण्डित को बुलाया। वह भी बोला- सब कुछ अच्छा है- पर अंत अच्छा नहीं। क्या अच्छा नहीं है? आपके 8-10 पत्नियाँ है, उनके बच्चे है, ससुराल भी है, सब ठाठ है। ये सब आपके सामने-सामने समाप्त हो जायेगा। इसमें से कोई नहीं रहेगा। सब मर जायेंगे। वह सोचता है मेरा भाग्य तो हरा-भरा है पर उसके में अच्छा क्यों नहीं। ये वैभव, ये घर-बार सब बने रहेंगे क्यों कि उनकी मजबूती है किन्तु इतनी उम्र के सामने परिवार का एक भी सदस्य नहीं रहेगा।

ऐसा क्यों हुआ। "आपकी उम्र लम्बी है।" बोलो लम्बी उम्र चाहते हो? सोचकर बोलो। चाहते हुये भी नहीं चाहिये। महाराज हम सभी तो चिरंजीवी होने का आशिर्वाद मांगते ही रहते है। सेठजी बताओ। (व्यंग्य) पण्डित जी ठीक कह रहे हैं न। इस कभी भी लम्बी आयु की इच्छा न करें। अतः

हमारा आशिर्वाद रहता है - आप चिरायु नहीं किन्तु पूर्णायु [आयु] हो।

चाहे वाहित हो या डॉक्टर हो कोई भी हो - मरते न बचावे कोई... । सुन रहे हो । हमो । अब जितने भी बूढ़े लोग है - वे लम्बी आयु नहीं कहना । जब उठाने वाला ही नहीं रहेगा तो क्या करोगे ? आयु जब तक है तब तक सत्कार्य करते जाओ । ये अवश्य है कि चतुर्थकाल में अथवा भोगभूमि में पूर्व कोटि की आयु प्राप्त होती है पर वहाँ ले जाओगे तो अवश्य । यदि नहीं भी जाना चाहोगे तो भी ये लोग छोड़ेंगे नहीं।

श्मसान तक तो हम ले ही जायेंगे। वहाँ से आगे जैसे आपका टिकिट अथवा गाड़ी होगी। आयु तो संसार में अटकाये रखने वाली वस्तु है। बाकी सब कर्म अटकाने वाले नहीं - भटकाने वाले हो सकते हैं। आयु शेष है तो मुक्ति नहीं हो सकती, आयु नहीं तो मुक्ति तो अवश्य ही होगी। इसलिये जिसकी आयु नहीं बंधी अंत-अंत में तो बंध ही जाती है। लम्बी आयु की कामना मत करो। कष्ट की चिंता मत करो।

मुनिमहाराज तो चिल्लाकर कष्टों को बुलाते रहते है। जो संसार को पार करना चाहता है वह किसी की भी इच्छा नहीं करता है। तो सेठजी को याद रखें। आप महान भाग्यशाली हो। आयु की रेखा तो देखो। ब्लेड इत्यादि से कईलोग अपने

लम्बी बनाना चाहते हैं।

इस प्रकार रेखा तो बढ़ सकती है, पर आयु नहीं बढ़ेगी। जो आयु बांधकर लाये हो वह कम तो हो सकती है पर एक समय भी बढ़ नहीं सकती क्यों कि यह भुज्यमान आयु है। अब "ज्योतिषशास्त्र को भूल जाओ और आत्मशास्त्र को चालु करना है।"

आत्मा की कोई उम्र नहीं होती। वह अजर-अमर-अविनाशी है। बाकी सब तो कर्मों का खेल है, उसमें हार ही हार है, आत्मा को देखोगे तो जीत ही जीत है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"उपदेश-आदेश"

"उपदेश बार-बार मिलता है किन्तु आदेश एक बार मिलता है।" आ० श्री

गुरुजी जो भी आदेश किसी को देते हैं, जब तक वह पुरा न हो अगला कोई आदेश नहीं देते।

आ० श्री कहते हैं उपदेश को ही आज्ञा अथवा निर्देश मान कर चले वह शिष्य महान होता है।

आज्ञा ली जाती है-दी नहीं जाती। आपने आकर हमें निवेदन किया हमने आशिर्वाद दे दिया अब आप उसका पालन्न करो।

प्रतिभास्थली विशेष.

13-6-18 "अखण्ड है प्रतिभामण्डल" प्रातः8

"72 बहनों की ~~xxxxx~~ Change के बाद परिक्षा लगाई (उसके बाद का आशीर्वचन"

जल्दी और धीरे (देर) ये हमारे मस्तिष्क की उपज है। सामान्य से काल के कारण हमारी चाल में कोई परिवर्तन नहीं होता। होने में एवं करने में बहुत अन्तर है। होना परिणमन सापेक्ष है जब कि करना पुरुषार्थ सापेक्ष। करने से पूर्व थोड़ा सा ठहरिये। काल सापेक्ष परिणमन की ओर दृष्टि रखना इसमें देखना - जानना पड़ता है। करने में उतावलीपन आ जाता है। उसमें तनाव का भाव - गर्मी आ जाती है, करने को कुछ है ही नहीं।

करता - करता तो बहुत दिनों से आ रहा है अब बस होना चाहिये। आकुलता से रहित होना चाहिये। यह तभी संभव है जब करना - धरना छोड़ोगे। आज आप लोगों ने जो कदम - उठाये है या उठ गये है वह महत्वपूर्ण कदम है। उठाना एवं उठना दोनों बातें हो सकती हैं। उठ गये यह सामान्य से होता है किन्तु उठाये है तो प्रेरित होकर उठाये हैं।

कदम उठ गये, यह अच्छा माना जाता है। उठाने में कर्ता गौण हो जाता है। कर्म जब मुख्य होता है तभी कर्तव्य की ओर हमारा ध्यान जाता है। ज्यादा

तो नहीं कहना चाहूँगा।

आप सभी लोग परीक्षा देकर यहाँ तक आयी हैं। अब जैसी व्यवस्था रखी वैसा ही करना है। अभी कुछ लोग कह रहे थे - आज तो हमें सुबह-सुबह गिफ्ट मिल गयी। तत्त्वार्थ सूत्र में एक सूत्र आता है काल के उपकार को बताने वाला - "वर्तनापरिणाम क्रिया: परत्वापरत्व च कालस्य।" हम उपकार करते हैं - उपकार को स्वीकारते नहीं यह काल द्रव्य कह रहा है। काल उपकार तो करता है पर उपकार को स्वीकारता नहीं है, क्यों की वह जड़ है/अजीव है।

६ः द्रव्यमें जीव द्रव्य दोनों कार्य करता है। शेष द्रव्य अजीव होने से चेतन नहीं। जीव द्रव्य उपकार करता भी है और उपकार स्वीकार भी करता है। आप सभी लोगों की यह स्वीकारता हमेशा बनी रहनी चाहिए। जिन्होंने उपकार किया उसको हमेशा-हमेशा याद रखना चाहिये। सज्जन लोग थोड़े से भी उपकार को कभी नहीं भूलते। प्रतिभामण्डल अखण्ड (एक) है। आज पूर्वपीठिका को भी उसमें मिला दिया गया, फलस्वरूप यह व्यापक स्वरूप बन गया। इसका अभी और कितना विस्तार होना है ये तो भगवान ही जाने या फिर गुरुजी जाने।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

हस्तरेखा के
चारलाभ - स्वालम्बी - स्वाश्रित - सुविचार -

[मंचपर]

13-6-18 "सिद्धो का मजा-सिद्धो जैसा" प्रातः

जो भी करना है वह मध्याह्न में कर लेना अभी ज्यादा समय नहीं हैं। अभी कई लोग उपस्थित भी नहीं तबतक वे भी आजायेंगे। अभी तो सुनो! नींबू होता है-आकार अपेक्षा गोल होता है, वर्ण अपेक्षा स्वर्णसमान होता है किन्तु जिसने स्वाद लिया है उसे ज्ञात है कि नींबू क्या होता है? जिसने स्वाद लिया है तथा जिसने स्वाद नहीं लिया दोनों को खड़ा कर दो, तीसरा वह है जिसने कभी नींबू देखा ही नहीं अपरिचित है, तीनों में बहुत अन्तर होगा।

जो अपरिचित है वह कहता है हमने तो कभी देखा भी नहीं ये कौनसा फल है। दूसरा कहता है हमने देखा भी है और चखा भी है। इसलिये "अभ्यासः स्वतः अनभ्यासः परतः" प्रयोग करें। एक बार स्वाद ले लिया फिर यदि याद भी आ जाये तो भी मुंह में पानी आ जायेगा। इसी प्रकार आत्मा का एक बार स्वाद आ गया तो बाद में जब कभी भी याद करो रस झरने लग जाता है।

भगवान से प्रार्थना करते हैं जो हमेशा-हमेशा के लिये उसी रस में डूबे रहते हैं-लग रहते हैं वे इधर-उधर की बातें नहीं करते। वे जानते हैं उधर देखूंगा तो इधर का स्वाद छूट जायेगा। इसलिये देखते भी नहीं सबर कुछ कर भी नहीं सकता। आप चाहो तो हमारे पास आजाओ भाव तो होता है। किन्तु संसारी प्राणी को बाहरी जगत का परिचय है भीतरी जगत का परिचय नहीं उस भीतरी जगत का परिचय भी तुमको जल्दी-जल्दी हो जाये इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय!

14-6-18 "अब तो सुधारो गलत अवधारणा" प्रातः

आप लोगों को दूर का दृश्य दिखता है, ऐसा लगता है जैसे आसमान कहीं पर जाकर जमीन को छू रहा है। ये सही है क्या? क्यों नहीं है। जब दिख ही रहा है तो फिर गलत क्यों है? किन्तु वहाँ एक व्यक्ति को भेजा और पूछा क्यों जहाँ तुम खड़े हो वहाँ आसमान छू रहा है क्या? वह कहता है- नहीं। लेकिन जहाँ आप खड़े हो वहाँ आसमान छू रहा है। ये कैसी बात है? हम कह रहे हैं वहाँ छू रहा है, वो कह रहा है यहाँ छू रहा है।

दोनों के पास छूने की क्रिया नहीं होते हुये भी दूर से देखने पर लगता है छू रहा है परन्तु आसमान को कोई छू नहीं सकता। आसमान में सिद्ध परमेष्ठी भी है, हम-तुम भी उसी आसमान में हैं पर उसे छू नहीं सकते। ये अटपटा सा लगता है किन्तु सत्य है। देखने से लगता है हम आसमान में हैं, वस्तुतः हम अपने में हैं।

अपने में कहने से शरीर को मत देखो, शरीर में देखो। शरीर में क्या-क्या भरा पड़ा है। विज्ञान ने भी सब जान लिया, ये भरे है- इतना ये भरे है। घंटों भर थे हैं और घंटों भर ये है। और फिर कहते हो- यह क्या पर्सनल्टी है? What is Personality it is? प्रश्नवाचक कथन

करते हो?

क्या व्यक्तित्व है? क्या व्यक्ति है? एक में त्व प्रत्यय लगा है। व्यक्ति द्रव्यवाचक है - व्यक्तित्व भाववाचक है। द्रव्य तो द्रव्य में रहता है। प्रायःकर शोध करने वाले "व्यक्तित्व एवं कृतित्व" दो विषय लेते हैं। कृतित्व मतलब करने वाला। त्व प्रत्यय कह दो तो समझ में आ जाता है। फिर व्यक्तित्व देखने में आ जाता है। हमें देखना ये है किसमें कौन है? किसमें क्या है?

आज तक सही समीक्षा नहीं हुयी। इसीलिये ये शब्द कहते हो - "तुम बीन हम कैसे रहेंगे।" भजन है परन्तु जब हम सब आसमान में है तो ये समझ में नहीं आ रहा कि ऐसा क्यों कहा जा रहा है। भजन के गहरे भाव हैं पर आसमान में सब कुछ आ गया। बाहर कुछ जायेगा ही नहीं। हम अपनी आँखो से देखते हैं, इसलिये इस प्रकार की गलत धारणा बना लेते है। आपके बिना हम कहाँ रहेंगे? साथ रहेंगे तो सब रहेंगे। (तालियाँ)

ये ही चाह रहे थे आप लोग। आपको किसी ने पकड़ रखा है, ये ज्ञात हो रहा है, क्या पकड़ रखा है ये नहीं बताना चाहते। आप तो यहीं पर रहो हम तो यहीं पर रह ही रहे हैं। इसमें भी यदि गलत अवधारणा बनायेंगे तो हम क्या करें? मोह के कारण ऐसा

कहा जा रहा है।

मोह के द्वारा ही हम कैसे कहेंगे। मोह यदि छोड़ देंगे तो सिद्ध परमेष्ठी के साथ रहने में देर नहीं लगेगी (हम तो उनके साथ रहना पसन्द करेंगे, आप इतें ही रहो। आपको इतें ही रस आ रहा है। उस रस को आप ही रख लो, हमें नहीं चखना। यदि सिद्ध परमेष्ठी जैसे होना चाहते हो तो वे आसमान में रह रहे हैं, इन आँखों से उनको नहीं देख पाओगे। सुदूर कुछ हो रहा है ये अवधारणा हमारी अपनी है, ये हमारी दृष्टि का दोष है।

यदि हम अपनी भीतर दृष्टि से देखेंगे तो जो वास्तविक है वही दिखेगा। अभी प्रश्न पूछा - आप भी हाथ लगाया करो। हाथ को देख लो इसी का नाम तो भीतरी दृष्टि मानते हैं। भावों को हम पकड़ नहीं पा रहे हैं - द्रव्य में ही संतुष्ट हो रहे हैं। द्रव्य में संतुष्टि नहीं - भावों से ही संतुष्टि होगी। द्रव्य तो त्रिकालवर्ती है - भाव त्रिकालवर्ती नहीं। भावों की पकड़ आस्था आदि से कर सकते हैं।

आपके भाव क्या है ये हमने समझ लिया, हमारे भाव क्या है आप नहीं समझ पाये (इसमें मैं क्या करूं। अधुरा समझ में आ रहा है - पुरा आ जाये ऐसी भगवान से प्रार्थना करता हूँ। तनक - तनक सी समझ में आती जाये (इतना ही पर्याप्त है)

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

ईर्यापथ विशेष →

"मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय विषय राग द्वेष वर्जनानिपञ्च"

मनोज्ञ और अमनोज्ञ विषय केवल हमें बाहरी परिग्रह के साथ में ही नहीं लगाना चाहिये, अंतरंग परिग्रह के साथ भी लगाना चाहिये। साता - असाता के उदय में राग - द्वेष किया तो कर्म बन्ध होगा। इसी प्रकार ईर्यापथम ज्ञान को अच्छा मानना अथवा मति-ज्ञान को अच्छा कहना ये सब मनोज्ञ विषय हो गये जो आत्मा से बाहर ले जाने वाले हैं।

प्रारम्भिक अवस्था में इन्द्रिय विषय से दूर ही रहते हैं फिर सन्मुख के सामने इन्द्रिय विषय होने पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता अब वह इन्द्रिय विजयी हो गया है। इन्द्रियों के विषयों में राग - द्वेष मत करो। समयसार अध्यात्म - प्रकाश आदि ग्रन्थों में बताया की अपनी आत्मा के अतिरिक्त सब पर है। पर पर दृष्टि गयी - मतलब स्व से बाहर हो गया।

सिद्धो के ध्यान को भी बंध का कारण बताया। इसलिये अध्यात्म को कभी भूलो मत। कमाई का सही साधन, कर्म निर्जरा का सशक्त माध्यम तो अध्यात्म ही है। इसके बिना आपके पास कुछ भी नहीं है। इसलिये मनोज्ञ - अमनोज्ञ को भीतरी भावों से भी जोड़ना चाहिये।

15-6-18 "नाम स्मरण से भी फूटता झरना" प्रातः चन्द्रमा का उदय होता है। दिनभर सूर्य के उदय के कारण धरती तप जाती है। गर्मी सहन नहीं होती किन्तु ज्यों ही चन्द्रमा का उदय होता है उसकी शीतलता मिलने से सूर्यनारायण और उसकी तपन को भूल जाते हैं। चन्द्रमा की शीतल किरणों का स्पर्श होते ही शीतलता का अनुभव करलेते हैं। यह भी निश्चित है जिन किरणों से शीतलता मिलती है उन्ही किरणों से एक मणी होती है चन्द्रकान्तमणी उससे शीतलता का झरना फूट पड़ता है।

अभी तक सूर्य की किरणें पड़ रही थी अतः शीतलता नहीं आयी किन्तु चन्द्रमा के योग से जल की धारा फूट रही है। यह निमित्त-नैमेतिक कार्य है। कौन निमित्त-नैमितिक है? निमित्त चन्द्रमा है तथा धारा का बहना नैमितिक है। धारा चन्द्रकान्तमणी से बह रही है। ऐसे निमित्तों से तात्कालिक फल हम देखते है। इसी प्रकार जब हम लोगो के पुण्य का उदय होता है तब पाप रूपी ताप से तपे होने पर जिनेन्द्र भगवान रूपी चन्द्रमा के उदय से सम्यग्दर्शन रूपी झरना फूट जाते हैं।

अब देखो! मणीयाँ तो बहुत सारी है, चन्द्रमा का योग भी है परन्तु हरेक मणी से झरना नहीं फूटता है। उसके लिए तो चन्द्रकान्ता मणी ही होना चाहिए। इसी तरह जो भव्य जीव अथवा आसन भव्य जीव होता है, उसके जीवन में ही यह झरना झट

पाती है।

आप सोच लो। चंद्रमा आसमान में है, हम वहाँ तक जा नहीं सकते और वह झरना तो तब फूटता है जब किरणें उस चन्द्रकान्तमणी को छुती है यहाँ छुने की भी जरूरत नहीं है भगवान को स्मरण मात्र भी कर ली तो भी वह झरना फूट जाता है। वो मात्र रात में ही चन्द्रमा के उदय से फूलता है यहाँ रात हो या दिन कभी भी फूट सकता है।

ये ऐसे जिनेन्द्र भगवान है, आपकी योग्यता चाहिये। इस सम्यग्दर्शन के होते ही अनंत संसार परिमित (सीमित) हो जाता है। सीमा का अर्थ कितना लिया जाय? तो आचार्यों ने कहा कि एक तरफ तो समुद्र है तथा दूसरी ओर वह सूखकर चुल्लु भर रह गया। दोनों हाथों की चुल्लु नहीं एक हाथ की चुल्लु भर रहा। अब उसको कैसे सुखायें? तो एक-एक बूंद करके वह खाली हो ही जायेगा।

इसी प्रकार सम्यग्दर्शन हो जाये तो अनंत को सीमित करके अब ज्यादा प्रतिक्षा नहीं करना है। बस स्टेशन पर गाड़ी की प्रतिक्षा करते रहो। सुस्वागतम् के लिए। जैसे ही गाड़ी आये - बैठ जाओ। इसलिये सभी को प्रतिक्षा करना चाहिये। जो भव्य होगा उसे मिलेगा। प्रतिक्षा में दरिद्रता नहीं रखो। बाहर की दरिद्रता तो सहन कर सकते हैं पर सम्यग्दर्शन जिससे मिलने वाला है, ऐसी मणी के प्रति दरिद्रता नहीं अपने

भावों को बढ़ाओ।

भावों के बढ़ने पर कैसा लगता है। बाजार में भाव बढ़ते ही चहरे पर उल्लास हो जाता है। आज तक ऐसा भीतरी भाव बढ़ाया ही नहीं हैं। जिसके भाव बढ़ जाते है वह कहता है सब लोग मेरी ही ओर देख रहें हैं। ये तो अच्छा है, जिसे देखकर औरो के भी भाव बढ़ जाये ऐसे खर्च कर लेना चाहिये। आपकी दरिद्रता तो दूर हो गयी। अब भावना करो कि अडोस-पडोस, रिश्ते-नाते में भी दरिद्रता न रहे।

बैरी भी क्यों न हो उसकी भी दरिद्रता दूर करने का भाव होना चाहिये। वैसे भी अगले भव में उसे भी सम्यग्दर्शन होगा इस अपेक्षा से सम्यग्दृष्टि - सम्यग्दृष्टि आपस में भाई हो गये मित्र हो गये - बैरी नहीं रहे। उनको भी मिल जाये इसी भावना के फलस्वरूप फल मिलता है। इकट्ठा करो तो इतना हो जायेगा की खाया भी ना जाये।

हाँ, जो इकट्ठा हो गया उसे बांटते जाओ कहीं बासी न हो जाये। जो आता है उसे बांटो। चन्द्रकान्त मणी का उदाहरण आगम में है किन्तु उन जिनेन्द्र देव के दर्शन अथवा उनका नामस्मरण से भी सम्यग्दर्शन आदि की उपलब्धि जल्दी-जल्दी होती है, हो इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। बोलें

16-6-18 "स्वाद लेना सीखो" प्रातः

समय का अपव्यय नहीं होना चाहिये। पूजा 10 मिनिट में हो जाती है। 10-12 मिनिट में ही किया करें। ऐसा नहीं कि मैं यहाँ से उठ नहीं सकता। सुनो! आज सही बात क्या है ये समझ नहीं रहे बल्कि समझते ये हैं कि हम जो कह रहे हैं वह सही है। इस अवधारणा को सही है या नहीं इसीलिए आप सभी से पूछना चाहता हूँ। क्या आपने नमक का स्वाद लिया है? (सभी-हाँ) कोई भी नमक का त्यागी नहीं हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द और उनकी टिकाओं में लिखा है जिस प्रकार नमक की डली का स्वाद आपको मालुम नहीं उसी प्रकार - - आगे जो कहूंगा। किसी भी पदार्थ में नमक बुरका दिया अब उसमें न ही नमक का स्वाद आ रहा है तथा न ही दाल का स्वाद आ रहा है। क्यों सही है या नहीं। सारे के सारे कह रहे थे हमने नमक का स्वाद लिया है। अब बताओ - काहे का स्वाद लिया है।

एक का स्वाद तो ठीक अनेक का स्वाद नहीं चाहिये। दही और गुड़ मिला दिया। न ही गुड़ का स्वाद तथा न ही दही का स्वाद बचा। खट्टा मिठा है मतलब न खट्टा है तथा न ही मीठा है। आपकी दशा ऐसी ही हो गयी है, सब गड़बड़ करके चला रहे हैं। हम गड़बड़ से परहेज

रखते हैं।

गटपट वाला नहीं सुधरेगा। समयसार में कहा है - लवण खिल्लीवत्। इस स्वाद से वंचित होने के कारण संवेदन तो करते रहते हैं पर सुखी-दुखी, रंक-राव के रूप में क्यों लगा रहे हो? आजकल इसी का बाजार गरम चल रहा है। हरेक व्यक्ति के पास समयसार है, पास क्या बगल में लेकर चल रहा है। समयसार का स्वाद तब तक नहीं आयेगा जिस वेश में बैठे हो उसमें आने वाला नहीं।

समय आपके पास भी नहीं मेरे पास तो है ही नहीं। आगे से कहना चाहता हूँ 10 मीनिट पूजा का समय निर्धारित है 10 का 12 करोगे तो बात बिगड़ सकती है। कम समय में कर लो तो और अच्छा है। समय की पाबंदी तो अवश्य होना ही चाहिये। पूजन का समय धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। पूजन वही है पर बीच-बीच में कुछ मिलाते जा रहे हैं। कढ़ी की तरह कढ़ी जोड़कर सुनाते हैं। हम कैसे सुनायें?

जिसके बीच में कुछ भी नहीं आना चाहिए तभी आपको पूजन का स्वाद आयेगा। इस बात को समझो। पूजन के शब्दों का ही चयन हो, जो शब्द उच्चारित करें वह निर्दोष हो तभी आनंद आयेगा। अकेले लवण का स्वाद लेकर तो देखो। किन्तु क्या करें - आप लोग अकेले लवण का स्वाद लेने के इच्छुक ही नहीं

रहते हो।

समयसार का रहस्य तभी समझोगे। "सवण-रिवल्लीवत्" का अर्थ क्या है? एक बार भी ऐसा स्वाद नहीं लिया, इसीलिये तो यह दशा बनी हुयी है। हम स्वाद के लिए खाते हैं- स्वरूप बोध के लिए नहीं खाते हैं। इसलिये जो स्वाद आ रहा है वह विकृत स्वाद है। इसे बदलिये। ज्यादा समय नहीं है, हमारा तो ५ मिनिट में भी पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्मकी जय।

परिक्रमा कैसे?

आहार के समय अथवा मन्दिर में अथवा गुरुजनों की परिक्रमा लगायी जाती है। आचार्यश्री ने कहा कि परिक्रमा में भी इतनी जगह हो कि नीचे देखसके। अन्यथा वह निर्दोषपूर्ण परिक्रमा नहीं मानी जायेगी। नवधा भक्ति में से एक भक्ति है- प्रतिग्रहण/पडगाहन ज्यादा लोग हों तो ४-१० लोग परिक्रमा करें शेष उन्हें देखकर अनुमोदना करलें, इससे सभी को उतना ही पुण्य प्राप्त होगा। १००-१०० लोग परिक्रमा करेंगे तो नीचे क्या है पता ही नहीं चलेगा। जीवों की भी हिंसा हो सकती है। अशुद्ध वस्तु पर पांव गिरने से/पड़ने से महाराज अन्तराय भी कर सकते हैं। अतः हर कार्य में विवेक का होना जरूरी है।

(श्रावकों द्वारा परिक्रमा लगाते हुए)

17-6-18 "रविवारीय प्रवचनांश" मध्याह्न

o जो इतिहास बनाने में लगे हैं, वह भूल कर रहे है, जो इतिहास है उसे पढ़िये, (इतिहास अपने आप बन जायेगा। कर्तव्य करें

o करने योग्य कर्त्तव्य करेंगे तभी इतिहास की रचना हो सकती है।

o इतिहास बनाओ ऐसा कार्य मत करो जिससे इतिहास हो। एक आदर का पात्र बनता है तो दूसरा हंसी का पात्र।

o थोड़ी सी असावधानी व्यक्ति को बहुत पीछे ले जा सकती है। आचार्य कुन्दकुन्द ने तो मुनि से भी कहा कि वह यदि श्रमण के योग्य कार्य न करे तो नीचे निगोद भी जा सकता है। अतः प्रतिक्षण सावधान रहिये।

o "पीछे भी देखो - पिछलग्गु न बनो - पीछे रहोगे"

o पीछे देखोगे तभी आगे बढ़ सकते हो जैसे कार वगैरह में ड्राइवर कॉच के द्वारा पीछे भी देखता रहता है।

o प्रथमानुयोग में जब व्यक्ति अपने पूर्व भव की कहानी सुनता है तो उसे संसार-शरीर-भोगों से विरक्ति होने में समय नहीं लगता है।

o शिविर में भले ही 105 नम्बर मिल जाये किन्तु निर्विचिकित्सा का सही पालन तो तभी जब प्रयोग होगा।

o भाव - भाषा - भेष - भोजन और भक्ति, अभी महाराज जी (निर्दोष सागर जी) ने बतायी इनका पालन हो।

o जैसा देश-वैसा भेष (वेष) इसलिये विदेश से तो बचो ही उसकी हवा से भी बचो।
o भाषा में बहुवचन का प्रयोग हो। तू-तू-मैं-मैं बहुत हो गया आपका प्रयोग हो। सम्मान दोगेतब जरूर सम्मान मिलेगा।
o भारत में इतने शब्द बनते है कि शोध करने वाली को भी सोचना पड़ेगा प्रत्येक के लिए इतने अधिक शब्दो का प्रयोग होता है।
o मेहमान के यहाँ कितना भी अच्छा क्यों न हो घर जैसा सुख प्राप्त नहीं होता। भले ही वह कहे-सब आपका ही है। बहुत बार कहे तब थोड़ा सा खाया जाता है।
o दो बैल जन्म से जिस किसान ने पाला अब खाने को कुछ नहीं रहा तो दूसरे को दे दिया पर बैल उस नये घर में नहीं रहे अपने ही पालक के पास आ गये। भारतवासीयों विदेश में जाकर क्या होगा? अपने ही देश/गांव में रहकर आनंद से रहो।
o पपौराजी वाले भी राजी नहीं कर पायें।
o तिर्यञ्च भी होते है संलेखना। बैल तो मनुष्य के भावानुकूल चलने वाला है।
o यदि शोध-अनुसन्धान करना चाहते हो तो बैल (गाय) पर शोध करो।

० बैल पर शोध तभी जब आप उस बैल के भावों को जाने इसके लिए आपको बैल बनना पड़ेगा।
० आज के माता-पिता की एक ही चाह हो गयी- "बस कमाओ-कमाओ भले ही संस्कारी हो गमाओ"
० विदेशी नागरिकता में शान मत समझो अपने अच्छा वह बैल है जो अपने घर पुनः लौट आया।
० यहाँ का खेत, वहाँ का झाड़ लगाने वाला बराबर है सोच लो क्या बनना चाहते हो?
० लिफाफा से रक्त संचार में गति आती है।
० संविधान पुस्तक के मुखपृष्ठ पर बैल का चित्र बना है, वह कह रहा है यहाँ का बैल भी समझदार होता है।
० परिस्थिति बदली नहीं है- बनायी जा रही है/बदली जा रही है।
० बैल घास (भूसा) खाता है बदले में आपको प्राण बचाने हेतु अन्न देता है। गाय मिष्ठान्न हेतु दूध देती है।
० भविष्य को अच्छा तभी बना पाओगे जब अतीत को देखोगे अतीत पुराण ग्रन्थों में मिलेगा।
० पशु की भांति जीवन जीने पर भविष्य उज्जवल होगा। सार्थक होगा। वह मौन रहकर भी कर्तव्य को मुखरित करने वाला है।
० कुछ भी हो देहरी को छोड़कर नहीं जाऊँगा- यह बैल कहता है-

GROUP

भारतवासियों ऐसी कौनसी नौबत आ गयी जो विदेश सात समुंदर पार जाना पड़ रहा है।

- कृषि में सहस्त्र गुणित होकर फलता है। धरती का आधार - मेघराज का प्रसाद है यह।
- संघर्षमय जीवन होता है तो आनंद आता है।
- भाषा भावों की वाहक होती है। भाषा छोड़ दी तो भाव ही नहीं रहे। इसी से कर्तव्य का निर्वाह कर सकते है।
- हर बात में विदेश का अनुकरण - कैदी बन रहें है आप।
- हस्तशिल्प अथवा गृहशिल्प जीवन को ऊपर उठाने वाला है।
- अर्थ मात्र पदार्थ का मूल्य बताने वाला है सब कुछ नहीं। अधिक धन से ही जीवन अच्छा चलता है यह गलत धारणा है।
- मूल्य के बढ़ने से नहीं गुणों के बढ़ने से जीवन में उन्नति होती है। भारत में गुणों की पूजा होती है।
- हमारे खजाने में धन नहीं रत्न रहता है उसे जितना चाहो लो।
- किसान बैल के बलबुते पर ही रहेगा - ट्रेक्टर से नहीं।
- कृतज्ञता को कभी मत भूलो - बैलों की तरह।
- "पांव पड़ना ठीक है - पकड़ना ठीक नहीं।"

अहिंसा परमो धर्म की जगह

"श्रुतपंचमी"

18-6-18 "ये है श्रुत का प्रायोगिक रूप" प्रातः

आज यह श्रुतपंचमी के पूर्वार्ध का कार्य लगभग सम्पन्न होने जा रहा है। मध्याह्न का कार्यक्रम और सामने आने वाला है। अभी 2-3 कार्यक्रम ऐसे हुये जो श्रुत पंचमी के इस पर्व को साकार रूप में कहने चाहिये। एक वर्ष में श्रुत देवी की यह चर्चा सबके सामने आती है। श्रुत में क्या होता है? श्रुत की क्या आज्ञा है? श्रुत हमसे क्या चाहता है? हमसे यदि पूछना चाहते हो तो आज इस श्रुत का प्रायोगिक रूप नहीं दिखता।

दया दया तो सब कहते हैं, पर दया को कोई याद नहीं करता है। दया का विलोम याद होता है। दया का क्या उपदेश है। क्या संकेत है उन दिव्य आत्माओं का इसके बारे में हम समझते नहीं हैं। हमारे कदम/आचरण उस दया में उतर जाये तो श्रुत की सार्थकता मानी जाती है। आज प्रतिभास्थली के माध्यम से इस कार्य को आगे बढ़ाया है। छोटी-छोटी प्रतिभायें, सोयी हुयी प्रतिभाओं को जागृत करने का उपक्रम यहाँ पपौरा जी में हुआ है।

मैं तो ये समझता हूँ, ये कार्य अभिभावकों की तरफ से हुआ है। छोटी-छोटी छात्राओं को इस पपौरा क्षेत्र के लिए तैयार करना बड़ी बात है। ये कहा गया है कि आप लोगों को यहीं रहना है। [हमको] [बच्चियाँ - आप भी यहीं रहना।] हमारी पाठशाला

एक स्थान पर नहीं रुकती।

इन लोगों को (प्रबन्धकों) कह रखा है जब तक ये चलती-फिरती पाठशाला नहीं बनती यहीं पपौरा में व्यवस्था करना है। इन सभी ने प्रारम्भिक व्यवस्था अच्छे ढंग से कर दी। ये भी ध्यान रखना - प्रतिभा सबके पास है उसका उपयोग करना है। इस प्रतिभास्थली में कुछ ऐसी बातें मिलेंगी जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो पाती।

इसलिये इन छोटी-छोटी बालिकाओं का भाग्य बहुत तेज है। इतनी सारी शिक्षिकायें संकल्प लेकर तैयार हो गयी (कई लोगों ने कहा- इतनी सारी शिक्षिकायें हो गयी। शिक्षिकायें ज्यादा छात्रायें कम है। तो गुरुजी की बात याद में आ गयी। उन्होंने कहा था- तुम्हारी सेवा में हमेशा आठ माँ हमेशा रहेंगी। आठ प्रवचन मातृका ५ समीति एवं ३ गुप्ति रूप माँ हमेशा सेवा में रहती हैं। हमें सोना भी हो तो सुला देती हैं, स्वयं जागती रहती हैं। इसीलिए हमने सोचा शिक्षिकाओं को ज्यादा संख्या में रखेंगे।

धीरे-धीरे छात्राओं की संख्या भी बढ़ती जायेगी, तो भी चल जायेगा। तीगुनी संख्या में रखना। उसका कारण ४ छात्रा के लिए एक शिक्षिका होगी तो २५ छात्रा में तीन चाहिये। अभी तक की प्रतिभास्थली में पपौरा जी की प्रतिभास्थली की एक अलग छाप है। ऐसा न हो सारी छात्रायें इधर ही

आने लग जाये।

आपलोग ऐसा करना जब ज्यादा हो तो अन्य प्रतिभा स्थली को भी पहुँचा दें। जैसे- हथकरघा की साड़ियाँ इधर की उधर भेज देते हो। इससे वस्तु विनिमय मूर्त रूप में आयेगा। बहुत अच्छा, आज श्रुतपंचमी पर प्रतिभास्थली एवं हथकरघा का शुभारम्भ हुआ। सभी को मालुम पड़ जायेगा। सुबह में गौशाला में प्रतिभा-स्थली का प्रयोगिक रूप में हथकरघा श्रमदान के रूप में उद्घाटन हुआ।

सभी ने कहा- हम अच्छे से प्रबन्धन करेंगे, व्यवस्था करेंगे उसकी गतिविधियाँ तैयार है। वैसे पहले से ही गतिविधियाँ हुयी थी। सुनने में आया है मध्याह्न में महिलाओं के लिये भी विशेष रूप से हथकरघा शुरु होगा। मैं अपने मुख से नहीं प्रबंधक अपने मुख से कहेंगे तो अच्छा होगा। हम पहले नहीं बाद में हाथ उठायेंगे। मध्याह्न में इस शैक्षिक परिसर में ही महिलाओं के लिये भी यह होगा। उनको भी सहयोग मिल जाये ऐसी भावना हमारी थी।

चार-पांच सौ की संख्या में महिलायें आयी थी। उन्हें उस समय आश्वासन दिया था। अब आज प्रतिभास्थली की स्थापना के साथ वह भावना भी पुरी हो रही है। मुख्य तो यह है कि हमने कहा मूर्त रूप श्रुत का क्या होता है - ये समाज के सामने लाना है। ये

मात्र मन्दिर नहीं जो बोलियाँ होगयी।
साक्षात् उन्हें अहिंसा के मार्ग में आरूढ़ करना है। तन-मन-धन से इस कार्य में सहयोग करना जैन धर्म की प्रभावना का कारण बनना है। एक बात और है वह यह कि यहाँ प्रतिभास्थली में भी हथकरघा का पाठ्यक्रम होगा। शिक्षिकायें एवं छात्रायें भी इसे सीखकर अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर प्राप्त कर सकती है।

इसके लिये अन्यत्र जाना ही नहीं है। चातुर्मास-निर्वेदन] इन लोगों ने 12 माह यहाँ रहने का संकल्प लिया है फिर चार माह तो बहुत कम होते हैं। लोगों तो इनके संकल्प के बारे में।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

विशेष वाणी →

"आज प्रातःकाल आचार्यश्री गौशाला में गये, वहाँ हथकरघा की स्थापना हुयी। आचार्यश्री ने कहा कि दयामय जीवन ही धर्म है। दया से रहित धर्म अशुद्ध धर्म माना है, विशुद्ध धर्म नहीं है। इधर गौशाला और हथकरघा तथा उधर पाठशाला (प्रतिभास्थली स्थली) एवं महिलाओं के लिए भी हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र। दान जबरदस्ती नहीं बुलवाना चाहिए, जबरदस्ती दे दे तो कोई बात नहीं। संत में जो कहा वह जीवन में उतरें।"

19-6-18 "अच्छे व्यापारी के लक्षण" प्रातः

श्रुतपंचमी का महोत्सव कल प्रातःकाल से लेकर संध्या तक आप लोगो द्वारा सम्पन्न किया गया। एक वर्ष में आप लोग एक ही दिन यह तिथी मनाते हैं, चाहे तो प्रतिदिन भी मना सकते हैं, फुर्सत मिल जाये तो। उसी श्रुत में रत्नकरण्ड श्रावकाचार में मुनिमहाराज के लिए ज्ञान-ध्यान तपोरक्तः विशेषण दिया गया। इसका मतलब ज्ञान तप एवं ध्यान तप से लेते हैं अथवा तप को अलग से ले सकते हैं।

तपोरक्तः अथवा तपोरक्तस् भी कहते हैं। इन तीनो रूप (इन तीनो में रत जो रहता है, उन्हें तपस्वी कहा जाता है। इसी प्रकार श्रावक भी अपनी भूमिका के अनुसार कर्त्तव्य करने के बाद जो समय बचता है उसमें तप करता है। वह भी कर्म निर्जरा का कारण बनता है। ब्रह्मचर्य आदि ग्रहण करता है। इनसबसे भी अधिक प्रभावक है तो वह है मोह की निर्जरा करना। मोह की निर्जरा करते है तो शेष सात की भी निर्जरा होती है।

ये अनिवार्य होता है। इसलिये हम अपने लक्ष्य को कभी न भूलें। हम निर्जरा में जो-जो साधनतम कारण है उन्हे बढ़ाते चले जायें। कभी-कभी तात्कालिक एवं कभी-कभी जीवन पर्यन्त व्रत-नियम ग्रहण करते है। इस प्रकार व्रत-नियम से उस

मोह को समाप्त भी कर सकते हैं।

आगम का उल्लेख है कि एक साथ क्षय नहीं कर सकते क्रमशः ही कर सकते हैं। हमारी कितनी ताकत/क्षमता है उस पर आधारित है। मन-वचन-काय के द्वारा इस क्षमता का पता लगता है। कोई भी बनिया व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार ही पूंजी लगाकर दुकान खोलता है। देखा-देखी नहीं करता है। किन्तु मात्र पूंजी लगाने मात्र से ही दुकान नहीं चलती है। हओ तो कहो।

अपनी क्षमता को हमेशा दृष्टि में रखकर ही धर्मध्यान, त्याग, व्रत, तप, अनुष्ठान आदि करना चाहिये। देखा-देखी नहीं करना चाहिये। देखा-देखी से पूंजी भी हाथ से निकल जाती है। जब पूंजी ही चली गयी तो क्या करेंगे। उसी दुकानदार के यहाँ काम करेंगे, मुनिम का काम करेंगे, मालिक का नहीं। इसलिये उद्देश्य को कभी भी भूलना नहीं चाहिये।

बुद्ध भी आपके ये मौलिक क्षण है, जो विदेह अथवा चतुर्थ काल में रहते हैं उनसे भी अधिक कर्म निर्जरा में कारण है। आज दुष्षम सुषमा काल में जब उस काल से विपरीतताये हैं, वहाँ तो सभी साधन सुविधायें उपलब्ध थी कोई तकलीफ नहीं (आज विषम काल में भी धर्म ध्यान कर रहे हैं तो नम्बर ज्यादा तो मिलना

ही है।

अभियान करेंगे तो नहीं मिलेंगे कुशलता पूर्वक आज के युगीन रूप से एक-एक कदम बढ़ते जायें। यदि कदम बढ़ाने की क्षमता न हो तो खड़े हो जायें कर्मों की निर्जरा होती रहेगी। धैर्य की आवश्यकता है। कब तक? तीन को बदलो नहीं (रोते हुये नहीं बोलो। रोते हुये धर्म को धारण किया था क्या? बोलो? दुकान खोलते समय तो उद्घाटन किया, मिठाईयाँ बाँटी, नेता को बुलाया था। जब व्रत ग्रहण किया था तो सबके सामने किया था।

इसलिये रोते हुये प्रश्न नहीं किया करो। हम रोने वाले से बचते हैं। रोओगे तो दुकान नहीं चला पाओगे। इसका तात्कालिक प्रभाव होता है। उसकी दुकान में हानि होने का यही कारण है, यदि मैं भी करूंगा तो मेरा भी नम्बर आ ही जायेगा। अपने पैर मजबूत रखो। इसी तरह हित की आराधना करते चलो। ये मानता हूँ इस काल में परीक्षा ज्यादा होती है। प्रतिपल परीक्षा हेतु तैयार रहो।

ऐसा नहीं कि दुकान पर बैठकर हवा खाओ फिर तो बाहर लिखवा दो "दिवालिया हो गया" कोई भी ग्राहक नहीं आयेगा। जो दुकान खोलकर इधर-उधर भागा दौड़ी करता है, उस पर ग्राहक आये ही यह कोई नियम नहीं। ग्राहक भी परीक्षा करके लेता है। दुकानदार होशियार है तो ग्राहक भी होशियार होता है। यह

भले ही घुमकर आ सकता है।

दुकानदार विश्वास के साथ कह सकता है आप भले ही घुमकर आ सकते हो पर एक ही भाव का माल मिलेगा तो यहीं मिलेगा अन्यत्र नहीं। इतने ही-इसमें ही मिलेगा। घुमकर आओ भले ही इतना आत्म विश्वास होना चाहिये दुकानदार को। फिर स्वर्ग क्या मुक्ति भी इसी आचरण से मिलती है। विश्वास हो तो वह आपके स्वागत के लिये तैयार खड़ी रहेगी।

दुकान खोली तो ग्राहक आना ही है। हाँ ग्राहक का समय निश्चित नहीं हैं। हमेशा अपनी दुकान खोलकर रखें अथवा समय निर्धारित कर लें 4-4 घण्टे तक खुलेगी। अपने आंगन में सभी लोग प्रतिक्षा करें, यें ही हमारा कहना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।नूँ

प्रतिभास्थली बहनों की कक्षा में →

"अष्टम - नवम् - दशम् प्रतिमा को मैं Ist Year - IInd Year और Final Year मानता हूँ। कृत - कारित - अनुमोदना की अपेक्षा ये तीन श्रेणियाँ हैं। एक में आरम्भ का स्वयं करने का त्याग, दूसरी में करवाने का त्याग इसके बाद अनुमोदन का भी त्याग। यही आरम्भ - परिग्रह - अनुमतित्याग प्रतिमा कहलाती है।"

20-6-18 "कैसे हो क्षुधा रूपी रोग दूर" प्रातः

भगवान या साधुजनों के सामने आप अष्ट मंगलद्रव्य चढ़ाते हैं। उसमें प्रासंगिक है- नैवेद्य का चढाना। नैवेद्य का मतलब भोजन सामग्री। सीधी-सीधी बात है ऐसा नहीं की नैवेद्य का मतलब कुछ और होता हो। क्षुधा रोग विनाशनाय....। तो अब आप रोगी हैं? बोलो रोगी हैं या नहीं। [हँसी] रोगी होकर भी आवाज अच्छी आ रही है, हंस भी रहे हैं। रोगी तो रोता है।

मैं कब ठीक होऊँगा? कौनसे व्यक्ति से दवा कराना है? हमारे पास ऐसे व्यक्तियों की संख्या सुबह से शाम तक कम नहीं होती है। हमने सोचा मैं स्वयं रोगी हूँ दूसरे का रोग कैसे निवारण कर सकता हूँ। इसलिए आप जब कभी भी भोजन करते हो, पूजन के समय तो ये भावना ठीक है भोजन के समय ये भावना भाया करो कि हे भगवान! ये भोजन कब छुटेगा। आपने तो इसका हमेशा के लिए त्याग कर दिया, मेरा कब होगा?

मुझे तो दवाई भी कम पड़ गयी। एक दिन यदि भोजन में थोड़ा सा नमक कम हो जाये तो फिर देखो- सब खारा-खारा नजर आने लगता है। कैसे भोजन कम होगा? इसलिये प्रत्येक क्रिया में अध्यात्म लगाया करो। धार्मिक

क्रिया / अनुष्ठान से कर्मों की निर्जरा होती है।

भोजन करते ही तात्कालिक आराम मिल जाता है। अन्यथा शाम को खाता है, सुबह उठते ही भूख-भूख चिल्लाने लगता है, इस विषय पर क्यों नहीं सोचते हो? जब अनादि काल से चला आ रहा यह रोग शमन को प्राप्त नहीं हो रहा तो दवाई क्यों नहीं बदलते / वैद्य जी को बदल दो। इस पर कभी विचार नहीं करते। देव गति में अमृत का भोजन मिलता है।

यहाँ तो आधा घण्टा विलम्ब हो गया, बच्चा भी है तो चला लेगा किन्तु वहाँ तो जिस समय चाहा उसी समय तुरन्त मिल जाता है। फिर भी बच्चों से भी ज्यादा हालत खराब है। मन में आया नहीं कि बटन दब जाता है। शान्ति सी मिल जाती है। जैसे टेबलेट (दवाई) लेते हैं। आप प्रतिदिन लेते हो, वे वर्षों से लेते हैं। सर्वार्थ सिद्धि में 16½ महिने में एक बार लेते हैं और आप? देख लो 16½ महिने में लगभग हजार बार-नाश्ते की छुट्टी वे आप जैसे चिल्लाते नहीं।

महाराज उनकी आवाज नहीं आती। हमें चाहने पर कुछ समय भी लग सकता है पर उन्हें तो तुरन्त चाहिये। हम तो अष्टाह्निका आदि में व्रत कर लेते हैं पर वे। इसलिये बड़े लोगों के रोग भी

बड़े होते हैं।

उनकी नाड़ी जल्दी से पकड़ में नहीं आती। मनुष्यों की चिकित्सा संभव है पर देवों की कभी चिकित्सा नहीं होती। जिस समय सोचा - इंजेक्शन तो लगाना ही है। वो भी वहाँ जाप दे रहे हैं। क्षुधा रोग विनाशनाय... चारों गति में कहीं भी जाओ भूख-प्यास की वेदना सताती है। वहाँ तो मरण भी नहीं हो सकता, न ही वे कभी रोते हैं। उसे पकड़ने वाला भगवान ही हैं।

स्वयं को भी भूख-प्यास की वेदना होती है। कुछ लोग अज्ञान रूपी अंधकार में घिरे हैं। वे दवाई को भी बड़े चाव से खाते हैं। भोजन बनता है सब घटिया है और ये बढ़िया है। मतलब इनके यहाँ दवाई विश्वसनीय है। सस्ती दवाई के द्वारा यदि रोग का उपशमन हो तो मुनिम जी से पुछ लो। एकासन करते हैं, अपने आप ही शांत होता है। यह इलाज अनिवार्य है। आप लेते ही रहते हैं - लेते ही रहते हैं। जो ज्यादा इलाज लेता रहता है उसके रोग के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते।

आप यदि रोग से बचना चाहते हो तो False - Food छोड़ दो। अन्यथा वहीं जाना पड़ेगा। जो बिना दानबिन किये खायेगा उसे न दवाई नसीब होगी - न ही भोजन-पानी। सागरोपम आयु तक एक दाना भी नहीं मिलेगा, न ही पानी की एक बूंद मिलेगी। अब आप क्षुधा रोग विनाशनाय_ _. कहते रहो। ऐसा यतन करो कि

दुबारा ऐसी आयु मिले जहाँ भोजन करना ही न पड़े।

ऐसी आयु सिद्ध एवं अर्हन्त परमेष्ठी को छोड़कर है ही नहीं। उनकी साधना ऐसी कि हमेशा के लिये रोग समाप्त हो गया। यदि आता हो भी तो वह ऐसी कि सह्य - सहन करने योग्य होती है। आपको असह्य रोग है। इसलिये भोजन को दवाई मानकर लेओ। मैं भोजन नहीं - दवाई ले रहा हूँ ऐसा मानकर भोजन ग्रहण करो। अब ४०-४५ वर्ष के हो गये फिर भी छूट नहीं रही। नाति-पोते क्या सोचते होंगे। एक-दूसरे को मत देखो।

हे भगवन्! ये दवाई कब छुटेगी। मैं छुड़वा नहीं रहा। भोजन करते समय अहोभाग्य मानकर भोजन मत करो। पक्का है कर्म की निर्जरा होगी। "भोजन को दवाई समझकर लो तो अच्छा है - बुरा नहीं है।" दवाई अच्छी नहीं - बुरी है। इसलिए घरवालों पर टूट मत पड़ो। फिर भोजन में नमक नहीं भी है तो चल जायेगा। भावना करोगे, क्षुधा रोग विनाशनाय... तभी छुटेगा।

फिर स्वाद कहाँ तक रहता है। यहाँ तक (ईशारा) "उतरी घाटी - हुयी माटी" घाटिया उतार दो। एक पानी की धुंट ले सब नीचे चला जाता है। पकवान भी गया और कच्चावान भी गया। ये सब मन की बात है। साधु लोग जिस प्रकार तपस्या (साधना) के लिए लेते हैं, उसी प्रकार से लेना चाहिए तब वह

संवर एवं निर्जरा का साधन बनता है।

आप लोग भजन गाते हैं, हम सुनते रहते हैं। इसी से हमारा प्रवचन बन जाता है। कैसा लगा आप लोगों को? नया है - पुराना नहीं। अब जब भी भोजन करो तो ये भावना करना हे भगवन! ये दवाई कैसे छुटे? आपने जिस साहस से छोड़ा, वह मुझे भी प्राप्त हो जाये। भगवान की प्रशंसा एवं साधना की अनुशंसा करेगा तथा जो दवाई की भाँति भोजन लेगा अवश्य ही एक दिन यह छुटेगी।

हमारे लिए भी ऐसा ही कहा गया है। मुनि महाराज के लिए उत्कृष्ट रूप से ५४ मिनिट में अपनी दवाई को पूर्ण करके आ जाते है। मध्यम दुगना अर्थात १६ मिनिट तथा जघन्य तीगुना २ घण्टे २५ मिनिट का समय इसके अन्तर्गत आ जाता है। इस प्रकार किसी को सवा दो घण्टे किसी को १६ मिनिट किसी को ५४ मिनिट लगते है। धन्य है वे मुनि महाराज जो क्षुधा रोग विनाश के लिए निरन्तर साधना रत है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जैन

गुरु वैशना →

"लोकतंत्र में लोभतंत्र नहीं आना चाहिये। पक्ष-विपक्ष से ऊपर उठकर राष्ट्रीय पक्ष से निर्णय ले तो हम बहुत आगे बढ़ सकते है।"

22-6-18 "सर्वे भवन्तु सुखीनः" प्रातः

एक छत पर दो-तीन बच्चे आ गये और वे अपना मनोरंजन का कार्य करना चाहते हैं। अर्थात पतंग उड़ाने की योजना बना रहे हैं। बार-बार ढूंढ रहे हैं कि इसे किस ढंग से उड़ाया जावे। उसी बीच में उन बच्चों के सिर के ऊपर क्रमशः एक-एक के सिर पर जोर से पंख मारकर वह (पक्षी) चला जाता है। जिसके सिर पर पंखों की मार पड़े वही बोल उठे- क्यों क्या हो गया? संभव है वह जा रहा होगा। जाते-जाते मनोरंजन करके चला गया।

हम भी तो मनोरंजन करने आये हैं। फिर से योजना में लग्न हो गये। पक्षी ने सोचा ये तो अपना कार्य करेंगे। दुबारा दूसरे के सिर पर और तीसरे का भी नम्बर आ गया। बच्चों ने सोचा ये क्यों कर रहा है? एक बार-दो बार-तीन बार संकेत तो सोचना अवश्य चाहिये। उस पक्षी के संकेत से बच्चों ने भी सोचना प्रारम्भ किया फिर आप तो समझदार हैं।

इस प्रकार उन्होंने सोचा कि आड़ में बैठकर देखते हैं कि ये क्या करता है? वहाँ बच्चों को न देखकर वह पक्षी वहीं छत पर जो घोंसला बनाया था, उसमें जाकर बैठ गया। आपही सोचिये। वह पक्षी है जो आसमान में बहुत ऊपर

उड़कर भी अपने घोंसले की रक्षा कर रहा है।

उस घोंसले में जो छोटे-छोटे बच्चे हैं उनका रक्षण भी करना तथा रोजी-रोटी का प्रबन्ध भी करना अपना आवश्यक कर्त्तव्य समझता है। अब उन बच्चों को तो समझ में आ गया। इसलिये वह चील चीर-चीर कर कह देता है, खबरदार! अभी मैंने चोंच नहीं मारी केवल पंख से ही वार किया है। उन बच्चों ने दूसरे स्थान पर जाकर पतंग उड़ाना प्रारम्भ कर दिया। उस पक्षी से सीख ले लीतीनो बच्चों ने।

इतना अवश्य है कि सभी प्राणी अपने-अपने बच्चों की रक्षा मोह के कारण करते हैं। यह रक्षा का भाव अड़ोस-पड़ोस के लिए भी रख लेवें किन्तु नहीं रखते। चिंता रहती है अड़ोस-पड़ोस की सेवा से घर खाली न हो जावे। आजकल पिताजी तो बांटते ही रहते हैं, हमारा नम्बर आयेगा तो मिलेगा कुछ नहीं केवल चटनी बांटने वाला खलबट्टा अथवा शिलबट्टा या चक्की अथवा दवाई बनाने का खलबट्टा बस ये चार ही बचेंगे।

पिताजी को बांटते देखकर बच्चे कहते हैं अब हम भी बड़े हो गये हैं, अब दान-पुण्य मत किया करो। मतलब वह चील पक्षी होकर भी अपने बच्चों के लिए रात-दिन एक करता है पर धर्म के क्षेत्र में इतने हटकर भाव होते हैं। "अहो अज्झाणेहणं, करुणाभीय

तिरियमणुएसु। [पृ.सं. 85]

मनुष्य या तिर्यञ्च में करुणा का भाव हो पाना मोह से ऊपर उठने का उपाय है। प्राणी मात्र के प्रति करुणा का भाव हो। केवल अपनों के प्रति ही करुणा न हो। हिंसक पशु-पक्षी भी अपने बच्चों का रक्षण कर लेते हैं। अपनों के प्रति इस तरह से करना धर्म-करुणा-वात्सल्य नहीं अपितु स्वार्थ परायणता है। इससे पाठ लेना चाहिये। बेचों ने तो पाठ ले लिया आप भी लें।

जीवन में ऐसा कार्य करना है ताकि धर्म का मर्म समझ सके। धर्म तो करते जा रहे हैं उसका मर्म समझें। मर्म मतलब? संवेदनशील स्थान को मर्म कहते हैं। कहाँ पर क्या है? मर्म की बात अर्थात बहुत गहरी बात कह दी। आँखे खुल जाती है। धर्म तो कर रहे हैं, अडोस-पडोस पर भी दृष्टिपात करो।

क्या धर्म क्या है तभी ज्ञात होगा। धर्मात्मा के लिये जो सहयोग दिया जाता है वह धर्म का कर्तव्य माना जाता है। अपने बच्चों के प्रति लाखो खर्च करना और किसी धर्मात्मा के प्रति थोड़ा भी खर्च करना आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में धर्म की कोटि में आ सकता है/आता है। इसलिये स्वयं करते है, करवाते है, अनुमति देते है अथवा नहीं करते तो भावना तो भाते ही हैं, यही धर्म का मर्म है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

GROUP

23-6-18 "अपने कनेक्शन को ठीक करो" प्रातः

आप जब लाइट जलाते हैं तो एक लाइन में बहुत सारे लट्टू लगे हुये हैं तो एक बटन दबाते हैं तो एक ही लाइट जल पाती है, बाकी बहुत सारे लट्टू लटके रहते हैं. वो क्यों नहीं जलते इसके बारे में मेरे मन में आया। ऐसा क्यों? छोटा जल जाये, बड़ा नहीं अथवा बड़ा जल जाये- छोटा नहीं। लाल जल जाये पीली नहीं - पीली जल जाये - लाल नहीं। इसलिए कि जिस बटन को दबाते हैं उसी के तरंग - धन में हलचल होगी।

तरंग - धन माने लेन - देन होता है। इसी प्रकार दोनों वायरों का संबंध भीतर के कनेक्शन से होता है तो वहाँ लाइट जल जाती है। जिसका भीतर से कनेक्शन नहीं होता तो वहाँ लाइट नहीं जलती है। लट्टू लटकाने मात्र से प्रकाश का सम्बन्ध नहीं है। आप इसीलिए लाइट का उपयोग नहीं करते। बड़े-बड़े लट्टू हैं, रखीली हैं जब बिल आयेगा तो मालुम पड़ेगा। बिल क्यों नहीं भेजा? उसका संबंध उस तरंग और धन के साथ रहता है किन्तु सभी के साथ नहीं।

जिसके साथ सम्बन्ध करते हैं वही जलता है। यह वैज्ञानिक तथ्य है। हम लोगों का भी निजेरा - सेवर आदि का सम्बन्ध तरंग-धन पर आधारित है। माना हुआ - हुआ कहने से काम

नहीं होगा।

भीतर से वह सम्बन्ध भाव-धन पर आधारित होना चाहिए। आज यह प्रासंगिक विषय इसलिये रखा क्यों कि हमारी दृष्टि अभी आप लोगों पर गई तो एक कलशा पर सबके हाथ लगवा रहे थे। जिसने हाथ लगाया उसका ही बर्तन दबा शेष जिसने हाथ नहीं लगाया उसका बर्तन नहीं दबा। उसका भाव-धन नहीं इसलिये कर्म निर्जरा नहीं। यह आवश्यक है।

एक नारियल चढ़ाओ सबका हाथ लगाओ। सोचता है- नारियल तो हमारा था जिसका नारियल था आप उस ओर मत देखो। उसका द्रव्य हो सकता है पर भाव तो आपके अपने हैं। यदि द्रव्य वाला ऊपर-ऊपर से द्रव्य चढ़ायेगा तो ऊपर-ऊपर का ही द्रव्य हाथ लगेगा अर्थात छिलका हाथ लगेगा। भावों में असंख्यात प्रमाण भेद होते हैं। आप जानते हैं कि भावों में कितना आरोहण-अवरोहण हुआ करता है।

बोली लेने के बाद कुछ लोग सोचते हैं। अरे भैया बोली तो ले ली सब तो था नहीं। कई बार लेने वाले कम देखकर भी भाव बन जाते हैं। किसी ने थोड़ा सा धक्का लगा दिया तब भी बोलियाँ आ जाती हैं। परन्तु जब वे दान नहीं भेजते तो फोन करना पड़ता है। उनका मोबाइल नम्बर लेते हैं। कार्यकर्ता उन्हें याद दिलाते हैं। वह कहता है-

हमने बोली ली तो आपका काम तो हो गया।

आपने दे दी, हमने ली।

द्रव्य का निश्चित थोड़े ही था। हमें क्या मालुम देना पड़ता है। हाँ! लेना पड़ता तो ले लेते। द्रव्य के साथ भाव हो, भाव के साथ द्रव्य हो नहीं भी हो तो भी हाथ लगाया तो भी मन खिल जाता है, प्रफुल्लित हो जाता है। हाथ लग गया मतलब हमारा भी द्रव्य लग गया। जैसे करंट पास होता है उसी प्रकार भावों का खेल है। कभी-कभी द्रव्य वाला भाव नहीं लगाता और भाव वाला बिना द्रव्य के भी ताली बजाने लग जाता है। यहाँ पर आहार आप देते हो, आकाश में वहाँ देवता ताण्डव नृत्य करता है।

ये भाव कहाँ से आ जाते हैं। वह कहता है हम तो आहार दे नहीं सकते पर सौधर्मइन्द्र भी भावों का कहना ही क्या? तालियाँ तो बजा ही सकता है। इसीलिये वह ताण्डव नृत्य करता है। वह ऐसा तल्लिन होकर देखता है कि सभी लोग उसी को देखने लग जाते हैं। कैसा भाव विभोर हो गया। इसी से पुष्पवृष्टि - गन्धोदक वृष्टि एवं तालियाँ भी बजने लग जाती है। आप निश्चित करलो।

समोशरण में मिलेगा तो मनवचन-काय कृत-कारित-अनुमोदना करने से वहाँ का अक्षत द्रव्य प्राप्त हो जायेगा। हमें मिला तो सबको मिल जाये ऐसा भी नहीं है, ये तो भावों का परिणाम है। परोक्ष से (पढ़कर) देखकर के (सुनकर) भी हो सकते है। अपने करंट (लाइट) को

भी अच्छे ढंग से राखियो।

लट्टू फ्युज नहीं होना चाहिये। यदि फ्युज हो तो फेंक देना, रखना नहीं। वह जलने वाला नहीं। दूसरा भी देखकर ले आओ अन्यथा पैसा फोकट में चला जायेगा। विवेक की बात है। कभी-कभी द्रव्य से बल्ब ढीली हो जाये तो भी लट्टू नहीं जलता। इसलिये ज्यादा बल्ब को दबाओ भी नहीं। कई लोग फोटो लेते हैं, उनका फ्लेश भर चलता रहता है, क्यों कि मात्र बल्ब दबा रहे हैं।

इसलिए आपको सब सिद्धान्तों से अवगत होना आवश्यक है। लट्टू को भी ठिक देख लें, करंट भी सही प्रवाहित हो तथा बल्ब का भी ध्यान रखना चाहिये। एक बात जरूर ध्यान रखें - मीटर से सम्बन्ध होना चाहिये। मीटर से सम्बन्ध नहीं तो कई लोग ऊपर से कनेक्शन ले लेते हैं। ऐसा होता है कि नहीं? बोलो? हाँ, इसीलिए तालियाँ बज गयी। बिजली चोरी होती है - हमें मालुम नहीं आप से सुन रहे हैं। सुना तभी ऐसा बनावर बता दिया - चल गया।

तो हमारा मीटर देवशास्त्रगुरु से जुड़ा हो। जहाँ भी जाओ आपका मीटर यदि देवशास्त्र गुरु से जुड़ा है तो कोई बाधा नहीं। मनुष्य - तीर्यञ्च - देव - नरक गति कोई भी गति में जाओ जितना भाव करेंगे उतना ही फल मिलने वाला है। ये सब कर्माधारित

हैं। कर्म के उदय में फल मिलता है।

अतः हम ऐसा कार्य करें जिसका लाभांश हमें ही मिलेगा। गंगा घर पर आयी है - कुछ नहीं करना, बस थोड़ा सा जागना है, लाभ ले लो। शुभस्य शीघ्रं। इस प्रकार हमारा ये लड्डू का उदाहरण याद रखना। करंट एवं फ्यूज को भी भूलना नहीं। इससे आपको स्वयं ही मालुम पड़ जायेगा। देवशास्त्र गुरु को भी पल-पल याद रखो। आखातो तीनो संध्याकाल में सामायिक के समय में ही हमारा तो हमेशा-हमेशा देवशास्त्र गुरु से सम्बन्ध अर्थात मीटर चालु ही रहता है। आप भी ले सकते हैं जैसे आपकी इच्छा।

कुछ बात आपकी चाहिये हमने तो सारा का सारा दे दिया। जहाँ कहीं भी जाओ ले सकते हो। मोबाइल की एक रेंज होती है, संबंध बना रहना चाहिये। बिमत भी m.p. की भिन्न-भिन्न होती है। कोई हजार में तथा कोई लाखों में भी नहीं आता। कोई भी हो उसको पुरे से लगाना पड़ता है। उन्हीं को लाभ होता है जो विधिवत् रखते हैं।

जब मीटर लाखों में बिल आ जाता है तब मालुम पड़ जाती है, हमने क्या किया? कभी-कभी सामने वाले को उदारता पूर्वक छूट भी दी जाती है। 24 घण्टे चालु रखो तो भी मात्र कुछ राशि भरना पड़ती है। अलग-अलग विधा है। तो तीन बातें याद रखना। करंट, लड्डू और मीटर। छोटे बच्चों के माध्यम से कलशी फूटने पर यह वाणी निकली है, उसके प्रति बहुमान होगा तो अवश्य ही दुकान चलेगी नहीं तो नहीं चलेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

रविवार
२५-६-१८ "कैसे छूटे बुरी आदतें" प्रातः
[प्रतिभास्थली-पर्वोरा के बच्चों द्वारा पूजन]

आप लोग पूजन के समय बहुत सारी भावनायें व्यक्त करते हैं। मैं सुनता रहता हूँ। और सोचता रहता हूँ इनकी ये भावनायें....तालियाँ आपने जल्दी बजा दी। सोच रहा कि इनकी ये भावनायें पूर्ण हो सकती है। बिच-बिच में अभी कहा कि हमने ये किया-हमने वो किया जिससे बहुत कर्म बंध हुआ। ऐसे भाव किये कि कर्म का बंध बढ़ता ही गया।

तो अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि आप लोग ऐसे भाव करो जिससे कर्म बंध न हो। इसके लिए आपने अभी बादाम आदि चढ़ाये उनके स्थान पर- गुस्सा, मान, इर्ष्या, माया, लोभ भाव को चढ़ा दो। एक-एक द्रव्य चढ़ाने की जगह इन एक-एक भावों को चढ़ाते जाओ। जब इनको चढ़ा दोगे तो आप इनसे रहित (खाली) हो जाओगे।

जैसे ऊपर की मिट्टी को हटा देते हैं तो पानी अपने आप ऊपर आ जाता है। इसलिए अब कभी भी हमें इससे भर दो ऐसा मत कहा करो। हमने जो कहा उस तरह से करोगे तो अपने आप ही जो चाहते हो वह मिल जायेगा। तो आप ऐसा करोगे ना? हमें देओगे ना? इस पुकार जब

आप हमसे बोल सकते हो तो हम भी आप से पुछ सकते हैं। क्यों? करोगे ना? अथवा करो ना।

अवश्य करोगे तो अवश्य ही फल पाओगे। इनको चढाओगे तो अवश्य ही फल पाओगे। चढाओगे तो अच्छा है। आज तक गुस्सा चढाया ही नहीं। सृजन कैसे की जाती है पहले सीख लेना चाहिये जिन्होंने भी सीखाया अभी अधुरा सीखाया है, पूर्ण नहीं। पूर्ण सीख लोगे तो पूर्ण उद्धार हो जायेगा। इतना ही पर्याप्त है।

आज रविवार का दिन है, मध्यान्ह में देना है। देखते हैं आप लोग क्या-क्या चढाते हैं? हमें क्या-क्या देना है? ये भी सोचना पड़ेगा। देना तो है ही। क्या देना है ये महत्त्वपूर्ण है। भाग्य के अनुसार ही कार्य होगा। फिर भी आपकी भावना पूर्ण हो, ऐसी भावना कर सकते है क्यों कि हम क्या दे सकते है?

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

वैश्यावृति में →

"गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में कहा कि यदि मैं तानाशाही नेता होता तो सर्वप्रथम तीन काम करता पहला देश में शराब बंदी दूसरा - गो हत्या (जीव हत्या) बंद एवं तीसरा मातृभाषा हिन्दी में ही सारे कार्य करना। आज तक ये तीनों काम नहीं हुये।"

25-6-18 "कहीं आप हिंसक तो नहीं" प्रातः

आप लोग अपनी-अपनी आँखो से देखते हैं, पढते हैं, चलते हैं, वाहन आदि चलाते हैं। उस समय आप अपनी आँखो के माध्यम से क्रिया करते हैं। फिर भी हम विशेष सावधानी अथवा विशेषज्ञान रखते हैं। जैसे - हम पढ़ रहे हैं तो प्रकाश किस ओर से आये ताकि पढने में सहयोग हो सके। विपरीत दिशा से तो पढन क्रिया में सहयोग नहीं बाधा होगी। इसलिए ध्यान रखा जाता है।

पीछे से, ऊपर-नीचे से, आजु-बाजु से भी प्रकाश आ सकता है। प्रकाश की अपनी गुणवत्ता भी होती है। बहुत प्रकाश (तेज) हो तो भी बाधा पैदा हो सकती है। इसलिये ज्यादा तेज प्रकाश होने पर दरवाजा आदि लटका देते हैं। लटकाने का मतलब उतना ही खोलकर ताकि आँखे सही-सही काम कर सके। इसके उपरान्त भी आँखो की ज्योति में कमी लगती है तो डाक्टर या वैद्य जी से सम्पर्क कर लेते हो।

वैद्य जी होते है तो कहते है आपको चश्मा की आवश्यकता नहीं हैं। वे इस प्रकार की औषध देते है कि यदि चश्मा लगा भी हो तो भी उतर जाये। भारत में प्राचीनकाल से यही चिकित्सा पद्धति चलती आ रही थी किन्तु वर्तमान में ऐलोपेथी चिकित्सा

पद्धति आ गयी।

तो ऐलोपैथी में डॉक्टर चश्मा का निर्देशन देते हैं। इसके अतिरिक्त आँखो के साथ-साथ अन्य कार्य हेतु भी भारतीय चिकित्सा पद्धति में ध्यान दिया जाता है। मान लो सिर में दर्द हो रहा है तो वैद्य जी सिर दर्द हेतु भी औषधी देते हैं किन्तु डॉक्टर के पास जाओ तो वह कहता है आपको तो चश्मा लगाना होगा उसी कारण सिर में दर्द हो रहा है।

पहले की अपेक्षा जाँच करके बता देते हैं आपकी आंखो का नम्बर बढ़ गया है। अब आप ही बताओ की आंखो का नम्बर बढा या चश्मे का नम्बर बढ़ा। किसी के नं० बहुत बढ जाते हैं तो किसी-किसी के नं० उतर भी जाते हैं, किसी-किसी के वैसे की वैसे ही बने रहते हैं। ऐसा सुनते हैं, अब उस चश्मा जिसे उपनयन भी कहते हैं, उसमें इस तरह की व्यवस्था हो जाती है। दो आँखे हैं कोई दूर का तो कोई पास का देखने में समर्थ नहीं हो पाती।

दो ग्लास होते हैं, उन दोनो ग्लास में ही इस प्रकार की व्यवस्था कर दी जाती है। उस ग्लास में बिच में एक बोर्डर डाल दी जाती है। इससे यदि नीचे देखना हो तो ऊपर का नहीं दिखेगा और ऊपर देखना हो तो नीचे का नहीं दिखेगा। हमारे आचार्यों ने इसी को दृष्टिकोण कहा है। यदि हम एक ही स्थान पर

बार-बार देखते रहें तो आँखो में कई प्रकार की समस्यायें आ सकती है।

ये कहीं लिखा हुआ नहीं है पर होता है कि ऊपर का देखो तो नीचे का गायब हो जाता है। नम्बर का भी भिन्न-भिन्न प्रयोग होता है, ये नहीं करते तो टेंशन होता है। टेंशन अर्थात सिर दर्द होने लगता है। ये कोई भी नहीं कहता (सलाह नहीं देता) कि एक दिन में कितना पढ़ना है। बस आप तो पढ़ते जाइये कोई बाधा नहीं। इसके लिए कोई निर्देशन नहीं खुद रखा सकते हो क्या? नहीं न।

"जब रखने में तौल है तो पढ़ने में भी तो मोल होगा।" जो लोग बहुत अधिक पढ़ते है अथवा चश्मा लगाकर भी पढ़ते रहते है, उनके लिए कहना है। कितने नं. तक के चश्मा लगते है? मुझे तो ज्ञात नहीं था। किसी ने इतना मोटा ग्लास लगा रखा था कि उसकी आँखे घोड़े की आँखो के समान दिख रही थी। आँख की size वही है पर नम्बर बढ़ने के कारण ऐसी दिखने लगी।

बता रहे हैं कि 16-18-20 नम्बर तक भी पहुँच जाते हैं। अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि कांच (ग्लास) के साथ आँखो की भी यह दशा हो जाती है। आप सभी से यह कहना है - ज्यादा नहीं पढ़ना, टेंशन के साथ नहीं पढ़ना तथा

बारीक शब्दो का उपयोग नहीं करना।

हमारा कहना उचित है, क्यों कि भीतर का क्षयोपशम भी होता है। मात्र उपकरण से ही सब कुछ नहीं होता। नेत्र ज्योति बाहर की है उसमें बाधा आने पर देखने में ही बाधा आने लगती है। इसलिये उम्र का भी, क्षेत्र का भी और भावों का भी इसमें बहुत फर्क पड़ता है। यदि भावों में प्रसन्नता नहीं तो देख नहीं पाओगे, पढ़ नहीं पाओगे। भाव स्पष्ट नहीं हैं तो देखते - जानते हुये भी सफलता नहीं मिलती है।

आपको धार्मिक एवं लौकिक दोनो हेतु नेत्र ज्योति की सुरक्षा हेतु भाव अच्छे रखने होंगे। ये डांवाडोल स्थिति में नहीं होगा। यदि इन्द्रियाँ अच्छे से काम नहीं करती तो फिर अपने आपको विशेष दण्ड देना होगा। आंखो से बहुत काम ले लिया अब विश्राम कर लिजिये। विश्राम करते - करते क्या मैं पढ़ सकता हूँ? नहीं भाई साब आँखे बंद करके पढ़ सकते हो।

बिना चश्मे के नहीं पढ़ सकता पर आँखे बंद करके पढ़ा जा सकता है। आँखे बंद करके मतलब आम्नाय स्वाध्याय को काम में ले सकते हैं। फिर लेटे-लेटे भी पढ़ सकते हैं। चश्मे की कोई आवश्यकता नहीं। यदि अपने चश्मे के नम्बर को कम करना चाहते हैं तो ऐसा ही करो। न ही आँखो में दर्द होगा तथा न ही

माथा दर्द होगा।

आपको देखकर सामने वाले का भी चश्मा उतर सकता है। इन्होंने इस प्रकार किया यदि हम भी करेंगे तो हमारा नम्बर भी आ सकता है अर्थात हमारा चश्मा उतर सकता है। मैं देख रहा हूँ छोटे-छोटे बच्चों को भी चश्मा लग रहा है, नं० भी बढ़ रहे हैं। काहे के? चश्मे के नम्बर बढ़ रहे हैं - वैसे पढ़ाई में नम्बर घट रहे हैं।

यदि चश्मा लगता है तो लोग समझते हैं बुद्धि तेज है। ऐसा नहीं आज तो पेट (गर्भ) से ही नं० (चश्मा) लेकर आता है। आचार्य उमा स्वामी महाराज ने इसके लिए एक सूत्र दिया- "प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा" सुन रहे हो। [हिंसा] हुआ कहकर टाल तो नहीं रहे? कषाय के वशीभूत होकर प्राणों को क्षति पहुँचा देता है। जीवहा, आंखों, कानों को भी क्षति पहुँचायी जा सकती। मन जो अनिन्द्रिय है उसको भी क्षति पहुँच जाती है।

आचार्यों ने इन सब इन्द्रियों एवं मन को प्राण रूप कहा है। इन सबको आप क्षति पहुँचा रहे हो। इसलिये कितना पढ़ना - कैसे पढ़ना इसका ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है। कुशाग्र बुद्धि होते हुये भी ज्यादा सोचना भी अपने प्राणों को क्षति पहुँचाना है। जो ज्यादा सोच रहे हैं वे ही सिर दर्द के शिकार हो रहे

हैं। ऐसे कई व्यक्ति आते हैं हमारे पास।

मैं तो कुछ जानता नहीं हूँ। फिर भी वे कहते हैं- बस महाराज आप तो आशीर्वाद भर दे दो। आप प्राणों की क्षति पहुँचा रहे हो और मुझसे आशीर्वाद माँग रहे हो। ये सम्भव ही नहीं हैं। आप हिंसा कर रहे हो। प्राणों की क्षति स्व एवं पर दोनों के लिये कारण बन रहे हो यह गलत है। अब उस क्रिया को सुधार दो अन्यथा आप हिंसक हो अहिंसक नहीं। आप अपने एवं दूसरे के प्राणों का घात करने वाले हैं। भले ही पानी छानकर पी रहे हो।

इसलिये हिंसक हो क्यों कि संज्ञी पंचेन्द्रिय का वध हो रहा है, होता ही रहता हैं। 10-15 मिनिट का यह वक्तव्य आपको दिया। कृपा होगी, अनुकम्पा होगी। दूसरे पर कृपा नहीं, स्वयं पर होगी। इस वक्तव्य को ध्यान में रखना। हमारे पर नहीं - अपने पर ही कृपा करना।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

Donation =

"आजकल डॉक्टर बनने हेतु, इंजिनियर बनने हेतु अथवा किसी बड़े विद्यालय-महाविद्यालय में प्रवेश हेतु एक बड़ी राशि दी जाती है। व्यवहार में इसे Donation कहा जाता है। प्रश्न यह उठता है कि क्या यह Donation है? भेंट-न्योछावर फिर भी कुछ हद तक ठीक पर दान तो कतई नहीं है।"

26-6-18 "आओ बनें अनात्मार्थी" प्रातः

जंगल में एक ऐसा वृक्ष जो संभव नहीं हो सकता लेकिन अज्ञान के कारण सब कुछ हो सकता है। हमारा यदि कोई मित्र है तो वह सम्यग्ज्ञान है ~~जिसके~~ द्वारा सही-सही पहचान हो सकती है और सारे संसार में यदि कोई शत्रु-वैरी-अहितकारी-भटकाने वाला है तो वह अज्ञान है। यह अज्ञान ही अपने गांव-भवन अपना नाम याद रखो ऐसा कहता है। इन सबके माध्यम से गलत [मार्ग] पता बताने वाले हैं।

पता तो बताते हैं पर सही पता नहीं बताते। अभी कहा गया - हम आपके पास आये हैं। भटक कर आये हैं या सीधे आये हैं। जो सीधे होते हैं - वे कभी भी दुःखी नहीं होते, न ही मांग रखते हैं। वे लोभी भी नहीं - निर्लोभी होते हैं। यही आत्मा की सही पहचान होती है। बाकी पहचान - पता सब गलत स्थान पर पहुँचाने वाले हैं। हमें सही स्थान पर जो पहुँचाये - शास्त्रकारों ने उसी को सम्यग्ज्ञान कहा है। जिन्हें सही दशा मिल जाती है, उनकी प्रकृति/तासीर कैसी होती है!

रत्नकरण्डश्रावकाचार में एक स्थान पर यही बताने का पुरुषार्थ किया है। बहुत गहन विषय को भी आपके सामने रखने का पुरुषार्थ है - अनात्मार्थं विना रागैः, शास्ता शास्ति सतो हितम्। ध्वनन् शिल्पिकरस्पर्शान्मुरजः किमपेक्षते ॥ 8॥

ये बहुत ही सीधी-सीधी बात कही है।

बहुत ही गहरी बात कही गयी है। वो अपने लिए कुछ नहीं बताते किन्तु सुख-शान्ति का हेतुभूत सही ज्ञान जो है उसे दूसरे को बता देते हैं। इस बताने के पीछे उनका कोई भी स्वार्थ नहीं होता। स्वार्थ छोड़कर बताते हैं। संसार के सभी कार्य स्वार्थ रखकर किये जाते हैं। जैसे- आप यहाँ आये हैं स्वार्थ रखकर। वो ही यदि महाराज को अन्यत्र (देहली से) भेज देवो तो कैसा लगेगा?

हमारे यहीं हो, यह बात ठीक नहीं। हमें भी मिल जाये औरों को भी मिल जाये ये तो फिर भी ठीक। पहले हमें मिल जाये, ये सब बातें नहीं। हाथ में जो आया है उसे कैसे छोड़ दें। ये आपका स्वार्थ है। हमारे भगवान राग के बिना - स्वार्थ के बिना जगत के बारे में सोचते हैं। ये भी बात है कि जिनका सब हित हो चुका है वे जगत से क्या चाहेंगे? महाराज हम ये लाये हैं- ये लाये हैं।

तो मैं रखूं कहाँ? अभी-अभी नाम तो नहीं जानता ब्रह्मचारी जी जैसे धोती-दुपट्टा में हमारे पास आये। बोला- महाराज हम चाँदी का तत्त्वार्थ सूत्र लाये हैं। तत्त्वार्थ सूत्र तो ठीक है लेकिन आजतक सुना ही नहीं कि चाँदी का भी तत्त्वार्थ होता है। चांदी का, सोने का, रत्नों का तत्त्वार्थ सूत्र होता है। जिसको हम रत्नों से भी बहुत ऊँचा

जानते हैं फिर इसकी क्या आवश्यकता है।

हम चाँदी तो नहीं रख सकते तत्त्वार्थसूत्र हो तो रख सकते हैं नहीं तो नहीं रख सकते। संसार में कई प्रकार के तत्त्व होते हैं, इन तत्त्वों से कोई मतलब नहीं आपको चाँदी से ही मतलब है हमें नहीं। महाराज कहीं बाहर जायें जो पास रखा है वह ले लें। तत्त्वार्थ सूत्र वह है जो अन्य तत्त्व है उसके बारे में बताता है। ये तुम्हारा नहीं है- ये तुम्हारा नहीं है।

इसीलिए अनात्मार्थं अर्थात निःस्वार्थ। सज्जनों को हित का मार्ग बताने में कोई प्रयोजन नहीं रखते। कैसे? जैसे - शिल्पी जब ढोलक या मृदंग बजाता है तो अंगुलियों के स्पर्श से बहुत ही मधुर-कर्णप्रिय आवाज निकलती है। वह ढोलक जैसे कुछ नहीं मांगती वैसे ही भगवान भी जो तीन लोक के नाथ हैं उपदेश देते हैं पर बदले में हमें ये चाहिये, ऐसा नहीं कहते हैं।

ये बात अलग है आप सोने के हैरे चढ़ा देते हैं पर उनकी दृष्टि भी उस पर नहीं जाती है। महाराज आप एक बार देख तो लो। महाराज हम देल्ही से-चाँदनी चौक से आये हैं (हंसी) फिर अन्यत्र तो सोने के चौक भी हो सकते हैं। जो इन सब से ऊपर उठ गये हैं, ऐसे भगवान के चरणों में कुछ भी चढ़ा दो, उन्हें कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। सौधर्म इन्द्र भी कहता है- मैं आपही का

हूँ, अपने आपको आपके चरणों में चढ़ाता हूँ।

भगवान कहते हैं - मैं सबसे ही अच्छा हूँ। मेरी तरह बनकर देख लो। ये जो आप लोग इकट्ठा करते हैं वो अभी तो अच्छा लगता है, बाद में अच्छा नहीं लगता। फिर अपने-अपने बच्चों के नाम से लिखकर जाते हैं। अपने ही बच्चों के नाम क्यों? दूसरों के बच्चों के नाम नहीं। आत्मार्थ है। जहाँ हमारे आ गया समझ लो बिमारी आ गयी। अब इसकी चिकित्सा देहली एम्स में भी होने वाली नहीं।

अनात्मार्थ ये ही सही रहता है। इसलिये उन्होंने मृदंग का उदाहरण दिया है। ऊँगलियाँ लगते ही आवाज़ बदले में मृदंग कुछ माँगता नहीं, भगवान उपदेश देते हैं, बदले में कुछ भी चाहते नहीं यह सबसे अधिक रहस्यपूर्ण है। दुनिया चाहती है पर भगवान कुछ नहीं चाहते। वह कहता है मेरे पास बहुत कुछ है पर भगवान उससे कहते हैं तुम्हारे पास बहुत कुछ है पर वह अधुरा है। हमारे पास पूर्ण है।

आपके पास नश्वर है, हमारे पास अविनश्वर ले लो। समोशरण में जाने के बाद भी उनसे लेने गये किन्तु देखकर लट्टू हो गये। लट्टू मतलब हक्का-बक्का रह गये। समोशरण में न ही चौखट होता है, न ही दरवाजा होता है, न ही ताला होता है तथा न ही कूंची (चाबी) होती है। बिल्कुल खुला-खुला है।

अप्भूत सा लगता है।

आप जब भी समोशरण में जायेंगे, वहां से वापस आना चाहते हैं। आप कहीं भी चले जाओ लौटने का टिकिट पल्ले लेकर आते हो। देहली वालों से पुछ लो। उनसे पुछना चाहता हूँ ये सारा वैभव छोड़कर लौटना क्यों चाहते हो? इसलिये जो इस वैभव से आकुल नहीं अपने से ही आकुल है वह मृदंग की प्रकृति को नहीं समझता है।

वह मृदंग मनोहर स्वर देकर भी बदले में कुछ नहीं चाहता है। हमारे भगवान भी बदले में कुछ नहीं चाहते हैं क्यों कि उनके पास जो है दुनिया में किसी के पास नहीं है। ऐसे अविनश्वर मौलिक धन को जो रखता है उसे किसी अन्य धन की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसे मर याद रखना, बाकी भूल भी जाये तो कोई बात नहीं। पर इसे हमेशा- हमेशा मन में जरूर याद रखना।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"गाँधी जी मुख से"

"हिंसा को नीचे झुकाने हेतु गाँधी जी अहिंसा का सहारा लेते थे। सबसे अच्छा तरीका था गाँधी जी की उपवास साधना। लोग कहते थे आपके पास कोई भी बात मनवाने का सबसे अमोघ अस्त्र है- उपवास/ अनशन शुरु कर देना। सामने वाले को नतमस्तक होना ही पड़ता था।"

27-6-18 "ईर्ष्या से कैसे बचें" प्रातः

युग के आदि में चक्रवर्ती भरत हुये। जिस प्रकार तीर्थंकर की माँ को सोलह स्वप्न पड़ते हैं उसी प्रकार चक्रवर्ती के लिए भी सोलह स्वप्न आते हैं। किन्तु ये स्वप्न तीर्थंकर के विषय में नहीं होते। भविष्य में इस अवसर्पिणी काल में क्या परिवर्तन होंगे वे चक्रवर्ती के स्वप्न से ज्ञात हो जाती है। उसमें अनेक बातें बतायी। आज उसी में से एक स्वप्न याद हो आया, वह आपके सामने रख रहा हूँ।

एक तालाब है उस तालाब में किनारे-किनारे तो पानी है पर बीच में से सूख गया है। पानी पहले किनारे का सूखता है फिर बीच का किन्तु इस स्वप्न का यही वैचित्र्य है। इसका क्या फल है? तो बताया सभी लोग आपस में व्यवहार करते रहते हैं। साधी-सनाथी के साथ कैसा व्यवहार किया जाये? साथी-सनाथी की बढ़ती उन्नति को देखकर ईर्ष्या के भाव आते हैं। बच्चों सुन रहे हो ना? [प्रतिभास्थली के बच्चे] अभी छोटे हो ईर्ष्या नहीं है।

जैसे-जैसे बड़े होवोगे तो ईर्ष्या तुम से भी आगे बढ़ती जायेगी। मैं सोचता हूँ - अवसर्पिणी काल है। बिच में पुरा पानी सूख गया। किनारे पर पहले सूखना चाहिये क्यों की वहाँ गहराई नहीं होती। उस किनारे के पानी को सूखाने के लिए ऊपर की गर्मी डबल जेठ भी कम पड़ गये। पपौरा

जी में डबल जेठ पड़ गये न ?

अनुभव हो रहा है। जो पानी शेष बचा हुआ है वह किसका प्रतीक है? वह साधर्मी के साथ ईर्ष्या भाव का प्रतीक है। सही पूछा जाये तो यदि मान लो, कमरकस कर रहेंगे इसे सुखाकर रहेंगे तो देखो कैसे नहीं सूखेगा? आप कमरकस कर दाँत तो कटकटाते रहते हैं। हमारे ईर्ष्या भाव उनके ईर्ष्या भाव से 19 नहीं 21 ही रहने चाहिए। यह गलत है। कषाय भाव को सुखाना जरूरी है ईर्ष्या को सुखाने के लिए।

स्वाध्याय तो खूब करते हो। आत्मा शुद्ध है-आत्मा शुद्ध है पर अभी तो अशुद्ध है। गहराई का पानी तो सूख जाये पर तह पर रहने वाली ईर्ष्या नहीं सूखती। हमने उस समय सोचा मोक्षमार्ग में प्रतिपल परीक्षा है। इसलिये इस परीक्षा को पास करने में एक भव भी और कई भव भी लग सकते हैं। आत्मा की स्थिति उस तालाब के किनारे लगी काई के समान है। तालाब के किनारे पर जाकर देखो।

वह काई सूखी जैसी दिखती है परन्तु थोड़ी सी वर्षा हो जाये तो पुनः हरी-भरी हो जाती है। ऊपर की चमड़ी भर सूखती है। सूखने का स्वभाव नहीं। पानी का सहयोग मिलते ही पुनः हरी-भरी हो जाती है। हम लोगों के ये ही हाल है। थोड़ी सी कषाय का योग मिला ईर्ष्या के भाव हो जाते हैं। ये पेपर सबसे ज्यादा

कठीन पेपर है।

इसमें अच्छों-अच्छों के पसीना आ जाता है। कितना भी लिखो नम्बर नहीं आते और तुम 100 में से 100 लेना चाहते हो। कितना भी करो 33 भी मिल जाये तो भी ठीक। 33 में पार तो हो गये पर अभी 67 और लगे हैं। सडसठ में सठ लगा है सत्तर में तर जाओगे। सुन रहे हो कि नहीं। हओ। हओ के अभ्यस्त हो गये हो। इतने में तो पास हो गये हो।

इससे भी अपने परिणामों के अध्ययन का अवसर मिल जाता है। कषायों का रिफलेक्शन आत्मा पर पड़ते ही भावों में अनेक प्रकार की तब्दीलियाँ आ जाती है। उसे हमेशा याद रखो। ये औदयिक भाव है। आत्मा का स्वभाव नहीं हैं। कषाय के उदय में ही ये भाव होंगे। कषाय नहीं तो भाव भी नहीं होंगे। वर्षा होगी तो काई हरी-भरी, वर्षा नहीं तो सूखी ही रहेगी। तो हम चाहें तो कषाय को क्षीण-क्षीण करते जा सकते है।

एक दिन वह पानी पुरा का पुरा सूख सकता है। कषायों को क्षीण करने के लिए एक-दूसरे से कषाय करो। इसमें आनंद लेओ। दूसरे की अपेक्षा आप कषाय को कितना क्षीण कर पाते है। यदि इसमें गति बढ़ जाये तो बहुत प्रगति होगी फिर तो उन्नति ही उन्नति होती जायेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

"मन्दिर शिलान्यास"

28-6-18 "पूर्ण करो - अधूरे काम" प्रातः 6:30

सुना था पपौरा जी में एक सौ से भी अधिक मन्दिर विद्यमान है। चौबीसी - चौबीसी कहलाकर इतने मन्दिर जो हैं उसमें आज एक और वृद्धि हुयी और आप लोगों के भावों के अनुसार यहाँ पर शिलान्यास लगभग सम्पन्न हो गया है। पूर्वजों ने यहाँ पर ऐसे उत्तुंग शिखरबद्ध मन्दिर बनवाये। जो कोई भी भारत वर्ष की यात्रा के लिए निकलता है, वह इस अतिशयक्षेत्र पर अवश्य आते हैं, और दर्शन करके अपने आपको धन्य मानते हैं।

तथा प्रभावना में अपनी सहभागिता करते हैं। आजका यह मंगल अवसर एक और जिनालय का शिलान्यास, प्रतिमास्थली की स्थापना, सहस्त्रकूट जिनालय का विशेष रूप से जो यहाँ बनने वाला है। इन सभी के साथ यहाँ महिलाओं एवं पुरुषों के लिए सार्वजनिक रूप से सहयोग की भावना के साथ, औषधालय दान की पूर्ति हेतु, वात्सल्य अंग के पालन के लिए, आत्मा एक है इस सिद्धान्त की पूर्ति वास्ते यहाँ दयोदय गौशाला में तथा क्षेत्र पर अलग-अलग हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना हुयी।

सभी ने मिलकर आगे के लिए प्रतिज्ञायें की। ऐसा तभी सम्भव है जब हम एक-दूसरे के प्रति धार्मिक भावनायें रखें। जैन धर्म की प्रभावना एक-दूसरे के वात्सल्य भाव से ही सिद्ध होती है। सोचा था

नगर में भी एक जिनालय बनना है।

हमारे यहाँ आने के उपरान्त श्री जी को लेकर आये थे। उन्हें आज कमलासन पर विराजमान करना है। हमारा भी वहाँ जाना हो रहा है। आज का यह मंगलमय वातावरण लगभग पूर्ण हो गया। अभी चातुर्मास में एक महीना शेष है और आप लोग माला फेरिये। जो भी संकल्प लिये है वे समय पर अथवा समय से पूर्व सम्पन्न हो। इन्हीं भावनाओं के साथ।

[पपौरा से नन्दीश्वर कॉलोनी आगे अहिंसा परमो धर्म की जय हुई

28-6-18 "सम्यग्दर्शन का कारण है बिम्ब स्थापना" प्रातः 9.20

आप सभी को ज्ञात है सौधर्म इन्द्र एक वर्ष में तीन बार जो अष्टाह्निका पर्व उनमें अपने परिवार के साथ नन्दीश्वर की वंदना करने हेतु जाता है। नन्दीश्वर में कोई भी व्यक्ति नहीं जा सकता है। किन्तु आप लोगो ने इस कॉलोनी का नाम ही नन्दीश्वर रखकर यहाँपर रह रहे हैं।

आप लोग भी यदि देव होते तो साक्षात नन्दीश्वर द्वीप चले जाते। वहाँ कोई भी मनुष्य नहीं जा सकता पर टीकमगढ वालो ने तो एक कॉलोनी ही बना डाली। सौधर्म इन्द्र साक्षात् नन्दीश्वर में जाकर जितने आनन्द का अनुभव करता है उससे भी ज्यादा यहाँ के भक्तो को अभी मैं देख रहा था। यहाँ श्री जी का विराजमान

करना वो भी नन्दीश्वर के साथ उत्तम कार्य है।

नगरवासी इसका लाभ लेंगे। श्री जी कमलासन पर विराजमान हैं, अभी प्रतिष्ठित नहीं हुये उससे पहले ही ऐसा लग रहा है जैसे बिल्कुल प्रतिष्ठित ही हो गये हो। मूर्ति का आकार-प्रकार, सुन्दरता, सुडौलता आदिआदि देखने से भव्यजनों के जीवन में वितरागता के प्रति अवश्य ही आकर्षण बढ़ेगा। जिनेन्द्र भगवान के परोक्ष होने से हम स्थापना निक्षेप के द्वारा ही उनकी पूजा-भक्ति करते हैं।

सभी अपनी आस्था के अनुसार बिम्ब स्थापना करते हैं तथा उसी रूप में मानकर आराधना करते हैं। वितराग जिन बिम्ब की स्थापना सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में भी हेतु बनती है। न केवल मनुष्य अपितु चिड़िया-कौवा आदि तिर्यञ्चों को भी इन बिम्बों से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है, होती है। आप भी जीवन पर्यन्त यह आराधना करते हुये अपनी श्रद्धा को मजबूत बनाये रख सकते हैं।

आज का यह मांगलिक कार्य समय पर सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा के बाद अभिषेक होता है - देखा था परन्तु यहाँ तो अभी से ही अभिषेक होता ही जा रहा है [वर्षा के कारण]। आप लोग भी खुश्के नहीं रहे सब गीले हो गये, भीतर से भी एवं बाहर से भी भीग गये हैं। अभी भगवान

बिना प्रक्षालन के ही प्रक्षालित हो गये।

एक से बढ़कर एक भगवान यहाँ हैं। भीतर से सभी एक हैं बाहर के कद में छोटे-बड़े हो सकते हैं। चाहे आदिनाथ हो या मुनिसुव्रतनाथ हो। भीतर से एक ही हैं। ऐसे ही उपसर्गजयी पार्श्वनाथ भगवान 1008 फणावाली बड़ी ही मनोज्ञ प्रतिमा भी यहाँ आने वाली है। जितना दर्शन - पूजन - अभिषेक आदि कर सको उतना ही कम है। फोकट में करते चलो जाओ।

अभी पुण्यार्जक जिन भी लोगों ने लिखा उनके कारण आप सभी को लिए यह मिल रहा है। सामूहिक पुण्य के उदय में ही ऐसा होता है। आप लोग जितना लूट सको उतना लूट लो और अपने जीवन को धन्य बना लो। इन्हीं भावों के साथ, इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

शान्ति विहार - रामपुरा

संस्मरण - "आचार्य श्री के साथ ही दीक्षा के दिन से आज तक शौच क्रिया हेतु जाता हूँ। पपौरा जी में शौच उपरान्त जैनेतर बड़ी संख्या में दर्शन हेतु आते थे। उन्हें आचार्यश्री पर प्रगाढ़ श्रद्धान था। जैन हो तो नहीं हो, ऐसा गाढ़ (अटूट) श्रद्धान गुरुजी पर था। एक महिला को ऊपरी बाधा (देव) थी। गुरुजी के एक बार के दर्शन मात्र से वह बिमारी हमेशा के लिए ठीक हो गयी। पूरे लोग यही मानते थे कि हमारे इते भगवान आये हैं।"

दिगौड़ा

29-6-18 "सच्चा धर्म है सात्विक भाव" प्रातः

पहले भी इस दिगौड़ा ग्राम में लगभग 35-40 वर्ष पूर्व कई बार आना हुआ। आज यह पुनः योग प्राप्त हुआ है। शायद उस समय सर्दी का समय था। जब सूखा पड़ता है उस समय पानी का अभाव हो जाता है। पशु-पक्षी आदि जंगल में इधर-उधर भटकने लग जाते हैं। मनुष्य तो किसी भी प्रकार से प्रबन्ध कर लेता है पर जानवरों को सुदूर जाने पर भी पानी की उपलब्धि नहीं हो पाती है।

कल हमारा विहार पपौरा क्षेत्र से हुआ। उससे पहले गर्मी तेज थी पर जैसे ही टीकमगढ़ के लिए विहार प्रारम्भ हुआ पानी (वर्षा) भी प्रारम्भ हो गया। फिर मध्याह्न में टीकमगढ़ से भी विहार हो गया। दिगौड़ा का तो नाम भी नहीं था पर यहाँ के लोगों का पुण्य संचय पहुँच गया। मध्याह्न में भी खूब पानी बरसा, सभी भीग गये फिर भी प्रसन्न थे। यह वर्षा स्वार्थ की नहीं परमार्थ हेतु हो तो पार नहीं।

पानी [वर्षा] के बिना जो चाहते हैं, वह नहीं कर सकते। किसान रात-दिन यही सोचता रहता है सभी लोगों के लिए पैदावार होना आवश्यक है। मैं तो श्रम के लिए तैयार हूँ। सभी किसानों ने भाषा भाषी तो एक भी हुयी। आज क्या रखा है है- क्यों रखा रहे हैं कुछ नहीं बस रखा रहे हैं। धार्मिक भाव का व्यक्ति ऐसा नहीं करता। आप दुकान तो खोल लो, देखो ग्राहक तो आया नहीं चलो सो जाओ, तो

क्या होगा। लूट जाओगे।

किसान कभी भी सोता ही नहीं। हमेशा दोनों तरफ खेत में ध्यान रखता है उस क्षेत्र को बैठकर साफ करता रहता है। किसान चुप में भी खेतों में हल आदि चलाकर साफ तैयार किये हुये हैं। ताकि ऊपर का पानी इधर-उधर न जाये, वहीं खेत में भीतर तक पहुँच जाये। उसकी यह उज्जवल भावना रहती है कि सबको परोसकर मैं खाऊँ और आप लोग खाते ही रहते हैं। यह प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अतिथी को पहले खिलावे फिर बाद में स्वयं खायें।

उस किसान के यहाँ भी फसल आती है पहले जानवर-पक्षी आदि अपना हिस्सा ले लेते हैं फिर दूसरों को वितरित करके उतना ही रखता है जितना आवश्यक है। ये धार्मिक भाव है। मात्र क्षी जी के पास ठाकुरजी को सिर झुकाना ही धर्म नहीं। राजस्थान में ठाकुर जी भगवान को बोलते है। वे तो ठाकुरों के भी ठाकुर होते हैं। उनको पूजना मात्र ही धर्म नहीं। धर्म तो जो होनहार होते है, सात्विक भाव हो, परोपकार भाव हो, दूसरों के कष्ट कैसे दूर हो ये धार्मिक भाव है।

सात्विक भाव रखने वाला जीवात्मा ही एक दिन भगवान बनने की क्षमता रखता है। जैसे- नागरिक को राजा बनने की क्षमता होती है, वैसे ही प्रत्येक जीवात्मा के पास सात्विक भाव [जो मोह को क्षीण करें ऐसे भाव] है तो वह उम्मीदवार के रूप में भगवान है। ज्ञानीजनों से मेरा कहना है आप जो कर रहें

हैं उससे भी आगे के भाव आप कर सकते हैं।
विज्ञान उन भावों को नहीं दे सकती। नयी पीढ़ी को धार्मिक भाव क्या होते हैं ये आप ग्रामीण ही दे सकते हैं। विज्ञान वर्षा नहीं कर सकती। धार्मिक भाव हो तो ऊपर से पानी गिर जाता है। पानी बरसते ही किसान की आँखो से भी उज्जवल पानी आ जाता है। कड़ी मेहनत करता है और 3-4 महिने में अच्छी फसल आ जाती है। जीवन के अन्तिम क्षणों तक इन भावों को करता है।
पानी नहीं भी आता तो जो भी कर्ता है ऊपर वाले पर ही डाल देता है। अपने ऊपर नहीं लेता, ऊपर वाले को ऐसा ही करना था। और आप कुछ भी नहीं करते फिर भी अपने ऊपर लेते रहते हो। किसानों की भांति आप सब के भी इसी तरह के भाव बने रहें इसी भावना के साथ आज का यह छोटा सा वक्तव्य है।
रात्रि विश्राम - बम्होरी अहिंसा परमो धर्म की जय।

"कर्तव्य दीक्षा"

पपौरा जी अतिशय क्षेत्र में आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के समाधी दिवस पर लगभग पहले 10 फिर 6 इसतरह 16 बहनों के प्रतिभामण्डल में वस्त्र परिवर्तन हुये। एक से एक लौकिक शिक्षा उत्तीर्ण ये बहनें मोक्षमार्ग में आगे आयी (आजीवन बालब्रह्मचारी रहकर शिक्षा के साथ संस्कारो का वपन करेंगी (इसे "कर्तव्य दीक्षा" का नाम दिया।

अतिशय क्षेत्र बंधा जी

30-6-18 "जगह की बात नहीं - वीतरागता में" प्रातः

[आज विश्व - ।. तिथि अनुसार आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज का दीक्षा दिवस एवं तरीख अनुसार आ० श्री का दीक्षा दिवस ड० वर्ष में पहली बार मनाना श. बागड (राज०) के ४० गांवों से लगभग 1300 से अधिक लोगों का आना उ. विद्यासागर फण्ड से 12 लाख की राशी का विद्यासागर द्वारा बनाना प. बंधा जी अतिशय क्षेत्र जिससे 40 गांव जुड़े हैं आ० श्री का प्रथम बार आगमन ड. सहस्त्रकूट जिनालय की घोषणा 6. मूलनायक 1008 अजितनाथ भगवान का 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक]

प्रवचन

अभी तो हम आये हैं इससे पहले ही आप लोगों ने योजना बना ली, ऐसा तो मैं नहीं कह सकता। जब हम पपौरा जी में थे तभी आप लोगों की भावनायें हमारे कानों तक पहुँच गयी थी। उससे पूर्व भी आपकी भावनायें हमने सुनी। मैं अपने मुख से घोषणा करना उचित नहीं समझता किन्तु इतने आगे पहुँच गये हैं 700-800 प्रतिमा तो हो ही गयी तो अब रहा ही कितना। इस निमित्त को लेकर यदि आपकी भावना है तो --।

कोई भी कार्य करते हैं तो सोच विचार कर करना चाहिए, भविष्य के बारे में भी सोचना चाहिये, परिसर के बारे में भी सोचना चाहिये। जैसे अभी अहमदाबाद महोदय बोल रहे थे, बड़े-बड़े क्षेत्रों पर तो चातुर्मास होते ही हैं, इस बार इस छोटे से क्षेत्र पर चातुर्मास हो जाये। मैं कहना

चाहता हूँ कि,

ऋषभनाथ भगवान का समोशरण 12 योजन का था फिर आधा-आधा योजन घटते-घटते महावीर भगवान का समोशरण एक योजन मात्र रह गया। इस हिसाब से तो आदिनाथ का समोशरण बड़ा क्षेत्र तथा महावीर के समोशरण को छोटा क्षेत्र मान लो किन्तु ऐसा नहीं है। जितना आदिनाथ का समोशरण भरा था उतना ही महावीर भगवान का समोशरण भरा था। 12 को वे सम्पूर्ण भरे थे।

आदिनाथ भगवान ने भी गणधर को प्रेरणा देकर द्वादशांग की रचना की तो भगवान महावीर स्वामी ने भी गौतम गणधर को द्वादशांग की प्रेरणा दी। दिव्यध्वनि की अपेक्षा भी कोई अन्तर नहीं। 12 सभाओं में देव गण, तिर्यञ्च, चक्रवर्ती आदि-आदि सभी विद्यमान थे, किसी को भी जगह की कमी नहीं पड़ी थी। "वितरागता रहती है तो जगह की तो बात ही नहीं होती।" केवल उस वीतरागता के लिए दिल में जगह होनी चाहिये।

एक गाँव से आते हैं तो बात अलग यहाँ तो 40-50 गाँव हैं। ये तो जनपद के चुनाव जैसी बात है। उम्मीदवार इतने हैं अभी हम समझ ही नहीं पा रहे हैं। आप इस शुभ दिन पर घोषणा करना चाहते हैं। अभी जगह (स्थान) की मैं नहीं कहता, हाँ संख्या की यदि पूर्ति करना है तो उसे भी कर लो। मैं तो यहाँ आकर बैठ

ही गया है। जगह की बात बाद में कर लेंगे।

जब 750 तक की संख्या पहुँच गयी है तो अब शेष के लिए एक महिने की क्या बात एक ही दिन में पूर्ति हो सकती है। एक दिन भी क्या एक ही दानदाता द्वारा हो सकता है। इसलिये मेरे मुख से घोषणा (सहस्त्रकूट जिनालय) करवाना चाहते हो तो अभी जगह की बात छोड़ शेष देख लो। अभी तो हम भगवान के पास भी नहीं पहुँचे हैं; बीच में ही यह कार्यक्रम हो गया। भगवान भी सोच रहे होंगे कि वहीं वायदा कर लो तो क्या होगा, हम वायदा करते ही नहीं।

वायदा तो आप लोग का काम है। (वायदा व्यापार पर व्यंग्य)। अपनी दृष्टि - आस्था को और - और पवित्र बनाना चाहते हो तो इस क्षेत्र के लोगों की तरह जहाँ 40 गाँव जुड़े हैं। प्रतिदिन 1-2-3 विधान मतलब वर्ष में 900 विधान होते हैं। सोचो इतने विधानों का क्या फल होता है। यहाँ पर विधायक जी बैठे हैं वे भी जानते हैं कि विधान का संविधान कितना तगड़ा होता होगा?

फिर हमारा क्या है? सुनते हैं यहाँ कोई आ जाता है तो वापस जाता नहीं हैं। आपसे ही सुना था इसलिए आपके सामने रख दी है। क्यों सही बात है न? (हँसी) शेष जो रह गयी है उन्हें पूर्ण करवाना चाहते है तो कर लो।

Break के बाद -

IInd

अभी एक मंगलाचरण हुआ था, वे मध्यम मंगलाचरण है तथा मध्याह्न में एक और मंगलाचरण होवेगा। कैसा लग रहा है बताओ। अच्छा लग रहा है? अभी पूजन में लीन होते-होते भक्ति में इतने झूमने लगे मानो देवता आ गई हो। वे वैक्रियक शरीर होते हुये भी थकते हैं पर ये तो थकते ही नहीं, रुकते ही नहीं। अभी ये तो प्रातःकालीन समय है। और भी गाडियाँ, और भी देवतागण यहाँ उतरेंगे।

आज का यह माहौल पपौराजी से कम तो नहीं है। जिला वही, संभाग भी वही और समाज भी वही है। श्रोता भी जो वहाँ सुन रहे थे। इसी प्रकार 108 प्रतिमा नन्दीश्वर द्वीप की तरफ से पपौरा में तो की ही है यहाँ पर भी की है। यहाँ पर भी वे ही सदस्य है जो वहाँ पर है चाहे भाजपा हो या कांग्रेस वे ही सदस्य है। सिद्धान्त के पक्के होना चाहिये कोई भी पक्ष कमजोर नही रहना चाहिये।

आप यदि सिद्धान्त के पक्के होंगे तो अहिंसा का यह झण्डा कभी झुक नहीं सकेगा। ये अहिंसा का झण्डा भारत को अहिंसा का मार्ग दिखाने वाला है। अहिंसा का मार्ग दीर्घशान्ति मार्ग है। यहाँ की जनता निष्ठावान है नींद के झोंके में भी हाथ भले ही झुक सकता है पर झण्डा नहीं झुक सकता। इस प्रतिज्ञा से यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति बंधा है। आपको कितनी खुशी होती है, बताओ? उससे कई गुना हमको होती है। अहिंसा परमो धर्म की जय। नुं

"महामस्तकाभिषेक"

३०-6-18 "अनमोल एवं अतुलनीय है वीतरागता" मध्याह्न टीकमगढ़ से हम राजस्थान की ओर गये थे। पपौरा जी में चातुर्मास/वाचना के उपरान्त की बात है और जब राजस्थान से यहाँ तो फिरोजाबाद इत्यादि में चातुर्मास करके लौटे। झांसी होकर लौटे तो उस समय भी यहीं से होकर गुजरे थे। पुरी बात तो सुनो। पर बाबा ने दर्शन नहीं दिये। एक-आध व्यक्ति ने कहा भी था, महाराज इतै बंधा जी क्षेत्र है किन्तु 7-8 किमी: अन्दर आना था, नहीं आ पाये। क्यों कि सामने पपौरा जी है। 2-3 बार महरौनी तक भी आये तब भी यहाँ पर आना नहीं हुआ।

क्यों नहीं हुआ पता नहीं। बाद में सुना। यहाँ के लोग बड़े बाबा इत्यादि कई बार आकर बताये महाराज ये बुन्देलखण्ड का भी बुन्देलखण्ड है। कोई न कोई संघ है तो हम भेज भी देते थे। बाद में याद आया कि यह वही बंधा जी है, हम दर्शन नहीं कर पाये थे। झांसी और बबीना के बीच पवा जी क्षेत्र पड़ता है। देखो - वहाँ की तालियाँ बज गयी (आ गयी) नीचे जाकर भौंरा में दर्शन हैं हम वहाँ भी जाकर दर्शन किये।

पपौरा जी में भी नीचे जाकर भौंरा में दर्शन हैं। पर बंधा जी के भगवान अलग ही भक्तों द्वारा इनकी पहचान दूर-दूर तक सुनी है। मुख्य रूप से चालीस गाँव इस क्षेत्र से बंधे हैं इसलिए इस क्षेत्र का नाम बंधा जी पड़ गया। हमारा ऐसा विचार है। बंधा जी चालीसा बन जायेगा।

भक्तो का वेष है।

सुबह से अन्तराय कर्म तेज था। आप लोगो ने वहीं बैठा दिया। चर्या भी वहीं पर हुयी। यहाँ आये तो सब लोग रुक्चारुक्च भरे थे। वहाँ पर दर्शन है पर जायें कैसे? पहले तो बोल देते है- आपके पैरो को नहीं छुयेंगे फिर बाद में छूकर ही रहेंगे। सुबह से दर्शन नहीं हुआ था। अभी सभी इधर बैठे थे, हमने सोचा मौका है - जाकर दर्शन किये। चाँदखेड़ी आदि में भी दर्शन किये किन्तु यहाँ पर भी भगवान का अपना तेवर है - तेवर मतलब अलग पहचान है।

वहाँ चौकी लगी हुयी थी उस पर चढ़कर पास से दर्शन करने की इच्छा हुयी। ऐसा लगा जैसे मानो साक्षात् जीवित भगवान् है। एक मूर्ति होती है एक बोलती हुयी मूर्ति होती है। अनेक स्थानों पर कलाकार को जीवंत भगवान बनाने का क्षोय चला जाता है। जो बनवाता है उसके क्या परिणाम रहे हो ये हम नहीं कह सकते। आज हर चीज मूल्य पर आधारित हो गयी।

हम कुण्डलपुर में बैठे थे, उस समय पुरातत्व वाले भी थे। वे लोग वहाँ के मन्दिरों का सर्वे कर रहे थे। कितने मन्दिर है? मन्दिर में कितनी वेदी है? वेदी में कितने भगवान है? यहाँ तक तो कोई बात नहीं लेकिन जब भगवान को तोलने की बात आती है तो कमेटी वालों

ने आकर हमसे पुछा।

हमने कहा- बाकी सब बात ठीक है पर जहाँ तक वजन करने की बात है तो हमारे भगवान तौलने में नहीं आते हैं। हमारे भगवान का मूल्य तो अनमोल है अनमोल। उनको हम किसी भी नाप दंड से स्वीकार नहीं कर सकते हाँ उनकी वीतराग मुद्रा से हम मोल से अनमोल की दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। उनसे कह दो आप भगवान को हाथ नहीं लगा सकते, तौल नहीं सकते।

सोने को तराजु में रखकर तौला जा सकता है किन्तु भगवान को तराजु में बैठा नहीं सकते। फिर भी कलाकृति की दृष्टि से जब हम देखते हैं तो कलाकार की उस कला को, मुख मुद्रा के माध्यम से, दोनों आँखो के माध्यम से लगता है बस मेरी ही ओर देख रहें हैं। बहुत दिनों बाद एक दोहा याद आ गया- "किस-किस को रवि देखता, पुछे जग के लोग। जब-जब देखे देखता, रवि तो मेरी ओर॥" रवि अथवा चन्द्र को कहीं से भी देखो ऐसा लगता है बस हमें ही देख रहा है। चाहे कलकत्ता से देखो चाहे मुम्बई, देहली, मद्रास से देखो, चाहे दुबई से देखो अथवा सिंगापुर से देखो। कहीं पर भी जाकर देखो सूर्य तो आपकी ही ओर देखते रहते हैं। इसी तरह भगवान की मुख मुद्रा देखने पर लगता है बस मेरी ही ओर देख रहे हैं। चाहे सेठ आ जाये अथवा रंक आ

जाये समान दृष्टि से देखते हैं।

आज अध्यक्ष साहब ने कहा कि बड़े-बड़े क्षेत्रों पर तो चातुर्मास होते ही हैं इस छोटे से क्षेत्र पर इस बार चातुर्मास होना चाहिये। तो ऐसा कोई नियम नहीं होना चाहिये। तो नियम किसने बनाया? नियम आपने बनाया/आप ही बोली बोलते हैं, हम बोलते हैं तो आपकी बोलती बंद हो जाती है। बोली भी व्यवस्था बनाने हेतु की जाती है। जब पहले हम करें-पहले हम करें की होड़ लगती है तो ऐसा हो जाता है।

मान लो जिसके पास द्रव्य नहीं है तो क्या वह नहीं जा सकता क्या? वह कहता है आप पहले करलो हम तो बाद में करेंगे और भगवान से बोलकर ही आयेंगे। आप बोली लेकर आये है तभी तो बागड़ से नारियल भी छोटा नहीं बड़ा लेकर आये हैं, एक बार महाराज आ तो जाये, भावना है किन्तु पहले ही सारे संघ के चातुर्मास तो हो गये (खुब दिया है। हमने भोजन में कोई दरिद्रता नहीं रखी। आप लोग भी कमल नहीं तो कमल की पांखुड़ी ही सही मानकर आये है। क्यों, ठीक है न?

उन्होंने ही भेजा होगा। समता सागर जी वहाँ पर बैठे ही हैं। कहीं विहार हो जायेगा तो क्या करोगे? तो नीचे (भौंहरा में) जाकर दर्शन किये, देखा जीवित भगवान बैठे हैं (एक बाहुबली की प्रतिमा जीवित लगती है और बोलती रहती है। आपने कभी

सुना है उनकी वाणी को।

आप तो खोली बोलते हैं, उनके शब्द कैसे सुन पायेंगे। मात्र शब्द से ही समझ में आये ऐसा है ही नहीं। बिना बोली भी भाव समझ में आ जाता है। "वीतराग मुद्रा से जो भाव निःसृत होते हैं, उन्हें राग मय शब्दों से वर्णन नहीं कर सकते हैं।" ऐसा स्थापना निक्षेप में होता है। शरीर का जैसा आकार होता है उसे ही प्रतिमा का रूप दिया जाता है तभी हम कहते है ये वे ही पार्श्वनाथ भगवान हैं, वे ही आदिनाथ अथवा महावीर भगवान है।

स्थापना निक्षेप की अपेक्षा ऐसा होता है। बुद्धया एव्मा इस प्रकार के भाव होते हैं। वीतराग मुद्रा को ज्यों ही देखते हैं हमारे हाथ स्वयमेव ही जुड़ जाते हैं। जिनवाणी हाथ में लेते ही "सावधान" बोलते हैं, सभी सावधान हो जाते हैं। इसी प्रकार स्थापना निक्षेप से जब भगवान सामने होते हैं तो अपने आप ही नाचने लग जाते हैं। अन्य सब कार्य बंद करके केवल भक्ति में ही लीन हो जाते हैं। और इन्ही परिणामों से सम्यक्दर्शन आदि हो सकते हैं।

आपको इस अवस्था में सम्यग्दर्शन होगा तो पंचम गुणस्थान तक के ही परिणाम किन्तु हमें होतो एक सात सप्तम गुणस्थान तक हो सकता है, अप्रमत को छु सकते हैं। किन्तु क्षयोपशम सम्यग्दर्शन ही होगा क्यों कि इस स्थापना निक्षेप के पास क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न करने की क्षमता नहीं

होती (वहाँ भाव निक्षेप नहीं हैं।

इसके लिए साक्षात् तीर्थंकर भगवान केवली - श्रुतकेवली का सान्निध्य आवश्यक है। उस समय चाहे आप अविरत हो या और अन्य किसी भी अवस्था में हो क्षायिक सम्यग्दर्शन भी हो सकता है। क्षायिक का मतलब एक बार टिकिट मिल गया तो बस मिल गया। फिर तो 2-3 भव में मुक्ति निश्चित है। हम अनादि से भटकते आ रहे हैं आज तक जीवन में ऐसा योग नहीं मिला। वीतरागता की प्राप्ति हेतु भी वीतरागी के योग की आवश्यकता होती है।

तभी जाकर हमें उस शाश्वत पद की प्राप्ति होती है। इसलिये वीतराग मुद्रा के पास जाकर कोई बातचीत नहीं / कुछ नहीं बोलो। बस देखते रहो। दर्शन के समय भाव शुद्ध हो (शुद्ध भावों से शुद्ध तरंगे उत्पन्न होती हैं। मन्दिर जी में कभी अशुद्ध भाव लेकर आना नहीं। दीन-हीन भाव लेकर नहीं आना- रोते हुये नहीं आना। हाँ, रोते हुये आये तो इस तरह से हे भगवन्! मेरे पास सब कुछ है पर ये सब "मिट्टी की विट्टी" है।

मतलब महाराज ये तो पीली मिट्टी हैं। ऐसा लगता है कि ये मिट्टी बहुत महंगी है. क्यों कि उसके पास नहीं है, मेरे पास है। जिसके पास है उससे आप बराबरी नहीं करते। देवों में नीचे ही तारतम्य है, ऊपर 16 स्वर्ग बाद सबके सब अहमिन्द्र हैं। कोई भी किसी के

Order में नहीं रह सकता।

अनमोल है तो मात्र वीतरागता है। यह चैतन्य है, जड़ नहीं है। अर्थात ये भगवान चेतनमय है मतलब उससे भरपूर है। उनका कहना ही क्या, हम दरिद्र के समान हैं। वहाँ अविनश्वर है, हमारे पास तो कौड़ी भी नहीं है। फिर जो उनके पास है उसे चुराते क्यों नहीं? ताला लगा है क्या? नहीं ताला भी नहीं लगा चुरा नहीं सकते/लेकर भाग नहीं सकते। आप मात्र जड़ को ही लेकर भागते हैं। चेतन को लेकर भाग नहीं सकते।

वे वीतरागी है, हम रागी है। पर राग हमारा स्वभाव नहीं हैं। इस प्रकार का चिंतन, इस प्रकार का विषय अद्वितीय है। इसलिये भले ही स्थापना निक्षेप से ही क्यों न हो उनके साथ जो भी क्षण गुजरते है वे अनमोल क्षण समझो। साक्षात् समोशरण में प्रभु का दर्शन करोगे तो मालुम चलेगा, कहाँ दर-दर भटकता रहा। आज तक बाहरी चमक को ही मैं सब कुछ मानता रहा। वहाँ उन प्रभु को छु भी नहीं सकते।

और आप थोड़ी सी चमक जैसी कोई वस्तु दिख भी जाये तो फिर देखो। तुरंत झुक जाते हो बोलो ऐसा होता है या नहीं? ले लेते हो। ये तो तीनलोक के नाथ है फिर कहना ही क्या इनकी चमक का।

आप लोग बहुत देर से प्रतीक्षित है। शांति से बैठे हैं। पात्रों का चयन तो हो ही चुका है। गर्मी

तो नहीं लग रही है? ये तो जड़ की पर्याय है, चेतन की बात नहीं। दृष्टि को अन्दर में फेर लेते हैं तो ये सब जड़ की परिणति दिखती है। रूप रस गंध स्पर्श में शर्मी भी स्पर्श की पर्याय है।

जीनवाणी के माध्यम से यह भाव दूर करने में मदद मिलती है। ज्यादा तो नहीं कहना चाहता। आज का यह शुभ दिन - सुबह भी हुआ था। हमने तीन मंगलाचरण सुने थे यहाँ तीनों हो गये - आदि मंगल, मध्यम मंगल और अन्त मंगल। पहले हमने तीन महाराज को भी यहाँ भेजा था। उनसे कहा था अब गांव-गांव मत लगो जहाँ बहुत से गांव लगे हैं वहाँ जाओ। बहुत अच्छा चातुर्मास सम्पन्न हुआ था (२०१२में) ऐसा सुना है।

वो भी (तीनो महाराज) बहुत सालो बाद आज ही मिले हैं। ऐसा है ही नहीं जब भी चातुर्मास अथवा विशेष कार्यक्रम होता है इनकी भावना एक ही व्यक्त होती थी बस आपके दर्शन हो जाये फिर भी आपकी जो आज्ञा हो विशेषार्य हैं। इन्होंने बोला भी मैं किया तब तो ऐसा वातावरण बना। देखो वो भगवान तो भगवान है। ये बोलते भी है और ज्यादा हो तो कान भी पकड़ते हैं। जो होनहार नटखट छोटे बच्चे होते हैं, उनको कैसा करते हो? रोना आता है तो अच्छा मानते हैं।

डाक्टरों का भी कहना है जब बच्चा जन्म लेता है तो रोना आवश्यक है। इसलिये हंसी मजाक तो कम हो, रोना

ज्यादा होता है तो शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है।

सुन रहे हो कि नहीं [हओ] अतः अब मत कहना कि महाराज इतना मत रुलाओ। रोने से जान आ जाती है। जितना दुख का अनुभव होगा सो नहीं सकोगे। इसलिये आचार्यों ने 22 परिषह एवं चार उपसर्ग रखे। मोक्षमार्ग में इन्हें सहन करना अनिवार्य है। जो इन 22 परिषह एवं 4 उपसर्ग को सहन करने का अभ्यासी होता है वही मोक्षमार्ग में आरूढ़ हो सकता है अन्यथा चातुर्मास कराते रहो क्या होगा?

बागड़ वालो! चातुर्मास मांगने आये हो बोलो क्या दोगे? साथ हो जाओ। बागड़ में अभी बहुत कम सदस्य बने हैं। अभी बोलने दो। ये लोग राजस्थान से आये हैं। राजस्थान से तो मैं भी आया हूँ। राज. से मैं इसलिये आया हूँ कि गुरुजी की आज्ञा थी वहाँ अपनी दुकान लगाना, जहाँ अच्छी चले। अब बोलो आगे क्या कहना है। सब जगह माल को भेजा जा सके। वहाँ रहते तो ऐसा होता क्या? [मंच पर बैठे मुनिराजों की ओर इशारा]

शोरूम तो देखो यहाँ, कई प्रकार के हैं। आप लोगों के यहाँ है क्या ऐसे शोरूम। दूर बैठो-हाथ नहीं लगा सकते। इसप्रकार गुरुजी की आज्ञा का पालन किया, जिन्होंने वृद्धावस्था में भी रात-दिन एक करके हमें सब बातें बतायी। जो आज आपको नजर आ रही है। इसलिये हम राजस्थान से यहाँ आये हैं। आप लोग भी तो दुकान अच्छी चले ये चाहते हो कि नहीं? तभी तो

दुबई गये।

क्यों गये? महाराज यहाँ दुकानें ज्यादा होगयी, माल बिक नहीं रहा था वहाँ एक सैकण्ड भी नहीं लगता। बस हमारा भी ऐसा ही है एक सैकण्ड भी नहीं सब माल साफ हो जाता है सब काम हो जाता है। तो जीवित अवस्था की मूर्तियाँ भी मिलती है जिनमें पूरी वीतरागता भर दी जाती है।

उन भगवान की प्रतिमा के दर्शन मात्र से अनंतकालिन सब क्लुषता धुल जाती है। हमें भी कुछ ही क्षिनों में वह सौभाग्य प्राप्त हो। उस अविनश्वर-अजर-अमर आत्म तत्त्व की उपलब्धि हो इन्हीं भावों के साथ अभी आगे का और कार्यक्रम भी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

कुछ हटके....

"आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र के अनेको सूत्र पर गुरुजी ने अपना अलग चिंतन दिया जिस पर आजतक किसी भी विद्वान का ध्यान नहीं गया। ऐसे ही तीर्थंकर प्रकृति के बंध की कारण सोलहकारण भावना में अरहंत भक्ति भावना आती है। अरहंत से यहाँ अर्थ चार घातिया कर्म के नाश से जो जिन बनते है उनसे नहीं लेना अरहंत का मतलब तीर्थंकर भगवान जिनके पंचकल्याणक होते है उनसे लेना है।"

"केशलोंच"

1-7-18 "जलो और जलाओ नहीं, जिलाओ" प्रातः

आज मध्याह्न में रविवार है प्रातः मैं नहीं फिर भी आप लोग आकर के बैठ गये हो तो हम कुछ सुनाना चाहते हैं। परिणामों की परिणति बड़ी अद्भुत है। आप धर्म की बात सुनना चाहते हो तो उस अद्भुत बात से वंचित न रहिये। सब कुछ चाहते हैं तो धर्म की बात से वंचित क्यों? परिणाम अच्छा तो सफल मानते हैं और परिणाम खराब तो फेल।

विद्यार्थी एक वर्ष तक अच्छे भाव करता है क्यों? परिणाम अच्छा मिलें। आप लोगों को यह दुर्लभ जीवन मिला है इसलिए सदैव अच्छे परिणाम करने चाहिये। आपको ज्ञात होगा आग्नि जलती नहीं है जलाती है। स्वयं जलती क्यों नहीं और किसको जलाती है? जो स्वयं ज्वलनशील है वह दूसरों को तभी जला सकता है जिसको ईंधन बोलते हैं। ईंधन न हो तो तीन काल में आग्नि जला नहीं सकती और जल सकती नहीं।

"हम अपने ही परिणामों के द्वारा स्वयं जल सकते हैं और अपने ही परिणामों द्वारा उस आग को बुझा भी सकते है।" जलाना चाहते हो तो खूब कषाय करो और यदि बचना चाहते हो तो ठण्डे हो जाओ। ठण्डे हो जाओगे तो जलने का अवसर ही प्राप्त नहीं होगा। "जब आप स्वयं जल रहे हो, जला रहे हो फिर जिलाने की तो बात ही समाप्त हो जाती है।" जिलाना और

जलाना दोनों में बहुत अन्तर है।

एक में जीवन है तो दूसरे में जीवन का नाश। अग्नि जलाती है कब? जब ईंधन मिलता है। लेकिन ईंधन मिलने पर भी जलाये ही यह कोई नियम नहीं है। सुन रहे हो? [हम्मो] समझे? नहीं समझे तो ढंग से समझो। अग्नि जलाती है ईंधन को परन्तु ईंधन होनेपर भी जलाये यह नियम नहीं। सभी कहते हैं अग्नि जलादेगी - अग्नि जला देगी। आमतौर से यही कहा जाता है। आमतौर मतलब तमाम, सभी आ जाते हैं तथा आमतौर मतलब विशेष बात भी सुनना चाहिये।

तो अग्नि कैसे नहीं जला सकती है? यदि अग्नि को कीलित कर दी जावे तो वह नहीं जला सकती। कीलित का अर्थ है यदि उसे जेब में बंद कर दिया जावे तो वह जलाने में असमर्थ हो जायेगी। भावों के द्वारा उस अग्नि को जलाने से हम रोक सकते हैं, यही मोक्षमार्ग है। कई शीलवती महिला अथवा सच्चे धर्मात्मा पुरुष ऐसे काम करके चले गये। उन्हें अग्नि जला नहीं पायी।

बाल्कि भीतर की उस अग्नि से सारे कर्म भस्मीभूत हो गये। जब बाहर की अग्नि समाप्त हो जाती है तो भीतर के कर्मों का काम तमाम कर दिया जाता है।" इसे याद रखना चाहिये। मंत्रों के द्वारा भी हम अपने भावों को तथा दूसरों को जलाने से बचा सकते हैं। ये कार्य बाहरी शक्ति से नहीं अपितु भीतरी शक्ति से

किया जा सकता है।

क्या आपने पुराणों को नहीं पढ़ा? क्या हम ऐसे भाव नहीं कर सकते? कर सकते हैं। यदि जीवन में दोषों को खत्म कर दें। दोष नहीं करो तो समस्त दोषों को खत्म किया जा सकता है। सब दोषों को खाक किया जा सकता है। खाक का मतलब जलाकर राख कर सकते हैं। राख हो जाने पर अब उसे आग से भी नहीं जलाया जा सकता उसमें ईंधनत्व समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार हम मोह को भी समाप्त कर सकते हैं।

ऐसे ही मंत्र के माध्यम से मोह को राख कर सकते हैं। मात्र बाहरी वस्तु को ही जलाकर समाप्त नहीं, भीतरी कर्मों को भी जलाकर समाप्त कर सकते हैं। मोक्षमार्ग में दूसरों को जिताने की विधी बतायी। इससे पूर्व हम अपने परिणामों से पहले हम अपने आप को जलालेते हैं। खून समाप्त हो जाता है। शक्तियाँ क्षीण हो जाती है, लुट जाते हैं, घट जाते हैं, अपने ही परिणामों से पिट जाते हैं। क्या अनर्थ नहीं करते, पुरा अनर्थ कर लेते हैं।

इसलिए अपने परिणामों को शांत करने का सदैव पुरुषार्थ करना चाहिये। ताली मत बजाओ। आपके ताली बजाने से भी शांति भंग होती है। "हमारे यहाँ भक्ति की शक्ति का प्रदर्शन नहीं कहा है।" बस ज्यादा नहीं (ताली) अभी ताल ठोकने की बात आयी थी। वो पुलिस में है इसलिये ठोकने की ही बात करते हैं। जितनी शान्ति से बैठेंगे उतना ही

आनन्द आयेगा।

जैनी लोग हा-हौल्ला बहुत करते हैं। अब इस धारणा को मिटाना है। बच्चे आपसे पहले शांत हो जाते है। आप यदि भगवान की भांति शान्त बैठ जाते हैं तो वो भी बैठ जायेंगे। इससे आप प्रयोग करना सीख जायेंगे। "प्रयोग के अभाव में इष्ट की प्राप्ति नहीं हो सकती।" पहले जिलाने का भाव करो। यह तब जब जलाने का भाव समाप्त करोगे।

आप शान्तिपूर्वक बैठें हो तो हमने अपनी बात सुनायी। मध्याह्न में भी शांति के साथ बैठोगे तो सुनायेंगे। क्यों की नंगाड़ो की आवाज में हमारी बांसुरी कौन सुनेगा। बात समझ में आयी? मतलब ये है कि नंगाड़ो की आवाज में भी बांसुरी की आवाज सुन सकते हैं, सुनायी जा सकती है। देखो! आप स्टेशन पर होते हैं वहाँ पर कितना हा-हौल्ला होता है फिर भी यदि मोबाइल बजे तो पता चल जाता है, इतना ही नहीं सामने वाले से पूरी बात हो जाती है।

क्यों कि दोनों एक साथ (तन्मय) हो जाते हैं। दुनिया को भूल जाते हैं। इसी प्रकार दुनिया को भूल जाओ तभी शांति मिलेगी। सभी को शांति मिले इन्हीं भावों से।

अहिंसा परमो धर्मकी जय। नँ

"राग के आगे विद्यासागर अथवा वीतराग का वी लगा दो तो राग से विराग हो जायेगा।"

2-7-18 "वीतराग भगवान है चिन्मयकारी" प्रातः

अभी जब बाहर आये तो जिधर देखो उधर पगड़ीयाँ ही पगड़ीयाँ नजर आ रही थी। हमनें सोचा यहाँ ये राजस्थान कैसे आ गया? बाद में पता चला कि ये लोग बंधा जी क्षेत्र से बंधा जतारा से आये हैं। उन्होंने अपनी पगड़ीयों से हमको जता दिया कि हम जतारा से आये हैं। भगवान तो ऊपर उठे हुये ही हैं परन्तु भगवान के भक्त भी भगवान को और ऊपर उठा देते हैं।

जब आप लोग अभिषेक करते हैं तो उन्हें सिर पर उठाते हो। फिर हाइट पर Might रहे ऐसी वेदी अथवा चौकी (पांडुकशिला) पर बैठा देते हो। विराजमान करके उनकी पूजन-भक्ति आदि करके वापस यथास्थान पहुंचा देते हो। अभी-अभी एक विशेष काम और हुआ। यहाँ जनता काफी आती है और आयेगी। बढ़ती जायेगी तो बाजु में जिन श्रावक की जमीन थी उन्होंने क्षेत्र को देने की मनोस्थिति बना ली।

उनके इस सहयोग से अब यह आँगन और चौड़ा बनाया जायेगा। आगे की सपरेखा हेतु उन्होंने अच्छा काम किया। देखो आप सभी अपना घरतो बनाते ही हो और अच्छा बनाते हो परन्तु इन्होंने भगवान के लिये अपने घर को ही दे दिया। गृहस्थाश्रम में रहने के कारण यहाँ से ये लोग पृथ्वीपुर रह रहे हैं, यहाँ पर भी खेतीबाड़ी

है। जो घर था वह आज समर्पित कर दिया।

अब इस स्थान पर न जाने कितनी जनता स्वाध्याय - ध्यान - भजन - माला - विधान - नृत्य आदि करेगी। यह भूमी और किसी काम के लिए नहीं वीतरागता के उपयोग के लिए ही जा रही है। इस बंधा जी क्षेत्र का अतिशय अलग ही प्रकार का है। "अतिशय भगवान द्वारा नहीं भगवान के जो भक्त होते है उनके द्वारा होता है।" इसलिए देवी - देवताओं आदि द्वारा ऐसे अतिशय होते रहते हैं। "भगवान तो अतिशयकारी नहीं चिन्मयकारी है।" वे तो वीतरागता का ही उपदेश देते हैं।

आप भी उसी वीतरागता की कामना करते है। इसलिये "वन्दे तद् गुण लब्धये" इसी भावना से भगवान की भक्ति करो। यहाँ पर दूर-दूर से लोग आते है, इसलिए भीड की संभावना तो बढ़ती ही है। जैसे - नदी होती है। आगे-आगे बढ़ती है वह बड़ी होती जाती है। लम्बी तो चल ही रही है पर चौडाई भी बढ़ जाती है। आप लोग भी अपने पात्र को बड़ा बना लो फिर देखो बंधा जी क्षेत्र में दिन दुनी-रात चौगुनी वृद्धि दिखने लगेगी।

इतना अवश्य है कि यहाँ यह प्राचीन अतिशय कारी प्रतिमा है। क्यों की गांव है इसके शुद्धिकरण एवं पवित्रता का विशेष ध्यान रखने से देवी-देवता भी रमते है। और मुनिमहाराज जी भी जो गांव-गांव में पैदल चलते है वे यहां

पहुँच जाते हैं।

हमारा इस ओर दो बार आना हुआ पर यह क्षेत्र छुट गया। अबकी बार तो बाबा ने बुला लिया। यहाँ पर आते ही जो उत्साह है वह बढ़ता जा रहा है। किन्तु आप सब लोगो से कहना है अति-उत्साह में कोई कार्य नहीं करना। बस आप लोगो का उत्साह बढ़ता जाये उसे विचारपूर्वक आगे करते जायेंगे तो जो पूर्वज स्वर्ग में हैं वे भी कहेंगे बहुत अच्छा काम किया।

कार्य होने पर युगीन रूप से उत्साह भी बढ़ता जाता है। जैन समाज सात्विक समाज है। अहिंसा और वीतरागता की उपासना करने वाली है। लेने के नाम पर भगवान का नाम तो ले सकती है/लेती है पर दुसरो की कोई भी वस्तु कतई नहीं लेती। सात्विक समाज होने से जो लोग दूर-दूर से यहाँ आते है उनकी अच्छे ढंग से व्यवस्था हो ऐसी व्यवस्था करती है। इससे जो कमाई होती है वह कम नही - शत प्रतिशत नही कई गुना होती है।

कई गुना मतलब एक बीज डालो हजार गुना पा लो। रखने के लिए जगह नहीं रहेगी। आप नहीं चाहोगे तो भी आयेगा। बाकी सबका मूल्य है वीतरागता का कोई मूल्य नहीं। वह अनमोल है इसी ओर बढ़े। आज रविवार तो नहीं है ना। हालाकि हमें तो अब अभ्यास हो चुका है। भीड़ को देखकर प्रतिदिन ऐसा ही लगता है। भीड़ बढ़ती ही जा रही है। आप को तो एक दिन छुट्टी

है पर हमें रातदिन काम करना है।

हमें खुशी है। अरबों चे बताओ फूटकर की गाड़ी बढ़ जाती है तो होलसेल वाले को आनंद आता है कि नहीं? होलसेल वाला भी खिलेगा। हम बढ़ाना नहीं चाहते पर स्वतः ही बढ़ता जाता है। आप लोगों द्वारा ऐसा ही होता है तो हम क्या करें? हमने तो अपना माल सस्ता रखा कहीं भी चले जाओ इससे सस्ता नहीं मिलेगा।

इस प्रकार वीतरागता - अहिंसा - अहिंसा को नहीं भूलना। मात्र नाते - रिश्तेदार के प्रति ही नहीं सबके प्रति प्रेम हो इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - "कैसे छुटे सिगरेट" बंधाजी

एक व्यक्ति से आर्यिकाश्री ने इशारे में कहा, क्यों पीते (बीड़ी/सिगरेट) तो नहीं? उसने कहा बीड़ी पीता हूँ छूटती नहीं है। आर्यिकाश्री ने कहा यदि छोड़ना चाहोगे तो छूट जायेगी। मन में आवे कोई बात नहीं, हाथ में लो लो कोई बात नहीं, हाथ में लेकर जला लो कोई बात नहीं, मुख तक भी लाने हेतु हाथ उठ गया तो भी कोई बात नहीं बस दो उँगलियाँ हैं न उनको यूं कर देना (V) सिगरेट/बीड़ी नीचे गिर जायेगी। उँगलियों से V बना वह विद्यासागर का V है।

[पूज्य अभयसागर जी के मुख से]

3-7-18 "बड़ तूफाँ में शीर्षासन लगाता, बेंत झुकता" प्रातः

पुलिस भी बैंडकर सुन ले तो अच्छा रहेगा। ये लोग भी सब शान्त रहेंगे। दो व्यक्तियों के बीच में एक छोटा सा संवाद है उसी को आपके सामने रखना चाहता हूँ। वे दो व्यक्ति कौन हैं अभी आपको मालुम पड़ जायेगा। एक व्यक्ति दूसरे से कहता है - ये क्या है? बातों - बातों में गिर जाते हो। मजबूती तो है ही नहीं। फिर भी हमारे सामने खड़े रहते हो। इस तरह उसने लम्बी चौड़ी उपहास पूर्ण बात रखी। वह (दूसरा) कहता है - आपका कहना बिल्कुल सही है। क्या करें हमारा जीवन ही ऐसा है।

फिर भी प्रभु ने आपके सामने हमको रखा। हम तो अपना जो छोटा सा जीवन मिला है, उसको भर जी रहे हैं। बस आपकी शरण - आपका सहयोग मिलता रहे। फिर भी आपके सामने रहना चाहता हूँ। दूर से निकट रहना ठीक माना जाता है। इस प्रकार उसने कहा कि पहले व्यक्ति के हृदय तक बात पहुँच गयी। उसने तलस्पर्शी बात कही। तलस्पर्शी मतलब गहराई तक असर करने वाली बात कह दी। फिर भी अभिमान में वह कहता है - हाँ तुमने कहा तो है पर तुम्हें समझ में नहीं आती है।

तुम तो जमीन पर भारभूत हो। तुम्हारा कोई अस्तित्व ही नहीं है। हाँ है तो किन्तु कुछ कोशिश कर रहा हूँ। कर रहे हो? क्या कर रहे हो? हमसे भी सहयोग मिल जाये। जीवन में देना चाहता हूँ। तुमसे

क्या सहयोग, तुम तो भारभूत हो, आभार नहीं मानते। सुन रहे हो (हिलो)

"जो भारभूत होते हैं, वे कभी आभार नहीं मानते।" किन्तु समय पर सब घटित हो जायेगा कौन भारभूत है और कौन आभार मान रहा है? देखते-देखते बादल हो गये। आसमान में नीली-काली घटायें छा गयी। भय लगने लगा यदि नीचे आ गये तो क्या होगा? उसी के साथ झंझा भी चलने लगी। झंझा का काम होता है घेर लेना। घिरते-घिरते जोर का तुफान आ गया।

जिनका जीवन बड़ा था, वह बड़ा ही था जो छोटे से कह रहा था। बड़ा था वह बड़ का पेड़ था। तुफान ने उसे गिराया ही नहीं शीर्षासन करा दिया। दूसरा भारहीन था वह दण्डौत करने लगता है- बंद्या जी वाले बाबा "दण्डौत"। यहाँ तो चाहे बड़ा हो या छोटा हो वह इनसे बंद्या भर रहे पक्का है जीवन खुश रहेगा। फिर वह बेंत का पेड़ जो दूसरा व्यक्ति था कहता है..।

बेंत किस काम में आता है? इस पिच्छी को देखो सीधा रहता तो पिच्छी नहीं बन पाती। रातभर भीग गया तो वर्तुल बन गया इसको पकड़कर हम लोग आसानी से बीसों किमी. चल सकते हैं। बेंत का पेड़ उस तुफान में मुड़ जाता है। झुक जाता है। जिसके जीवन में मुड़ने की कला

है वही इस प्रकार कह सकता है।

आपके पास बहुत बड़ा गुण छाया थी, जिससे हजारों-हजार लाभान्वित हो जाते परन्तु क्या करें। यहाँ बंधा जी के भगवान देखने में भले ही छोटे जैसे हैं पर छोटे नहीं चोटी के काम कर जाते हैं। बेंत हल्का होता है मुड़ जाता है जीवन को कुछ नहीं होता। वह आँधी ऊपर से चली गयी और वह धीरे से उठ गया। तो बड़े भाई बड़े आपका क्या हॉल है। बुंदेलखण्ड में छोटे को हल्के कहते हैं। फिर मंझले-संझले भी होते हैं।

वो बड़ा था। "सब कुछ हमारे पास था पर जो आवश्यक था उसी का अभाव था।" आप और हम बेंत से सबक लेते हैं। आप सब ढोल-धमाका बजाते हैं-बड़ के पेड़ की टहनी से नहीं, अरे बोल तो सुनो। अच्छे-अच्छे लोग जो नाचना नहीं जानते नाचने लग जाते हैं। क्या कहें? वृद्ध भी हो पैरों में थिरकन आ जाती है। यहाँ पर आबाल-गोपाल, राजा-रंक कोई भी हो नाचने लग जाते हैं। जीवन का रहस्य समझ में आ जाता है।

बात समझ में आ रही है न? याद रखना। बड़ो को भी समझ में आ जाये। बेंत का कार्य करेंगे। बड़े होटों का आदर सम्मान तथा वात्सल्य भी रखेंगे। ये बातें जीवन में हमेशा ध्यान रखना है। अपने आपको छोटा मानकर चले यदि बड़े काम करना है तो। इसी

बड़े बन पायेंगे।

रघुकुल का नाम सुना है। लघुकुल कहते हैं। र एवं ल में भेद नहीं है। लघुकुल में राम हुये। वे अपने को बड़ा होकर भी छोटा मानकर चलते थे। इसलिये राम ने जंगल में भी मंगल कर दिया। मंगल होगा तभी तो आनंद होगा। इसलिये ऐसे क्षेत्रों पर वीतराग के चरणों में अभीभूत होकर ऐसे भाव हमें भी प्राप्त हो। उन्हें लहाकर अच्छे ढंग से पल्ले में बांधकर ले जाना है।

काम में आयेगा ये बहुत अच्छी बात है। पहले के लोग यात्रा में निकलते थे तो कुछ कलेवा बांधकर निकलते थे। खाली हाथ नहीं जाते थे। जिसके मार्ग में किसी प्रकार की कठनाई नहीं होती है। आपको भी कठनाई न हो इसी भावना के साथ। तो बड़ का पेड़ याद रहेगा, बेंत का पेड़ याद रहेगा और ढोल-धमाका भी याद रहें।

अहिंसा परमो धर्म की जय बोलें

उदाहरण- "जिस प्रकार हर व्यक्ति इंजेक्शन लगवाने से डरता है फिर भी डॉक्टर उसे बड़े ही हल्के हाथ से स्पीट से साफ करता है तथा चीरे से अपना काम कर लेता है, इसी प्रकार आचार्य कहते हैं मुझे भी जिनवाणी की बात आपको देना है तो धीरे-धीरे बड़े ध्यान से परोस देता हूँ ताकि आपके भीतर वह तत्व चला जाये यही हम सबका कर्त्तव्य है।"

5-7-18 "उलटी चाल को सीधी करो" प्रातः

एक विदेशी व्यक्ति जो कि घोड़े के गुणधर्म बताकर राजाओं को प्रभावित करता था। ऐसा वह प्रवासी यहाँ आया। वह सोचता है- सुनता हूँ वहाँ का राजा घोड़े का बड़ा पारखी है। वह जाकर कहता है आप घोड़े की सवारी बहुत पसन्द करते हैं, बहुत शौकिन हैं। मैं यह घोड़ा लाया हूँ पसन्द आये तो रख लिजिये। कहाँहै ऐसा घोड़ा - राजा ने उत्सुकता से पुछा। प्रशिक्षित घोड़ाहै। मैं क्या कहूँ घोड़ा ही स्वयं बतायेगा। उसके लिए कई प्रकार के प्रशिक्षण दिये गये हैं।

ज्यों ही राजा परख करने के लिए बैठ जाता है, उसी समय राजा को ज्ञात होता है कि यहतो अद्वितीय घोड़ा है। उसे जो प्रशिक्षण दिया वह अलग ही है। बहुत महत्वपूर्ण है यह अश्व, इसके लिए संस्कृत में एक विशेषण आता है आशुगः, तेज गति से दौड़ने वाला। अतः" घोड़े की चाल को पहचाने बिना उस पर बैठना हानिकारक होता है।"

वह घोड़ा कुछ ही समय में कहाँ तक ले आया- राजा को कुछ मालुम नहीं पड़ा। राजा कुछ सोचता पर वह जैसे ही रोकने का प्रयास करता उसकी गति और बढ़ती जाती। क्यो की उसे ऐसा ही प्रशिक्षण मिला है। अन्तोगत्वा वह राजा सुदूर जंगल में पहुँच गया। अब वह हार गया,

प्यास की वेदना एवं क्षुधा भी लग रही है।
पर उसकी पूर्ति करूँ कैसे? नीचे उतरूँ तब तो। हार कर लगाम रखेंची नहीं छोड़ दी तो घोड़ा रुक गया। सुन रहे हो किन्हीं? [हओ] उस घोड़े को विपरित चाल सीखायी गयी थी। एक ही चाल से चलना ठीक नहीं माना जाता। उसे विपरित चाल बतायी गयी थी। विपरित मतलब उल्टी चाल। आज तक हमने जो भी चाल चली अब उससे उलटा विपरित चाल चलना है, तभी यह घोड़ा रुक सकता है।"

राजा पसीना-पसीना हो गया। घोड़े से उतरा और पानी ढूंढने लगा। कुछ दूरी पर गया तो उसे बहुत अच्छी सुगंध आयी मानो उसे बुलाने का निमन्त्रण ही दे रही हो। एक फलदार वृक्ष देखा, सोचा यह तो मेरी क्षुधा को भी दूर करने में समर्थ है। कुछ देर उसी वृक्ष की छांव में बैठा, ऊपर की ओर देखने लगा। इसके फल देखने में कितने सुन्दर है गंध भी बहुत अच्छी/सुगंध है।
जब दोनों अच्छी है तो तोड़कर खा लेना चाहिये। कुछ फल तोड़कर लाता है और वहीं बैठकर खाने लगता है। ऐसे मीठे फल कभी मैंने खाये ही नहीं। रसदार फल थे सो प्यास भी तृप्त हो गयी। सुगंध एवं छुने में भी बहुत अच्छा

था। परन्तु ये क्या?

कुछ ही क्षणों में वह मुर्छित होकर गिर गया। उस फल का नाम सुना था - किंपाक फल। पाक मतलब फल/अन्त कैसा होता है। जब उदय में आता है तो उसका फल कैसा मिलेगा। उसका फल तो तात्कालिक मिल गया। वह राजा मुर्छित क्या हुआ कुछ ही समय में मृत्यु को प्राप्त हो गया। हमने इस किंपाक फल के बारे में शास्त्रों में पढ़ा-सुना है। पंचेन्द्रिय विषयों के फल भी उस किंपाक फल की तरह है।

ये पंचेन्द्रिय के विषय भवों-भवों में जहर चढ़ाकर के हमें मृत्यु की ओर ले जाते हैं। आज तक यह बात जान बुझकर हमें समझ में नहीं आयी। जो इससे अज्ञात है उसे तो बाद में समझ में आ जायेगी पर ज्ञात होने पर उससे हटते ही नहीं। महाराज उससे हटते है (पंचेन्द्रिय विषय) तो ऐसा लगता है मानो मृत्यु ही होने वाली है। ये छूटते ही नहीं। कमजोरी आने लग जाती है।

शरीर में भी कमजोरी एवं मन भी डामाडोल हो जाता है। महाराज भले ही आप कहते हो कि पंचेन्द्रिय के विषय छोड़ दो पर छोड़ते ही हमारी दशा क्या होती है आपको क्या पता? ये ही विपरित धारणा है। इससे विपरित अपनी दृष्टि नहीं करोगे तब तक मोक्षमार्ग

अच्छा नहीं लगेगा।

"मोक्षमार्ग में यदि चलना चाहते हो तो उसके नियमों का पालन करना होगा।" यदि आप नियम का पालन नहीं करेंगे तो वर्तमान जीवन और आगामी जीवन बहुत ही दुःखमय होगा। विपरित धारणा के कारण वह सोचता है मुझे पंचेन्द्रिय विषयों के त्याग करने से दुःख होता है। इस दुःख से डरकर ही संसारी प्राणी भव-भव से पंचेन्द्रिय विषयों को ग्रहण करते आया है।

एक वह व्यक्ति जो श्रद्धानी होता है, धीरे-धीरे अभ्यास प्रारम्भ कर लेता है। अभ्यास करने पर वह सोचता है - मैं चला सकता हूँ। ध्यान रखें - "पंचेन्द्रिय के विषय मोक्षमार्ग में कोई कार्यकारी नहीं होते है।" विषयों को विष के समान जानने वाला ज्ञानी - समझदार ही उन विषयों को छोड़ सकता है। राजा इसमें असमर्थ रहा। शास्त्रों में कहा गया कि अजान फल का सेवन मत करो। जिसका आदि क्या है? अन्त क्या है? और बीच/मध्य में क्या है? इसे अजान फल बोलते हैं।

दूर-दूर से फल इधर आ जाते हैं। जब तक ज्ञात नहीं तब तक लेते हैं पर ज्ञात होने पर तो मत लेओ। दक्षिण की अपेक्षा अलग है तो उत्तर की अपेक्षा अलग है। कुद्र काल की अपेक्षा तो कुद्र काल की अपेक्षा भी हानिकारक होते हैं।

"पंचेन्द्रिय विषय तो मोक्षमार्ग में हमेशा ही हानिकारक है।"

यदि इस सूत्र को जान लोगे तो राजा की तरह विफलता को प्राप्त नहीं होवोगे, सफलता ही प्राप्त होगी। आज विदेश से फल आ रहे हैं - Fast Food बोलते हैं। बच्चे इसे ले रहे हैं और छोटी उम्र में ही भयंकर रोग से ग्रसित हो रहे हैं अपने जीवन से ही हाथ धोना पड़ता है। इसकी जानकारी बच्चों को भी अवगत करायें, ये बड़ो का कर्तव्य है। अन्यथा धन से भी खाली एवं बच्चों से भी वंचित हो जावोगे।

बड़े-बड़े शहरो में तो यह तेज गति से फैल गया है। इतना ही पर्याप्त है। राजा की तो किंपाक फल से मृत्यु हो गयी। आपलोगों को क्या-क्या दिया जा रहा है अवाक् रह जाता हूँ। दूध भी सिन्थेटिक आ गया, युरिया तक मिलाया जाता है। महाराज फटता नहीं जमता है। दूध-दही बरस रहा है बिन वर्षा के ही। अब तो राम राज्य क्या जय राम जी हो रहा है। जय राम जी यानि राम नाम सत्य है।

इसलिये बचियो। बच्चों को समझा दो। जो घर में बना है वह लेलो। घर में जो शुद्ध बना है वह जीवन चलाने के लिए एवं हृष्ट-पुष्ट होने के लिए खानपान है। इसके सेवन से ही दुर्लभ जीवन की सार्थकता है।

रात्रि विश्राम- बम्हौरी अहिंसा परमो धर्म की जय।

GROUP

सिधौरा

5-7-18 "धर्म कांटे की ओर नहीं धर्म की ओर ध्यान है" प्रातः

ये सिधौरा गाँव है। हम इस ओर तीन-चार बार [इधर आना, इधर जाना] झांसी, पृथ्वीपुर, पपौरा, टीकमगढ़ की ओर जाना-आना हुआ। पर इस ओर मुड़ने का यह प्रथम अवसर है। आप लोग बोलते ही हो, भूल से ले ली गुरुवर ने हमारी खबरीया। किन्तु महाराज भूल से कैसे आ गये? तो सुनो! जो नगरवासी हैं उन्हें चमका कर / चकमा देकर आ गये। जिस प्रकार छत का पानी पनाल पर इकट्ठा होकर निकलता है वैसे ही गाँव-गाँव के लोगों का हाल है।

मात्र जैन लोग ही नहीं। अभी तालाब के ऊपर से आ रहे थे लगभग 4-5 गांव पड़े वहाँ के सभी लोग अपने-अपने घरों के बाहर रोड़ पर रंगोली-गुलाल सजाये हुये थे। आप लोग तो 9½ बजे की प्रतिक्षा करते हो वो तो सुबह-सुबह से ही अपने आँगन को सजाये हुये थे। देखकर लगता है ये अपने ढंग से अलग प्रकार से ही आराधना करने वाले हैं। इसी से साधुओं का आना-जाना होता है।

एक-आध गाँव भिन्न-भिन्न मिलते हैं तो अलग रूप होता है किन्तु यहाँ तो एक साथ कई गाँव हैं। वे फूलपत्ती नहीं गुलदस्ता की तरह लग रहे हैं। पाण्डाल भी खचाखच भरा हुआ है। हम सोचते थे पपौरा जी में ही लोगों से पाण्डाल भरा किन्तु कहने मात्र को होता वैसे

बड़ा द्रोन बंधा जी में भी प्रतिदिन यही माहौल था।

और यहाँ भी उतना ही, जनता की अपेक्षा भी विस्तार होता जा रहा है। हम सोचते थे ये तो गाँव है यहाँ तो प्रधानमंत्री सड़क योजना की रोड़ मिलेगी परन्तु यहाँ तो राष्ट्रपति योजना हो गयी है। इन गाँवों में आने-जाने से देखने पर लगता है कि यहाँ संस्कारों को घुट्टी में पिलाया गया है। रोटी-पिट्टी सब बाद में पहले तो माँ के द्वारा घुट्टी चटाया जाता है।

उसमें जादू रहता है। इस जीवन के अंतबद्ध ही नहीं बल्कि अगले भव में भी वे संस्कार काम में आते हैं। जो माता-पिता धार्मिक घराने से जुड़े होते हैं वे ही इस प्रकार के संस्कारों के बीजों का वपन कर सकते है। यहाँ अधिकतर लोग खेती-किसानी करते हैं। "व्यापार में तो धर्म-काँटा की ओर देखता है जब कि खेती में धर्म की ओर देखता है।" व्यापारी एवं किसान में इतना अन्तर है।

यदि किसान उत्पादन नहीं करेगा तो व्यापारी उस काँटे का क्या करेगा? देखते रहो उस धर्म-काटा को, तोलने के लिये तो कुछ होना चाहिये। यह निश्चित है मनुष्य पर्याय की प्राप्ति बड़ी दुर्लभता से होती है, इसके लिये बहुत पूंजी लगानी पड़ती है। तब जाकर दुकान खुलती है। खुलने पर भी मंदी-मंदी रहेगी तो गड़बड़ होगी,

यह दुकान तौलजी में चलनी चाहिए।

आज भी गाँवों में इस बारे में जागृती है। खान-पान, रहन-सहन ही नहीं शिक्षा की अपेक्षा भी भारतीय इतिहास साक्षात यहाँ देखने को उपलब्ध होता है। इसे देखकर मन में उल्लास/उत्साह पैदा होता है। युं कहो धर्म का मंदापन नहीं आता। ये बात अलग है कि आज हरेक से तुलना करके देखा जाता है। तुलना किसके साथ किसकी यह महत्त्वपूर्ण है।

हीरे-मोती-जवाहरात की तुलना ज्वार-मक्का-बाजरा से नहीं की जाती। ज्वार-मक्का की दुकान पर जाकर कह सकते हो थोड़ा सा सेम्पल दे दो किन्तु इसका सेम्पल नहीं मिलता। आम का कोर तो मिल जायेगा पर मोती का नहीं। बनिया लोग ये ही करते है। बाजार में जाओ तो अनेक प्रकार के बाजार होते हैं- साग सब्जी का बाजार, बर्तन बाजार, कपड़ा बाजार, किराने का बाजार आदि-आदि किन्तु एक वह भी बाजार होता है जिसमें बहुत कम दुकान होती है।

वह है सराफा बाजार जहाँ मोती-माणिक आदि खरीदे जाते है। वहाँ गिनती की दुकानें होती है। इस क्षेत्र में ऐसी दुकाने कम नहीं अनगिन जैसी लगती है। भारत के इतिहास को देखने पर ज्ञात होता है कि हमारा प्राचीन

भारत कैसा रहा है ?

उस समय सोना-चांदि-मोती-माणिक आदि गिनने अथवा तौलने की भी फुर्सत नहीं थी। एक कोने में ढेर लगा रहता था। जैसे आज ज्वार-मक्का आदि तौलकर लेते हैं, ऐसे ये रत्न फावड़े आदि से इकट्ठे करके कोने में कर देते थे। ये इतिहास विदेशी लोगों ने भारत का लिखा है पढ़ो तो पता चलेगा।

नगरवासी उस इतिहास को भूल गये, यह उनका दोष नहीं आज की शिक्षा प्रणाली ही ऐसी हो गयी। शिक्षा में से भारतीय इतिहास गायब होता जा रहा है। यदि पानी का बहाव चालु रहता है तो काई कम जमती है। कुयें से पानी निकलता रहता है तो काई नहीं जमती। गाँवों में आज भी धार्मिक वातावरण निरन्तर बना रहता है तो हिंसा की काई नहीं लगी। किन्तु अब धीरे-धीरे शहर की ओर पलायन हो रहा है। इस पलायन को रोकना अनिवार्य है।

"यदि अहिंसा को जीवित रखना चाहते हो तो भारतीय इतिहास पढ़ना होगा।" बच्चों को यदि यह उपलब्ध नहीं है तो विशेष रूप से उपलब्ध करवायें। भारत में अहिंसा धर्म तभी जीवित रहेगा जो पहले था। यहाँ बीज बहुत गहराई तक पड़े हुये हैं। वे आज की तपन से

जलने वाले नहीं हैं।

माटी में पड़े वे बीज ज्यों ही नमी एवं हवा आदि के सम्पर्क में आते हैं अंकुरित हो जाते हैं। इसके लिए आपको पुरुषार्थ करना है। "जिस प्रकार आप अपने इस पार्थिव शरीर को जीवित रखना चाहते हैं उसी प्रकार बुद्धि को भी सात्विक साहित्य पढ़कर जीवित रखना आवश्यक है।" केवल अहिंसा परमो धर्म के नारे लगाने से वह जीवित नहीं रहेगी।

दुकान खोली है - वह पूंजी भवों-भवों तक बनी रहे उसमें वृद्धि नहीं कर सको तो कमी तो मत करो। भावना रखो हे भगवन् जब तक मुक्ति न हो, अक्षिश्वर पद प्राप्त न हो, भव-भव तक ये संस्कार बने रहें। जैसे संस्कार किसान बनाकर रखता है। इतना ही पर्याप्त। आपके इन संस्कारों में दिन-दुनी, रात-चौगुनी अभिवृद्धि होती रहे और अगली पीढ़ी में भी ये संस्कार बने रहें।

जिस प्रकार कोई व्यक्ति यदि संतान न हो तो गोद लेता है। क्यों गोद लेता है? वंश चलता रहे मात्र इतना ही नहीं अपितु पीढ़ीयों से जो संस्कार आये हैं वे आगे भी जीवित बने रहे इस हेतु संतान गोद लेता है। संस्कारों का यह दायित्व जो नयी पीढ़ी पर डालते हैं यह एक दिन में नहीं होता कई दिन लग जाते हैं। जैसे यदि अपनी फर्म किसी दूसरे

के नाम करना चाहो तो ½ घण्टे में नहीं होती।
तो आप सभी जीवन को सुरक्षित रखते हुये बच्चों में भी जीवन के अन्त तक संस्कार बने रहें इस तरह से संस्कारित करेंगे। आज का हमारा यही छोटा सा वक्तव्य है।

शान्ति विश्राम - सीतापुर (सत्संग में दीप) अहिंसा परमो धर्म की जय हो

चर्चा सार - "गुण की पर्याय नहीं"

उत्पाद-व्यय - ध्रौव्य युक्तं सत्। सत् द्रव्य लक्षणं। गुणपर्यायवद् द्रव्यं। गुण समुदायवद् द्रव्यं।

इस तरह गुण एवं द्रव्य के बारे में आचार्य उमास्वामी महाराज ने सूत्र कहें। सभी सूत्रों से स्पष्ट है कि गुणों की कभी पर्याय नहीं होती द्रव्य की ही पर्याय होती है। जो गुणों की पर्याय कहता है वह आगम विरुद्ध कह रहा है, उसे अभी आचार्यों के सूत्रों के अध्ययन की आवश्यकता है। ज्ञान कभी ज्ञानी नहीं होता, गुण कभी गुणी नहीं होता।

उदाहरण → सफेद ध्वजा हवा के कारण स्पंदित हो रही है। स्पंदन सफेद में नहीं ध्वजा में हो रहा है। इसलिये अपने आग्रह को छोड़ दो। आचार्य कुन्दकुन्द ने भी ज्ञेय अधिकार में यही कहा है। आग्नी का सटीक उदाहरण है -

"I have an Idia in my mind."

जतारा
6-7-18 "आओ खड़े हो जायें चुनाव में" प्रातः

यहाँ के परिसर में इतना अवश्य है कि हमारा इस ओर अभी विहार हुआ ही नहीं था / हाँ! सुना तो था क्योंकि यहाँ के भक्तगण कईबार हमारे पास कई बार आकर निवेदन किये थे। क्यों कि "राजमार्ग होता है तो प्रायकर गरीब मार्ग को भूल जाते हैं।" यहाँ कि विशेषता अपने आप में अलग ही है। मन्दिर तो एक ही है पर वेदियाँ... अभी गिनना पड़ेगा। और पर्योरा जी, बेंधाजी, करगुंआ बबीना तथा पवा जी में जिस रूप-आकृति में प्रतिमा मिलती है।

उन्हीं की तरह एक यहाँ की नेमीनाथ भगवान की प्रतिमा भी है। वही आकृति, वही कला एवं सुन्दरता सब एक सी है। जैसे एक ही शिल्पी द्वारा निर्मित हो ऐसा लगता है। यहाँ का नाम भी अलग ढंग से है- जतारा। बीच में एक गाँव आया था - मोहरा / मोह भी जहाँ हार गया वह कहलाता है मोहरा। आगे एक गाँव का नाम सुनते हैं, एक नहीं दो नहीं --- 8 नहीं नौ गाँव नाम सुनते हैं। बेंधा जी था, वह 50 गाँव से बंधा था।

अक्सर लोग भगवान को भी अपनी परिधी में ही बाँधकर रखते हैं ताकि उनकी पूजन-भक्ति बरकरार बनी रहे। देवगुरु शास्त्र का आश्रय लेने से ही ये सब कुछ काम होते हैं। धार्मिक क्षेत्र में आने के बाद धार्मिक भाव उभरते हैं जैसे नदी का पूर आता

हो।

इसके लिये ही जिनालय आदि की व्यवस्था की गयी है। अपनी आत्मा का सही-सही बोध न होने के कारण संसारी प्राणी की क्या दशा/हाल होता है, आप देख सकते हैं। उसका यह दुख छूटता ही नहीं क्यों कि उसे स्वभाव का बोध नहीं है। जैसे जंगल में एक मृग होता है और वह इधर से उधर भटक रहा होता है। एक व्यक्ति ने देखा क्यों घूम रहा है? छलांग लेता है, पुनः मुड़ जाता है।

उस मृग को यह भ्रम हो रहा है कि इस ओर से सुगंधी आ रही है किन्तु उसे दौड़ने पर भी उस सुगन्धी की खोज नहीं हो पा रही है। वह कस्तुरी की गंध है। उस कस्तुरी की गंध अन्यत्र से नहीं उसी की नाभि से आ रही थी। "निज नाभि में गंध है, पर भटके अज्ञान"। प्रत्येक प्राणी की यही दशा है - अज्ञान के कारण वह इस संसार में भटक रहा है। उसके अपने पास कस्तुरी की गंध है। उसके बाद तो कोई गंध है तो वह है रत्नत्रय की सुगन्ध है।

उसमें भटकने की बात ही नहीं। भटकने की बात ही नहीं। आँखो को यदि बंद भी कर लेता है तो उस सुगंधी का लाभ ले सकता है क्यों कि निज नाभि में गंध है.... अन्यत्र है ही नहीं। शांति-सुखआदि-आदि मिलते हैं तो हमारे भीतर ही हैं, फिर भी बाहर

सर्वत्र छान रहे हैं।

अनेक पदार्थ मिलने पर भी खाली हाथ ही हैं। जब कि पुरे संसार को छान डाला। प्रतिदिन पाठ में बोलते हो ... सब जग देख्यो छान। दुनिया को छानने के बाद भी नहीं मिला। एक नहीं दो नहीं अनन्तो को छानने के बाद भी जो चाहते हो उसकी उपलब्धि नहीं हुयी। वह ज्ञान आपको वीतराग प्रतिमा से ही उपलब्ध हो सकता है।

"मोह की विजय होने से हमें वह ज्ञान नहीं हो रहा, मोह पर विजय होने से वीतराग प्रतिमा से अवश्य उस ज्ञान की प्राप्ति होगी। अभी तक रात-दिन मोह की विजय बरकरार बनी हुयी है। किसी ने उसको नहीं हराया। चुनाव में खड़े होना चाहते हो तो मोह को हराकर के खड़े हो जाओ। उस मोह के विरुद्ध सर्व सम्मति बना लो। इसके लिए दृढ़ संकल्प शक्ति की आवश्यकता है।

मोह बड़ा तो है किन्तु उससे बड़े आप हैं - ये विश्वास करना चाहिए। आपलोगों की बहुत दिनों से हमें बुलाने की इच्छा थी उससे ज्यादा हमारी इच्छा थी। जतारा एवं रवहगापुर दो रास्ते थे हम जतारा की ओर आ गये। हटरपुर 2-3 बार आना हुआ किन्तु इस ओर नहीं आये, क्यों कि हम उस ओर थे। छूटता ही रहा। बरुआसागर-करगुंवा तो गये पर यहाँ नहीं आपाये।

भगवान से पूछेंगे अभी तक क्यों नहीं बुलाया।

सुनते हैं यहाँ सात भोंयरे हैं। ऐसा भी सुनते हैं एक ही तक जाते हैं शेष में क्यों नहीं जाते, बताओ ना? नीचे उतरकर बता देंगे। तो मूल भरके बिन ज्ञान --। इसे ध्यान में रखना। वीतराग की गवेषणा बहुत महत्त्वपूर्ण है। श्रद्धान की अपेक्षा तो करना ही है साथ ही चारित्र की अपेक्षा भी एक कदम आगे उठाना है। इतना ही पर्याप्त है।

रात्रि विश्राम - बरगना अहिंसा परमो धर्म की जय।

मार्ग में जिन मन्दिर - सिमरा खुर्द, कुड़्याला, बुदौर पलैरा

7-7-18 "भीतरी-बाहरी शुद्धि करता नीम" प्रातः

धीरे-धीरे आप लोग सामने खिसकते आ रहे हैं। मैं देख रहा हूँ। भाव यही है हम चूप से बच जायें। चूप-चूप की जगह है, छाया-छाया की जगह है। जब धूप होगी तभी वर्षा होगी और छाया होगी तो जीवन सुरक्षित होगा। इससे स्पष्ट है कि जिस समय जिसकी आवश्यकता है वह हो तो ठीक रहता है। किन्तु जीव स्वस्थ होते हुये भी इन सब बातों का ध्यान नहीं रखता है।

जीवन को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो प्रकृति के अनुसार रहना सीखो। नीम स्वभावतः कड़वा होता है किन्तु सुबह उठते ही उस कड़वे नीम को दातुन करते हो तो कैसा लगता है? बोलो ना? नीम की दातुन से मुख कड़वा होता है किन्तु भोजन करने से

खट्टी डकार आती है वह इस नीम जो कड़वी भले ही हो उसे रोकने में समर्थ होती है।

इस नीम के पास कई गुण मौजुद है। यह चाहे दिन हो या रात, मतलब रात-दिन ऑक्सीजन जिसे प्राणवायु कहते हैं देता है। अन्य वृक्ष रात में कार्बनडाइ ऑक्साइड छोड़ते हैं पर नीम एक ऐसा वृक्ष है जो दिन में तो ऑक्सीजन देता ही है रात में भी ऑक्सीजन ही छोड़ता है। आप प्राणवायु (ऑक्सीजन) को ग्रहण करते हैं तथा कार्बनडाइऑक्साइड को छोड़ते रहते हैं।

विज्ञान का कहना है आंगन में कम से कम एक-दो वृक्ष नीम के अवश्य लगाना चाहिये। टीकमगढ़ के रास्ते में सड़क के दोनों ओर तथा बंधा जी में भी रास्ते में दोनों तरफ यत्र-तत्र भी नीम के वृक्ष लगे थे। इससे पुरा का पुरा वातावरण शुद्ध रहता है। आप अशुद्धि के वातावरण में रहते हो। बाहरी शुद्धि में नीम बहुत सहायक होता है।

दो प्रकार की शुद्धि होती है- एक भीतरी शुद्धि दुसरी बाहरी शुद्धि। वनस्पतियों द्वारा बाहरी शुद्धि की जा सकती है। हम सब भीतर से तो अशुद्ध ही हैं। चाहे कलयुग हो या सतयुग हो भीतर से सब अशुद्ध है। भले ही इसमें काल आदि पर दोषारोपण डाल देते हैं किन्तु यदि चाहे तो उस अशुद्धि को भी दूर कर

सकते हैं।

सत्संगम एवं भगवान के स्वरूप को देखकर उसे शुद्ध करने का पुरुषार्थ कर सकते हो। यदि नहीं कर पाते हैं तो पाठ लेना चाहिए - सीख लेना चाहिये इन वृक्षों से। क्या है इनका स्वभाव? जो वातावरण से कार्बनडाई ऑक्साइड ले लेता है और आपको प्राणवायु ही देता है। क्या ऐसा हम नहीं कर सकते? विज्ञान का यह भी कहना है यदि T.B. (क्षय) रोग हो तो नीम के पेड़ के नीचे ही कुटिया बनाकर रहो।

मतलब भीतर के क्षय रोग को भी हरने की क्षमता रखता है नीम का वृक्ष। आप यहाँ बैठे-बैठे भी दूर रहने वालों के लिए भी स्वस्थ रहने के परिणाम तो कर ही सकते हैं। आपके सात्विक परिणाम करने से पूरे देश की गंदगी दूर हो सकती है। इसी का नाम शांति विधान का पाठ है। शरीर की अशुद्धि को शुद्धि में बदलने की क्षमता है इसमें। गांव वालों की तपस्या का फल है यह। नगर वाले सोचते होंगे कि ये तो बहुत मजे में रहते हैं। आपको कौन मना कर रहा है, ग्रामीणों के पास रहियो। आ जाइये। मात्र सात्विक ही नहीं शुद्ध आहार, पानी, पशुपालन खेती आदि है। तभी वास्तव में स्वतंत्र हो जायेंगे। अभी तो धरणा ही पूरी तरह से गलत बना रखी है। हम भारत को अधिक सुन्दर बनायेंगे बिगाड़ और हिंसा। दिन अस्त होने से पूर्व ही इस सीधे-सादे जीवन को अपना लीजिये। इतना ही पर्याप्त है।

रात्रि-विश्राम- अहिंसा परमो धर्मकी जय हो

गरौली
8-7-18
रविवार

प्रातः

"सही बोलें - सुन्दर बोलें"

आप लोग ये बात समझे कि जो आप बोलते हैं, उसे उतनी ही मात्रा में बोलना चाहिये जितना आवश्यक है तो अच्छा लगता है। जैसे मैं धीरे-धीरे और थोड़ा बोल रहा हूँ तो अच्छा लग रहा है या नहीं? आप लोगो को भी अनुपात से बोलना चाहिये। हमारे आचार्यों ने/संतो ने संयम के पालन करते हुये बोलना कहा। संयम पालन में मूलाचार आदि में 5-6 कारण भी बताये जैसे - शरीर की रक्षा करने के लिए, वैय्यावृत्ति के लिए आदि-आदि।

अन्यथा बोलने में अपने आपको संयत रखे। इससे भी हिंसा होती है। संयम का पालन जिसमें हो तभी स्वहित एवं परहित में थोड़ा जो कुछ है बोलो। नहीं तो नहीं बोलो। ये ग्रन्थों में कहा है। बहुत बोलने के बाद भी कोई फल न निकले ऐसे में मत बोलो। "अल्पफल बहुविघात" आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने श्रावको हेतु कहा कि ऐसी वनस्पति का त्याग करदो जिसमें घात/दोष ज्यादा और फल कम मिले। इसी तरह जिसका कोई फल ही नहीं निकलेगा ऐसा बोलो भी मत।

संतो के लिए भी यही उपदेश दिया है। अर्थ क्या निकला? आप अर्थ पूछेंगे तो वह दुगुना और बोल देगा पर अर्थ कुछ नहीं निकलेगा। आप समझ गये होंगे? अभी लोग समझदार है देर नहीं

लगाते।

बोलते समय तो अपने को ही क्या, दूसरे को भी भूल जाते है। दूसरा क्या कह रहा है उसको भी सुनो। उसका फल भी आपको मिलेगा। सही-सही बोलो, अन्यथा वारंट निकल जायेगा और फिर आपको पुलिस पकड़ लेगी।

इसलिये मैं तो ये भी नहीं बोलना चाह रहा था। वो भी आप देख रहे हैं बिना स्टेण्डिंग (स्टेन्ड) एवं उधर वो पकड़ कर (स्पीकर को) खड़े है। आप ध्यान से सुन रहे हैं। इतना ही।

रात्रि विश्राम- खमा, जिन्मोहावा (उ.प्र.) अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण- "रातभर जगत रहे"

"संघ ने बरना में रात्रि विश्राम किया। जनता में अपार उत्साह था। प्रातःकाल उजाला होते ही विहार हो गया। जैनेत्तर समाज के लोग रोड के दोनों ओर कतार बद्ध हाथजोड़कर दर्शन कर रहे थे। उन्हें देखकर ही लग रहा था कि न जाने वे कब से इन्तजार (रात्रि में) कर रहे थे। एक वृद्ध दादा जी स्नान आदि कर शुद्ध पानी की गुब्बड़ एवं बड़ी कोपर लेकर बैठे थे। आर्यिका अपनी सहज मुस्कान भाव देकर आगे बढ़ गये। अब दादा जी की भक्ति अधिकार में बदल गयी। उन्होंने दौड़ते हुये कहा - बाबा हेलर जा - रात भर तो जगत रहे पाँव पखार लेने दे। आर्यिका रुके। इसने अच्छे से पाद-प्रक्षालन किया, धन्य होगया वह।"

आर्यिका ने कहा उसका सम्यग्दर्शन न छूट जाये ग्राहक आया है तो दुकानी न लौटे।

नौगांव
9-7-16 "फार्मूला काले को सफेद बनाने का" प्रातः

आप लोगों को ज्ञात होगा कि आषाढ़ और सावन में मेघ घटायें उठती हैं। वे घटायें कौनसे रंग को लेकर होती हैं? तो वे नीले भी और काले भी होते हैं। नीले और काले तो देखने योग्य नहीं होते। फिर भी उन्हीं की ओर बार-बार क्यों देखते हो। जब आसमान में बादल काले-नीले होते हैं तो किसान बार-बार उन्हीं को देखता है। यह अच्छा तो नहीं माना जाता। हाँ महाराज! वे काले-नीले होते हुये भी काम के होते हैं क्यों कि वर्षा उन्ही से होती है।

जब सावन-भाद्रपद में वर्षा हो जाती है तो फिर आसोज में बादल कैसे दिखते हैं? सफेद-सफेद दिखते हैं। वो भी बादल है जो काले-नीले दिखते है वो भी बादल है। अब उन्हीं का रंग बदल गया। जो भी पाप से अर्जन किया था दो महिने तक धरती को दे दिया फलस्वरूप-आसोज में सफेद भक हो गये। इस प्रकार गृहस्थ में असि-मसि-कृषि, विद्या-वाणिज्य एवं शिल्प इन षट्कर्मों से धन का अर्जन करता है। इसमें वह धन सफेद न होकर के काला और नीला होता है।

और जब वह कोई धार्मिक अनुष्ठान करता है, वह उस धन का उपयोग परस्परोपग्रह जीवानाम् के लिए करता है, उस धन से आश्रय विहीनों को स्वाश्रित बना देता है तो वह सारा का सारा काला धन उस आसोज के सफेद बादल समान हो जाता है। ३ नं० का १ नं० में हो जाता है। इसलिये पहले आसोज नहीं आता,

पहले तो आषाढ - सावन ही आते हैं।

उसी में वह सफेद के योग्य हो जाता है तथा आसोज आने पर हमेशा - हमेशा के लिए सफेद हो जाता है। दान के बिना सफेद नहीं होता, आप बनाना चाहते हो तो दान किया करो। जैसा कि पहले ही उनाउन्स (घोषणा) हो गया कि आपका दान हिंसकघाई बेरोजगारों को रोजगार, अपने पांवों पर खड़े करने हेतु, व्यवस्थित कार्य में खर्च होगा तो आपने भी बढ़चढ़कर भाग लिया। भगवान ने पहले ही काला को सफेद करने का रास्ता बता दिया।

सफेद को काला करने का मार्ग नहीं बताया। यही संक्षेप में कहना था। यह "नौगांव" है - प्रथम बार यहाँ आना हुआ। छतरपुर तो कई बार आये पर यहाँ नहीं, मैं क्या करूँ? छतरपुर में तो आर्यिका इत्यादि का चातुर्मास भी कराया। यह पट्टी जहाँ से हम अभी आ रहे हैं, पहले नहीं आये। हम समझते थे ये तो सेना की पट्टी है, हम क्या करेंगे? बंधा जी से इसी पट्टी पर विहार हुआ। कृषि करने वाली पूरी ग्रामीण जनता ने लाभ लिया। इसीलिए यहाँ के नाम भी शहर नहीं नौगांव है।

नौ या नया भी होता है। नया गाँव मतलब देखने योग्य। आदर्श कार्य करके ही कर सकते हैं। जो भी भगवान की स्थापना करते हैं, दान-पुण्य आदि करते ही हैं। "जिसके जीवन में सादगी रहती है वही गाँवों में रहता है, बाकी यहाँ रहना सबके बश की बात नहीं है।"

अहिंसा परमो धर्म की जय।

कुछ हटकर -

"रात बितायी उत्तर-प्रदेश में"

"संघ विहार करता हुआ खजुराओ की ओर बढ रहा था। जतारा से नौगांव की ओर आये। आज रात्रि विश्राम खमा नामक गांव में हुआ जो उत्तरप्रदेश के महोबा जिले में आता है। लगभग 3-4 किमी० का क्षेत्र मध्यप्रदेश के बीच उत्तरप्रदेश का पड़ा। संयोग से मुकाम वही हुआ। इस प्रकार हमारी दीक्षा के 4 वर्ष में 4 राज्य में गुरुवर अपने साथ ले गये - म० प्र०, छ० ग०, महाराष्ट्र एवं उ० प्र०। 2015 से 2018 के मध्य 3 राज्यों की जनता लाभान्वित हुयी।"

"अकाल मरण ही नहीं, अकाल में जन्म भी होता है।"

"औदारिक शरीर के साथ रहने वाले प्राणियों का अनेक कारणों से अकाल में मरण होना शास्त्रों में बताया। जिस तरह से अकाल में मरण होता है उसी तरह से अकाल में जन्म भी होता है। उदाहरण के तौर पर श्री कृष्ण के जीवन को ही लें। सामान्यतया गर्भ में 9 माह तक शिशु रहता है पर 8 माह एवं 10 माह में भी बच्चे जन्म लेते हैं। यहाँ तो उनका 7 माह में ही जन्म हो गया और न जाने क्या-क्या करामात कर गया। जन्म से ही दुनिया को हिला दिया।"

"इसी तरह जैसे अधिमास होता है वैसे क्षयमास भी होता है। तिथियों का घटना-बढना होता है वैसे ही मास का भी घटना-बढना होता है।" [आ० श्री०जी]

धामौरा
10-7-18 "मोह तो तोड़ो-मोक्ष मिलेगा" प्रातः

आप लोगों ने पढ़ा हो तो, सुना हो तो, देखा हो तो बताओ? चाहे छोटी नदी हो या बड़ी नदी हो? वह कभी-कभी सूख भी गयी हो तो...? आप ही लोग सूखते हैं तो वो भी सूख जाती है (व्यंग्य) यानि वर्षा कम गिर जाये अथवा वह पतली-पतली भी क्यों न हो फिर भी वह नदी हमेशा समुद्र की ओर ही जाती है। उसका कितना दृढ़ संकल्प होता है।

कई व्यक्ति कई बातें करते होंगे। उसके सामने कई व्यक्ति अपने लिए गये संकल्पों को/इरादों को बदलते भी होंगे। वे सोचते होंगे चलो उधर ही चलो जहाँ से आये वहीं चलो किन्तु नदी कहती है वह व्यक्ति भले ही लौट जाये, हम अपने संकल्प को कभी तोड़ेंगे नहीं। हम तो उसी ओर जायेंगे जिस ओर हमारा सुख है। उसी ओर हमारी यात्रा चालु रहेगी। आप लोगों की तो बात ही अलग है।

यहाँ नहीं उस ओर चलो तुरन्त गाड़ी को घुमा देते हैं। गाड़ी क्या स्वयं ही घुम जाते हैं। ऐसा भी बताते हैं कि ऐसी मोटर आती है जिसमें बैठे-बैठे भीतर ही भीतर घुम जाते हैं। ऐसा अस्थिर भाव मोक्षमार्ग में नहीं चलता। "मोक्षमार्ग में तो मोह को तोड़ने का ही पुरुषार्थ होता है, जोड़ने का नहीं होता" अभी बोलियाँ हुयी वो जोड़ने की हुयी या तोड़ने की

हुयी। आप ही बताओ?

यदि जोड़ने की हुयी तो मुक्ति से जोड़ने की हुयी और तोड़ने के लिये हुयी तो मोह को तोड़ने के लिये हुयी। कौनसा चाहते हो? तोड़ने एवं जोड़ने दोनों एक ही बात है। आप जिसे प्राप्त करना चाहते हैं वह धन से बड़ा होता है। उस धन को देकर वह उपभोग्य पदार्थ प्राप्त करना चाहते हैं। भले ही कितना भी पैसा लग जाये - हम लेंगे।

पैसा जोड़-जोड़कर आपने उस धन को एकत्रित किया फिर उस धन का मोह छोड़कर इष्ट पदार्थ लेते हैं। "मुक्ति प्राप्त करना चाहते हो तो मोह को तोड़ने का प्रयास करो।" आपको कोई बहका भी सकता है। अरे! मोक्ष मिले या न मिले अतः दोनों हाथों में लड्डू रखा करो। दान भी हो जाये - एकड़ा भी हो जाये। ऐसा नहीं। एक ही उद्देश्य भले ही थोड़ा त्याग करो या पूरा त्याग करो।

[हथकरघा]

यह आपका त्याग अहिंसा के मार्ग के लिए हुआ है। जो भी त्याग करें उसका सही कार्य में उपयोग होना चाहिए। जनहित के उद्देश्यों को लेकर जैन समाज कभी प्रमाद नहीं करती। ऐसे कार्यों में वह हमेशा ध्यान देती है। इस प्रकार आप सभी इस उदाहरण के माध्यम से समझेंगे। मैं उदाहरण इसलिये देता हूँ, जिससे आपको बात याद रह जाये। पुरी बात तो याद नहीं

रहती उदाहरण याद रहता है।

तो नदी कभी भी लौटती नहीं। इसे याद रखना और जहाँ कहीं से भी आये हो उन्हें अपनी मित्र मण्डली एवं मेहमानों को भी बता देना। तो नदी की बात याद रखोगे। क्या कहा - "नदी कभी भी लौटती नहीं फिर, तू क्यों लौटा" [आश्चर्य का हक्कू है] जब कभी भी आयेंगे तो अवश्य पुछेंगे। हमारा आना तो हो ही रहा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। बोलो

"छने पानी से बना जिन मन्दिर"

"आज रात्रि विश्राम "मऊ साहनियाँ" में हुआ। इस गांव में लगभग 500 वर्ष प्राचीन विशाल शिखरबन्द जिन मन्दिर का दर्शन कर अद्भुत लाभ लिया। स्थानीय श्रावकों ने बताया पूर्वजों ने इस मन्दिर का निर्माण छने पानी से करवाया था। इसी कारण अलग प्रकार की विशुद्धि का अनुभव होता है। यहाँ के मूलनायक 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ की बड़ी ही मनोज्ञ प्रतिमा है।"

ईर्यापथ में →

"निगोदिया का जन्म"

"जिस प्रकार वर्षा होते ही सूखी हुयी कई हरीभरी हो जाती है, ठीक उसी प्रकार तेज गर्मी (उमस) होते ही शरीर में पसीना आता है और घमोरी (फुसरी) हो जाती है।"

रात्रि विश्राम - नीव स्कूल

छतरपुर
11-7-18

"छतरपुर के "छतर" का रहस्य" प्रातः

आज प्रातःकालीन बेला में यहाँ तो जगह वैसे ही नहीं मिल पा रही है। कई लोगो को व्यवस्थित बैठने के लिए जगह नहीं है, कई लोगो को खड़े होने के लिए जगह नहीं है, यहाँ से हम बाहर जायें तो कैसे जायें? पहले भी हम यहाँ पर दो बार आ चुके हैं। ये बात अलग है कि यहाँ एक पुराने पण्डित जी थे। उनका नाम पन्नालाल जी था। यहाँ पर हमसे परिचित हो गये। वे संस्कृत में ही बात करते थे।

मैं भी उनसे संस्कृत में ही बोलता था। एक बार संस्कृत के ब्राह्मण विद्वान को लेकर आये, वे विद्वान् हमारे पास आये और बोलने लगे "अहम् संस्कृत-व्याकरण विद्वान पण्डित पन्नालाल जी प्रेषितो अस्मि।" मतलब मैं संस्कृत का विद्वान हूँ आपके पास पण्डित पन्नालाल जी ने भेजा है। आशीर्वाद दीजिये। दूसरी बात जहाँ आना-जाना होता है तो सालो पहले की बात भी याद आ जाती है। वह प्याज-धरती की तपन भी मात्र पांचमिनिट में शान्त हो जाती है।

वैसे भी लोग आपके इस नगर को प्रतिदिन स्मरण करते हैं। मैं भी कभी-कभी याद कर लेता हूँ। क्यों कि जब कभी भी बारह भावना बुधजन जी द्वारा विरचित बारह भावना पढ़ते हैं तो उसमे पहली पंक्ति ही है- राजा राणा छतरपति...। क्यों यही है

न?

इस बारह भावना को सुनकर भी दूसरे लोग वैराग्य धारण कर लेते हैं किन्तु आप तो आज तक ज्यों के त्यों बैठे हैं। ये बात अलग है युवाओं का नम्बर बाद में आये पर बूढ़ो का तो आना ही चाहिए। फिर भी यहाँ के वृद्ध लोग भी बहुत भक्ति भाव से वीतराग देव की पूजा-अर्चना आदि करते हैं। युवा-प्रौढ़ तो करते ही है, वृद्धोंमें भी बहुत उत्साह रहता है।

भले ही पैर छोटे-छोटे डग से पार करके आये पर जब भगवान की धारा अथवा पूजा आदि होती है तो वृद्धों के पैरों में भी थिरकन आ जाती है। आती है कि नहीं- बताओ? [हओ] तो राग और द्वेष जिसे रात-दिन करते रहते हैं, जिन्हें एक प्रकार से दृष्टि प्राप्त है वे धीरे-धीरे राग-द्वेष करना [छोड़ना] बंद कर देते हैं। क्यों कि राग-द्वेष के कारण ही संसारी-प्राणी संसार में रुल रहा है। बस मृग-मरीचिका की भाँति छलाँग लेता ही जाता है।

उसे ये ज्ञात ही नहीं है कि ये मृग मरिचिका है। जल जैसा लगता है किन्तु वहाँ जल नहीं है। जल जैसा उज्ज्वल दिखता है और-और छलाँग लेता जाता है। उस मृग को भान नहीं है कि वहाँ जल नहीं है। "जल नहीं पावे प्राण गमावे, भटक-भटक मरता। वस्तु पराई माने अपनी, भेद नहीं करता।"

पढ़ते तो रोज हैं।

सब कुछ समझते हैं - यह भिन्न है, यह भिन्न है किन्तु फिर भी शरीर और आत्मा को एक मानता चला जाता है। जो शरीर एवं आत्मा पृथक-पृथक दिखते हैं, उनके साथ भी यह राग-द्वेष करके संबंध जोड़ता जाता है। और अन्त तक उसका फल नहीं मिलता अतः जल नहीं पावे। यह उदाहरण आपके सामने रखा। प्राण मिलते हैं और बिछुड़ते हैं। हमारे ज्ञान नेत्र प्राण हैं जो समाप्त होते जाते हैं। अब ये आपकी समझना है।

जो पहले वृद्ध थे वे तो चले गये, जो अभी युवा हैं वे आगे वृद्ध होंगे तथा जो थे ही नहीं उनकी क्या कहें? ये कथा याद रखना है। महाराज हमारे यहाँ आओ निवेदन तो करते हो। दो बार पहले भी आये। आप ये ही कहेंगे हम उस समय थे ही नहीं। तो जो थे वे चले गये। राजा-राणा छत्र पति हाथिन पर असवार, मरना सबको एक दिन अपनी-अपनी बार।" राजा रंक हो जाता है और रंक राजा हो जाता है। ये ही संसार चक्र है।

जो इसके चक्कर में आता है वह युं ही चक्कर लगाता रहता है। "जो इस रहस्य को उद्घाटित कर लेता है वह तीन लोक के नाथ के ऊपर छत्र लगाकर उनकी छत्र-छाया में रहता है।" इतना ही नहीं स्वयं तीन लोक का नाथ हो जाता है। बाकि तो कुछ दिन आये यों ही चले जाते हैं नदी की भांति। राजा होया रंक

सभी चले जाते हैं।

कोई भी स्थायी नहीं हैं। देखो ऊपर (पाण्डाल में) बच्चों के खेलने के फुग्गे बांध रखे हैं। फुग्गा फूटने पर कुछ बच्चे रोते हैं - बड़े भी रोने लग जाते हैं तो हम पुचकार के आशीर्वाद आदि देकर उसे शान्त कर देते हैं। इस फुग्गे के रहस्य को समझ लो। (एक फुग्गा फूटने पर कहा) ये फुग्गे तो फूटने के लिये ही होते हैं। तो बच्चे रोते है आप क्यों रोते हो।

दुनिया समझा रही है, फिर भी समझ में नहीं आ रहा, आप ही समझाओ महाराजो फिर भी आप लोगो का सौभाग्य है कि इधर से महाराज जी आदि का आना-जाना होता रहता है क्यों कि पास ही में खजुराहो है। इसकारण साधुओं का समागम बार-बार मिलता रहता है। अब आप छतरपति को अवश्य याद रखीयो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"आधार द्रव्य है न कि गुण"

"जिस प्रकार कोई किरायेदार 1000 रु. महिने में दुकान/मकान लेकर किसी दूसरे को 10000 रु. महिने में नहीं दे सकता यदि दे देता है तो कान पकड़कर मकान मालिक बाहर कर देता है, ठीक इसी प्रकार पर्याय द्रव्य की होती है न कि गुण की। आधार तो द्रव्य ही है-था-रहेगा। जिसका आधार नहीं उसकी कभी कर्म नहीं चलती।"

मेला ग्राउण्ड

11-7-18 "आओ हटायें अतिक्रमण" मध्याह्न

बहुत सारी बातें हैं, लेकिन महत्त्वपूर्ण बात ये है कि इसे मेला ग्राउण्ड माना जाता है। और इस मन्दिर को बनाने वाले, सुना है जबलपुर के एक श्रावक महोदय हैं - लक्ष्मी भण्डार भी बोलते हैं। उन्होंने इस मन्दिर को बनवाया था। कालान्तर में बच्चे यहाँ खेलते - कूदते होंगे, इसे अपना अड्डा बना लिया, और वह स्थान दूसरों के लिए निषिद्ध हो गया। वह पुरा का पुरा परिसर अलग रूप में हो गया। जिस जगह श्री जी विराजमान थे (वेदी) उतनी जगह को छोड़कर पुरी जगह उनके कब्जे (Occupy) में हो गयी।

जैसे तो वे ही मालिक बने हो। समाज भी प्रतिकार करते - करते कहने लगी अब हमारे बस की बात नहीं है। हमारे पुरुषार्थ से कार्य नहीं हो रहा, क्या करें? भगवान तो कभी बातों में आते नहीं (ये भक्तों का कार्य है वे करें। भक्त ही अतिशय दिखवाये तो दिखाये। भक्तों ने सोचा इस मामले में हमारे जीवन काल में ही मुक्ति मिल जाये। अपने देश भारत को स्वतंत्र हुये 70-80 वर्ष हो गये किन्तु मेला ग्राउण्ड के प्रभु जी को स्वतंत्र हुये अभी 2 ही वर्ष हुये हैं।

अभी पुरे देश में ऐसी बहुत सारी प्रतिभायें हैं। ध्यान रखना - ये युवा वर्ग का कार्य है। बड़ो को अपने स्वाभिमान एवं अपनी पहचान को कायम रखना है। दुकानदारी, कृषि अथवा व्यापार - सोचा करना ही

मात्र कर्तव्य नहीं होता।

युगीन जो कर्तव्य होते हैं उन्हें भी करना होता है। भारत अभी कई विषयों में परतंत्र है। "शासन-प्रशासन जानता है, जनता भी जानती है की सही क्या है और गलत क्या है? अनुशासन हीनता के कारण सामने नहीं आ रहे हैं।" हाँ! अतिक्रमण से डरना चाहिए। एक लेख पढ़ा था। एक-दो-तीन पेज पढ़े तो ऐसा लगा मात्र पन्ना पलटना हो गया किन्तु इसके बाद एक विशेष लेख पढ़ा। उसमें लिखा था भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो विश्व के लिए आदर्श है।

वह यह है कि विश्व के सभी देशों ने कहीं न कहीं अतिक्रमण कर दूसरे पर सत्ता जमाने की कोशिश की है पर भारत ने कभी किसी अन्य राष्ट्र की सत्ता को हिलने का काम नहीं किया। किन्तु ये ध्यान रहे कि जिस-जिस समय भारत पर परचक्र का अतिक्रमण हुआ, उसको ऐसा जवाब दे दिया कि याद रखना पड़ा है।

भारत को अब चाहिये कि वह अनेक बातों में परतन्त्र हुआ है उनमें स्वतंत्र बन जाये। युवाओं को समझना चाहिये। कोई आवश्यकता नहीं थी जिन्हें आज दीया जा रहा है। प्रासंगिक समझता हूँ इसलिये कहना चाहता हूँ कि जिस समय स्वतंत्रता मिली उस समय कुछ आध्यात्मिक संतो (गांधी जी आदि)

ने कहा कि अब हमें संग्राम की नहीं लोकतंत्र संचालन हेतु कुछ बातों की सख्त जरूरत है।

उन्हें भूलिये नहीं जिनसे स्वतंत्रता मिली है, वे लोग कुछ भी कर सकते हैं इसलिये युवा पीढ़ी उन्हें भूले नहीं। यही मेरा आप सब से कहना है। अभी आगे और जाना है। डेरा पहाड़ी की भी वंदना करना है। मुकाम तो करना ही है। महिनों हो गये मुकाम... भाग्य आपका, देखो क्या होता है?

शान्तिविलास- बृजपुरा अहिंसा परमो धर्म की जय।नूँ

संस्मरण- "सम्मेदशिखर जी की वंदना"

अजमेर की बात जब विद्याधर जी की दीक्षा में 15-20 दिन शेष थे, प्रतिदिन बिनौली का कार्यक्रम चलता था। एक दिन सेठ जी (सोनीजी) ने ब्रह्मचारी जी से कहा आपने सम्मेदशिखर जी की यात्रा नहीं की। हम अपने साथ आपको ले जाना चाहते हैं। ब्र. जी कुछ संकोच में पड़े तो फिर उन्होंने कहा कि आ. ज्ञानसागर जी (गुरुजी) से हम पूछ लेंगे आपका नाम हम कहीं भी नहीं आने देंगे, आपके लिए आज्ञा लेना मेरा कार्य है। किन्तु विद्याधर जी तो सटीक एवं हाजिर जवाब देने वाले शुरु से ही रहे हैं। उन्होंने कहा- सेठ जी! मेरा तो आजीवन सवारी का त्याग हो चुका है अब तो बिना सवारी के ही जाऊंगा जब भी जाऊंगा।" तथा 1983 में मुनि बनकर गये।

(वैय्यावृति में गुरुजी)

बसारी
12-7-18 "संसार के भंवर से बचाता भ्रमर" प्रातः

आप लोग परिचित हैं जो भंवरा होता है जिसको भ्रमर बोलते है वह दूर-दूर तक जाकर के सुगन्धित पुष्पो के रस का सेवन करता रहता है। वह और किसी भी वस्तु पर अपनी नजर नहीं ले जाता। चाहे कितनी भी दूर क्यों न जाना पड़े तो भी वह पुष्पों के रस को ही पीता रहता है। और एक मक्खी होती है वह जिस किसी भी गंध पर बैठ जाती है अथवा यु कह दो कफ आदि गंदगी पर ही बैठ जाती है।

उसी में वह फड़फड़ाती रहती है उससे ऊपर नहीं उठ पाती है क्यों कि उसमें उसके पुरे पंख सन जाते है, लिप्त हो जाते हैं। दोनों ही चार इन्द्रिय जीव है। एक भ्रमर है जो कफ की ओर देखता भी नहीं बैठना तो दूर जब की मक्खी उसी में बैठकर फंस जाती है। ये उदाहरण मैं इसलिये दे रहा हूँ कि संसारी प्राणी राग-द्वेष-मोह के कारण विषयों में फंसकर अपने प्राण गंवा देता है। जीवन के आदि से अंत तक उसका यही क्रम चलता रहता है।

कुछ भ्रमर की भांति वाले जीव भी होते है वे विषयों के कफ में फंसते नहीं-मरते नहीं हैं। उससे दूर रहते है। दूर रहकर जो भी अर्जित धन होता है उसको परोपकार के कार्यों में लगाकर

अन्य लोगों को भी धर्मात्मा बनाकर तृप्त होते हैं। अपने आपको कृत्यकृत्य मानते हैं।

दूसरों के भी यह धन काम में आ गया। वह भी धर्मध्यान करने लगा यानि जो व्यक्ति हिंसक वृत्ति वाला था वह अब धार्मिक वृत्ति अपना लिया। इसका श्रेय उसी को जाता है। वह इसी दिशा में अपने धन का सदुपयोग करता है। उसे ज्ञात है कि ज्यादा संग्रह करने से उपयोग होने वाला नहीं है। कम खर्च करके इसे भी धर्मात्मा बनाकर उसका भी काम अच्छा कर देता है।

अभी हम शौचादि से निवृत्त होकर एक खेत में शुद्धि कर रहे थे वहाँ का माली आया और बोला हम कभी भी मांसादि का सेवन नहीं करेंगे और वह संकल्प लेकर चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि आप अपने धन का/अपने खेत आदि का आश्रय देकर ऐसी व्यक्ति तैयार करते है तो भ्रामरी वृत्ति वाले भ्रमर की तरह संसार में फँसे बिना रह सकते है।

यही आचार्यों ने हम सबके लिए उपदेश दिया। मैंने भी वही कार्य किया। इस मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने का यही उपाय है। आप स्वयं व्यसनों से दूर रहकर अपने बच्चों को भी उससे बचाकर उनमें धार्मिक संस्कार दे सकते हैं। बस आप लोगों से इतना ही कहना था।

रामविश्राम-गंज — अहिंसा परमो धर्म की जय। जैं

बमीठा
13-7-18 "इतिहास से ही मिलेगी - जादुकी छड़ी - अध्यात्म" प्रातः

यहाँ तो मीठा तो वैसे ही बट रही है। [तालीयाँ] समझ में आ गया आप लोगो को? इलका नाम बमीठा है। क्षेत्र के पास गाँव रहता है वह गाँव न रहकर के अच्छे-अच्छे व्यक्तियों को भी जो दुर्लभ है वह दुर्लभ चीज उन्हे प्राप्त होती है। यहाँ के पास रहने वाली जो जनता है, वह किस ढंग से जीवन यापन कर रही है, देखकर ज्ञात हो जाता है।

लोगो की दृष्टि में गरीबी हो सकती है पर जनता के चहरे को देखकर, उनकी बाहरी एवं भीतरी प्रसन्नता से पता चलता है कि इनसे बड़ा कोई सेठ-साहुकार नहीं हैं। लक्ष्मी का आना-जाना तो हमेशा से बना हुआ ही है। भीतरी प्रसन्नता की बात ही अलग है इससे गरीबी नहीं अपितु भीतर की अमीरी 10 गुना और बढ़ जाती है। किन्तु दुःख इस बात का है कि आज दुनिया इसे समझ नहीं पा रही है।

जो व्यक्ति गरीब है वह दान नहीं दे सकता परन्तु भाव तो (दान देने के) कर ही सकता है। अमीर के पास खुब है पर एकटका भी देने के भाव नहीं हो पाते (यह परिणामों पर आधारित है। आज का युवा जो भटकने को है अथवा भटक गया है, उससे पूछो क्यों क्या हाल है? वह कहता है- क्या बतायें? आप

लोग कैसे रह रहे हैं?

हम युवा अवस्था में भी नहीं रह पा रहे हैं, आप वृद्धावस्था में भी इतने प्रसन्न एवं आनन्दित कैसे रह रहे हैं। दादा जी कहते हैं- क्या बतायें "तुमने अपनी पुरी उम्र में उतना पानी भी नहीं पीया जितना की हमने घी पीया है।" इसलिए ४०-४५ वर्ष के होने पर भी आप देख रहे थे उनके पैरो में कैसी थिरकन आ रही थी। अभी तो इससे भी आगे के एक वृद्ध जो लीया (लाठी) को ऊपर करके नाचने लग जाते हैं।

युवा वर्ग से मेरा विशेष रूप से कहना है भारतीय संस्कृति को पढ़ो, उसे आत्मसात् करो। भारत पुरे विश्व का गुरु माना जाता है। यहाँ किसी बात की कमी नहीं, कमी है तो इतनी ही है कि वर्तमान में उस इतिहास को भूला दिया गया है। उसे अब पुनः याद करो। भारत ने उस समय किस प्रकार दूसरो के लिए सहयोग किया था ("न भूतो - न भविष्यति")।

ऐसे हमारे भारतवासी थे किन्तु कुछ विदेशी हवा ऐसी चली पागलपन जैसा हो गया है। हवा इसलिये कह रहा हूँ कि कई तरह की हवायें चलती हैं एक ऊपरील हवा, जिसे बाहरी हवा भी कहा जाता है। इसे तो बाहर की हवा लग गई। आप भले ही भीतरी अथवा बाहरी हवा को न माने,

इतना अवश्य है कि विदेशी हवा अवश्य लग गयी है।
उसी हवा के कारण यह अपने स्वभाविक आनन्द से विमुख हो गया। युवा में भी वह उल्लास खत्म हो गया। इसी विदेशी हवा के कारण जो "जादू की छड़ी-अध्यात्म" है उससे विमुख हो गया है। ये तो आप सभी का अहोभाग्य है जो क्षेत्र के पास रह रहे हैं। क्षेत्र के कारण ही यह सब है जो भी देख रहे हैं। यहाँ मात्र देखना ही नहीं हो रहा, रह भी रहे हैं।

आज जो विदेश का प्रभाव पड़ रहा है उसके लिए आपको चाहिए अपने इतिहास को याद करें तथा जो आगे आने वाली पीढ़ी है उनके लिये भी पीढ़ी को याद कराने की कोशिश करायें। ध्यान रखें- "धन के बिना जीवन चल सकता है पर धर्म के बिना तीनकाल में जीवन चल नहीं सकता।"

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ
इर्यापथ में → "आचार्य श्री जी हमेशा विशेष की बजाय सामान्य को अच्छा मानते हैं, इसी लिये वे रिजर्वेशन के समर्थक नहीं हैं। उन्होंने कहा सामान्य केवली योंकी संख्या अधिक है। पांच चारित्र के अतिरिक्त सामान्य चारित्र अलग से भी कहा। संयम मार्गणा भी 6 से 14 गुणस्थान से सामान्य से देखो तो एक है। इसलिये विशेष नहीं सामान्य को देखो।"

रात्रि विश्राम - मि० नि० खतौली

खजुराहो अतिशयक्षेत्र

15-3-17 "कर्त्तव्य भी हो, भक्ति के साथ" प्रातः एक-एक बूंद करके अंजुली में से वह पानी कितनी भी आप हाथ को खिंचकर अंजुली बनाकर रखो तो भी वह रिसकर नीचे चला जाता है। दीर्घकाल बाद आप कह रहे हैं, हमने तो गिना नहीं, आप लोगों पर ही भरोसा करके चलते हैं। सुनते हैं 37 वर्ष हो गये 38 वाँ लगभग चालु हो गया। एक बार तो हम तेनवा जिसको द्रोण गिरी बोलते हैं वहाँ से छतरपुर, बड़-मलाहरा होते हुये हम आये थे।

दुबारा हमारा यहाँ पर आना हुआ वह अप्रत्याशित था, क्यों कि हमारा सागर वाचना के बाद मुक्तागिरी में चातुर्मास हुआ। इसलिए लोगोंका अनुमान यही रहा कि महाराज तो दक्षिण में जा रहे हैं। सही भी था कि जिस दिशा में महाराज जा रहे हैं उधर का ही अनुमान कर रहे हैं परन्तु गाड़ी कभी-कभी रिवर्स भी हो जाती है। मुक्तागिरी में यहाँ के तात्कालिन अध्यक्ष एवं पुरी कमेटी प्रतिष्ठाचार्य जी के साथ हमें पंचकल्याणक हेतु निवेदन करने आयी।

प्रतिष्ठाचार्य जी भी भिण्ड के शिवरचन्द जी वृद्ध भलेही थे पर आवाज ऐसी की माइक की कोई आवश्यकता नहीं। बोलने लगे-महाराज आपको चलना ही है यह तय हो गया है। आपके सान्निध्य में पंच-कल्याणक एवं गजरथ महोत्सव करना है। साथ ही विद्वत्परिषद्

का सम्मेलन पुरी मण्डली आना है, यह सब आपके बिना सम्भव नहीं है।

हमने सोचा चलो। दूरी बहुत है। बीच में गाड़ी गड़बड़ हो तो पहुँचेगी या नहीं। समय पर पंचकल्याणक में हमारा आना हुआ। इसी समय बहुत गड़बड़ियाँ थी। क्षेत्र के विषय में भी उस समय सुनने को एवं बहुत कुछ अध्ययन करने को प्राप्त हुआ। किन्तु 37 वर्ष बहुत हो जाता है। परिवर्तन भी बहुत हो जाता है। पंचकल्याणक सानन्द सम्पन्न हुआ और हमारा अन्यत्र विहार हो गया।

इसके उपरान्त इन लोगों ने सोचा होगा अब तो जब कभी भी कहेंगे लौटकर आ जायेंगे। यहाँ की सबसे बड़ी विशेषता रही कि यहाँ कि कमेटी संविधान के अनुसार काम करती रही है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसका सम्बंध पुरे राष्ट्र से जुड़ा हुआ एवं पुरातत्व के साथ जुड़ा हुआ है। इससे आगे भी अब अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र होने जा रहा है।

इसलिये नहीं कि यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय विमान का आना और जाना होगा बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह अलग स्थान रखता है। यहाँ कि जनता बिखरी हुयी है, लेकिन व्यवस्थित है। व्यवस्थित का मतलब कबड्डी के खेल की तरह एक का मुख इधर है तो दूसरे का मुख इस तरफ (आमने-

सामने) विपरित दिशा में हैं।

तो 37 वर्ष का दीर्घकाल व्यतीत हुआ। इसके अलावा भी क्षेत्रों में बुन्देलखण्ड के लोगों की सदैव मांग रही है। बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड (रीवांचल) को अलग मानकर जनता में मांग रही। यहाँ का कार्य लगातार चलता आ रहा है। ज्यादा तो कुछ नहीं कहूँगा। आप लोगों ने माँग (चातुर्मास) रखी है। सतना वाले सतना की मांग नहीं रखें/लगता है सतना वालों का पेट भर गया है।

तो हम पर्वोरा से बंधा जी - जतारा आदि होते हुये आये हैं। बीच में कुछ बच्चों ने नारे लगाये - "एक ही तमन्ना - एक ही आशा, हमारे इतें ही चौमासा।" हमारे इतें हो चौमासा - यह महत्वपूर्ण है। यहाँ (खजुराहो) आकर बदल गया। इतें के तो हैं ही। नामोल्लेख से स्पष्ट हो जाता है कि ये कहाँ चाहते हैं। एक सज्जन (इं. रमेश जैन) ने कहा - यहाँ चातुर्मास होने जा रहा है।

मतलब अभी हमारे पास मारजन (margin) [समय] है। आप समझते हैं विमान जब उड़ता है तो सीधा उड़ जाये कोई बात नहीं पर उतरता है तो एक - आध परिक्रमा लगाकर ही उतरता है। अभी हमारे पास भी 13 एवं पांच = 18 दिन हैं। इसलिये देखो कहाँ होता है? नाम आते ही सब अपने - अपने वाड़ी की मांग करने लग जाते हैं। ये

भी अच्छी भावना है।

बंधन में बांधने की भावना - चार महिने एक स्थान पर रहकर साधना हो जाती है। विगत 50 वर्षों से बुन्देलखण्ड अथवा उसके साथ लगे हुये स्थानों पर संघ का चातुर्मास होते आये हैं। इस वर्ष कहां होगा श्रावक तो चाहता है अभी ही घोषणा करदें किन्तु हमारे ऊपर भी बंदिश है; ऊपर से आदेश है। हाँ श्रावक तो गेसिंग / अनुमान लगाता ही है।

अच्छा तमन्ना का क्या मतलब होता है? तमन्ना का मतलब उत्कण्ठा होती है। हम तमन्ना रखते है ऐसा कहा था। सब व्यक्तियों की अपनी-अपनी तमन्ना होती है। हमारी भी तमन्ना है - ऐसा कह नहीं सकते। फिर शांतिनाथ भगवान इतने के तो हैं ही। किन्तु ये भी ध्यान रखो यहाँ आदिनाथ एवं पार्श्वनाथ के दो मन्दिर और है जो अपने इतिहास को लिये हुये आज भी खड़े हैं।

इन दोनों मन्दिरों को पूरे विश्व के लोग अहिंसा की उपासना एवं वितरागता के दर्शन हेतु उड़कर यहाँ आते है। महिनो-महिनो तक यहीं रहते हैं। उन दोनों स्थानों को भूलते जा रहे है जैसे शान्तिनाथ भगवान को रखे हैं, उसी रूप में उनको भी रखने का अब समय आ गया है। ज्यादा तो नहीं कहना, कल का क्या? कल रविवार

का दिन है उस समय विशेष बात रखना चाहते हैं।

संस्कृति - इतिहास - परम्परा

क्या होती है? विशेष रूप से जैनियों के यहाँ वह परम्परा आज भी कायम है। "सिद्धान्त कभी बदलता नहीं - स्थान कथंचित् बदल सकता है।" इसलिये भक्ति के साथ कर्तव्य क्या है इसे दृष्टिपात कर एकता के साथ कार्य करेंगे। ~~इसके~~ वक्तव्य इसी भावना के साथ कि आप लोग लगे रहेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - मातृभाषा ही क्यों?

"खजुराहो में प्रथम दिन है। यहाँ तो प्रतिदिन विदेशी पर्यटकों का आना होता ही है। आज भी स्पेन से 5-6 विदेशी लोग आ० श्री के चरणों में आये। उनके साथ गाइड भी था। ब्र० विनोद जी भीड़ एवं 1-2 ब्रह्मचारी वहाँ थे। मैं भी वहीं बैठा था। ब्र० विनोद ने उनसे 2-3 बार English में बात करनी चाही उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। जब गाइड ने स्पेन में बात की तो उन्होंने जवाब दिया। मतलब कोई भी शब्द अपनी मातृभाषा का त्याग नहीं किया फिर भारतवासी क्यों अपनी भाषा का त्याग करने में तुले हुये हैं। हम कहीं भी रहें। जायें हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिये। ब्र० जी को भी समझ में आ गयी। उन सभी विदेशियों ने सप्ताह में एक दिन शाकाहार रहने का संकल्प लिया। उनके लिये यह बहुत बड़ा त्याग था।"

रविवार
15-7-18 "श्री फल भी पड़ गये कम" प्रातः
[सहस्त्रकूट जिनालय की घोषणा]

आप सभी लोग इतने भाव विभोर हो गये की पैने दस से भी आगे बढ़ गया। वहाँ से [पार्श्वनाथ एवं आदिनाथ जिनालय] अभिषेक-शांतिधारा के बाद यहाँ आये। हमने सोचा अब अर्घ्य चढ़ाकर भी निकल जाते किन्तु वहाँ से भी ज्यादा समय यहाँ लग गया।

सभी लोग प्रतिमाओं के लिए भावायित हो गये। कमेटी वालों के श्री फल भी कम पड़ गये तो इन्होंने दूसरा रास्ता निकाल लिया और 108-108 प्रतिमाओं हेतु श्री फल चढ़ाने हेतु बुलाने लगे। हमने तो ऐसा ही समझ में आता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण- "श्रद्धा का प्रभाव"

"पूज्य आर्यिका के प्रति जैनियों की तो श्रद्धा है ही अजैन (जैनेत्तर) बन्धु भी उनके प्रति गाढ़ श्रद्धान रखते हैं। खजुराहो प्रवेश के समय हमलोगों का सेक्योरिटी पर रुकना हुआ। सेक्योरिटी के दो अधिकारी आर्यिका को भीतर दिखाने ले गये और उसके एक घण्टे बाद ही उन दोनों का परमोशन हो गया। ये है गुरु कृपा एवं श्रद्धा का कमाल"

15-7-18 रविवारीय प्रवचनांश मध्याह्न

o जिसके मन में जैसी विचारधारा होती है, वह वैसा ही सोचता रहता है तथा वैसे ही कार्य करने में तत्पर रहता है।

o जिसके साथ देव गुरु शास्त्र रहते हैं अर्थात जो इन तीनों के साथ रहता है उस व्यक्ति पर किसी अन्य का प्रभाव कैसे पड़ सकता है? नहीं पड़ सकता।

o संतो के पास दैवीय शक्तियाँ होती हैं पर प्रयोग नहीं करते किन्तु जिन शासन की रक्षानार्थ अथवा धर्म की रक्षार्थ यदि आवश्यकता पड़ जाये तो कर भी सकते हैं।

o आप लोग सदैव मुस्कान-मुस्कान ही चाहते हो-चुंटी नहीं, यह बात जमती नहीं।

o "धर्म सबको जोड़ता है - तोड़ता नहीं।" इसीलिये हम बुन्देलखण्ड के इस छोर पर आये तो बघेलखण्ड वाले थोड़ा खिसक कर इधर आ गये। यही धार्मिक एकता है।

o व्याकरण में जो सारे नियमों को छोड़ देता है, उसे निपात कहते हैं। रावण शब्द निपात है मतलब रावण ने भी सभी निति - न्याय को ताक में रख दिया था।

o मुनि महाराज की बाहरी शक्ति नहीं दिखती पर भीतरी शक्ति का कुछ पता ही नहीं कितनी होती है?

o ध्वजा में जैसी गांठ (फूल) बांधते हैं वैसी बांधे।

o वितरागता से ऋद्धियाँ अपने आप आती है फिर सिद्धियाँ तथा प्रसिद्धियाँ का तो कहना ही क्या?
o छाया तो अपनी ही माया है, भगवान तो छाया से रहित होते हैं। शरीर की छाया पड़ती है आत्मा की छाया होती ही नहीं।
o ऐसी शिक्षा निति से क्या प्रयोजन जो शिक्षा हमारे किसी काम की ही नहीं। विदेशी नीति उस रावण की नीति की तरह ही भारत को नीचे ले जाने का काम कर रही है।
o माया को मत देखो - यामा को देखो। यमस्य भावः इति यामा। यम का अर्थ महाव्रत।
o समय पर औचित्य गुण जिसे समझ में आ जाता है, उससे बड़ा विद्वान कोई नहीं होता। और जिसने भी इस औचित्य गुण को छोड़ दिया उसे नीचे गिरने से कोई रोक नहीं सकता। उसे गड्ढे से बाहर कोई निकाल नहीं सकता।
o जिनालयों को तोड़ने - फोड़ने अथवा नष्ट करने के भाव अज्ञान की पराकाष्ठा है। वही अज्ञान जब ज्ञान में बदलता है तो उसी कृत्य से पाठ भी ले लेता है।
o वितराग जिनालय देह एवं आत्मा को भिन्न-भिन्न दिखाने वाला है।
o मुट्ठी कसकर बाधने से सर्दी दूर हो पसीना आ जाता है।

o "पहलवान को देखकर कसरत करने, नृत्यकार को देखकर नाचने के भाव, गीतकार को गाता देख गाने के भाव होते हैं उसी प्रकार वीतराग के सामने खड़े होते ही राग को छोड़कर वीतराग बनने के भाव होने लगते हैं।"

o जब प्रजा का शोषण होता है, अनीति-अन्याय बढ़ जाते हैं तो राजा तलवार एवं ढाल से जवाब देता है।

o प्रजा यदि समर्पित हो तो देवत्व भी रक्षा के लिये तैयार रहते हैं।

o कर्त्तव्य बोध की अपेक्षा कर्त्तव्यपूर्ण करना है।

o रावण की भांति कर्त्तव्य से च्युत नहीं - राम की भांति कर्त्तव्य को पाने का पुरुषार्थ करना चाहिये।

o हम उपदेश दे सकते हैं, प्रोत्साहित कर सकते हैं, आशीर्वाद दे सकते हैं किन्तु कर्त्तव्य तो आपको करना है।

o सोते हुये लम्बा समय बिताने की अपेक्षा जागते हुये कुछ ही समय रहना अच्छा है।

o रुचि हो तो सभी कार्य करना आसान हो जाता है।

o गांठ को ढीली बांधो - कड़ी मत बांधो अन्यथा हमें काटनी होगी। यदि आपकी गांठ नहीं खुल रही है तो हमें बता देना सब ठीक कर देंगे। अज्ञानी की गांठ कड़ी होती है। ममता-मोह की गांठ खोलो। o o

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	01/05/2018	मन को नहलाओ ठण्ड़े पानी से	पपौरा जी(टीकमगढ़)	3
2	02/05/2018	मन भी दे साथ- आँखो की तरह		10
3.	03/05/2018	युग बदलेगा दूर दृष्टि से		15
4.	04/05/2018	आओ सुलझायें उलझनों को		22
5.	07/05/2018	भक्ति करो- बनोगे भगवान		31
6.	08/05/2018	बदल ड़ालो धारणा को		32
7.	09/05/2018	कैसे बचें स्मृति रूपी ड़कार से		37
8.	10/05/2018	मंत्र ही नहीं यंत्र भी शिक्षा देते शांतिधारा के		45
9.	11/05/2018	ज्ञान वही जो हित में लगाये		49
10.	12/05/2018	कर्म उसी प्रकार का पर वही नहीं		57
11.	13/05/2018	आओ उठाये सोये सर्प को		63
12.	14/05/2018	जयोदय महाकाव्य पर संगोष्ठी- प्रथम सत्र		69
13.	14/05/2018	द्वितीय सत्र		72
14.	15/05/2018	तृतीय सत्र		75
15.	15/05/2018	आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज का 46वाँ समाधि दिवस		78
16.	16/05/2018	चौके में घुसें नहीं-प्रवेश करो		84
17.	17/05/2018	रास्ता सुलझने का		88
18.	18/05/2018	काया को नहीं कायस्थ को देखो		92
19.	19/05/2018	मृत्यु से भागे नहीं-जागे		97
20.	20/05/2018	दान भी तब-जब पुण्य हो		102
21.	20/05/2018	रविवारीय प्रवचनांश		108
22.	21/05/2018	सुखी जीवन का मंत्र		112
23.	22/05/2018	मरघट से मिला बोध आत्मघट का		115
24.	23/05/2018	आज ही Online टिकिट बुक करें		121

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
25.	24/05/2018	विज्ञापन हथकरघा का (चार बातें)		127
26.	25/05/2018	मेरा सारा दु:ख दर्द हरो		130
27.	29/05/2018	ठोकर खाने से आती अकल		135
28.	29/05/2018	कर्त्तव्य का बोध कराता तनु प्रत्यय		139
29.	01/06/2018	मांगो मत मिलेगा		141
30.	02/06/2018	कैसे संभाले परिणामों को		145
31.	03/06/2018	जगतमन्थन नहीं आत्ममन्थन हो		150
32.	04/06/2018	भेदभाव से दूर कैसे हो		155
33.	04/06/2018	असमय में खीरी गुरु-वाणी		159
34.	05/06/2018	चाल हो सीधी-घड़ी की तरह		163
35.	06/06/2018	एक ही विषय-मोक्षमार्ग में		165
36.	07/06/2018	मत फूलो पाने पर		169
37.	08/06/2018	अजंङ्गम चलता जङ्गम के सहारे		171
38.	09/06/2018	कुऐं का संदेश		174
39.	10/06/2018	आओ देखें नाखुन रूपी दर्पण में		178
40.	11/06/2018	कैसा होता यात्री?		182
41.	12/06/2018	क्या आप लम्बी उम्र चाहते हो?		186
42.	13/06/2018	अखण्ड़ है प्रतिभामण्डल		190
43.	13/06/2018	सिद्धो का मजा-सिद्धो जैसा		192
44.	14/06/2018	अब तो सुधारो गलत अवधारणा		193
45.	15/06/2018	नामस्मरण से भी फूटता झरना		197
46.	16/06/2018	स्वाद लेना सीखो		200
47.	17/06/2018	रविवारीय प्रवचनांश		203
48.	18/06/2018	ये है श्रुत का प्रायोगिक रूप		207
49.	19/06/2018	अच्छे व्यापारी के लक्षण		211
50.	20/06/2018	कैसे हो क्षुधा रूपी रोग दूर		215

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
51.	22/06/2018	सर्वे भवन्तु सुखीनः		220
52.	23/06/2018	अपने कनेक्शन को ठीक करो		223
53.	24/06/2018	कैसे छूटे बुरी आदते		228
54.	25/06/2018	कहीं आप हिंसक तो नहीं		230
55.	26/06/2018	आओं बनें अनात्मार्थं		236
56.	27/06/2018	ईर्ष्या से कैसे बचें		241
57.	28/06/2018	पूर्ण करो-अधूरे काम		244
58.	28/06/2018	सम्यग्दर्शन का कारण है बिम्ब स्थापना	नन्दीश्वर कॉलोनी	245
59.	29/06/2018	सच्चा धर्म है सात्विक भाव	दिगौड़ा	248
60.	30/06/2018	जगह की बात नहीं-वीतरागता में	बंधा जी	251
61.	30/06/2018	अनमोल एवं अतुलनीय है वीतरागता		255
62.	01/07/2018	जलो और जलाओ नहीं, जिलाओ		265
63.	02/07/2018	वीतराग भगवान है चिन्मयकारी		269
64.	03/07/2018	बड़ तूफाँ में, शीर्षासन लगाता, बेंत झुकता		273
65.	04/07/2018	उलटी चाल को सीधी करो		277
66.	05/07/2018	धर्म कांटे की ओर नहीं धर्म की ओर ध्यान हो	लिधौरा	282
67.	06/07/2018	आओ खड़े हो जायें चुनाव में	जतारा	288
68.	07/07/2018	भीतरी-बाहरी शुद्धि करता नीम	पलेरा	291
69.	08/07/2018	सही बोलें-सुन्दर बोलें	गर्रोली	294
70.	09/07/2018	फार्मूला काले को सफेद बनाने का	नौगांव	296
71.	10/07/2018	मोह तो तोड़ो-मोक्ष मिलेगा	धमौरा	299
72.	11/07/2018	छतरपुर के 'छतर' का रहस्य	छतरपुर	302
73.	11/07/2018	आओ हटायें अतिक्रमण	मेला ग्राउण्ड	306
74.	12/07/2018	संसार के भंवर से बचाता भ्रमर	बसारी	309
75.	13/07/2018	इतिहास से ही मिलेगी, जादू की छड़ी - अध्यात्म	बमीठा	311
76.	14/07/2018	कर्त्तव्य भी हो, भक्ति के साथ	खजुराहो अतिशयक्षेत्र	314
77.	15/07/2018	श्रीफल भी पड़ गये कम		319
78.	15/07/2018	रविवारीय प्रवचनांश		320